गरजत-बरसत

असगर वजाहत

अनुक्रम

अनुक्रम **अध्याय 1** आगे

मेरे रंग-ढंग से सबको यह अंदाज़ा लग चुका था कि दिल्ली ने मेरी कमर पर लात मारी है और साल-डेढ़ साल नौकरी की तलाश में मारा-मारा फिरने के बाद मैं घर लौटा हूं। अपमानित होने का भाव कम करने के लिए मैं लगातार ऊपर वाले कमरे में पड़ा सोचा करता था या 'जासूसी दुनिया` पढ़ा करता था। दो-तीन दिन बाद अतहर को पता चला कि मैं आया हूं तो वह आ धमका और उसके साथ मैं शाम को पहली बार निकला था।

छोटा-सा शहर, छोटी-छोटी दुकानें, पतली सड़कें, रिक्शे और साइकिलें, सब कुछ मैं दिल्ली की आंख से देख रहा था और मुझे काफी अच्छी लग रही थीं। अतहर के साथ मामू के होटल में गया। वहां मुख्तार आ गया। कुछ देर बाद हम तीनों उमाशंकर के पास गये। रेलवे प्लेटफार्म की एक बेंच पर कुल्लड़ों में चाय लेकर हम बैठ गये और इन लोगों ने मेरे ऊपर सवालों की बौछार कर दी। मैं सोचने लगा कि इन सबको मैं क्या बताऊं? ये सब मेरे दोस्त हैं। अतहर मेरे साथ स्कूल में था अब तक बारहवीं पास करने के लिए साल दो साल बाद इम्तिहान में बैठ जाता है। उमाशंकर ने इंटर पास करने का मोह भी त्याग दिया है और कपड़े की दुकान खोल ली है। मुख्तार सिलाई का काम करता है और उर्दू अखबारों का बड़ा घनघोर पाठक है। इनमें शायद कोई कभी दिल्ली गया भी नहीं है। मैं इन्हें क्या बताऊं कि मरे साथ क्या हुआ? क्या इसके पीछे यह अहंकार तो नहीं है कि मैं एम.ए. हूं और ये लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं। मेरी बात समझ नहीं पायेंगे? हां शायद यही है। इसलिए मुझे बताना चाहिए कि मेरे साथ क्या हुआ था हुआ था ये चाहे समझें चाहे न समझें लेकिन मेरे मन के ऊपर से तो बोझ हट जाऐगा।

"बताओ यार साजिद. . .तुम तो चुप हो गये. . . लेव बीड़ी पियो।" अतहर ने एक सुलगती बीड़ी मेरी तरफ बढ़ा दी।

"कहीं कोई प्रेम-व्रेम का चक्कर तो नहीं हो गया।" उमाशंकर ने हंसकर कहा। मेरे चेहरे पर बड़ी फीकी मुस्कुराहट आ गयी। दूर से आती खाली माल गाड़ी करीब आ गयी थी और कुछ मिनट उसकी आवाज़ की वजह से हमारी

बातचीत बंद रही।

"बस ये समझ लो नौकरी नहीं मिली।" मैं बोला।

"अरे तो नौकरी साली मिलती कहां है। मुझी को देखो चार शहरों के बेरोज़गारी दफ़्तरों में नाम लिखा हुआ है।" अतहर ने कहा।

"तुम्हें नौकरी क्या मिलेगी?" उमाशंकर ने उदासीनता से कहा।

"क्यों? अबे साले आई..टी.आई. का कोर्स किया है।"

"तो अब क्या सोचा है?" मुख़्तार ने मुझसे पूछा।

"सोचा है नौकरी न करूंगा।"

"वाह यार वाह ये बात हुई. . .मैं तो तुमसे पहले से ही कह रहा था कि तुम्हारे लिए नौकरी चुतियापा है। यार जिसके पास इतनी ज़मीन हो, आम, अमरूद के बाग हों वह हज़ार बारह सौ की नौकरी क्यों करे?" अतहर ने जोश में कहा।

मुझे याद आया वह मेरे दिल्ली जाने से पहले भी यह सलाह दे चुका था। उस वक़्त यह मेरी समझ में नहीं आया था। दिल्ली में बाबा ने समझा दिया। या हालात ने मजबूर कर दिया या और कोई रास्ता ही नहीं बचा और बचा है पूरा जीवन।

"पर यार खेती करना है तो केसरियापुर में ही रहना पड़ेगा।" अतहर ने कहा।

"मैं जानता हूं यार।" मेरे ये कहते ही उन तीनों के चेहरे दमक गये और मुझे यहां उनके साथ बिताये पुराने दिन याद आ गये। जब हम पुलिया पर बैठकर पार्टी करते थे। जब पुलिस की ज्यादतियों के खिलाफ़ एस.पी. से मिलने गये थे। रात में मुख़्तार की दुकान के अंदर लालटेन की रोशनी में गर्मागर्म बहसे किया करते थे। मामू के होटल में चाय के दौर चला करते थे। मैं बिल्कुल उनका एक हिस्सा बन गया था। मुख़्तार कहता भी था, तुम तो एम.ए. पास नहीं लगते। अरे लौण्डे इंटर कर लेते हैं तो हम लोगों से सीधे मुंह बात नहीं करते।

अब्बा से जब मैंने कहा कि मैं नौकरी नहीं बल्कि खेती करना चाहता हूं और केसरियापुर में रहना चाहता हूं तो कुछ क्षण के लिए उनकी कुछ समझ में आया नहीं। एम.ए. पास करने के बाद गांव में रहना और खेती करना? हालत ये है कि लड़का हाई स्कूल कर लेता है तो गांव का मुंह नहीं देखता। इंटर कर लेता है तो खेती करने से चिढ़ने लगता है लेकिन यह भी है कि आज खेती में पैसा है। कुर्मियों ने अच्छा पैसा कमाया है। केसरियापुर में बिजली आ गयी है। दो-चार ट्यूबवेल भी लग गये हैं।

अब्बा कुछ देर सोचते रहे और अम्मां ने कहा "तुम वहां रहोगे कैसे?"

मैं उन्हें क्या बताता कि दिल्ली के मुकाबले वहां रहना स्वर्ग में रहने जैसा होगा।

"देखो रहने की तो कोई मुश्किल नहीं है। ख़ुदा के फ़ज़ल से इतना बड़ा चौरा है। हां खाने की दिक्कत हो सकती है. . .वैसे रहमत के यहां तुम्हारा खाना पक सकता है. . .ये बात ज़रूर है भई कि गांव वाला होगा।"

इस बार केसरियापुर जाना बहुत अलग था। दिल में तरह-तरह के ख्य़ाल आ रहे थे। सैकड़ों डर थे और उनके साथ यह यकीन कि मैं कामयाब हूंगा। कामयाबी से मतलब यही कि अच्छी तरह खेती करूंगा। अच्छी फसल होगी। अच्छा पैसा मिलेगा और फिर जैसे बावा ने दिल्ली में कहा था "तुम जाड़ों में मुंबई जाए करना। गर्मियों में नैनीताल और दो-तीन साल में एक चक्कर योरोप का लगा सकते हो। यार पैसा हो तो आदमी सब कुछ कर सकता है और बिना पैसे के जिंदगी गुज़ारना, भुखमरी में रहना भी कोई जीवन है।" खेती कैसे होती है, मेरे ख्याल से मुझे मालूम था। अब अगर करना था तो उसका इंतिज़ाम, पूरी व्यवस्था और देखभाल।

इससे पहले हम जब भी केसरियापुर आते थे सीधे चौरे तक पहुंचते थे और बाकी गांव कैसा है, क्या है, कौन रहता है, कैसे रहता है। इसकी कोई जानकारी न थी। लेकिन अब दो पीढ़ियों बाद केसरियापुर फिर घर बन रहा है। मैंने सोचा सबसे पहले तो गांव ही देखा जाऐ। रहमत खुशी-खुशी इस पर तैयार हो गया। रहमत की बूढ़ी और कादार आंखों में चमक आ गयी और मैं उसके साथ गांव देखने निकल पड़ा। चौरा तो गांव के कोने पर है जहां से हम लोगों की जमीनें और बाग शुरु होते हैं। गांव के अंदर की दुनिया देखने के ख्याल से मैं पहली बार निकला। रहमत के सिर पर अंगौछा और हाथ में लाठी थी। वह मेरे पीछे-पीछे चल रहा था। गांव के अंदर टोलों के बारे में वह बता रहा था पंडितों का टोला, ठाकुरों का टोला, अहीर टोला, कुर्मियाना, मियां टोला, चमार टोला, इतने हज़ार या सौ साल बाद भी हमारा समाज टोलों का समाज है। मिट्टी के घरों का आकार और रूपरेखा टोलों के हिसाब से बदल जाती है लेकिन हर घर के सामने छप्पर और उसके पीछे बड़ा दरवाज़ा। कच्ची गलियां, रंभाते हुए जानवर, कच्चे-पक्के कुओं पर औरतों की भीड़, गलियों में दौड़ते नंग-धड़ंग बच्चे, बैलगाड़ियों की आवाजाही, कच्चे घरों के अंदर से निकलता धुएं का तूफान और कच्ची गलियों में गोबर के छोत। गांव का हर आदमी मुझे हैरत से देख रहा था। रहमत सबको बता रहा था। 'डिप्टी साहब के लड़कवा अहैं। अब हीन रहके खेती करिवहिये` दो-एक लोग पास आकर मिल रहे थे। इनमें ज्य़ादातर बूढ़े थे। सब कह रहे थे कि मैंने बड़ी अच्छा किया जो पुरखों का चौरा बसा दिया। इतनी ज़मीन गांव में किसी के पास नहीं है। ढंग से खेती करायी जाऐ तो सोना उगल देगी। घूमते हुए हम कंजरों के टोले में पहुंच गये। अब्बा के ज्यादातर बटाईदार कंजड़, चमार और लोध हैं। कंजरों ने एक घर के सामने खटिया बिछा दी और रहमत ने कहा कि मैं बैठ जाऊं। मैं बैठ गया और कंजड़ सामने ज़मीन पर बैठ गये। चर्चा होने लगी कि अगर पानी की व्यवस्था हो जाऐ तो धन के बाद गेहूं भी होने लगे।

असली आमदनी तो गेहूं में है। कंजड़ों ने कहा कि वे अच्छा गेहूं पैदा कर सकते हैं। उन्हें शायद यह पता नहीं था कि मैं तो खुद खेती कराना चाहता हूं यानी बटाईदारी ख़त्म करना चाहता हूं। हो सकता है ये डर उनके दिलों में हों और इसीलिए वे अपनी भूमिका को बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर रहे हों। चिराग जलने से पहले मैं लौट आया।

टीन के बड़े से शेड, जिसे यहां सब सायबान कहते हैं, के नीचे चारपाई पर लेटा मैं सोच रहा था कि गांव में रात कितनी जल्दी होती है। लगता है एक बड़ा-सा समुद्री जहाज़ अंधेरे और कोहरे में गायब हो गया हो। लाइट नहीं आ रही थी। सायबान के नीचे खूंटी पर लालटेन जल रही थी। सामने अहाता है और बीचोंबीच टीन का फाटक। दाहिनी तरह कुआं है और उससे कुछ हटकर नीम का पेड़। सायबानों के बीच में मकान के अंदर जाने का पुराना पहाड़ जैसा दरवाज़ा है। सायबानों के पीछे लंबे-लंबे कमरे हैं। किनारे पर कोठरियां हैं और लंबे कमरे के पीछे लंबे बरामदे

हैं। लंबा चौड़ा आंगन है। जिसके दाहिनी तरफ छोटी-छोटी कोठरियां बनी हैं। इनमें से दो-तीन की छतें गिर चुकी हैं। मैंने यह सोचा है कि एक लंबे कमरे में रहूंगा और पिछले दरवाज़ों से घर के अंदर वाला हिस्सा इस्तेमाल नहीं करूंगा। बरामदे के तौर पर सायबान ही काम आयेगा। कहा जाता है पिछली कोठरियों में जिन्न रहते हैं। उन्हें आराम से रहने दिया जाऐ।

अहाते का टीन वाला फाटक खुलने की आवाज़ आई तो सन्नाटे में अच्छी खासी डरावनी लगी। टार्च की रौशनी में रहमत आता दिखाई पड़ा। उसके साथ उसका लड़का गुलशन भी था। गुलशन के हाथ में खाना था। अपने बाप से बित्ताभर ऊंचा गुलशन कड़ियल जवान है।

यहां मेज़ नहीं है। कुर्सी नहीं है। सिर्फ चारपाइयां हैं या एक छोटा-सा तख्त़ है। तख्त़ पर मेरे आने के बाद दरी बिछा दी गयी है। ये मैंने सोचा भी कि अगर कभी कुछ लिखने का जी चाहे तो मेज़ के बगैर कैसे काम चलेगा? फिर ये सोचा कि शायद ही कभी यहां लिखने की ज़रूरत पड़े। बहुत से बहुत डायरी में खर्च और आमदनी का हिसाब। उसके लिए मेज़ कुर्सी की क्या ज़रूरत है।

गुलशन ने तख्त़ पर खाना लगा दिया। अरहर की दाल जिसमें असली घी खूब तैर रहा है। आलू की सब्ज़ी, सिरके में रखी गयी प्याज़, गुड़ की आधी भेली, मोटी, गेहूं की लाल रोटियां। पता नहीं क्यों होराइज़नग्रुप के नीचे सरदार के ढाबे में खाये राजमा चावल की बात सोचने लगा। फिर सरयू का ख्य़ाल आया। बेचारा वहीं होगा। कनाट प्लेस वाले टी-हाउस के सामने फटी चप्पल घसीटता। मैं खाने लगा। रहमत बताने लगा कि गोश्त और हरी सब्जी तो कम ही मिलती है यहां। वह कल खुरजी जाऐगा तो गोश्त लायेगा।

रात में देर तक नींद नहीं आई। दूसरे तरफ के सायबान में गुलशन लेटते ही सो गया था। लालटेन की रौशनी में काला सायबान कोई जीती-जागती चीज़ लग रहा था। सामने अंधेरे का महासागर। घर के अंदर जिन्नातों का मस्कन। सोचा कहीं तिलावते-कुरान की आवाजें न आने लगें। कोई बात नहीं है, आयें। लेटे-लेटे पता नहीं कैसे अहमद का ख्य़ाल आया। कहां होगा? कलकत्ता में अपनी सुंदर पत्नी इंदरानी के साथ या लंदन में लिप्टन की नौकरी में? या टाटा टी गार्डेन्स में. . . .और मैं? चलो अपने ऊपर हंसा जाऐ। ऊंह क्या बेवकूफी है. . .अहमद की सोच कितनी साफ है। कोई लाग-लपेट नहीं पालता। किस्मत भी है। ख़ैर किस्मत क्या है वह जिस क्लास में पैदा हुआ उसके फायदे हैं। वैसे शकील को नहीं हैं। वह तो बस्ती में अपने भाइयों और अय्याश अब्बाजान के षड्यंत्रों का शिकार हो रहा होगा। सीध है बेचारा। और अलीगढ़ में सब कैसे होंगे? जावेद कमाल? के.पी.? कामरेड लाल सिंह? एक फिल्म की तरह लेकिन कुछ सेकेण्ड में पिछले दस साल आंखों के सामने से निकल गये। अब मैं कहां हूं? उनसे कितना दूर? इस उजाड़ वीरान गांव में संघर्ष करता कि कुछ पाऊं. . कुछ कर सकूं. . .कुछ तो करना ही था यार। छब्बीस- सत्ताइस साल की उम्र में ये तो नहीं हो सकता कि मैं कुछ न करूं?

२----

धान कट चुका था और अब गेहूं बोना था। दो महीने खुरजी के बिजली ऑफिस में जूते घिसने के बाद कनेक्शन भी मिल गया था। बोरिंग होना थी मोटर बैठाना था। सो उम्मीद थी कि एक महीने में हो जाऐगा। मतलब गेहूं को पहला पानी देने के वक्त़ ट्यूबवेल तैयार होगा। सोचना यह था कि क्या पूरी चालीस बीघा खेती बटाईदारों से ले ली जाऐ और खुद खेती करायी जाऐ? अगर खुद खेती करायी जाऐ तो हल बैल और उसे ज्यादा मसला था हलवाहों का? वे कहां से आयेंगे? चालीस बीघा खेती कराने के लिए कम से कम तीन जोड़ी बैल और तीन हलवाहे चाहिए थे।

अब मुश्किल यह थी कि हलवाहों को बड़े किसानों ने पहले ही फंसा रखा था। रहमत ने बताया था कि ज्यादातर हलवाहे ठाकुरों के बंधुआ हैं। कुछ तो कई-कई पीढ़ियों से हैं। बाकी लोग हलवाहों को उधर कर्जा देकर उलझाये रखते हैं ताकि उन्हीं का काम करते रहें। ये सोचकर भी अजीब लगा कि ऐसे हलवाहे ही नहीं हैं जो पैसा लें और काम करें। मतलब आपको एक 'सर्विस` चाहिए। आप पैसा दें और सर्विस लें। लेकिन यहां तो हाल ही अजीब है। सर्विस आपको मिल ही नहीं सकती क्योंकि उस पर कुछ लोगों ने एकाधिकार बना रखा है। आप उसे कैसे तोड़ सकते हैं? पैसा देकर? मान लीजिए ठाकुर रणवीर सिंह ने पांच सौ के कर्ज में हलवाये को बंधुआ बनाया हुआ है और आप हलवाहे को पांच सौ दें और कहें कि तुम रणवीर सिंह के यहां से मुक्त होकर हमारे यहां आ जाओ? रहमत ने बताया कि पहले तो हलवाहा न तैयार होगा। इतना डर और आतंक है रणवीर सिंह का। दूसरा हलवाहे मान भी जाऐ तो रणवीर सिंह से हमेशा की अदावत हो जाएगी

. . . समझ लो भइया पक्की दुश्मनी और भइया ठाकुरों से दुश्मनी लेना ठीक नहीं है। बड़े ही साले उद्दण्डी हैं। अहीरों से भी बच के रहना ही ठीक है।"

"इसका मतलब है हलवाहे ही नहीं मिलेंगे और खेती ही नहीं हो पायेगी।" मैंने चिढ़कर कहा।

"नहीं खेती क्यों न हो पायेगी. . .अब खोजना पड़ेगा।" रहमत ने कहा।

"आपसे ग्राम सेवक मिलने आये हैं?" मैं सुबह के वक्त़ सायबान में बैठा फाटक खोलकर अंदर आते आदमी को देखकर रहमत ने बताया।

"ये क्या होता है?"

"अरे यही खेती ऊती के बारे में बताते हैं। खुद कुछ नहीं जानते। दुनियाभर को बताते फिरते हैं. . . गांव में तो इन्हें कोई फटकने नहीं देता . . .ब्लाक ऑफिस से हैं।"

"नमस्कार जी. . . र, उस आदमी ने इस गांव में पहली बार मुझे नमस्कार किया।

"नमस्कार. . .आइये।"

"मैं इस क्षेत्र का वी.एल.डब्ल्यू. हूं. . . 'विलिज लेविल वर्कर` मतलब ग्राम सेवक. . .मेरा नाम हरिपाल त्यागी है।"

वह बैठ गया। उसने अपना झोला रखा।

"पानी पिलवाया जाए आपको त्यागीजी?" रहमत ने पूछा। मुझे आश्चर्य हुआ कि यह पूछा क्यों जा रहा है। फिर ध्यान आया, हां जातिवाद. . .हो सकता है त्यागी जी मुसलमानों के यहां का पानी न पियें।

"हां पिलवाओ रहमत भाई।" मतलब त्यागी रहमत को पहले से जानते हैं।

"हमें तो श्रीमान बड़ी प्रसन्नता हुई जब पता चला कि एक एम.ए. पास व्यक्ति गांव में खेती कराने आ गये हैं।" त्यागी जी ने कहा .

"आप जैसे लोग तो गांव की तरफ देखते नहीं. . .यही हमारा और देश का दुर्भाग्य है. . .जब तक पढ़े लिखे लोग गांव में नहीं आयेंगे तब तक. . ."

उनकी बात काटकर रहमत बोला "य लेव त्यागी जी पानी पियो।" तश्तरी में पानी का गिलास के साथ बढ़िया गुड़ की आधी भेली भी थी। त्यागी जी ने मजे से पूरा गुड़ खाया और पानी पिया और पानी लाने को कहा।

"मैं तो जी पश्चिमी उत्तर प्रदेश का हूं. . .मुज़फ्फ़रनगर. . .आप जानते ही हैं विकसित क्षेत्रों में माना जाता है। किसान प्रगतिशील हैं. . .यूरिया वग़ैरा का प्रयोग करते हैं. . .इस क्षेत्र के किसानों की तो समझ में ही नहीं आता. . .वे तो इस पर तैयार नहीं है कि उनकी पैदावार चार गुना हो जाऐ. . .अरे पांच मन का बीघा पैदा करते हैं. . .मैं बीस मन के बीघा की तो गारंटी देता हूं।"

ग्राम सेवक त्यागी से मिलकर मेरा उत्साह चौगुना हो गया। वाह क्या आदमी है, खाद बीज पानी और खरीद सबके बारे में 'डिटेल्स` हैं इसके पास। यह भी बता रहा है कि रासायनिक खाद पर सब्सिडी है। अगर चाहूं तो सरकारी बैंक 'लोन` भी दे सकता हैं यह भी कहता है कि वह तो रोज़ आकर मेरी फसल देख सकता है। यह ध्यान रखेगा कि कोई कीड़ा-वीड़ा न लगने पाये। मैंने पक्का निश्चय कर लिया कि उसकी सलाह पर चलूंगा।

रहमत ने बड़ी मुश्किलों से एक हलवाहे का इंतिज़ाम किया। तन्ख्वाह ठहरी दो सौ रुपये महीने। जो यह सुनता था दांतों तले उंगली दबा लेता था। गांव में हलवाहों को पच्चीस पचास महीना और दो बीघा खेत से ज़्यादा न मिलता था क्योंकि वे बंधुआ या कर्जदार हुआ करते थे। अब मैं कहां से लाता ऐसे हलवाहे। ग्राम सेवक ने खाद की बात पक्की कर दी। यह कहा कि नया बीज आर.आर. इक्कीस आया है, इसे ही आप बुआवें क्योंकि इसका पौध गिरता नहीं, छोटा होता है और बालियों में दाने भी ज्यादा लगते हैं। यह पंतनगर का बीज है।

यहां इतना काम था कि अपने ऊपर यह सोचकर हंसने का समय भी नहीं मिलता था कि तीन महीने पहले मैं पत्रकारिता की दुनिया में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचारों के साथ उठता बैठता था और अब . . .मैंने कई सप्ताह से अखबार नहीं पढ़ा है। मुझे इस पर खेद या पछतावा भी न था। मैं यह मान चुका था कि वह दुनिया 'फ्राड` और धोखा है। मेरा वहां कोई गुज़र नहीं है और अगर मैं अपनी जगह बना सकता हूं तो यहीं और सिर्फ यहीं क्योंकि पैसा मैं यहीं कमा सकता हूं। बिन पैसा सब सून। बड़े-सा बड़ा दर्शन, संगठन, समाज, देश और पता नहीं क्या-क्या सब बेकार है बिना पैसे के। कोई दूसरी समानान्तर व्यवस्था मनुष्य नहीं बना सका है जहां पैसे की केन्द्रीय भूमिका न हो। लेकिन इतना तय है कि मानवता के लिए ऐसी व्यवस्था स्थापित करना एक अद्वितीय उपलब्धि होगी जो पूंजी के बजाय श्रम, बुद्धि----और ज्ञान से संचालित हो।

अब सवाल यह था कि हलवाहे से तो चालीस बीघा की खेती नहीं हो सकती। मैंने रहमत से कहा कि दूसरे हल से मैं जोत लूंगा। वह मेरी तरफ अविश्वास से देखता रहा और फिर हंसने लगा।

"क्यों क्या बात है? मुझमें क्या कमी है?"

"भइया हल चलाना सीखना पड़ेगा. . .कहीं जानवर के पैर में लग गया तो हज़ार डेढ़ हज़ार की जोड़ी बेकार हो जाएगी।"

मजबूरी में तय पाया कि सिर्फ दस बीघा में गेहूं बोया जाऐ. . .फिर आगे देखा जाऐगा। कुछ गांव के बूढ़े आकर कहते थे ये जमीन धनई है। इसमें गेहूं न होगा। ग्राम-सेवक कहता था कि ये लोग पागल हैं, जाहिल हैं। ये दोमट माटी है इसमें तो गेहूं ऐसा लहलहायेगा कि लोग देखते रह जाऐंगे। मैं ग्राम सेवक के तर्कों से संतुष्ट हो जाता था जबकि गांव के दूसरे लोग उन तर्कों के साथ अनुभव भी जोड़ लेते थे और उसमें संदेह, शक और 'पता नहीं क्या हो` वाला भाव जुड़ जाता था। काफी समय बाद मैं समझ पाया कि यही शायद इन लोगों की शक्ति है। संदेह करना, फूंक-फूंककर कदम रखना, जहां सब कुछ अच्छा ही अच्छा दिखाई दे रहा हो वहां कुछ थोड़े अनिष्ट की कल्पना कर लेना ताकि अपनी तैयारी पूरी रहे।

काम कोई एक न था और काम इस तरह निकल आते थे जैसे जादू के पिटारे से रूमाल निकलने लगते हैं। ब्लाक का चक्कर, तहसील का दौरा, सहकारी बैंक में काम-काज, बिजली दफ्तर, कुंजड़े से पैसा वसूल करना, डांगर की जोड़ी खरीदना, बीज गोदाम में अपनी मांग दर्ज कराना, खेतों की पैमाइश के लिए पटवारी के घर के चक्कर, बिजली का मोटर लेने के लिए कानपुर का दौरा. . .इन सब कामों में दिन पूरी तरह गुजरता था। रात में खाना खाने के बाद चौपाल जम जाती थी। बटाईदार जानते थे कि मुझे खुश न रखा गया तो जोतने को ज़मीन न मिल पायेगी। मेरे लिए बड़ी मुश्किल थी कि किसे मना करूं। ये सब पिछले बीस-बीस साल से बटाई पर यह ज़मीन जोत रहे थे और कायदे से उनका 'शिकमी हक` बन गया था । लेकिन अब्बा यानी डिप्टी साहब के कारण कागज़ों पर कभी उनका नाम न आ पाया था। तो क्या करूं? यूनिवर्सिटी में पढ़ा लिखा, मार्क्सवाद के सिद्घांत, हक की लड़ाई, सर्वराहारा के प्रति सहानुभूति या पैसा? अब्बा की मर्जी के बगैर मैं कोई बड़ा फैसला तो ले भी न सकता था। सोचा जैसे चल रहा है वैसा ही चलने दूं और कोई बीच का रास्ता निकालूं। जो बटाईदार ठीक से काम नहीं करते उन्हें हटा दूं फिर देखा जाऐगा।

रात के खाने के बाद रामसेवक कंजड़, किशना चमार, यादव पहलवान और नंबरी आ जाते थे। रामसेवक बटाईदार है। दस बीघा जोतता है। नौजवान आदमी है। खेती से छुट्टी मिलती है तो जंगली जानवरों के शिकार पर चला जाता है। किशना पक्का खेतिहर है। भूमिहीन है और बटाई की खेती करता है। यादव पहलवान के पास अपनी स्वयं की ज़मीन है। उनके पिता जी और अब्बा में कुछ सहयोग और भाईचारे के संबंध रहे हैं, इसलिए वो आ जाते हैं। नंबरी कुर्मी हैं। ज़मीन कम है उनके पास इसलिए हमारे बटाईदार हैं। जैसे गांव के हंसोड़, मज़ाक़िया लोग होते हैं वैसे ही नंबरी हैं। बीड़ी पीने के शौकीन हैं और रोज़ रात में दो-चार बीड़ी पी जाते हैं। किशना और रामसेवक नीचे ज़मीन पर बैठते हैं। नंबरी और यादव पहलवान तख्त़ पर बैठते हैं। यह भी नियम या इस तरह के नियम कितने पक्के हैं इसका अंदाज़ा मुझे पहले न था। खेती किसानों की बातें, इधर उधर की बातें, गांव के नए हालात, तहसील, थाने की बातें, ग्राम सेवक के किस्से और न जाने क्या-क्या छिड़ जाते हैं। मैं ख़ामोश ही रहता हूं क्योंकि उसमें जोड़ने के लिए मेरे पास कुछ नहीं होता। इन महफ़िलों में रहमत भी रहता है। वह भी नीचे लेकिन सायबान के मोटे लोहेवाले खंभे से टिककर बैठता है। बटाईदार उसे बहुत मानते हैं क्योंकि उसी से डिप्टी साहब की आंखें और कान माना जाता है।

३----

दो महीने बाद गेहूं लगवाकर मैं शहर आया तो शहर इतना बड़ा लगा कि जिंदगी में कभी न लगा था। यह सोचकर हंसी आ गयी कि कुछ बड़ा या छोटा नहीं होता। यह सब हमारा आपका नजरिया है जो विभिन्न संगतियों से बनता है। बस अड्डे में अपनी दुकान पर ताहिर मिल गया। वह खुश हो गया और बोला- "अरे यार पूरे दो महीने

लगा दिए. . .कहो क्या-क्या करा आये?" मैंने उसे बताया। दुकान पर बैठकर हम चाय पीने लगे। हाजी जी नमाज़ पढ़ने गये थे।

"यार झुलस गये तुम।" वह मेरी तरफ देखकर बोला। मुझे खुशी हुई। काम में झुलसना तो बड़ी बात है। लेकिन प्राब्लम यह थी कि मैं दो महीने से अखबार न देख सका था। खुरजी में इधर-उधर कभी पढ़ने को मिल जाए करता था लेकिन अखबार से जो सिलसिला बनता है वह टूट चुका था।

घर आया तो अम्मां देखकर खुश हो गयी। खाला ने मेरे पसंद के खाने चढ़वा दिए। अब्बा हैरत से सुनते रहे कि इन दो महीनों में मैंने क्या-क्या कर डाला था। वे हिसाब लगाने लगे कि दस बीघा में जैसा कि ग्राम सेवक कहता है, बीस मन का बीघा न सही अगर अट्ठारह मन का बीघा भी हुआ तो कोई साढ़े तेरह हज़ार का गेहूं हो जाऐगा। अगली फसल पर अगर बीस बीघे में बोआई करायी गयी तो. . .बहरहाल मैं भी खुश था कि चलो कुछ तो बात बन रही है। बाग उठाने से जो पैसा मिला था वह खेती में लगा दिया था।

घर पर मुझे तीन ख़त मिले। एक अहमद का ख़त था। पढ़कर मैं हैरान हो गया। उसने लिखा था कि इण्डियन हाई कमीशन, लंदन में

उसकी इन्फ़ारमेशन ऑफीसर के ओहदे पर पोस्टिंग हो गयी है। यह पोस्टिंग मंत्री ने दी है। जाहिर है उसके पीछे हाथ इंदरानी के अंकिल का हाथ ही था। मैं सोचने लगा यार थर्ड क्लास बी.एस-सी. फारेन सर्विस में आ गया और अब मज़े करेगा। यही फायदा है 'कान्टेक्ट्स` का। उसने जोश में आकर मुझे लंदन आने की दावत भी दे डाली थी। ठीक है अब मैं जा सकता हूं, मेरे पास पैसा होगा। पैसा जिंदगी को चलाने वाली गाड़ी का पहिया। दूसरा ख़त शकील का था। उसने लिखा था कि यार भाइयों के तंग करने, कारोबार में हिस्सा न देने और वालिद साहब की लापरवाही का शिकार होने से बचने का एक ही रास्ता मुझे नज़र आया। मैं पॉलीटिक्स में आ गया हूं। मैंने कांग्रेस ज्वाइन कर ली है। अब साले मुझसे घबराते हैं। यहां कांग्रेस के अध्यक्ष आर.के. तिवारी हैं। तुम दिल्ली से उन पर कोई दबाव डलवाकर मुझे युवा कांग्रेस का ज़िला अध्यक्ष बनवा दो तो मज़ा आ जाऐ। मैं एक-एक को सीध कर दूं। दो अच्छी खबरों के बाद तीसरे खत् में एक बुरी ख़बर थी। अलीगढ़ से के.पी. ने लिखा था, 'जावेद भाई की कैंटीन बंद हो गयी। नए वाइस चांसलर ने कैंटीन का ठेका अपनी पत्नी की सहेली को दे दिया है। कुछ लोग कहते हैं ये तो सिर्फ नाम के लिए है। ठेका वी.सी. की पत्नी को ही मिला है। चार-पांच हज़ार लड़के रोज़ कैंटीन में आते हैं। तुम समझ सकते हो क्या आमदनी होती होगी। जावेद भाई ने बड़े हाथ पैर मारे लेकिन वाइस चांसलर ही नहीं चाहते तो कोई क्या कर सकता है। जावेद भाई का परिवार बड़ा है, दो निठल्ले भाई और उनका परिवार भी जावेद भाई के साथ ही हैं। इसके अलावा उनका अपना परिवार। सौ रुपये रोज़ विल्स सिगरेट और पान का खर्च. . .और जाने क्या-क्या. . .बहरहाल बहुत परेशान है. .यूनिवर्सिटी का घर एलाट कराया हुआ है। आज तक अपना घर नहीं बना सके हैं जबकि पिछले पन्द्रह साल से कैंटीन चला रहे थे।"

मैं सोचने लगा, यार अच्छे आदमी इतने अच्छे क्यों होते हैं कि अपने साथ दुश्मनी करने लगते हैं? जावेद कमाल अपनी तमाम कमियों के बावजूद हीरा आदमी है. . .हर ज़रूरतमंद की मदद के लिए तैयार।

यारों पर जान छिड़कने वाले, धर्म, जाति, राष्ट्र, रंग, नस्ल की सीमाओं से ऊपर. . .अच्छे शायर. . . लेकिन ये अपने आपसे दुश्मनी क्यों करते रहे? हो सकता है यह जानबूझ न की गयी हो अनजाने में हो गयी हो, लेकिन है तो

दुश्मनी। जब अच्छे दिन तो रोज़ की कमाई रोज़ उड़ा दी जाती थी। जाड़ों में पाए खिलाने की दावत में पच्चीस-तीस लोगों से कम नहीं होते थे। गाजर का हलुए की दावत अलग होती थी। पान सिगरेट दोस्तों के लिए मुफ्त था। फिल्म दिखाने ले जाते थे तो रिक्शे के किराये से लेकर इंटरवल की चाय तक के पैसे कोई ओर नहीं दे सकता था. . . ये सब क्यों और इसका क्या मतलब था? पैसा खर्च करना खुशी देता है तो गम़ भी देता है। लेकिन शायद उनके संस्कार ऐसे थे, परवरिश ऐसे माहौल में हुई थी, खानदान ऐसा था जहां पैसे का कोई महत्व न था। जमींदार, जागीरदार पैसे के महत्व को नहीं जानते। अरे क्या जागीर चले जाएगी? ज़मींदारी की आमदनी तो ऐसी धरती है जो कभी बंजर नहीं पड़ती।

पुलिया पर फिर महफ़िलें जमने लगीं। उमाशंकर अपने घर से गोश्त पकवाकर ले आते थे। मुख्तार पैजामे में घुसेड़कर अंग्रेजी की बोतल लाता था। पुलिया जो किसी पंचवर्षीय योजना में ऐसे नाले पर बनी थी जो था ही नहीं, बैठने की एक आदर्श जगह थी। न तो इस पुलिया पर से कोई सड़क गुजरती थी और कोई चलता हुआ रास्ता था। दूर-दूर तक फैले खेत थे और उनके पीछे कुछ पुरवे थे। पुलिया पर दरी बिछाकर सब पसर जाते थे। ऊपर खुला आसमान और नीचे खिलता हुआ अंधेरा. . .निपट अंधेरा। इन महफिलों में कलूट भी आने लगा था जो इस बात पर आज तक गर्व करता था कि कलकत्ता में ज्योति बसु के साथ जेल गया था। कलूट का अण्डे मुर्गी का कारोबार ठप्प हो गया था और खर्चा जानवरों की बाज़ार में दलाली से ही चलता था। कलूट के साथ शमीम साइकिल वाला भी आ जाता था। वह पीता न था। उसे मज़ा आता था हम लोगों के लिए छोटे मोटे काम करने में। 'लाला दौड़ के एक बीड़ी का बण्डल लै आओ।` वगैरा. . .इन्हीं महफिलों में दुनिया जहान की बातें होती थीं। राजनीति, मुसलमानों की स्थिति, सोवियत यूनियन, चीन और अमेरिका बहस के मुद्दे बना करते थे।

केसरियापुर में दो महीने तक मुझे लगा था कि मैं बोला ही नहीं हूं। क्या बोल सकता था? बीज, खाद, पानी, पैसा, निराई, गुड़ाई. . .ये क्या कोई 'बात` है? न तो वहां मैं किसी से अपने राजनैतिक विचारों की चर्चा कर सकता था और न अपने साहित्यिक कामों पर बात कर सकता था। इसलिए लगता था कि दो महीने खामोश रहा हूं। इन महफ़िलों में वह कमी पूरा होने लगी। एक दिन बातचीत में उमाशंकर ने कहा "यार साजिद तुम अपनी पार्टी की इतनी तारीफ करते हो. . .तुम्हारी पार्टी का यहां कोई आदमी नहीं है क्या. . .हम लोग भी मिलें. . .देखें।" ये सुनकर मुझे खुशी हुई। उमाशंकर अपने को पक्का कांग्रेसी कहा करता था लेकिन इन महफिलों में हुई बहसों ने उसे विचलित कर दिया है। मुख्तार तो मुस्लिम लीग से उखड़ ही चुका था। ताहिर को राजनीति में रुचि नहीं है। शाहिद मियां की दोस्ती की वजह से इलेक्शन में कांग्रेस का काम कर देता है और एक 'प्रोटेक्शन` भी मिला हुआ है। ख़ैर पता-वता लगाया गया तो आर.के. मिश्र एडवोकेट का पता चला कि वो सी.पी.एम. के जिला सचिव हैं।

दो दिन बाद हम सब एक साथ उनके घर पहुंच गये। बाद में उन्होंने बताया था कि इतने लोग, इस शहर में, पार्टी के नाम पर उनसे मिलने कभी नहीं आये थे। खूब बातचीत हुई। कामरेड मिश्रा ने साहित्य दिया। 'स्वाधीनता` लेने की बातें भी तय हुई। काम क्या हो रहा है यह पूछने पर कामरेड थोड़ा कन्नी काट गये बोले कुछ कामरेड किसान सभा का काम देख रहे हैं। एक दो तहसीलों में अच्छा काम है. . .वगैऱा वगैरा. . .तो ये समझते देर नहीं लगी कि शहर में पार्टी का काम है नहीं।

केसरियापुर जाने से पहले एक दिन अचानक बावरचीखाने में सल्लो को बैठा और ऐसा लगा जैसे पूरा वजूद बज उठा हो। सल्लो ने मुझे देखा और मुस्कुरा दी. . .पुराने पन्नों को खोलती और रिश्तों को आधार देती मुस्कुराहट। उसके साथ बिताई रातें उंगलियों के पोरों पर नाचने लगीं। फिर घर में पता चला कि उसके अब्बा को किसी नई मिल में नौकरी मिल गयी जो यहां से दूर है। इसलिए सल्लो और उसकी मां को बुआ के यहां छोड़ा गया है।

सल्लो इस पूरे संसार में अकेली है जिससे मेरे संबंध बने थे। सल्लो को मैंने कहां-कहां याद नहीं किया है। सल्लो मेरे दिलो-दिमाग पर छायी रही है। यह दुबली-पतली औसत कद और सामान्य नाक-नक्शे वाली लड़की चांदनी रात में जब 'बेहिजाब` हुआ करती थी तो सुख के सागर खुल जाते थे। मुझे उससे तन्हाई में इतना कहने का मौका मिल गया कि वह रात में ऊपर आ जाऐ। वह हंस दी और बोली- "देखेंगे . . . अभी से क्या कह दें।" चेहरे पर तो उसके भी खुशी झलक रही थी।

कोठे वाले कमरे के सामने वाली छत पर मच्छरदानी से घिरा मैं घर के अंदर से आने वाली आवाज़ों पर कान लगाये था। धीरे-धीरे घर का काम करने की आवाजें मद्धिम पड़ती गयीं। धीरे-धीरे अंधेरे के जुगनू जगमगाने लगे और मुझे लगा अब इंतिज़ार की घड़ियां खत्म हुआ ही चाहती है। बगैर किसी आहट के एक परछाईं चलती हुई मेरे पलंग तक आई और मैंने उठकर उसे बिस्तर पर खींच लिया। वह बात करना चाहती थी लेकिन मेरे पास कोई शब्द नहीं था सिर्फ शरीर था, हाथ था, आंखें थी, वह तकिये पर सिर रखकर लेट गयी और एक गहरी सांस ली। उसकी गहरी सांस ने मुझे पलट दिया। मेरी जुबान खुल गयी।

"कैसे रहीं तुम?"

"आपको क्या. . .आपने तो पलटकर पूछा तक नहीं।"

"ये मत कहो. . .मैं तुम्हें याद करता रहा।"

"याद करने से क्या होता है. . .अब्बा का रिक्शा ट्रक के नीचे आ गया था। वो तो जान बच गयी. . .यही अच्छा हुआ। चोट भी खा गये थे. . .डिप्टी साहब ने ही इलाज कराया था।"

"तुम गांव चली गयी थीं?"

"हां, जब तक कटाई चलती रही. . .वही अम्मां के साथ जाती थी. . .फिर वहां क्या था. . .वापस आ गये। आप तो साल डेढ़ साल बाद आये।"

"हां मैं जंगल में फंस गया था।"

वह हंसने लगी। देख तो नहीं पाया लेकिन अनुमान लगा लेना आसान था कि उसके दाहिने गाल में हल्का-सा गड्ढा पड़ा होगा। वह जब हंसती है तो यही होता है।

दिल्ली में क्या जंगल हैं।"

"हां बड़ा भयानक जंगल है।" मैं उसे धीरे-धीरे आप बीती सुनाने लगा जो किसी को नहीं सुनाई है। उसके हाथ की उंगलियां मेरे सीने के बालों को सीध करती रहीं। मैं सोचने लगा औरत से बड़ा हमराज़ कोई नहीं हो सकता। अपने

बारे में, वह चाहे जीत हो या हार हो, प्रेमिका को बताने और इस तरह बताने कि बातचीत का कोई गवाह न हो सच्चाई का अनोखा मज़ा है। वह सुनती रही और खुलती रही। हम धीरे-धीरे एक दूसरे को महसूस करने लगे। मुझे लगा कि यह संबंध कोई सतही हल्का या केवल सेक्स संबंध नहीं हो सकता। इसमें और भी बहुत कुछ है, क्या है? मैं यह सोचकर डर गया। वह पता नहीं क्या सोच रही थी। हाथों के स्पर्श ने डर को पीछे ढकेल दिया। चारों तरफ अंधेरी रात की चादर तनी थी और वह कह रही थी कि तुम दोनों को कोई नहीं देख रहा है। ये चक्कर क्या है जो बात हमें मान लेनी चाहिए हम नहीं मानते? जो बातें तय हो जानी चाहिए हम क्यों नहीं करते? पहली बार उसके साथ लगा कि यह ठीक नहीं है लेकिन इस बीच उसकी सांसें तेज़ हो गयी थीं। मैं अपने को रोकना चाहता भी तो नहीं रोक सकता था।

रातभर हम एक सागर में उतरते तैरते और किनारे पर आते रहे। किनारे पर हमारे लिए सवाल थे। इसलिए फिर लहरों के बीच चले जाते थे और आदिम इच्छाओं के संसार में हमें शरण मिल जाती थी। वह साधारण नहीं है। तट पर आकर जो बातें करती है वे अंदर तक उतर जाती हैं। मैं तय नहीं कर पा रहा था कि उससे चलते समय क्या कहूंगा। कचहरी के घड़ियाल ने चार का घण्टा बजाया। वह धीरे-धीरे कपड़े पहनने लगी। अच्छा है कि जाने से पहले उसने कुछ नहीं पूछा। शायद उसे मालूम था कि वह जो कुछ पूछेगी उसका जवाब मेरे पास नहीं है। वह मुझे शर्मिन्दा नहीं करना चाहती थी।

हालांकि शहर में मैं नहीं रहता था लेकिन आना-जाना लगा रहता था। जब भी आता तो पार्टी सेक्रेटरी आर.के. मिश्रा से मुलाकात हो जाती । उन्नाव निवासी मिश्रा जी देखने-सुनने और व्यवहार में खासे पंडित हैं। मस्त हैं, बातूनी है, खाने-पीने के शौकीन हैं, आनंद लेने के पक्षधर हैं काम को बहुत सहजता से करते हैं। गांव में घर ज़मीन है जहां से साल भर खाने लायक अनाज आ जाता है। दस-बीस रुपये रोज़ वकालत में भी पीट लेते हैं। मिश्रा जी कई-कई दिन शेव नहीं कराते। हफ्ते दो हफ्ते में नाई की दुकान जाकर जब शेव बनवा लेते हैं तो उनकी शक्ल बिगड़ जाती है। चेहरे पर जब तक बालों की खूंटियां नहीं निकल आतीं तब तक उनका व्यक्तित्व मुखरित नहीं हो पाता।

मिश्रा जी के माध्यम से दूसरे पार्टी सदस्यों से भी परिचय होने लगा। पंडित दीनानाथ से मिला। पंडित जी स्थानीय पार्टी के प्रवक्ता हैं। पूरे शहर में मार्क्सवाद की 'सुरक्षा` करने की ज़िम्मेदारी उन्हीं पर रहती है। जब कोई किसी पान की दुकान पर मार्क्सवाद पर प्रहार करता है तो बचावपक्ष अंत में यही कहता है कि पंडित जी से बात करो। पंडित जी द्वंद्वात्मक भौतिकवाद पर हिंदी में एक किताब लिखने की भी सोच रहे हैं। सूरज चौहान पार्टी में हैं, वकालत करते हैं और किसान मोर्चे पर सक्रिय हैं। बलीसिंह लकड़ी का काम करते हैं। पार्टी सदस्य हैं। आक्रामक किस्म का व्यक्तित्व है। पैसे वाले हैं। पार्टी मीटिंगों में चाय-पानी के खर्च का ज़िम्मेदार बनते हैं। 'आबरु` रायबरेलवी भी पार्टी के सदस्य हैं। शहरी मुद्दों और भ्रष्ट अधिकारियों पर शायरी करते हैं। शहर के मुशायरों में स्थानीय शायरों और कवियों में सबसे वरिष्ठ माने जाते हैं। इसके अलावा कुछ ग्रामीण किस्म के सदस्य भी हैं जो किसी गिनती में नहीं आते। उन्हें मिश्रा जी काम बांटा करते हैं।

धीरे-धीरे मैं इन सबके सम्पर्क में आया और मैंने अपनी टीम को मिश्रा जी के हवाले कर दिया। मेरी समझ में नहीं आता था कि पार्टी का काम यहां कैसे आगे बढ़ सकता है? मज़दूर हैं नहीं इसलिए ट्रेड यूनियन का सवाल ही नहीं

पैदा होता। किसान सभा बनी हुई हैं पर उसके पास क्या मुद्दे हैं? मज़दूरी का मुद्दा बड़ा संवेदनशील है क्योंकि छोटे किसान तक जो किसान सभा के सदस्य हैं इस मुद्दे पर चुप ही रहते हैं। यह डर रहता है कि इससे बड़ा बवाल खड़ा हो जाऐगा। पुलिस उत्पीड़न के मुद्दे ज़रूर हैं पर वे कितने हैं? और व्यापक जन समर्थन का आधार बन सकते हैं या नहीं? मिश्रा जी से इन बातों पर चर्चा होती थी। उनके पास लखनऊ से जो लाइन आती थी, जो शायद दिल्ली से चली होती थी, उसकी बातें करते थे। बहरहाल आंदोलन कैसे शुरू किया या बढ़ाया जाऐ इसके बारे में हमारे पास कोई जानकारी नहीं थी। सदस्यता बढ़ाने का अभियान ज़रूर चलाते रहते थे।

दूसरा पानी लगने के बाद गेहूं ऐसा फनफना के निकला कि गांव वाले हैरान रह गये। इस ज़मीन में कभी गेहूं तो हुआ ही नहीं था। ग्राम सेवक इसे अपनी सफलता मानते थे। एक दिन कहने लगे साजिद जी आप देखते जाओ एक दिन मैं आपको उत्तर प्रदेश के आदर्श किसान का पुरस्कार दिलवा दूंगा। यहां मुख्यमंत्री आयेंगे।

गांव के बूढ़े किसान फसल देखने आते। कुछ मेरी किस्मत को सराहते और कुछ रासायनिक खाद की तारीफ करते। बटाईदारों में एक बीघा गेहूं किशना और दो बीघा रामसेवक ने लगाया था। उनकी भी फसल अच्छी थी। मुझे लग रहा था कि बस पाला मार लिया। अब अगले साल पूरे चालीस बीघा में गेहूं लगवाऊंगा। लोग ये भी कहते थे कि पैसा गेहूं धन में नहीं है, पैसा तो आलू और घुइयां में है। खड़ा खेत बिक जाता है। कुंजड़े खरीद लेते हैं। आलू अच्छा हो तो पांच छः हज़ार का बीघा जाता है। ये सब सुनते-सुनते मैं इतना भर गया कि सोचा चलो आलू लगवा कर देखते हैं। खेत की खूब तैयारी होने लगी। ग्राम सेवक आ गये। उन्होंने खाद की ज़िम्मेदारी ले ली। एक 'प्रगतिशील किसान` से बीज खरीदा गया और आलू लग गया।

हर चीज़ या हर काम यहां 'अधिया` पर हो जाता है। खेत ही अधिया पर नहीं जाते जानवरों की देखरेख भी अधिया पर होती है। तलाब में सिंघाड़ा भी अधिया पर लगता है। गोबर से कंडे पाथने का काम भी अधिया पर होता है। नंबरी ने मुझसे कहा था कि मैं अपने जानवरों के गोबर के कंडे पाथने का काम उसके साथ अधिया में करा लिया करूं। मैं तैयार हो गया था। अच्छा है चार पैसे की आमदनी हो जाएगी और पथे पथाये सूखे कंडे जलाने के काम भी आयेंगे।

अगले दिन से अधमैली साड़ियों में परछाइयां शाम ढले आने लगीं और कंडे पाथने का काम शुरू हो गया। अहाते में दूसरी तरह कंडे पाथ कर लगाये जाने लगे और सूखे कंडे दूसरे सायबान में जमा होने लगे। अधमैली, मलगिजी साड़ियों में दो परछाइयां जो आती हैं उनमें एक नंबरी की औरत है और दूसरी नंबरी की लड़की है। नंबरी की लड़की का विवाह हो चुका है। वह अपनी आठ-दस महीने की लड़की को लेकर आती है। लड़की को वह दूसरे सायबान में लिटाया करती थी। एक दिन मैंने कहा कि इसे दूसरे सायबान में मत लिटाया करो। कोई कीड़ा-वीड़ा न काट ले। इस सायबान में जहां मैं बैठता हूं वहां लिटाया करो। अगले दिन से यही होने लगा। नंबरी की लड़की जब अपनी बच्ची को तख्त़ पर लिटाने आती तो मैं उसे ध्यान से देखता। शारीरिक श्रम की वजह से उसका जिस्म हर तरह से सुंदर है। छोटी-सी नाक, छोटी सी आंखें, गोल चेहरा, कुछ ऊपर को उठे हुए गाल इतना आकर्षित नहीं करते जितना शरीर करता है। नपा-तुला, सीधा, मज़बूत, कर्मठ जीता जागता गेहुंए रंग का शरीर जिसकी सच्चाई अधमैली धोती के नीचे से विद्रोह करती रहती है।

रहमत शहर से लौटा तो उसके पास दीगर चीजें तो थीं ही यानी खाला ने चले का हलुवा भेजा था, अम्मां ने नए कुर्ते पजामे भेजे थे लेकिन इनसे कीमती चीज़ यानी एक ख़त था। जहां मैं बात करने को तरस जाता हूं वहां ख़त से लगता था नई ज़िंदगी आ गयी है। जिस दुनिया को छोड़कर, जिसकी रंगीनी से, जिसके अभावों और मज़ों से मैं वंचित हो गया हूं वे सामने आ गये हैं। लिफाफे पर भेजने वाले का नाम और पता छपा था। पढ़ कर मज़ा आया। मुहम्मद शकील अंसारी, मंत्री युवा कांग्रेस. . .। वाह बेटा वाह, मार लिया हाथ। जल्दी-जल्दी ख़त खोला। ख़त क्या था पूरी दास्तान थी। शकील ने बड़े विस्तार से लिखा था कि उसने यह पद कैसे प्राप्त किया यार मैंने क्या नहीं, सबसे पहले तो शहर काज़ी को पटाया। उनको मस्जिदों के लिए और मदरसों के लिए चंदा दिलाया। उसके बाद अपने पंडित जी से उसकी मीटिंग करायी। काज़ीजी कभी किसी राजनीतिज्ञ से नहीं मिलते हैं लेकिन मेरा दबाव काम कर गया। एक यहां मेरा पुराना स्कूल का दोस्त है जो नेपाल के जंगलों से लकड़ी लाता है। काफी पैसा कमा लिया है उसने। उससे बात करके मैंने पंडित जी के बेटे को एक सेकेण्ड हैंड मोटर साइकिल सस्ते में दिला दी। पंडिताइन को सालभर के लिए गेहूं लगभग आधे दामों में दिला दिया। ये सब पापड़ बेलने पड़े और फिर पंडित जी को बार-बार बताया कि जिले में अंसारी बिरादरी के कितने वोट हैं। बहरहाल किसी तरह पंडित जी काबू में आये तो ठाकुर अजय सिंह बिदक गये। उनको एक प्रभावशाली ठाकुर से ठीक कराया। पर अब समझो लाइन सीधी है। कल ही मैंने इनकमटैक्स इंस्पेक्टर को अपनी दुकान पर भेज दिया था। साले दोनों भाइयों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। मैंने मामला रफ़ा-दफ़ा कराया और भाइयों से कहा कि कायदे से मुझे मेरे हिस्से का मुनाफा देते जाओ नहीं तो जेल चले जाओगे। देखो यार जो लोग मुझे कुत्ता समझते थे, आज कुत्ते की तरह मेरे पीछे घूमते हैं। सौ पचास लौण्डों का एक गिरोह भी मेरे साथ खड़ा हो गया है। जो काम पुलिस से नहीं हो पाता वह काम ये कर देते हैं। अब तो लखनऊ के भी दो-चार चक्कर लगा लेता हूं। दुआ करो कि आगे का काम यानी टिकट मिल जाऐ।` मैं खत़ पढ़कर सोचने लगा। शकील ने अच्छा किया या बुरा किया? मेरी समझ में नहीं आया।

४----

शहर गया तो मालूम हुआ कि मिश्रा जी से मेरी मण्डली मिलती रहती है। कलूट को पार्टी का सदस्य बना लिया गया है। आधार यही बना था कि दस साल पहले अपने कलकत्ता प्रवास के दिनों में कलूट ज्योति बसु के साथ जेल गये थे। इतने समर्पित कार्यकर्ता को पार्टी सदस्य क्यों न बनाया जाता लेकिन कलूट ने पार्टी मेम्बर बनने का जो विवरण दिया था वह बहुत अलग था।

कलूट ने बताया कि मिश्रा जी ने कहा कि कचहरी आ जाना वहां फारम भरवाएंगे। जब ये कचहरी गए तो मिश्रा जी ने इनसे कहा कि तुम्हें मालूम है तुम एक आल इंडिया पार्टी के सदय बन रहे हो। तुम संसार के कम्युनिस्ट आंदोलन में शामिल होने जा रहे हैं। इस पार्टी की मेम्बरशिप के लिए तो लोग तरसते हैं। बहुत भाग्यशाली होते हैं जिन्हें मेम्बरशिप मिलती है। तुम्हें एक कार्ड मिलेगा जिसे देखकर अच्छे-अच्छे अधिकारी एक बार चौंक जाए करेंगे। इस तरह की भूमिका बांधने के बाद मिश्रा जी ने कहा- "कलूट भाई अपनी खुशी में दूसरे कामरेडों को शामिल करो। देखो यहां पंडित दीनानाथ बैठे हैं, सूरज चौहान हैं, आबरु साहब हैं, अब तुम इस बिरादरी में शामिल हो रहे हो।"

"अरे साफ-साफ कहो कि चाय पिया चाहत हो।", आबरु साहब ने मिश्रा जी से कहा।

"अरे चाय हम पीते रहते हैं. . .इस समय. . . र

"जाओ बच्चा सामने माखन हलवाई की दुकान से गुलाब जामुन और समोसा ले आव. . . चाय बोल दियो कि मिश्रा जी के बस्ता म पहुंचा देव।"

"अच्छा तो उन सबने तुम्हें 'काटा`, मैंने पूछा।

कलूट हंसने लगा, "अरे नहीं साजिद मियां. . .ऐसा का है।"

"नहीं ये तो ग़लत है।"

"साजिद भाई . . .ये बेचारा दिन भर साइकिल के पीछे मुर्गियों का ढ़ाबा लिए गांव - गांव का चक्कर काटता है तब कहीं दस-बीस रुपया कमा पाता है।" मुख्तार ने कहा।

"चलो अभी चलते हैं मिश्रा जी के पास", मुझे गुस्सा आ गया।

"नहीं नहीं रहे देव", कलूट ने कहा।

"रहने कैसे दिया जाए", मुख्त़ार बोला।

"बातें तो इतनी ऊंची-ऊंची करते हैं और हाल ये है", ताहिर ने बीड़ी का दम लगाने से पहले कहा।

मुझे लगा ये सब मुझे घेर रहे हैं। कह रहे हैं यही आपकी पार्टी के आदर्श हैं। यही वे लोग हैं जो गरीबों के लिए पृथ्वी पर स्वर्ग उतार लाएंगे।

मैंने सोचा मिश्रा जी पर सीध हमला करने से पहले ज़रा दूसरे लोगों को भी टटोल लिया जाए। मैं सूरज सिंह चौहान के पास गया, वह काली शेरवानी चढ़ाए कचहरी जाने की ताक में चौराहे पर खड़े थे। मुझे देखकर पान की दुकान की तरफ घसीटने लगे। मैंने उन्हें चायखाने की तरफ घसीटना शुरू किया और हम दोनों चाय पीने बैठ गए। चौहान साहब को पूरी भूमिका बांधकर मैंने पूरा किस्सा सुनाया। वे काफी दार्शनिक-भाव के साथ सुनते रहे। उन्होंने चुप्पी तोड़ी और बोले- "कामरेड तुम तो जानते ही हो कि इस पार्टी में हाईकमान का विश्वास जीतना बहुत कठिन है। पर एक बार किसी का विश्वास जम जाऐ तो उसे उखाड़ना और मुश्किल है। मिश्रा ने लखनऊ में अपना विश्वास जमा दिया है। ये जो कलूट के साथ हुआ कोई नई बात नहीं है। मिश्रा ऐसे काम करते रहते हैं। हम लोग लखनऊ में कहते हैं तो डांट उल्टा हमें पड़ती है। कहा जाता है आप लोग ज़िला कमेटी में गुटबंदी कर रहे हैं। जाओ जाकर काम करो एक दूसरे की शिकायतें न किया करो. . .कामरेड मिश्रा तो फिर भी वैसे नहीं हैं। हम बताए आपको सात-आठ साल पहले हमारे ज़िला सेक्रेटरी त्रिभुवन हुआ करते थे। हाई कमान के चहेते। प्रांतीय नेतृत्व की नाक का बाल । लेकिन ज़िला स्तर पर उनकी

बड़ी काली करतूतें थीं। हम लोग जब भी लखनऊ में बात उठा तो यही जवाब मिलते की गुटबंदी न करो। काम करो। अब साहिब पूरी जिला कमेटी. . . एक दो जनों को छोड़कर बड़ी त्रस्त हो गयी। क्या करें क्या न करें। बड़ी मुश्किल से मौका आया। जब सी.पी.एम. का विभाजन हुआ तो हमारे जिला सेक्रेटरी ने बैठक बुलाई। हमें मालूम था कि उनके रुझान नक्सली हैं, उन्होंने हम सबसे पूछा कि बताओ क्या करें? सी.पी.एम. में रहे या नक्सली हो जाऐं। हम लोगों ने कहा कामरेड आप हमारे नेता हैं। जो आप निर्णय लेंगे वही हमारा भी फैसला होगा। कामरेड ने

कहा- ठीक है हम सी.पी.एम.एल. में चले जाते हैं। अगले दिन उन्होंने अखबार में छपवा दिया। हम तीन ज़िला कमेटी के मेम्बर अखबार लेकर लखनऊ गये और प्रांतीय नेताओं से पूछा कि हम लोग क्या करें? हमारे कामरेड सेक्रेटरी तो नक्सली हो गये हैं? हमसे कहा गया लखनऊ से किसी को भेजा जाऐगा। आप लोग जिला कमेटी की मीटिंग करें और नया सेक्रेटरी चुन लें। तो इस तरह त्रिभुवन से हमारा पीछा छूटा। अब कामरेड मिश्रा ये सब हरकतें करते हैं। आपको मालूम नहीं, ये उन किसानों से ज़्यादा फीस वसूल करते हैं जो पाटी के हमदर्द हैं। मतलब हम जान-जोखिम में डालकर लोगों को पार्टी के पास लाते हैं और मिश्रा जी उन्हें भगा देते हैं, क्या किया जाऐ?``

केसरियापुर लौट आया तो बिन्देसरी फिर दिखाई पड़ने लगी। कभी अकेली और कभी मां के साथ। जब अकेली होती और मेरे पास कोई बैठा न होता तो किसी बहाने से मैं उसे बुला लेता। लेकिन डर भी लगता कि यार चारों तरफ से खुला घर है। रहमत और गुलशन आते रहते हैं। कहीं कोई देख न ले। लेकिन दिल है कि मानता नहीं। एक आद मौका देखकर कुछ लाने के लिए उसे कमरे में भेज चुका हूं और उसके पीछे-पीछे मैं भी गया हूं। जल्दी में जो कुछ हो सकता है उस पर उसने कभी एतराज़ नहीं किया है। अब तो बस मौके की बात है और मौका कैसे, किस तरह, कहां, कब? मेरे ख्य़ाल से मेरी इस मजबूरी को

बिन्देसरी भी समझती है और उसने साबित कर दिया कि मुझसे ज्य़ादा समझदार है।

एक दिन खाना खाने के बाद दोपहर को मैं लेटा था कि बिन्देसरी का भाई राजू आ गया। वह गांव के ही स्कूल में कक्षा चार में पढ़ता है। उसने कहा- बाबू जी और अम्मां न्योते में गये हैं। बाबू कह गये हैं रात में आप हमारे घर सो जाना। दीदी डरात है।

"रात में आ जाना. . .मुझे तुम्हारा घर नहीं मालूम है. . .देखा तो है पर. . ."

"आ जइबे।" वह चला गया।

मोटी खेस ओढ़े, रात के अंधेरे में गांव की गलियों से होता मैं नम्बरी के घर पहुंचा। छप्पर के दोनों तरफ टट्टियां लगीं थी। बीच से जाने का रास्ता था, सामने दरवाज़े के अंदर रौशनी थी। मैं अंदर आ गया कच्ची साफ सुथरी ताक पर एक दिया जल रहा था जिसकी रौशनी में लिपी-पुती कच्ची दीवारों का असमतल स्वरूप रौशनी में कलात्मक छबियां बना रहा था। कुछ देर बाद वह आई, अपनी बच्ची को सुला रही थी। मैंने उसे अपने पास बुलाया।

"आज कचर लेव जितना कचरे का है।" वह बोली और साथ लेट गयी।

"रात में ये उठती तो नहीं।"

राजसेरी?

हां।

उठती है, जब भूख लगती है।

मैं कुछ चिंता करने लगा।

"तुम्हें देख के डर न जाएगी", वह हंसी।

"सुसराल में तुम्हारा झगड़ा है", मैंने सुना था कि ससुराल वाले उससे खुश नहीं हैं।

"झगड़ा कुछ नहीं है. . .एक दीया से पूरे घर में उजाला कैसे

हो सकता है", वह बोली।

"क्या मतलब?"

"हमारा छोटा देवर हम को चाहत रहे. . . हम कहा चलो ठीक है. . .छोटे भाई हो हमरे आदमी के . . .छोटे को देखा-देखी जेठ जी भी ललचा गये. . . समझे बहती गंगा जी है. . . हम मना कर दिया . . .घर का पूरा कामकाज जेठजी करते हैं. . .खेती बाड़ी. . ."

"जेठ की शादी नहीं हुई है?"

"उनकी औरत कौनों के साथ भाग गयी।"

"तो जेठ जी तुम्हारे साथ. . ."

"हां, पर हमका अच्छे नहीं लगते।"

"क्यों?"

वह कुछ नहीं बोलती।

"चिन्हारी देवर, वह मेरा हाथ पकड़कर बोली। मैं चुप रहा।

"चिन्हारी नहीं जानते।"

"जानते हैं मतलब पहचान. . ."

"मान लेव रात हो. . .हमारे पास आओ. . .तो चिन्हारी देखके समझे न कि तुम हो?"

आहो, ये बात है ख़ासी भोली-भाली ख्वाहिश है। मासूम इच्छा। पता नहीं कितने समय से यहां प्रेमियों में इसका रिवाज होगा।

"पहले अपने चिन्हारी दोर, मैं बोला।

"खोज लेव", वह आहिस्ता से बोली और उठकर दीया बुझा दिया।

गेहूं में जिस दिन चौथा पानी लगाया गया उसी दिन रात में अचानक बादल घिर आये। रहमत परेशान हो गया। बोला, "पानी न बरसा चाही।"

मुझे भी जानकारी थी कि पानी बरस गया तो फसल बर्बाद हो जाएगी। लेकिन हमारे चाहने से क्या होता। रात में करीब दो बजे तेज़ बारिश शुरू हो गयी और सुबह चार बजे बोरा ओढ़े और फावड़ा लिए

रहमत आ गया। वह खेतों से पानी निकालने के लिए मेड़े काटने जा रहा था। मैं उसके मना करने के बाद भी उसके साथ बाहर निकला। रास्तों में पानी भरा था। जूते हाथ में ले लिए पजामा उड़स लिया और हम खेतों की तरफ बढ़े। अब भी हलकी-हलकी बारिश हो रही थी। पौ फटने का उजास फैल रहा था। खेतों में पानी भरा था। गेहूं की लहलहाती फसल सीने तक पानी में डूबी हुई देखकर मैं घबरा गया।

कोई एक घंटे तक रहमत मेड़ों को काटता रहा। लेकिन चूंकि यह ज़मीन धनही थी यहां धन लगाया जाता था इसलिए पानी के निकास का रास्ता न था। खेतों से मिला तालाब था और दूसरी तरफ ऊंची जमीन थीं दूर-दूर से पानी इधर आकर भर गया था। मुझे लगा कि पानी रोकने के लिए मेड़ तो पहले बनाई जानी चाहिए थी। रहमत का कहना था कि चार पांच गांव का पानी यहां जमा हो जाता है। मेड़ टूट जाती। यहां तो एक बड़ा नाला होना चाहिए जो इस पानी को आगे बड़े नाले तक जोड़ दे और नाला बनवाना आसान नहीं है। पता नहीं कितने किसानों की ज़मीन बीच में पड़ती है और फिर उस पर हज़ारों रुपयों का खर्च आयेगा सो अलग। बहरहाल, अब तो कुछ नहीं हो सकता। मैं छः महीने की मेहनत, हज़ारों रुपयों और अनगिनत सपनों को पानी में तैरते देखता रहा।

"चौथा पानी न लगाया होता तब भी ठीक होता", रहमत बोला।

"अब क्या हो सकता है. . .चलो वापस चलें।"

"अब भइया तगड़ी धूप निकल आये और पानी रुक जाऐ तो कुछ बात बन सकती है", वह बोला।

पानी, धूप, पाला, कीड़ा. . .धूप निकलने का क्या महत्व है। कितनी ज़रूरी है धूप. . .और वह भी आज ही निकले। कहीं झड़ी लगी रही तो क्या होगा?

करीब ग्यारह बजे झड़ी रुकी लेकिन बादल छाये रहे। मैं यह अंदाज़ा लगाने की कोशिश करता रहा कि दस बीघे ज़मीन में लगाया गेहूं कितना बर्बाद हो गया। पैदावार कितनी होगी और आमदनी कितनी होगी। कितने हज़ार की खाद, बीज, ट्यूबवेल, डांगर की जोड़ी, हलवाहा. . .कुछ तस्वीर साफ नज़र नहीं आई।

इस बारिश से गांव के सब ही लोग दुखी थे। सोचते थे कि पानी बरसने के बाद कीड़ा लगने की संभावना बढ़ जाती है। मुझे यह ख्याल आया कि यार मैं तो पहली बार इस तनाव को झेल रहा हूं लेकिन ये लोग तो जीवनभर झेलते हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी झेलते हैं और अगर कभी मिलता भी है तो क्या? यह ज़ाहिर है इनके रहन-सहन से दिल्ली में एक छोटे दुकानदार का जीवन कितना शानदार होता है उसकी तुलना तो यहां बड़े से बड़े सम्पन्न किसान से नहीं हो सकती। यह गांव अकेला नहीं है। पता नहीं सैकड़ों, हज़ारों, लाखों ऐसे गांव हैं, ऐसे लोग हैं, ऐसा जीवन है। इनके साथ समस्या क्या है? क्या पैदावार का सही दाम नहीं मिल पाता? क्या ये उस विशेष श्रेणी में नहीं आते जिन्हें

'राज्य` संरक्षण देता है? फिर ये खेती क्यों करते हैं? और क्या कर सकते हैं? और क्या जानते हैं? मतलब अगर कुछ और करने की सुविधा हो तो क्या ये लोग खेती नहीं करेंगे? क्या ये गांव छोड़ सकते हैं? क्या यहां के रहन-सहन से अलग हो सकते हैं? शायद नहीं या शायद हां।

तंग आकर शहर आ गया। अब्बा को मेरी परेशानी पता चली तो कहने लगे- "भई ये तो होता है। आज गरम तो कल नरम. . .खेती इसी का नाम है। देखो अल्लाह ने चाहा तो फायदा ही होगा।"

शहर में मेरे पहुंचते ही चौकड़ी जमा हो गयी। मिश्रा जी के व्यवहार से ये सब दुखी तो थे लेकिन संगठन में काम करने ओर उसकी ताकत पहचानकर खुश भी थे। कामरेड बली सिंह मछुआरों का संगठन बना रहे थे जिसमें उमाशंकर लग गया था। गरीब मछुआरे मछली पकड़ते थे और ठेकेदार उनसे कौड़ियों के भाव मछली खरीदकर कलकत्ता भेज देता था। होता तो यह था कि जब कलकत्ता से ठेकेदार को पैसा मिल जात था तब मछुआरों का भुगतान होता था। मछुआरों को भी कर्ज, उधर देकर बंधुआ बनाने की प्रथा बढ़ रही थी।

नदी के किनारे मछली ठेकेदारों में कभी-कभी "फौजदारी तक हो जाती हैं। सज्जन दादा शहर के सबसे बड़े मछली ठेकेदार हैं। लठैत उनके साथ रहते हैं, दो-चार बंदूकधारी आगे पीछे चलते हैं। ट्रक उनके अपने हैं। अफसरों, वकीलों से जान पहचान है। शहर में उनसे मुकाबला करने के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता लेकिन जब बली सिंह ने पार्टी बैनर के साथ उन्हें ललकारा तो उमाशंकर को मज़ा आ गया। बली सिंह के पीछे पार्टी ही नहीं है उनकी अपनी भी ताकत है। ज़िले के बड़े ठाकुर परिवार से है। खानदान में दो दर्जन दोनाली हैं।

मछली वाले आंदोलन के साथ मुख्तार और कलूट को सिलाई मज़दूर यूनियन बनाने का काम सौंपा गया है। शहर में तीन-चार सौ सिलाई मज़दूर है जिन्हें बहुत कम मज़दूरी मिलती है। दुकान मालिक कहते हैं, छोटा-शहर है, लोग ज्यादा सिलाई दे नहीं सकते। मुख्तार कहता है, चीज़ों के दाम बढ़ जाते हैं तो शहर वाले दे देते हैं, सिलाई के नए रेट क्यों न देंगे? पिछले पन्द्रह साल से कौन-सी चीज़ है जिसके दाम नहीं बढ़े? सिलाई मज़दूर भी उन चीज़ों को खरीदता है तो जनाब उसकी मज़दूरी तो बढ़ नहीं रही। ख़र्चे बढ़ रहे हैं। आप क्या चाहते हैं वह मर जाएं?

इन दोनों ने एक दिन में यूनियन के पचास मेंबर बना दिए तो मिश्रा जी चकरा गये। दरअसल जो कुछ हो रहा है उसका पूरा 'क्रेडिट` तो मिश्रा जी को ही मिल रहा है। अकेले में ताल ठोंकते रहते हैं। हर सप्ताह रिपोर्ट लखनऊ जाती है। वहां से वाह-वाही होती है। लखनऊ में कलूट और मुख्तार को कौन जानता है।

शहर का माहौल गर्माया हुआ है। नुक्कड़ बाज़ार का नाम लाल बाज़ार रख दिया गया है क्योंकि यहां के सभी दुकानदार पार्टी को चार आने महीने चंदा देते हैं और अपनी दुकानों पर लाल झण्डा लगाते हैं। मिश्रा जी लखनऊ से हंसिया हथौड़ा के 'बैज` ले आये हैं। कार्यकर्ता इन्हें अपने कुर्तों पर लगाते हैं।

गांव में मेरा भविष्य रहा है। एक बार दिल्ली में अपने भविष्य को खोकर मैं नहीं चाहता था कि बार-बार भविष्य मेरे हाथ से फिसलता रहे। मुझे पता हैं। कि खेती बाड़ी-बाग-बगीचा पर मैं आश्रित हूं और इसमें इतनी मेहनत की है, इतना वक्त लगाया है, इतना ध्यान दिया है कि उस पर मेरा दारोमदार है लेकिन शहर में जो कुछ हो रहा है उससे भी मुझे जज्बाती लगाव है। मैं देख रहा हूं कि 'कुछ` हो रहा है। वे मुंह जो बंद रहे हैं, जिनके खुलने की कोई

कल्पना भी नहीं कर सकता था, खुल रहे हैं। वे आंखें जो हमेशा नीचे की तरफ देखती थीं। अब सामने देख रही हैं। खाक़ी वर्दी वालों को देखकर जिनकी जान सूख जाए करती थी वो अब गर्व से सीना ताने पुलिस चौकी के सामने से निकल जाते हैं। मैं बेचैन होकर गांव से यहां आ जाता हूं क्योंकि यहां 'ये` लोग मुझे देखते ही उत्साह से भर जाते हैं। हालांकि मैं हूं क्या?

खेती का काम उलझता जा रहा था। कई लोगों ने मुझसे बताया था कि जिस आदमी से मैंने आलू का बीज लिया है वह धोखेबाज़ है और घटिया बीज देता है। पर अब हो क्या सकता था। वैसे आलू जगा बढ़िया था। खेत देखकर लोगों की बात पर विश्वास नहीं होता था। हर साल बाग तीन हज़ार में उठता था। मैंने पता लगाया था कि दरअसल मार्केट रेट के हिसाब से बाग को कम से कम दस हज़ार में उठना चाहिए लेकिन इलाके के कुंजड़े में बहुत 'एका` होने की वजह से दूसरे कुंजड़े नहीं आते और हर साल उसी कुंजड़े को बाग देना पड़ता है जिसे पिछले दस साल से दिया जा रहा है। रहमत ने यह भी बताया कि अगर कोई बाहर का आदमी बाग लेगा तो उसे कुंजड़ा बिरादरी बहुत परेशान करेगी। अब एक रास्ता बचता है कि बाग न उठाया जाऐ। खुद ही तकाई करायी जाऐ और फल बाज़ार में बेचा जाऐ। यह काम बहुत झंझट वाला है। बाग में रात-दिन कौन रहेगा? आसपास के गुण्डे बदमाशों से कौन निपटेगा? पाल कहां रखी जाएगी? बाज़ार में कहां किस तरह बेचा जाऐगा? बाग की तकाई इतना टेढ़ा काम है कि लोग आसानी से तैयार नहीं होते। अब हुआ यह कि एक कुंजड़ा आया जो तीन हज़ार की जगह साढ़े तीन हज़ार देने पर तैयार था। मैंने उसे बाग दे दिया। बाद में पता चला कि ये तो हाजी कुंजड़े का दामाद है जो पिछले दस साल से बाग लेते आये हैं। मतलब हाजी कुंजड़े ने नया खेल-खेल दिया। बाग उन्हीं के पास रहा। मैं बेवकूफ़ बना दिया गया। मुझे शक हुआ कि रहमत भी इस खेल शामिल है। उसे ज़रूर पता था कि नया कुंजड़ा दीन मुहम्मद हाजी जी का दामाद है लेकिन उसने मुझे नहीं बताया।

बिन्देसरी प्रसंग एक अत्यंत खतरनाक और नाटकी मोड़ ले कर खत्म हो गया। हुआ यह कि उसके घर रात बिताने के बाद मैं अक्सर उसे रात में अपने यहां बुला लिया करता था। अब मुझे लगता था कि उसके माता-पिता ये जानते थे कि वह रात में कहां जाती हैं। वजह यह है कि नंबरी यानी बिन्देसरी के पिता का व्यवहार बदल रहा था। वह जब भी आता कोई न कोई चीज़ किसी बहाने से ले जाता। कभी मिट्टी के तेल की एक बोतल, कभी एक आद टोकरा सिंघाड़े, कभी दो-चार किलो अरहर वगैरा। मैं जानता था कि यह क्यों हो रहा है। इसके साथ-साथ मैंने रहमत के लड़के गुलशन को अपना राज़दार बना लिया था क्योंकि रात में वह चौरे पर ही सोता था। गुलशन उस वक्त तक फाटक पर बैठा रहता था जब तक बिन्देसरी मेरे पास रहती थी। मेरे ख्य़ाल से इंतिजाम और व्यवस्था पक्की थी। बिन्देसरी शादीशुदा है अगर कुछ ऊंच-नीच हो भी जाती है तो कोई डर नहीं है। वह काफी तेजी से खुल जाती थी और गांव की दूसरी लड़कियों के प्रेम प्रसंग भी बताती थी। मुझे हैरत होती थी कि ऊपर से देखने पर बहुत गठी हुई, व्यवस्थित, मर्यादित, संस्कारों और रीति-रिवाजों पर चलने वाली गांव की जिंदगी अंदर से कितनी उन्मुक्त है और स्त्री-पुरुष संबंधों ने जाति-बिरादरी की दीवार को किस तरह तोड़ दिया है। रात में जाति बिरादरी बदल जाती है।

कोई दो तीन महीने बाद एक दिन रात में बिन्देसरी चौरा में थी। उसके माता-पिता कहीं न्यौते में गये थे। अचानक रात में तीन बजे के करीब गांव में उसके भाई की आवाजें गूंजने लगीं। वह 'दीदी` 'दीदी` कहकर ज़ोर ज़ोर से चिल्ला रहा था। यह आवाज़ सुनते ही मैं डर गया। बिन्देसरी ने कपड़े पहने और घर की तरफ भागी। बाद में पता चला कि बिन्देसरी चौरे से गांव की तरफ जा रही थी और बीस पच्चीस लोग लाठियां लिए चौरे की तरफ आ रहे

थे। बिन्देसरी के भाई ने बता दिया था कि वह चौरे गयी है। बात साफ हो गयी थी। क्षण भर में गांव में खबर फैल गयी थी और रात के तीन बजे 'उजाला` हो गया था। कई लोगों ने कहा था कि यह गांव की लड़की की इज्जत का सवाल है। हमें चुप नहीं बैठना चाहिए और एक गिरोह चौरे की तरफ चल पड़ा था। रास्ते में उन्हें बिन्देसरी मिली तो उसने बताया कि वह तो टट्टी गयी थी। उसके इस बयान पर टोली एकमत नहीं हो पायी कि उन्हें चौरे जाना चाहिए या नहीं। इस तरह चौरे तक कोई नहीं आया।

बिन्देसरी का भाई उसके लिए रात में इसलिए गुहार मचा रहा था कि बिन्देसरी की लड़की उठ गयी थी और लगातार रो रही थी। भाई जब बहुत परेशान हो गया तो गुहार लगानी शुरू कर दी थी।

अगले दिन सुबह ही सुबह यादव पहलवान आये। उन्होंने बताया कि पूरा गांव इस बात से उत्तेजित है। ये अगर किसी अहीर की लड़की का मामला होता तो कल रात चौरा पर चढ़ाई हो गयी होती। लड़की बापू-महतारी की सौगंध खाकर कह रही थी कि टट्टी गयी थी। किसी तरह लोग दब गये। यादव पहलवान ने यह भी साबित किया कि लोगों को ठण्डा करने में उन्होंने भी बड़ी भूमिका निभाई है लेकिन मामला दब नहीं रहा । कुछ प्रभावशाली लोग, बड़े किसान जो पिछले पच्चीस-तीस साल से डिप्टी साहब के चक और बाग पर निगाहें गड़ाये हैं, यह चाहते हैं कि मैं यहां से भाग जाऊं। चौरा में आग लगा दी जाऐ और डिप्टी साहब तंग आकर औने-पौने ज़मीन और बाग बेच दे। गांव में उनको छोड़कर किसके पास पैसा है, वही खरीद लेंगे। यह बात तो मुझे मालूम थी कि कुछ लोग अब्बा की ज़मीनों पर दांत लगाये बैठे हैं।

मेरे चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी। योजना बिल्कुल पक्की लगी या कम से कम मेरा बहिष्कार तो हो ही सकता है। बदनामी हो सकती है। फिर मैं यहां कैसे रह पाऊंगा। लड़के हंसेंगे। जवान उंगलियां उठायेंगे। बूढ़े दबी ज़ुबान से चर्चा करेंगे। यादव पहलवान ने जब देखा कि मैं पूरी तरह चित्त हो गया हूं तो बोले "पर एक रास्ता है?"

"क्या?" मैंने निराशा और बेसब्री से पूछा।

"लौण्डिया की आश्नाई आपसे नहीं गुलशन से रही है. . ."हमत का लड़का गुलशन। वह भी तो यहीं चौरा में सोता है।"

मैं खुशी से उछल पड़ा। एक बार फिर 'कन्विन्स` हो गया गांव के बे-पढ़े लिखे लोग जिन्हें हम जाहिल कहते हैं, पढ़े-लिखे लोगों से कहीं ज्यादा समझदार होते हैं।

"बिलकुल ठीक कह रहे हो पहलवान।"

"तो देर न करो. . .अभी साले के पांच दस थप्पड़ लगा देव। गरिया देव. . .पूरा गांव देख ले. . .मामला सांत पड़ जाऐगा।"

कुछ भी क्षण बाद चौरा के फाटक के सामने खड़ा होकर मैं चीखने लगा, "पकड़ लाओ साले को. . .आज मैं बताऊंगा कि किसी की बहू बेटी के साथ मस्ती मारने के क्या मिलता है। मादरचोद ने चौरा को बदनाम कर दिया।" मेरे ऊँची आवाज़ों के साथ यादव पहलवान की गरजती आवाज़ भी शामिल हो गयी। लोग जमा होना शुरु हो गये। यादव पहलवान अपनी "फौलादी गिरफ्त में गुलशन को गर्दन से पकड़ कर लाये और मेरे सामने धक्का देकर

गिरा दिया। मैंने उसे दो ठोकरें मारी, वह खड़ा हुआ तो थप्पड़ों की बारिश शुरु हो गयी, गालियों का फव्वारा तो उबल ही रहा था। गुलशन हैरान और परेशान था। उसे बोलने तक का मौका नहीं देना है, यह मैं अच्छी तरह जानता था। इसलिए मार-पीट और गाली गलौच में एक सेकण्ड का अंतराल भी नहीं आ रहा था। मारते-मारते मैंने कहा- आज मैं इस साले को भूखा मार डालूंगा। चल बे तुझे कोठरी में बंद करता हूं. . .पहलवान मेरा इशारा समझ गया। उसने फिर गुलशन की गर्दन पकड़ ली और उसे चौरे के फाटक के अंदर ढकेल दिया। वह सामने जाकर गिर पड़ा। मैंने फाटक बंद कर लिया। आगे बढ़कर गुलशन को उठाया, उसे साथ अंदर लाया। कांपते हुए हाथों से उसे एक गिलास पानी और गुड़ की आधी भेली दी। वह आश्चर्य से मेरी तरफ देखने लगा। जब वह पानी पी चुका तो मैंने जेब से सौ का नोट निकालकर उसे दे दिया। वह और ज्यादा हैरान हो गया।

बिस्तर पर गिरकर मैं हांफने लगा। मुझे यकीन था कि यह मार और गालियां गुलशन को नहीं मुझे पड़ी हैं।

उसी दिन शाम को नंबरी आये और अपने ख़ास अंदाज़ में बोले- "ग़लती हमारी है। बेटी जब बहू बन जाती है तो उसे ससुराल में ही रहना चाहिए और ससुराल में सबको प्रसन्न रखना, सबकी सेवा करना उसका धर्म है।"

सबकी 'सेवा` का अर्थ मैंने यह निकाला कि बिन्देसरी का जेठ उससे जो शारीरिक संबंध चाहता है, उसे बना लेना चाहिए, विरोध नहीं करना चाहिए।

अगले दिन बिन्देसरी ससुराल चली गयी और इस प्रसंग का अंत हो गया। लेकिन मैं हमेशा गुलशन का आभारी रहा। यादव पहलवान का कृतज्ञ रहा।

अप्रैल की एक गर्म दोपहर थी और गेहूं कटने में कुछ ही हफ्ते बचे थे कि केसरियापुर में अचानक कामरेड लाल सिंह नमूदार हुए। न कोई सूचना, न कोई संदेश, पर कामरेड का हुलिया बदल गया था। साफ सुथरे कायदे से सिले कपड़े, हाथ में चमड़े का एक महंगा ब्रीफकेस, आँखों पर काला चश्मा, जेब में सफेद रुमाल देखकर कह नहीं सकता कि खुशी हुई या नहीं। मैंने कामरेड लाल सिंह को पांच साल पहले जब जावेद कमाल की कैंटीन में पहली बार देखा था तो कुछ ऐसा तरंगित हुआ था। वह एक ऐसा समर्पित क्रांतिकारी था जिसके सामने मार्क्सवादी बुद्धिजीवी घिघियाने लगते थे। उसके एक-एक शब्द को आदेश मानते थे और उस जमाने में कामरेड के कपड़े ऊल-जलूल हुआ करते थे। 'भेंट` की गयी ढीली-ढाली कमीज़। पैजामा जैसा पैण्ट लेकिन चेहरे पर एक ऐसा भाव जो साधारण तो बिल्कुल नहीं था। लगता था तपा हुआ सोना है उसका चेहरा। लगता सौ झूठे प्रमाण और थोथे तर्क उसके चेहरे से टकराकर शीशे की तरह छन्न से बिखर जाएंगे।

पिछले पांच साल आंखों के सामने से फिसल गये. . .कामरेड लाल सिंह को देखकर खुशी होने के कई कारण हैं। हम दोस्त हैं। काफी समय साथ-साथ बिताया है। इस गांव में बातचीत करने वाला कोई आया ये तो सौभाग्य की बात है। कामरेड हाथ मुंह धोने और खाना-वाना खाने के बाद सिगरेट के लंबे-लंबे कश लेते हुए बोले "भाई मैं पार्टी क्लास में बनारस गया था। उससे पहले लखनऊ में प्रांतीय सम्मेलन था। उससे ठीक पहले आजमगढ़ में एक बड़ी जनसभा में भी भाग लेना था।"

"कुल मिलाकर बताओ, कितने दिनों से बाहर हो।"

"बीस बाईस दिन तो ही गये हैं", कामरेड बोले।

"उससे पहले भी तुम शायद दिल्ली में थे?"

"नहीं हरियाणा में था. . .पंद्रह दिन क्लास ले रहा था।"

"ओर उससे पहले?" मेरे इस सवाल पर वह चौंक गया। उसे लग गया कि मैं 'खिंचाई` कर रहा हूं।

"तुम कहना क्या चाहते हो?" उसका स्वर बदल गया।

"नाराज़ मत हो कामरेड. . .मैं कहना चाहता हूं कि तुम नेता हो गये हो, कार्यकर्ता साला एक जगह रहता है और नेता भगवान की तरह सब जगह होता है", मेरे कहने पर कामरेड दांत पीसने लगे।

"तुम्हारी शरारत वाली आदत गयी नहीं।"

"तुम्हें देखते ही जाग जाती है।"

"मजाक छोड़ो ये बताओ यहां कैसा चल रहा है?"

"ठीक है कामरेड. . .खेती में जमने की कोशिश कर रहा हूं।"

"चलते टाइम यहां से चावल ले जाऊंगा।"

"हां कामरेड जितना चाहो ले जाना, घान की यहां कमी नहीं है।"

दायें और बायें लाठियां लिए रहमत और गुलशन हैं। बीच में मैं और कामरेड हैं। गांव की गलियों में खेलते बच्चे और लंबे घूंघट निकाले बहुएं हमें जिज्ञासा से देख रहे हैं। कामरेड ने काला चश्मा लगा रखा है और हाथ में एक छोटा ब्रीफकेस है।

रात में ही कामरेड ने कहा था कि गांव के सर्वहारा से मिलना चाहते हैं। इसलिए हम कंजड़ों के डेरे की तरफ जा रहे हैं। डेरे में हम सीधे रामसेवक के घर के सामने आ गये। रामसेवक ने बाहर चारपाई डाल दी। आसपास के घरों से दूसरे कंजड़ भी निकल आये। हम दोनों चारपाई पर बैठ गये। कंजड़ सामने जमीन पर उकड़ूं बैठ गये। कामरेड के बहुत कहने पर भी कंजड़ चारपाई पर नहीं बैठे। वे ज़मीन पर ही बैठे रहे। कामरेड ने बातचीत शुरू करने से पहले कंजड़ों से उनके हालचाल पूछे। भूमिहीन कंजड़ों ने अपना पूरा दुख दर्द बताया। कामरेड ने उनसे कहा कि बिना संगठित हुए इन समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता। रामसेवक बोला- "आप बिल्कुल ठीक कहते हो साहब. . .अकेला आदमी क्या कर सकता है?"

"तो आप लोग संगठन बनाने को तैयार हैं?"

"हां जी बिल्कुल हैं, कई आवाज़ें आयी।"

"और देखिए संगठन को विचारधारा से लैस होना चाहिए. . .मतलब आप जो करें वह सबके हित में हो।"

"हां जी हां" कई आवाजें आयी।

"एक बात और समझ लो दोस्तों. . .हक मांगने से नहीं मिलता। उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है. . .कुर्बानियां देनी पड़ती हैं।"

"हां जी हां. . . वो तो है। हम तैयार हैं।"

"आपकी विचारधारा क्रांतिकारी होनी चाहिए. ..समझौतावादी नहीं।"

"हां जी हां, साहब आप जैसा कहेंगे वैसा होगा।" रामसेवक ने कहा।

"संगठन बनाने के लिए कुछ जानना-समझना भी ज़रूरी होगा।"

"बिलकुल होगा जी. . .उसके बिना कैसे काम चलेगा", एक कंजड़ बोला।

"हम तो आपके पीछे हैं साहब. . .जहां कहेंगे. . .जो कहेंगे. .करेंगे. . .हमारी बिरादरी में बड़ी एकता है", दूसरे कंजड़ ने कहा।

"आप हमें रास्ता दिखाओ साहब", रामसेवक बोला।

"आप आ जाओ तो बस. . . सब हो जाऐगा।"

अनौपचारिक बैठक कोई घंटेभर चलती रही। कामरेड बहुत प्रसन्न हो गये।

रात में खाने के बाद उन्होंने कहा "यार साजिद यहां तो काम करने की बड़ी संभावना है।"

"हां वो तो है।"

"तो यार करो. . .काम।"

"कामरेड मुझसे जो हो सकता है कर रहा हूं। किसान सभा के काम का मुझे तजरुबा नहीं है।"

"करो यार. . .देखो लोगों में कितना उत्साह है।"

"तुम क्या समझते हो . .इन लोगों ने जो तुमसे कहा वह सच है? मतलब साफ बात की तुमसे?"

"हां. . .क्यों।"

"कामरेड. . .ये लोग हमसे तुमसे ज्यादा समझदार हैं।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"वे जानते हैं तुम मुझसे मिलने पता नहीं कहां से आये हो। अब यहाँ पता नहीं तुम आओगे भी या नहीं. . .वे तुम्हारी बात क्यों काटते? तुम्हारी हां में हां मिलाने में उन्हें क्या दिक्कत हो सकती है। तुम्हें याद होगा कि वे इस बात पर ज़ोर दे रहे थे कि 'आपके` पीछे-पीछे चलेंगे। अरे जब आप ही यहां न होंगे तो किसके पीछे जाएँगे? और जाहिर है तुम यहां आकर रहोगे नहीं. . ."

"तुम्हारा मतलब है वे झूठ बोल रहे थे?"

"झूठ और सच की बात मैं नहीं कर रहा हूं। मैं कर रहा हूं गरीबी और अभाव ने इन्हें बड़ा व्यावहारिक बना दिया है।"

कुछ देर तक बातें होती रहीं फिर कामरेड के खर्राटे गूंजने लगे।

पार्टी के सदस्यता अभियान ज़ोरों पर है। जिन लोगों ने पिछले छ: सात महीने काम किया है वे सब मेम्बर बन रहे हैं। मुझसे मिश्रा जी ने कहा कि आप भी फार्म भर दीजिए। मैं सोचता रहा। इतने साल अलीगढ़ में मेम्बर नहीं बना। कामरेड लाल सिंह का आग्रह टालता रहा। अब बन जाऊं? मेरी उस धारणा का क्या होगा कि पार्टी सदस्यता जकड़ लेती है आदमी को। काम करने के बजाये गुटबंदी होने लगती है। बहरहाल मैंने फार्म भर दिया। मेम्बर वाले फार्म लखनऊ चले गये। सिलाई मज़दूर यूनियन और रिक्शा यूनियन के बाद उमाशंकर बीड़ी मज़दूर यूनियन बनाने में लग गया है। मुख्तार सहकारी सिलाई दुकान के चक्कर में दफ्तरों के चक्कर लगा रहा है। मेरे आते ही रात की पुलिया पर महफिलें आबाद हो गयी हैं। अब ज्यादातर बातचीत राजनीति के बारे में होती हैं। अतहर को पार्टी या राजनीति में मज़ा नहीं आता। लेकिन ग्रुप के साथ वह भी खिंचा-खिंचा फिरता है। इस साल फिर उसने इंटर का प्राइवेट फार्म भरा है लेकिन पढ़ाई नहीं हो रही। मैंने उसे ऑफर दिया है कि वह मेरे साथ चौरे में रहे। मैं उसे पढ़ा दिया करूंगा। आइडिया अतहर को पंसद आया है लेकिन प्राब्लम ये है कि अब्बा दुकान पर अकेले रह जाएंगे। छोटा भाई दुकान नहीं जाता। जबकि अब वह इतना छोटा नहीं रह गया है।

घर में एक बुरी ख़बर यह सुनने में आई कि सल्लो की शादी कानपुर में तय हो गयी है। उसका होने वाला पति रिक्शा चलाता है। यह सुनकर मैं सकते में आ गया। कानपुर में रिक्शा चलाता है। मैंने दिल्ली में जामा मस्जिद इलाके में रिक्शे चलाने वालों के हाथ देखे हैं जिनकी खाल ऐड़ी जैसी सख्त होती है। सीने घंस जाते हैं और जल्दी ही टी.वी. का शिकार हो जाते हैं। सल्लो की शादी किसी रिक्शेवाले से होगी इसे मैं हज़म नहीं कर पाया लेकिन और क्या हो सकता है? क्या सल्लो के

लिए मैं उसकी बिरादरी का कोई लड़का खोज सकता हूं? लेकिन अभी इतनी जल्दी क्या है? सल्लो मुश्किल से बीस-बाईस साल की है। पर ये भी है कि इन लोगों में लड़कियों की शादी इस उम्र में नहीं होती तो फिर बड़ी मुश्किल होती है।

सल्लो रात में मेरे पास आई। लेकिन इस बार आना अजीब आना था। उसका चेहरा उतरा हुआ था। वह मेरे पास लेटते ही फूट-फूट कर रोने लगी। मैं डरा कि शायद उसके रोने की आवाज़ नीचे तक न पहुंच जाऐ। वह लगातार रोये जा रही थी। उसके बाद देर तक बच्चों की तरह सिसकती रही। मैं उसे सांत्वना देने के लिए उस पर हाथ फेरने

लगा। उसने मेरा हाथ अलग कर दिया और मेरे सीने से चिमट कर लेट गयी। सिसकियों और आंसुओं से मेरा कुर्ता नम हो गया।

"हम अभी शादी नहीं करना चाहते हैं", वह बोली।

मैं क्या जवाब देता। धीरे-धीरे उसकी सिसकियां कम होने लगीं।

"कानपुर में नहीं रहना चाहते", वह फिर बुदबुदायी।

"आप कुछ करते क्यों नहीं।" वह बोली और मुझे लगा कि ऊपर से नीचे तक मुझे तेज़ धारदार चीज़ से काट दिया गया हो। वह बिल्कुल ठीक कह रही थी। पिछले दो-तीन साल से वह रात में अक्सर मेरे पास आती है। मैं उसके साथ वह सब कुछ करता हूं जो संभव है। वह पूरी तरह समर्पित है। मेरे इशारे पर नाचती है। पता नहीं मन ही मन मुझे क्या मानती है। मेरे ऊपर विश्वास करती है। आज उसे मेरी मदद की ज़रूरत हैं। मैं कुछ करता क्यों नहीं? मैं क्या कर सकता हूं? सल्लो घर में खाना वाली बुआ की भतीजी है। बुआ का भाई रिक्शा चलाता है। ये लोग जाति के फ़क़ीर हैं। मैं क्या कर सकता हूं? ये भी तो नहीं हो सकता कि सल्लो को लेकर भाग जाऊं। भाग जाने का मतलब खेती-बाड़ी छोड़ना, घर छोड़ना और एक अनपढ़ लड़की से शादी करना है। मैं ये नहीं कर सकता। तो फिर ये मौज मस्ती. . . सल्लो के साथ चांदनी रातों में रतजगा का क्या मतलब है? वह बेचारी मुझसे यह आशा क्यों लगाये है कि मैं कुछ कर पाऊंगा।

"मैं तुम्हारे मियां को कोई नौकरी दिला दूंगा या उसे केसरियापुर बुला लूंगा। वहां वह बटाई में खेती कर सकता है, तुम वहां आराम से रह सकती हो", मैंने अटक-अटक कर कहा।

"उससे शादी नहीं करना चाहती", वह बोली।

कुछ देर हम दोनों ख़ामोश रहे।

"क्या तारीख तय कर दी है?" मैंने पूछा।

"हां रजब के महीने में है।"

वह फिर रोने लगी। मुझसे और ज्यादा करीब आ गयी। उसके आंसू मेरे चेहरे पर गिरने लगे। मेरा दिल अंदर से घुमड़ने लगा। सिसकियों से हिलता उसका शरीर मेरे अंदर कम्पन पैदा करने लगा। मैं धीरे-धीरे उसे सहलाने लगा।

"नहीं, आज कुछ मत करना", वह बोली।

"क्यों?"

"बस. . .वैसे ही।"

वह रातभर रोती रही और उसे दिलासा देता रहा। यह साफ जाहिर था कि दोनों से कुछ नहीं होगा।

"भइया आपसे कौनो मिले आय है", गुलशन ने खलिहान में आकर बताया। मैं खलिहान में नीम के पेड़ के नीचे चारपाई पर लेटा बैलों का 'लाख` के ऊपर चलना देख रहा था।

"कौन है?"

"हम का जानी. . .मोटर से आये हैं।"

"मोटर से।"

"हां सफेद मोटर है. . .एक जनानी भी साथ हैं।"

ये कौन हो सकता है जो केसरियापुर गाड़ी से आया है और उसके साथ एक 'जनानी` भी है। मैं तेज़-तेज़ कदमों से चौरे की तरफ बढ़ा। अपने अंगौछे को सिर पर कस लिया। चौरे के सामने धूल से अटी एम्बेसडर खड़ी थी। मैं अंदर आया तो दूर से देखा। एक चारपाई पर कोई लेटा है और दूसरे पर कोई औरत बैठी है। औरत ने शायद लेटे हुए आदमी को बताया कि मैं आ गया हूं। वह उठकर बैठ गया। मेरे ऊपर हैरत का पहाड़ टूट पड़ा। अहमद. . .अहमद तो लंदन में है।

अहमद आगे बढ़ा और मुझसे लिपट गया "देखा यार तुम्हें तलाश कर ही लिया।"

इनसे मिलो राजी रतना है, बंबई में इनकी 'हार्सशू कन्सल्टेंसी` है. . .पदमजी रत्ना का नाम सुना होगा तुमने. . .ये उनकी लाडली हैं।" अहमद ने इस तरह परिचय कराया कि उसके और राजी रत्ना के करीबी संबंध समझ में आ गये।

मैंने ध्यान से राजी रत्ना की तरफ देखा। पहली नजर में ही कोई बगैर किसी शक और शुब्हे के कह सकता है ग़जब की खूबसूरत बड़े-बड़ों का सिर फुका देने वाली सुंदरता। दमकता रंग, किताबी नाक नक्शा, बड़ी और ख़ूबसूरत आंखों में ग़जब का आत्मविश्वास। लंबा कद बहुत गठा हुआ और काव्यात्मक अनुपात में ढला शरीर. . .मैं उसे देखता ही रह गया।

"मैं लंदन एच.सी. के लिए एक प्रोजेक्ट कर रहा हूं. . दरअसल है ये एम.ई.ए. का प्रोजेक्ट है। लेकिन हमारी इसमें 'की पोज़ीशन` पार्टनर हैं।" अहमद ने बताया। मैं कुछ समझ नहीं पाया। एच.सी. क्या है? एम.ई.ए. क्या है? प्रोजेक्ट कैसा है? लेकिन कुछ पूछा नहीं। अहमद जो कपड़े पहने था वे चीख-चीख़कर कह रहे थे कि हम हिंदुस्तानी नहीं हैं, विदेशी हैं। अहमद का रंग कुछ और साफ हो गया था जिसमें हल्की -सी लाली शामिल हो गयी थी, घुंघरियाले बाल बढ़ रहे थे जिससे उसके चेहरे का 'प्रेमीभाव` और निखर आया था। और मैं? गांव में रहते-रहते झुलस गया था। गाढ़े का कुर्ता, पैजामा पहने था जो अच्छा खासा मैला हो चुका था। गले में दस रुपये वाला अंगौछा था। बालों में ज़रूर भूसे के कुछ टुकड़े रहे होंगे। पैर और चप्पल धूल में अटे थे।

गुलशन तीन गिलासों में पानी ले आया। अहमद ने कहा "यार गाड़ी के डिक्की से सामान निकलवा लो। मैडम हम सबके लिए

लखनऊ दिल्ली से खाना पैक करा लाई हैं और पानी की बोतलें भी हैं। तीन सूटकेस भी हैं। गुलशन ने पानी के गिलासों की ट्रे तख़्त पर रख दी और अहमद के साथ गाड़ी से सामान निकालने चला गया।

"आप लोग दिल्ली से आ रहे हैं।"

"हां. . .मार्निंग "लाइट था. . .पहुंचा लखनऊ . . ." मैं समझ गया राजी रत्ना को हिंदी बोलने में असुविधा हो रही है।

"आपका विलेज सुंदर है।"

"हां, थैंक यू. .. गांव के पीछे जहां तालाब, सरकण्डे के जंगल और आम के बाग हैं वह इलाका बहुत खूबसूरत है।"

शाम को चौरे की विशाल छत पर तीन चारपाइयां और उनके बीच एक चौकी डाल दी गयी। छत पर से गांव का नज़ारा राजी और अहमद को बहुत अच्छा लगा। अहमद अपना कैमरा ले आया जिसका लेंस बंदूक की नलकी की तरह लंबा था। वह छत पर से गांव की तस्वीरें लेने लगा। उसके बाद उसने कैमरा राजी की तरफ मोड़ दिया और क्लिक क्लिक की आवाजें लगातार आने लगी। हर क्लिक की आवाज़ पर राज़ी नया पोज़ देने लगी। मैं उसकी सुंदरता और शारीरिक सुंदरता पर मुग्ध हो गया। मज़े की बात यह भी थी कि वह शर्म और हया जैसे शब्दों से अपरिचित लगी।

अंधेरा होते ही गुलशन ने चौकी पर मिट्टी के सिकोरों में रुई लगा कर बनाये गये चिराग जला दिया। अहमद ने जॉनी वाकर ब्लैक लेबिल निकाली। सोड़े की बोतलें और बर्फ का थर्मस खोला। गिलासों में विस्की बनाने लगा। राजी के लिए उसने एक गिलास में 'जिन` डाली और उसमें टमाटर का जूस मिला दिया। अहमद इतनी तैयारी से आया था कि उसे यहां किसी चीज़ की ज़रूरत ही न पड़ी। वह अच्छी तरह जानता होगा कि यहां कुछ न मिलेगा।

"यार बड़ी तैयारी से आये हो", मैंने अहमद से कहा।

"दरअसल हम लोग खजुराहो जा रहे हैं", वह बोला।

"खजुराहो", मैं उछल पड़ा।

"चलो तुम भी चलो।"

"मैं. . .?"

"हां. . .हां . . . गाड़ी में कम से कम एक आदमी के लिए तो जगह है ही।"

"यार गेहूं की मड़ाई हो रही है।"

"देख लो यार।"

मैंने सोचा मेरे साथ हमेशा ही ऐसा क्यों होता है। जब कुछ यादगार घटने वाला होता है और उसमें मेरी शिरकत हो सकती है तो कोई न कोई काम निकल आता है।

"राजी हिन्दोस्तान में मंदिरों पर एक फोटो फीचर बनाने जा रही है। इसी के साथ एक 'काफी टेबुल बुक` छपेगी और हम लोग अपनी 'रेकमेण्डेशन्स` 'मिनिस्ट्री ऑफ टूरिज्म़` को देंगे कि मंदिर टूरिज्म़ को कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है। टूरिज्म़ डेवलपमेण्ट कारपोरेशन के साथ-साथ इस प्रोजेक्ट में कई 'मिनिस्ट्रीज़` भी लगी हुई हैं। मैं इस प्रोग्राम का कोआर्डीनेटर हूं क्योंकि इसको मैंने ही 'कन्सीव` किया था और हमारे हाई कमिश्नर ने लंदन से ये नोट कैबनिट सेक्रेट्री को भेजा था। आजकल मिस्टर घोष कैबनिट सेक्रेट्री है. . .वही जिनकी कोठी पर एक बार तुम मिलने आये थे?"

"हां-हां मुझे याद आ गया. . .इन्दरानी के अंकिल।"

"यस. . .वही अंकिल जिन्हें गवर्नमेण्ट ऑफ इंडिया के अलावा पूरा हिन्दुस्तान पागल मानता है।"

नशे का मजा थोड़ी ही देर में चढ़कर बोलने लगा। राजी रत्ना ने अपना गिलास खाली कर दिया। अहमद ने उसे दूसरा ड्रिंक बना दिया। हम लोगों का तीसरा ड्रिंक चल रहा था।

"यू आर सिटिंग टू फार फ्राम अस", अहमद ने राजी से कहा। वह उठकर अहमद के पलंग पर उसके साथ बैठ गयी। फिर अहमद की पीठ के पीछे पलंग पर लेट गयी।

वाह यार वाह क्या साले की किस्मत है लेकिन ये कोई नई बात नहीं है। लड़कियां तो इस पर उस ज़माने से मरती आयी हैं जब ये बी.ए. फर्स्ट इयर में था।

हम लोग अलीगढ़ के ज़माने की बातें करने लगे। उन दिलचस्प लोगों के किस्से जो दुनिया से निराले थे। बरकत अली खां कुंवर साहब छपरकनौती एण्ड मीर साहब गढ़ी कोटला के किस्से। इन पात्रों के बारे में अहमद अंग्रेज़ी में राजी को बताता जाता था और बस हंसती थी। उसकी हंसी रात की नीरवता में रौशनी की तरह फूटती थी।

कुछ देर बाद अहमद फैज़ की ग़ज़ल 'तुम आये हो न शबे इंतिज़ार गुजरी है` गाने लगा। मैं साथ देने लगा। राजी ने अपना सिर अहमद की गोद में रख लिया।

"यार सीढ़ियों वाला दरवाज़ा तो बंद है न?"

"हां बंद हैं वैसे भी जब तक मैं आवाज़ न दूंगा। यहां कोई नहीं आयेगा।"

"परिन्दा पर नहीं मार सकता।" वह हंसा।

फिर हम 'मजाज़` की 'आवारा` गाने लगे। उसके बाद 'मौत` गायी गयी। नशा बढ़ने के साथ आवाज़े सुंदर होती चली गयीं। पता नहीं हम रात में कितनी देर तक गाते रहे और पीते रहे। पहली बार मुझे लगा कि यार जगह कुछ नहीं होती। लोग होते हैं जो जगह को 'जगह` बनाते हैं।

रात में कोई तीन बजे मेरी आंख खुली तो राजी और अहमद एक ही पलंग पर लेटे थे। सो नहीं रहे थे। जो आदमी राजी के साथ लेटा हो वह सो कैसे सकता है और जो आदमी इन दोनों को साथ लेटे देख रहा हो वह भी कैसे सो सकता है।

पौ फटने के बाद राजी दूसरे पलंग पर चली गयी और फिर हम तीनों उस वक्त तक सोते रहे जब तक कि तेज़ धूप ने हमारी आंखें मसली नहीं।

६----

कामरेड मिश्रा ने मुझे किसी ने किसी तरह 'कन्विंस` कर ही लिया कि मैं पार्टी टिकट पर नगर पालिका का चुनाव लड़ूं। मीटिंग में तय हुआ था कि शहर से पार्टी चार उम्मीदवार खड़े करेगी और नगरपालिका को अपने विचार फैलाने का मंच बनायेगी। लोगों के बीच जाने का मौका मिलेगा और पार्टी की ताकत भी बढ़ेगी। मैं बड़े पसोपेश में था। एक तरह गेहूं की मड़ाई हो रही थी जहां मेरा रहना बहुत ज़रूरी था और दूसरी तरफ इलेक्शन की सरगर्मियां थीं।

मुझे पार्टी ने नाका पार हल्के से खड़ा किया था। यह घोसियो का गढ़ था और यहां से एक घोसी भी खड़ा हो गया था। मैं अपने कार्यकर्ताओं के साथ इलाके में मीटिंगें करता था। घर-घर जाता था। लोगों से बातचीत होती थी। लेकिन अंदर ही अंदर पता यह चल रहा था कि घोसियों की पंचायत ने यह फैसला कर लिया है कि वोट घोसी को दिया जाऐगा। मेरे कार्यकर्ता लोगों को समझाते थे कि कहां एम.ए. पास आदमी और कहां जाहिल जपट आदमी? तुम लोग फ़र्क़ क्यों नहीं कर रहे हो? बातचीत में सब 'कन्विन्स` हो जाते थे लेकिन हक़ीक़त यही थी कि घोसियों के शत-प्रतिशत वोट बकरीदी घोसी को ही मिल रहे थे।

एक ख्याल मुझे यह आता था कि हमारा समाज छोटी-छोटी बिरादरियों में बंटा हुआ है और वे लोकतांत्रिक यानी बिरादरी की बैठकों में जनमत के आधार पर निर्णय लेती हैं और चाहती हैं कि उनका प्रतिनिधित्व उनकी ही जाति या बिरादरी का आदमी करे। यह बिरादरी समूह या गठबंधन नया नहीं है, बहुत पुराना है। इसे तोड़ना अभी संभव नहीं है। तो क्या लोकतंत्र का कोई ऐसा नक्शा तैयार हो सकता है जिसमें इन बिरादरियों की लोकतांत्रिक पद्धति और आकांक्षों को इस तरह मजबूत किया जाऐ कि उससे अंततः लोकतंत्र मज़बूत हो।

कामरेड मिश्रा से इस बारे में बात भी हुई थी। वे मुझसे सहमत नहीं थे। उनका कहना था कि बिरादरी व्यवस्था आदिम और अशिक्षित समाज की देन है। उसे "आधुनिक लोकतांत्रिक प्रक्रिया में परिवर्तन नहीं किया जा सकता। इसके अलावा बिरादरी को मान्यता देने का अर्थ जाति धर्म और सम्प्रदायगत जड़ता को स्वीकार करना होगा।

मुझे इस बहस में मज़ा आने लगा था। मैं उनसे कहता था, मान लीजिए शहर में दस बिरादरी है। दसों अपनी-अपनी बिरादरी से एक-एक आदमी चुन लें। ये चुने हुए दस लोग नगरपालिका के सदस्य बन जाऐं और शहर की भलाई के लिए काम करें। अगर कोई सदस्य भ्रष्ट होगा तो बिरादरी उसे निकाल बाहर करेगी और किसी दूसरे को चुन लेगी। कामरेड का कहना था कि इससे बिरादरियों के बीच अलगाव और वैमनस्य की भावना बढ़ेगी। मेरा तर्क था कि क्यों? व्यवहार में आज भी हमारा समाज बिरादरी जातियों में बंटा हुआ है उसमें वैमनस्य का कारण यह नहीं कि वह केवल बिरादरियों में बंटा हुआ है बल्कि यह है कि एक बिरादरी पर यह साबित किया जाता है कि दूसरी उसके अधिकारों का हनन कर रही है। यदि ऐसा न होता तो बिरादरी या जाति दूसरी बिरादरी या जाति के लिए मन में द्वेष न पालती। कामरेड कहते थे कि वर्ग समाज में यह द्वेष वर्ग विभाजन के कारण है और बिरादरी में भी वर्ग हैं। ऊंचे वर्ग का वर्चस्व है। अब सवाल यह उठता था कि क्या बिरादरी का लोकतांत्रिकरण बिरादरी के इस वर्ग विभेद को तोड़ेगा या नहीं? मैं कहता था कि लोकतंत्र का मॉडल हमने योरोप से लिया है जहां जाति बिरादरी का 'कान्सेप्ट` नहीं है। वहां तो वर्ग विभाजन साफ है और उस आधार पर राजनीति हो सकती है। पर

हमारे देश में बिरादरी और जाति समूहों के गठन को लोकतांत्रिक प्रक्रिया से गुज़रना होगा ताकि न केवल लोकतंत्र नीचे तक पहुँचे बल्कि कालान्तर में बिरादरी व्यापक सरोकारों से जुड़ेगी।

जैसे आमतौर पर बहसों का अंत नहीं होता इसका भी अंत क्यों

होता। इसके साथ-साथ प्रचार का काम चलता रहा। लेकिन मैं साफ देख रहा था कि बिरादरी की दीवार को हम किसी तरह भेद नहीं पा रहे हैं।

शहर के दूसरे तीन क्षेत्रों से तीन अन्य लोग खड़े किए गये थे। स्टेशन रोड से कामरेड बली सिंह, सैयदवाड़ा से आबरु बरेलवी और एक ग्रामीण क्षेत्र से सूरज चौहान चुनाव लड़ रहे थे और कुछ नहीं तो शहर मे लाल झंडों की भरमार हो गयी थी और लोग पार्टी पर ध्यान देने लगे थे।

गेहूं खलियान में तौला गया तो मेरे हाथों के तोते उड़ गये। कहां तो पन्द्रह मन के बीघे का हिसाब लगाया था और यह तो सात मन का बीघा भी नहीं था। खाद, बीज और पानी का पैसा निकाल दिया जाऐ तो क्या बचेगा? उसके बाद मेरे छः महीने से ज्यादा की जानतोड़ मेहनत? यही हाल आलू की फसल का हुआ। खाद वगैरा अधिक डालने से खेत में हरियाली तो बहुत दिखाई देती थी पर पैदावार अच्छी नहीं थी। आलू का दाम भी गिरा हुआ था। इतने नहीं थे कि कोल्ड स्टोरेज में रखवाये जाते। दूसरी तरफ सहकारी बैंक की किश्तें शुरू हो गयी थीं। वहां पैसा देना था लेकिन इन सब हालात से मैं निराश नहीं हुआ। सोचा खेती भी एक बहुत जटिल काम है। धीरे-धीरे अपने अनुभवों से आयेगी। आज नुकसान हुआ है तो कल फायदा होगा।

मौसम बदल गया। चारों तरफ धूल-धक्कड़ और झुलसा देने वाली गर्मी का साम्राज्य था। चौरा की ऊंची छतों और मोटी दीवारों के बीच में राहत नाम की चीज़ न थी। बिजली तो खैर नाम को ही आती थी। एक अमन की जगह थी तो बस नीम का पेड़ था जिसकी छाया में कुछ राहत मिलती थी। लेकिन धूल के बवण्डर वहां भी पीछा नहीं छोड़ते थे। नीम के नीचे बैठ या लेटकर कुछ पढ़ना भी मुश्किल था। एक अजीब तरह की खिन्नता और उदासी दिनभर रहती थी। शाम होते-होते कुछ बेहतर होता था। पर शाम का भी कोई मतलब इसलिए न था कि कुछ नया या उत्साह बढ़ाने वाला न होता था। वही दो-चार लोग आ जाते थे और गांव की बातें, फ़सलों के हालात, चोरी, डकैती की वारदातों पर तब्सिरे होते रहते थे। इन लोगों को आपस में तो मज़ा आता था लेकिन मुझे लगता था कि मेरे कान पक गये हैं और मैं गूंगा हो गया हूं क्योंकि मैं कुछ बोलता नहीं था। मैं बोलता तो क्या बोलता।

इसी दौरान मिश्राजी का संदेश मिला कि मैं तुरंत आ जाऊं। अब चुनाव में एक ही सप्ताह रह गया। चुनाव में भी मेरी दिलचस्पी ख़त्म हो चुकी थी। पर अब तो चुनाव लड़ना ही था। शहर पहुंचा तो जबरदस्त गर्मागर्मी का माहौल था। कामरेडों ने बस अड्डा लाल झण्डों और बैनरों से लाल कर दिया था। चौक पर एक लाल फाटक बनाया गया था। लाल चौक में क्रांतिकारी गाने गाये जाते थे। रोज़ दस-बीस पचास लोगों के जुलूस निकलते थे। जी.टी. रोड पर आफिस बना हुआ था। पोस्टर के गट्ठरों का ढेर और मतदाता सूचियों का अम्बार लगा था। हर तरफ एक अजीब किस्म का उत्साह था। 'आबरु` साहब ने इलेक्शन पर कुछ नज़्में लिखी थीं जिनका बड़ा चर्चा था। पर्चे बाज़ी भी चल रही थी। गर्माया हुआ माहौल देखकर मेरी हालत में कुछ सुधर हुआ। पंखे की हवा में दोपहर कटी। घर का खाना खाया। रात में पुलिया वाला प्रोग्राम हुआ, तब कहीं जाकर जान में जान आई। ये सोचकर और खुशी हुई कि

यार इन लोगों को मैं ही पार्टी के नजदीक लाया था। मुख्तार ने तो पूरी ब्रिगेड तैयार कर ली है। शमीम साइकिल वाले के अलावा कोई छ: सात सिलाई मज़दूर संघ के सदस्य काम कर रहे हैं। उमाशंकर भी अपने क्षेत्र के लोगों को ले आये थे। मिश्रा जी ने एक दिन मुझसे साफ कहा कि इतना उत्साह, जोश और हिम्मत पार्टी में पहले बिल्कुल नहीं थी। ये सब आपके कारण हुआ है। मैं क्या जवाब देता। खुश होकर ख़ामोश हो गया था।

चुनाव के दिन बीस रिक्शे और पांच इक्के किए गये थे ताकि वोटरों को पोलिंग स्टेशन तक ले जा सकें। इसके अलावा साइकिलें तो थीं हीं। मिश्रा जी ने सफेद झलझलाती धोती कुर्ता पहना था। कुर्ते पर हंसिया हथौड़ा का बैच लगा रखा था। वे हर क्षेत्र के सभी पोलिंग स्टेशनों का दौरा कर रहे थे। एस.डी.एम. की जीप भी शहर में दौड़ रही थी। मेरे

पोलिंग स्टेशन पर अतहर बैठा था। नाम ले लेकर बताया जा रहा था कि 'यार वह नहीं आया, उसे लाओ।` और कार्यकर्ता भाग रहे थे। सबके चेहरे लाल और कपड़े बुरी तरह पसीने में भीग गए थे। पूरे दिन वोट पकड़ते रहे और रात में पुलिया वाली महफिल जमी। यहां दोस्तों ने दो दौर चलने के बाद यह घोषित कर दिया कि मैं चुनाव जीत गया हूं। 'मार्जिन` कम है लेकिन चुनाव जीत गया। इस घोषणा पर कुछ दौर और चले। अतहर और उमाशंकर में हस्बे दस्तूर नोक झोंक होती रही। रात में बारह बजे घर लौटा तो देखा सल्लो बावरचीखाने में बैठी ऊंघ रही है। पता चला कि मुझे खाना खिलाने के लिए वह अभी तक जाग रही हैं उसे देखकर नशा उतर गया। अगले महीने उसकी शादी है।

बरामदे में बैठकर मैंने खाना खाया। आंगन में सब सो रहे थे। खाने के बाद मैंने सल्लो से कहा कि तुम ऊपर आ जाना तो उसने मना कर दिया। नशे में मुझे यह बहुत बुरा लगा और मैं गुस्से में कोठे पर चला गया।

अगले दिन 'रिज़ल्ट` आया। मैं पचास वोटों से हार गया था। पार्टी के 'कैन्डीडेटों` में सिर्फ कामरेड बली सिंह जीते थे। पहले तो मेरे और ग्रुप के सारे लोग निराशा में डूबे रहे लेकिन मिश्रा जी के आने और ये कहने कि ज़िले के इतिहास में पहली बार सी.पी.एम. का कोई उम्मीदवार जीता है, हम उत्साह में आ गये। जुलूस निकालने की तैयारियां शुरू हो गयी। घोड़ा लाया गया। बलीसिंह को घोड़े पर बैठाया गया। नगाड़े वाले बुलाये गये। एक-दो गैस बत्ती मिल गयी और जीत का जुलूस निकाला गया।

मैं जानता था कि बिरादरी की दीवार में मैं छेद नहीं कर पाऊंगा पर पता नहीं थोड़ी सी उम्मीद थी। वह भी गयी। उधर फसल चौपट हो गयी। अब क्या करूं? केसरियापुर चला जाऊं? सल्लो की शादी होने वाली है। वह अब मेरे पास नहीं आती। मैं क्या करूं? मुख्तार शाम को बुलाने भी आया, मैंने इंकार कर दिया। कहा तबीयत ठीक नहीं है। शाम अंधेरे में ऊपर कमरे मे ही पड़ा रहा। पता नहीं क्या-क्या सोचता रहा। नीचे से जब अम्मां की आवाज़ आई कि खाना तैयार है तो मैं नीचे गया।

आज पता नहीं कितने दिनों बाद सबके साथ खाना खाया। अब्बा ने इलेक्शन की बात छेड़ी और कहा कि मियां यहां डेमोक्रेसी का यही हाल है। तुम ख़ुद देखना चाहते थे, तुमने देख लिया। यहां तो कुछ हो ही नहीं सकता। वे बहुत देर तक इसी तरह की बातें करते रहे और मैं सुनता रहा। वे दरअसल मेरे इलेक्शन लड़ने से ही सहमत न थे। पर क्या करते। हमारे यहां एक मुहावरा है कि जब बाप का जूता बेटे के पैर में आने लगे तो बेटे को बेटा नहीं, दोस्त समझना चाहिए।

ऊपर आसमान में तारे थे। मैं तारों के बारे में कुछ नहीं जानता। इसलिए बस उन्हें देख रहा था। नींद कर दूर-दूर तक नामो-निशान नहीं था। तहसील के घण्टे ने ग्यारह बजाये। मैंने सोचा देखो आज कितने घंटे सुनने को मिलते हैं। आसमान साफ था और हवा थोड़ी-थोड़ी चलना शुरू हो गयी थी। अचानक मैंने देखा कि सल्लो आ गयी। मैं खुशी से उठकर बैठ गया।

जब हम साथ-साथ लेट गये तो वह बोली- "आप आज कहीं नहीं गये।" मैं खामोश रहा। लगा यह कह रही है कि आप इलेक्शन हार गये। आपकी फसल बर्बाद हो गयी, आलू की पैदावार अच्छी नहीं रही। आप दु:खी हैं और इस वजह से मैं आपके पास आई हूं. . .हालांकि इसी महीने मेरी शादी है. . .।

मैं खामोश रहा। वह मेरे सीने पर हाथ फेरने लगी। जो बातें आप शब्दों से नहीं कर पाते उसे स्पर्श से कह देते हैं। मुझे लगा यह स्पर्श पूरी एक किताब है। वह जाने क्या-क्या मुझसे कह रही है। बता रही है कि मेरे और उसके संबंध हैं लेकिन मैं मजबूर हूं, वह भी मजबूर है। पर मजबूरी से आगे भी कुछ होता है। वह यह कि मजबूरी को स्वीकार न किया जाऐ और उसे मान्यता न दी जाऐ। मैं उसके कंधें को सहलाने लगा। वह धीरे-धीरे सिसकने लगी। मैंने अपनी तरफ उसका चेहरा किया और उसे प्यार करने लगा। उसका रुदन बढ़ गया। सिसकियां तेज़ हो गयीं. . . हम सब कुछ सह लेते हैं, पर उसकी क़ीमत चुकाते हैं. . .हम ये क़ीमत ही तो चुका रहे हैं. . .मैं धीरे-धीरे उसके स्पर्श के माध्यम से उस ताप को महसूस करने लगा जो स्त्री और पुरुष के बीच की दीवारों को तोड़ देता है। वह सिर्फ सिसक रही थी। आसमान में केवल कुछ टिमटिमाते तारे थे और गर्मियों के दिनों की रातों के तीसरे पहर बहने वाली खुश गवार हवा थी। पता नहीं ये हवा कहां छिपी बैठी रहती है और तीसरे पहर के बाद आती है। हम दोनों खामोश नहीं थे। वह सिसकियां भर रही थी और मुझे पता नहीं था कि मेरे चेहरे पर जो आंसू हैं वे मेरे हैं या उसके हैं। हो सकता है ये कभी न पता चल सके।

बहती हवा के साथ, टिमटिमाते हुए तारों के साथ हमारा सफर आगे बढ़ता रहा। बिल्कुल ऐसा हो रहा था जैसे कोई माहिर उस्ताद आलाप शुरू कर रहा हो। गले के अंदर, बंद-बंद पर गहरी और दिल में उतर जाने वाली आवाज़ जिसके ओर-छोर का पता नहीं है। संवेदना की तरंगें हवा के साथ उसके चारों ओर फैल रही थीं और वह एक अर्थ में उसे पहचानती और दूसरे अर्थों में उसे अस्वीकार करने वाली स्थिति में थी जहां आदमी का अपने ऊपर वश नहीं चलता, वह सोचता कुछ और है, होता कुछ और है। हवा ने बंधन काटने शुरू कर दिये। टिमटिमाते तारों ने उन्हें जोड़ने की कोशिश की लेकिन एक हवा का तेज़ झोंका आया और अपने साथ हम दोनों को बहा कर ले गया। दूर बहुत दूर। होने और न होने की स्थिति से परे।

७----

वे बुझे-बुझे बेमतलब दिन थे। चुनाव में अपनी पूरी ताकत झोंक देने के बाद सब पता नहीं आराम कर रहे थे या अपनी अपनी हार से समझौता करने की कोशिश कर रहे थे। मैं दिन-दिनभर घर पर पड़ा रहता और 'जासूसी दुनिया` में डूबा रहता। आश्‍चर्य करता कि यार क्या लेखक है जो पूरा जगत रच देता है। जब चाहता है सिर्फ कुछ शब्दों के माध्यम से जहां चाहता है वहां पहुंचा देता है और इच्छानुसार बाहर निकाल कर पटक देता है। उसने एक प्रति संसार बनाया है जहां पाठक जीते और मरते हैं, खुश और दु:खी होते हैं। पात्रों से प्रेम और घृणा करते हैं।

एक दिन दोपहर को तार आया। दिल्ली से सरयू डोभाल ने तार भेजा था 'द नेशन डेली` के चीफ रिपोर्टर नज्मुल हसल से मिलो। वे तुम्हें नौकरी दे सकते हैं।` तार पढ़कर मैं सकते में आ गया। 'नेशन डेली` अंग्रेजी का प्रमुख

अखबार है। मैं हिंदी में एम.ए. हूं। नौकरी? अख़बार और वह भी अंग्रेज़ी के अख़बार में? मैं तार हाथ में लिए घंटों सोचता रहा। अब्बा ने तार पढ़ा। चश्मा उतारा। मेरी तरफ देखा और बोले- बोलो? क्या सोचते हो? मैं क्या बोलता? खामोश रहा। केसरियापुर, चौरा, खेती, रहमत और गुलशन। यहां पार्टी, दोस्त, आंदोलन. . .रिक्शा यूनियन, सिलाई कर्मचारी यूनियन, बीड़ी मज़दूर यूनियन. . . मुख्तार, उमाशंकर और मिश्रा जी. . .मैं क्या बोलता।

अब्बा समझ गये और बोले- "जल्दी क्या है सोच लो।"

एम.ए. किए हुए चार साल हो गये। अहमद लंदन हाई कमीशन में इंफारमेशन ऑफीसर है, शकील युवा कांग्रेस का अध्यक्ष बन गया है। किसी भी चुनाव में टिकट मिल सकता है। फैज़ी की शादी हो गयी है।

जावेद कमाल को नौकरी करनी पड़ रही है। कामरेड लाल सिंह शादी के चक्कर में है। सब कुछ गड्डमड्ड है। पता नहीं यहां क्या होगा? भविष्य अनिश्चित है। 'नेशन डेली` एक राष्ट्रीय अखबार है। उसके चपरासी की भी हैसियत होती है। मैं कम से कम चपरासी तो नहीं बनाया जाऊंगा। लेकिन समझ में आ नहीं रहा था कि क्या किया जाऐ। अगर चला भी गया तो क्या मैं अंग्रेजी में काम कर पाऊंगा या वहां से भी उसी तरह खाट खड़ी होगी जैसे यहां से हो रही है। तब मैं क्या करूंगा? लेकिन अगर कोई जानते बूझते हुए हिंदी के एम.ए. को अंग्रेजी के अखबार में ले रहा है तो जिम्मेदारी उसकी भी बनती है और अगर मैं चाहूं तो क्या अंग्रेजी सीख नहीं सकता? जो लोग जानते हैं वे आसमान से उतरे लोग तो नहीं हैं।

"हम जानते थे कामरेड कि आप यहां टिकोगे नहीं।" कामरेड मिश्रा बोले और मैं कटकर रह गया- "देश का दुर्भाग्य यही है कि पढ़े लिखे लोगों के लिए छोटे शहरों में रोजगार नहीं है।"

"मैं तय नहीं कर पा रहा हूं कि जाऊं या न जाऊं?"

"ज़रूर जाओ. . .अगर मैं तुम्हारी 'पोजीशन` में होता तो जरूर जाता", वे ठण्डी सांस लेकर बोले।

मेरे जाने के फैसले से अब्बा और अम्मां ही नहीं पूरा घर खुश था। खाला तैयारी में जुट गयी थी। सल्लो के चेहरे पर भी मैं खुशी की छाया देखी। दो दिन में तैयारी पूरी हो गयी। मुख्तार और उमाशंकर को जब ये पता चला कि मैं 'नेशल डेली` में नौकरी करने जा रहा हूं तो उनके ऊपर बिजली-सी गिरी। दो तरह की बिजलियां थीं पहली यह कि मैं यहां सब कुछ छोड़ रहा हूं और दूसरी यह कि मैं 'नेशन डेली` जैसे अखबार में जा रहा हूं।

ट्रेन के वक्त के कोई एक घण्टा पहले मैं स्टेशन पहुंच गया था। सामान कुछ ज्यादा था। खाला ने कई तरह के हलुए, नमक पारे, मीठी टिकियाँ, लड्डू और न जाने क्या-क्या साथ कर दिया था। रात में खाने के लिए कबाब और पराठे थे। अब्बा ने दिल्ली में एक दो लोगों के नाम ख़त दिये थे। अब्बा स्टेशन आने पर तैयार थे लेकिन मैंने उन्हें बता दिया था कि मुझे सवार कराने बहुत लोग होंगे और वो क्यों तकलीफ करते हैं और फिर ट्रेन अक्सर लेट हो जाती है। रात का ग्यारह बारह बज सकता है।

स्टेशन पर उमाशंकर, मुख्तार, कलूट, अतहर के अलावा शमीम, किरमान और दूसरे लड़के भी थे। उमाशंकर और मुख्तार पिये हुए थे। खासतौर पर मुख्तार बहुत चढ़ाये हुए लग रहा था। उसे देखकर मेरा मन भर आया। तीन साल पहले जब वह मुझसे पहली बार मिला था तो पक्का मुस्लिम लीगी ज़ेहनियत का आदमी था। आज वह

वामपंथी राजनीति में हैं सीध है। सीधी बात सोचता है। उमाशंकर कांग्रेसी हुआ करता था। इन दोनों ने मेरे कहने, समझने और 'कन्विन्स` करने से एक सपना बुना था। पता नहीं मैं उस सपने के केन्द्र में था या नहीं लेकिन इतना तय है कि उस सपने में मेरी एक महत्वपूर्ण स्थिति थी। मैं इन लोगों से आंखें नहीं मिला पा रहा था। सामान को टी-स्टाल पर रखवाकर हम स्टेशन के उस हिस्से में चले गये जहां अंधेरा था। मैं उम्मीद कर रहा था कि अब ये लोग मुझ पर सवालों की बौछार कर देंगे। लेकिन वे खामोश थे। इधर-उधर की बातें हो रही थीं। दिल्ली की बातें 'नेशन डेली` की बातें, हम जानबूझ कर इस बात से बच रहे थे कि मैं वापस दिल्ली जा रहा हूं। उस शहर जा रहा हूं जिसने मेरे चूतड़ों पर लात मारकर मुझे बाहर कर दिया था. . . पूरे माहौल में एक तनाव था, लगता अगर ये बाहर आ गया तो संभालना मुश्किल हो जाऐगा।

ट्रेन जब दूर से आती दिखाई देने लगी तो मुख्तार मुझसे लिपट कर रोने लगा। उमाशंकर ने उसे डांटा- 'अबे ये क्या. . . कोई सात समन्दर पार तो जा नहीं रहे हैं। रातभर का सफर है. . .दिल्ली यहां से कितनी दूर है।` मैं सोचने लगा शायद यहां से दिल्ली सात समन्दर पार ही है और मुख्तार का रोना वाजिब है।

सुबह दिल्ली स्टेशन पर उतरा तो ध्यान आया कि जब यहां से जा रहा था और बाबा मुझे छोड़ने आया था तो प्लेटफार्म पर हमने शराब के

नशे में बहुत थूका था- दरअसल यह थूकना था दिल्ली पर। तो मैं दिल्ली पर थूककर गया था और अब फिर दिल्ली आ गया। कोई आवाज़ आई- अपने थूके को चाटने आये हो तुम. . .तुम्हारी इतनी हिम्मत हो गयी थी कि राजधानी पर थूक कर गये थे। देखा अब तुम इसे चाट रहे हो।

सरयू डोभाल के चेहरे पर मुस्कुराहट फैल गयी। उसकी उदास और गहरी आंखों में पुराने संबंधों की झलकियां दिखाई पड़ी।

"कब आये?"

"बस सीध स्टेशन से चला आ रहा हूं।"

बाथरूम से निकलकर अमित जोशी आ गया। उसका स्वभाव बिल्कुल अलग और बेलौस किस्म का है।

दोनों लंबे समय से साथ-साथ रहते हैं। छोटी-छोटी बातों पर उनके बीच चलती रहती है। बड़ी बातों पर कभी विवाद नहीं होता क्योंकि जीवन, जगत, राजनीति के बारे में उनकी राय एक है। किचन में पानी गिरा देने, बाल्टी में कपड़े भिगोकर छोड़ देने, चप्पल में कील लगवाने, छिपाकर रखी गयी आधी सिगरेट पी जाने पर दोनों में बहस हो जाती है जो साहित्य, कला और संस्कृति का चक्कर लगाती मनोविज्ञान और राजनीति तक खिंचती चली जाती है। फिर दोनों थक जाते हैं और बाहर निकल पड़ते हैं। दोनों कविताएं लिखते हैं, दोनों नक्सलवाद के प्रति समर्पित हैं। अमिता तो कुछ ज्यादा ही लाल है। वह शायद पार्टी सदस्य है और कई बार गंभीरता से 'आर्म स्ट्रल` में शामिल होने के बारे में सोच चुका है।

"कहो खेती बाड़ी कैसी चल रही है?" अमित ने पूछा।

"बस यार हो गया खेल खतम।"

"अरे क्यों क्या हुआ?" सरयू बोला।

"बस क्या बताऊँ लंबी दास्तान है. . ."

वे दोनों चले गये। मैं सो गया। तय यह हुआ था कि शाम को

काफी हाउस आ जाएंगे और वही से वापस घर आयेंगे।

काफी हाउस पूरा ब्रह्माण्ड है। उसमें अनगिनत ग्लैक्सियां हैं। इनके अपने-अपने सूरज और चांद हैं अपनी-अपनी पृथ्वी है। जिस तरह कोई -पूरे ब्रह्माण्ड को नहीं जानता उसी तरह कोई यह नहीं कह सकता कि मैं काफी हाउस को जानता हूं। सुबह फूल वाले उसके बाद ऑफिस वाले, फिर रेसवाले, सट्टेवाले, दुकानदार, प्रेमीजोड़े, बेरोजगार युवक, काफी हाउस से ही ऑफिस चलाने वाले व्यापारी, चित्रकार, नशेड़ी, अपराधी, होमो सेक्सुअल, पत्रकार और शाम होते-होते मिली-जुली ग्लैक्सियां नज़र आती है। हिंदी के लेखक-कवि, उर्दू के साहित्यकार, चित्रकार, दफ्तरों से निकले बाबू, पत्रकार, अध्यापक, प्रकाशक, सपरिवार कुछ लोग सिनेमा जाने से पहले काफी पीने के इच्छुक हैं। सबकी न केवल अपनी-अपनी मेजें 'सुरक्षित` होती है बल्कि जगह भी लगभग तय हो गयी है। काफी हाउस के अंदर आते ही लगता है कि जैसे घर आ गये हों।

हिंदी वालों की अपनी अलग जगह है। ज्यादा लोग आ जाते हैं तो कुर्सियों की संख्या बढ़ जाती है और ज्यादा आ जाते हैं तो मेज़ें जोड़ दी जाती हैं और ज्यादा आते हैं तो रेलिंग पर काफी के कप रख लेते हैं। पर यहां आने वाला बिना अपना उद्देश्य पूरे हुए जाता नहीं। हिंदी वालों के भी कई समूह हैं। ये समूह नए पुराने के आधार पर या वैचारिक आधार पर या क्षेत्र के आधार पर नहीं बने हैं। साहित्यिक आंदोलनों और पत्रिकाओं के आधार पर भी नहीं है। बस कुछ ऐसा है कि जिसे जहां बैठना रुचता है, वहीं बैठता है। गांधीवादी और नक्सलवादी साथ बैठ सकते हैं। सत्तर साल का आदमी और बाइस साल का लड़का एक मेज़ पर काफी पी सकते हैं। नौकरी पाया खाया-पिया साहित्यकार और भुखमरी से जूझता कवि साथ हो सकते हैं। कुछ लोग बहुत बोलते हैं। कुछ बिल्कुल खामोश रहते हैं। कुछ लड़ते हैं तो कुछ आवाज़ तक नहीं निकालते। बहस होती है तो ये पता नहीं चलता कि कौन क्या कह रहा है। बोलने और सुनने पर पाबंदी नहीं है।

हमारी अपनी अलग ग्लैक्सी है। ज्यादातर साहित्यकार हैं या साहित्य में रुचि लेने वाले हैं। रुचि लेते लेते वे भी लेखक-कवि बन जाते हैं। किसी के कुछ बनने या बिगड़ने पर कोई कुछ नहीं कहता, हां इतना ज़रूर है कि यहां किसी का अपमान करना वर्जित है। हमारी टोली में ज्यादातर जवान लोग हैं। सबको एक दूसरे के बारे में पता है । जो काफी के पैसे नहीं दे सकता है उससे कोई नहीं कहता कि तुम अपने पैसे दो। उसके पैसे इधर-उधर से हो जाते हैं।

शाम को काफी हाउस आने वाले में एक विशिष्ट व्यक्ति हैं जागेश्वर जी। इनके बारे में सबको सब कुछ मालूम है। जागेश्वर जी दुबले-पतले हैं। सिर कुछ ज्यादा बड़ा है या शायद सफेद दाढ़ी और बड़े बालों के कारण ऐसा लगता है। हमेशा सफेद कुर्ता और पैजामा पहनते हैं। जेब में कलम और हाथों में काग़ज़ों का बंडल होता है। हमेशा नशे में दिखाई देते हैं। कुर्ते की जेबों में शराब के दो अद्धे होते हैं, जिनमें वे खुलेआम पीते हैं। उनके ऊपर काफी हाउस में

कोई रोक-टोक नहीं है। नशा जब ज्यादा हो जाता है तो किसी जगह खड़े होकर भाषण जैसा देने लगते हैं जिसे कोई नहीं सुनता। रात में दस बजे तक काफी हाउस में इधर-उधर चक्कर लगाते हैं और फिर चले जाते हैं।

जागेश्वर जी कभी कम्युनिस्ट पार्टी के 'होल टाइमर` हुआ करते थे और बंबई के बान्दरा इलाके वाली कम्यून में रहते थे। बरसों वहां ट्रेड यूनियन में काम किया। पैसों की कमी की वजह से कहते हैं एक बार अपने लड़के का इलाज नहीं करा पाये थे जिसकी वजह से उसकी मौत हो गयी थी लेकिन पार्टी से उनका लगाव और काम के प्रति उनका समर्पण कम नहीं हुआ। वे लगातार अपने आपको ट्रेड यूनियन में झोंके रहे। पार्टी पर प्रतिबंध लगने के बाद वे अंडर ग्राउण्ड हो गये और कानपुर में काम करते रहे। फिर जब पार्टी की लाइन बदली और पार्टी संसदीय लोकतंत्र में शामिल होने को तैयार हो गयी तो कामरेड जागेश्वर पार्टी से अलग हो गये। इसी दौरान शराब पीने लगे। धीरे-धीरे इतनी पीने लगे कि चौबीस घंटे नशे में रहने लगे। अब जागेश्वर जी कुछ अख़बारों में अनुवाद का काम करते हैं और शराब पीते हैं। काफी हाउस में उनका बड़ा सम्मान है। हर आने वाला उन्हें जानता है। कोई उनसे कुछ नहीं कहता। जिस मेज़ पर जिन लोगों के साथ उन्हें जाकर बैठना होता है बैठ जाते हैं। आमतौर पर कुछ नहीं बोलते। अपनी लाल लाल आंखों से सबको घूरते रहते हैं। वे अक्सर हम लोगों के साथ बैठते हैं। उनसे काफी के लिए पूछा जाता है और वे मना कर देते हैं।

एक और ख़ास आदमी आता है। काफी छोटे कद का यह आदमी खाकी नेकर और कमीज़ पहनता है। चेहरे पर अजीब तरह की दाढ़ी रखता है। इसके पैरों में स्पोर्ट शू होते हैं। यह आता है पूरे काफी हाउस में लोगों से हाथ मिलाता है। बताया जाता है कि यह कभी हॉकी का खिलाड़ी था। बहुत उत्साह में, शायद नशे की वजह से, यह आदमी सब से हाथ मिलाकर चला जाता है। वैसे तो हम लोगों की मेज़ पर आने वालों की सूची में पचास-साठ नाम आ जाएंगे लेकिन बराबर आने वालों और एक दूसरे को जानने समझने वालों की सूची भी दस-पन्द्रह से कम न होगी। इन दस पन्द्रह में इतनी भिन्नता है कि दोस्ती का आधार खोज पाना भी कभी-कभी संकट का काम हो जाता है। नवीन जोशी किसी 'ऐड ऐजेन्सी` में काम करता है। बिल्कुल वैसा ही लगता है जैसा अल्मोड़ा के पंडित होते हैं। मण्डली में वह उन चंद लोगों में है जिनकी कुछ बेहतर नौकरी है। इसलिए नवीन पर ऐसी ज़िम्मेदारियाँ आ जाती हैं जिन्हें निभाना ज़रूरी हो जाता है। जैसे किसी के पास काफी हाउस से वापस जाने के लिए बस का किराया नहीं है, किसी के पास फूटी कौड़ी नहीं बची है वगैरा वगैरा। नवीन के पास जब देने के पैसे नहीं होते तो उसके चेहरे पर ऐसे भाव आ जाते हैं जैसे उससे पैसे मांगे नहीं जा रहे हैं बल्कि वह ख़ुद मांग रहा है। नवीन ने हाल ही में कविताएं लिखना शुरू किया है। इसके अलावा फिल्मों और कला प्रदर्शनियों की समीक्षा भी कर देता है। उसे विज्ञान में दिलचस्पी है. . .और सबसे ज्यादा पसंद है गप्पबाज़ी, यारबाज़ी ओर काफी की मेज़ पर बौद्धिक बहसें करना।

इस मण्डली में हनीफ नाम का एक लड़का है जो कभी-कभी पागल हो जाता है। पागलपन के दौरों के दौरान वह पूरी मण्डली को इस कदर परेशान कर देता है कि लोग उससे पनाह मांगने लगते हैं। वैसे वह अच्छा चित्रकार और कवि है। पता नहीं उसके ये दौरे कैसे होते हैं? क्यों आते हैं? इलाज? अनिल वर्मा पत्रिका निकालता है और फ्रीलांसिंग करता है। इससे पहले इलाहाबाद में पढ़ाता था लेकिन कुछ प्रभावशाली लोग उसके खिलाफ हो गये थे और उसे निकाल दिया गया। पंकज मिश्रा अधेड़ उम्र लेखक हैं। अब कविताएं लिखना बंद कर चुके हैं और समीक्षा करते हैं। अभी हाल में एक दिन नवीन बलीसिंह रावत को ले आया। वह बंबई में प्रूफ़ रीडर था अब यहां 'राष्ट्र` में

सह-सम्पादक हो गया है। दूसरे लोगों में रामपूरन, कांति, जगदीश्वर जैसे नए लड़के हैं जो कैरियर बनाने दिल्ली आये हैं।

पुराने दोस्तों में बाबा है। वह अब काफी हाउस नहीं आता। कहता है यह समय मैं अपने बच्चों को देता हूं। उन्हें मैं खुद पढ़ाता हूं। मैं यह नहीं चाहता कि वे भी मेरी तरह जीवन को एक शोकगीत के रूप में गाते रहें।

मैं जब काफी हाउस पहुंचा तो अमरेश जी भी बैठे थे। किसी जमाने में कविताएं लिखा करते थे और लोहियाजी के युवातम् मित्रों में थे। आजकल विख्यात समाजवादी मज़दूर नेता विक्टर डिसूज़ा के साथ 'हमारा समाज` निकाल रहे हैं। आजकल इन्हीं के साथ सरयू डोभाल काम कर रहा है। इनके अलावा जे.एन.यू. के कुछ छात्र भी थे। बातचीत 'गोली दागो पोस्टर` पर हो रही थी। चूंकि कविता मैंने नहीं पढ़ी थी इसलिए सिर्फ खामोशी से सुन रहा था। कभी-कभी काफी हाउस आने लेकिन अपना पूरा हक जताने वाले निगम साहब भी अपने तरह के आदमी है: खाते-पीते आदमी है: कविताएं लिखते है: अपने आपको लखनऊ स्कूल का शायर भी मानते हैं और ये कहते है कि 'असर` लखनवी के शागिर्द आगा 'गौहर` से लखनऊ में 'इस्लाह` लिया करते थे। निगम साहब पहले अपना तखतलुख छोड़ दिया है।

निगम साहब की गाड़ी काफी हाउस के सामने खड़ी रहती है और जरूरत के मुताबिक जब जिसको चाहते हैं गाड़ी में आने की दावत देते हैं। वहाँ थर्मस में बर्फ, पानी और विस्की की बोतल बराबर मौजूद रहती हैं।

धीरे-धीरे दूसरे लोग आते रहे और कुछ उठ-उठकर जाते रहे। बहस पता नहीं कैसे चारु मजूमदार से होती लिन पियाऊ पर आ गयी और फिर इधर-उधर भटकती हुई एम.एफ. हुसैन की नई प्रदर्शनी पर होने लगी।

वही परिचित दृश्य, परिचित लोग- क्या यही मेरी दुनिया है? और वह जो छोड़ आया हूं? वह शहर? वहां की धूल उड़ाती गलियां, खुली हुई गंदी नालियां, हाड़-मांस का ढांचा शरीर, बंधुआ मज़दूर, खेती में जान खपाते रामसेवक और गोपाल? क्या वह मेरा यथार्थ है? मेरा ही क्यों देश का यथार्थ है। फिर हम यहां क्यों खुश हैं? क्या 'सात समन्दर पार` एक ही देश के अंदर ये नख्लिस्तान बनाये गये हैं इसलिए बनाये गये हैं कि हर वह आदमी जो 'कुछ` कर सकता है अपने दिल की भड़ास निकालता रहे। ख़ैर छोड़ो अभी कल हसन साहब से मिलना है। पता नहीं कैसी नौकरी है जो वे देना चाहते हैं।

९----

"अच्छा तो तुम्हें ये डर है कि तुम हिंदी मे एम.ए. हो अंग्रेजी कैसे लिखोगे. . .जानते हो अख़बार की जुबान में कितने लफ्ज होते हैं? मुश्किल से हज़ार और कितने तरह के जुमले बनते हैं? मुश्किल चार किस्म के. . .भई ये कोई 'लिटरेचर` तो है नहीं. . .तुम ये फ़ाइल ले लो और इधर बैठ जाओ. . .वहां डिक्शनरियां रखी हैं. . .आज कम से कम दो सौ नए लफ़्ज़ सीख लो. . .और जुमले. . .छपी हुई रिपोर्ट्स को पढ़ो. . .सब कुछ वैसे का वैसा ही जाता है। बस तारीख़ नाम, जगहें बदल जाती हैं. . .समझे. . ." हसन साहब ने मेरी ट्रेनिंग शुरू कर दी थी और मैं तेज़ी से सीखने लगा। एक ही हफ़्ते में उन्हें रिपोर्टें लिख कर दिखाने लगा। मुझे मैथ्यू साहब के साथ लगा दिया गया। मैथ्यू एम.सी.डी. 'कवर` करते हैं। ग्यारह बजे के बाद वे आते थे। मैं उनके साथ लग लेता था। वे सीधे प्रेस क्लब आ जाते थे। वहां उनका लंच होता था जिसके साथ दो बियर पीते थे। उसके बाद मैथ्यू फोन घुमाना शुरू करते थे। दस-बीस लोगों से कारपोरेशन की खबरें ले लेते थे। फिर हम चाय पीकर चार बजते-बजते दफ्तर आ जाते थे।

मैथ्यू नोट्स मुझे दे देते थे। मैं न्यूज़ बनाता था। वे सिगरेट पर सिगरेट फूंकते और देश भर के अख़बार चाटते रहते थे। मेरी न्यूज़ में कुछ फेर करने के लिए वे टाइप राइटर पर बैठ जाते थे और बिजली की तेजी से उनकी उंगलियां चलती थीं। आठ बजे से पहले पहले न्यूज़ चीफ रिपोर्टर हसन साहब की मेज़ पर पहुंच जाती थी। हसन साहब नौ बजे के बाद आते थे। यानी मैं काफी हाउस का एक चक्कर लगा आता था और ग्यारह बजते-बजते रिपोर्टिंग से लोग जाने लगते थे। सबसे बाद में जाने वालों में हसन साहब हुआ करते थे क्योंकि वे डमी देखकर ही जाते थे।

दुबले, पतले, औसत कद, तीखा नाक नक्शा, तांबे की तरह चमकता रंग, घने सूखे और काले बाल। हसन साहब में अब भी उस आग की चिंगारियां हैं जो एक ज़माना हुआ उनके अंदर लगी थी। कभी-कभी मुझे अपने साथ घर ले जाते थे और स्काच विस्की की बोतल खोलकर बैठ जाते थे। हालांकि ऐसा बहुत कम होता था क्योंकि वे अपने काम में दीवानगी की हद तक डूबे हुए थे और रात दिन न्यूज़ के अलावा उन्हें कुछ और न सुझाई देता था लेकिन जब अपने घर ले जाते थे तो कभी-कभी रात के तीन बज जाएण करते थे और मुझे वहीं सोफे पर सोना पड़ता था। हसन साहब ने अपने बारे में जो बताया या बातचीत में पता चला वह कुछ ऐसा था।

हसन साहब के वालिद अरबी फारसी के विद्वान और मौलवी थे। पूरी जिंदगी वे राजा महमूदाबाद की लायब्रेरी में फारसी और अरबी- पाण्डुलिपियों के इंचार्ज रहे और राजा साहब के लिए नायाब पाण्डुलिपियां जमा करते रहे। रिटायर होकर वे अपने आबाई गांव हसुआ चले गये ओर वहीं इंतिकाल हुआ। हसन साहब अपने वालिद के प्रभाव में पक्के मज़हबी और कट्टर शिआ थे। लखनऊ यूनीवर्सिटी से बी.ए. कर रहे थे। उसी ज़माने में उनकी मुलाकात पंडित सुंदरलाल से हो गयी। पंडित जी अपनी मशहूरे-ज़माना किताब 'भारत में अंग्रेजी राज` लिख रहे थे। उन्हें किसी लड़के की ज़रूरत थी जो उनकी मदद कर दे। हसन साहब तैयार हो गये। पंडित जी का साथ उन्हें ऐसा रास आया कि बी.ए. करने के बाद पंडित जी के साथ ही लगे रहे। उनके सेक्रेटरी हो गये। इसी दौरान हसन साहब आचार्य नरेन्द्र देव, जेड़ अहमद और ज़ोय अंसारी वगैरा के सम्पर्क में आये। पंडित सुंदरलाल उन्हें लेकर हैदराबाद गये। यह उथल-पुथल का ज़माना था। अँग्रेज़ जा चुके थे। निज़ाम पूरी तरह अपने प्रधानमंत्री कासिम रिज़वी के शिकंजे में थे। कासिम रिज़वी हैदराबाद को आज़ाद मुस्लिम देश बनाने के सपने देख रहा था। हथियार मंगवाये जा रहे थे और राज़ाकारों की "फौज तैयार हो रही थी। इसके बाद दंगों वाले दिनों में भी हसन साहब पंडित जी के साथ रहे और फिर एक दिन पंडित जी से कहा कि वे जाना चाहते हैं। पंडित जी जानते थे उन्होंने

मुस्करा कर कहा हां मैं जानता हूं मेरे आंगन का पिछला दरवाजा किधर खुलता है।

हसन साहब सी.पी.आई. के होल टाइमर हो गये। इस बीच विवाह कर लिया था। पार्टी ने उन्हें लखनऊ से दिल्ली भेजा और उर्दू 'लाल पैगाम` का सम्पादक बना दिया। अखबार का दफ्तर दरियागंज में हुआ था और हसन साहब दस किलोमीटर दूर भोगल नाम के एक गांव में रहते थे। हसन साहब ने बताया था कि अक्सर दफ्तर में इतनी देर हो जाती थी कि कोई सवारी नहीं मिलती थी और वे डबल मार्च कर देते थे। रास्ते में छ: सिगरेट पीते थे और रात ग्यारह बजे तक घर पहुंच जाते थे। फिर रण देव का ज़माना आया। पार्टी ने एक ऐसी छलांग लगाने की कोशिश की जिसमें पैर ही टूटना था। प्रेस ज़प्त हो गया। दफ्तर पर ताले लग गये। हसन साहब के लिए आदेश हुआ कि तेलंगाना जाओ। छ: महीनों तक रातों को जागने और दिन में छिपकर सोने में बीते। अंधेरी रातों में गोलियों की तड़तड़ाहट, चीख़ों, रौशनी, पुलिस का आतंक सब देखा। आखिरकार आंदोलन बिखर गया तो फिर वापस आये।

पार्टी की लाइन बदल गयी थी। संसदीय लोकतंत्र को पार्टी ने स्वीकार कर लिया था। हसन साहब ने कहा कि जिस दिन ऐसा हुआ उसी दिन मैंने पार्टी से इस्तीफा दे दिया और समझ गया कि अब क्रांति नहीं आयेगी। एक सपना जो एक दशक से ज्यादा उनकी प्रेरणा का स्रोत था वह ख़त्म हो गया था। उसके बाद कहीं न कहीं तो नौकरी करनी ही थी और पत्रकारिता के अलावा कुछ जानते न थे। इसलिए पत्रकार हो गये।

पता नहीं क्यों यह कहा जाता है कि भूतपूर्व कम्युनिस्ट बहुत अच्छा आदमी होता है या बहुत खराब। उससे यह आशा नहीं की जा सकती कि अच्छाई और बुराई दोनों का कुछ-कुछ लेकर चलेगा। इस मान्यता के अनुसार हसन साहब बहुत अच्छे आदमी हैं। ऐसा नहीं है कि उन्हें नापसंद करने वाले कम हैं। ऐसा भी नहीं कि उनका कोई विरोध नहीं होता। लेकिन विरोधी यह मानते हैं कि पीछे से हमला नहीं करता। मानवीयता है। और जो दोस्त हैं वे तो जान देने के लिए तैयार रहते हैं। अखबार की राजनीति के अखाड़े में वे सिर्फ अपने काम में बल पर जमे

हुए हैं। जी.एम. उनकी ताकत को पहचानता है। एडीटरों से आमतौर पर उनका कोई मतभेद इसलिए नहीं होता कि दिल्ली रिपोर्टिंग से एडीटर ज्यादा मतलब रखते भी नहीं। संवेदनशील 'क्षेत्र` विशेष संवाददाताओं को दिए जाते हैं जिन पर एडीटर की सीधी कमाण्ड होती है।

ये मुझे बाद में पता चला कि मैथ्यू के बारे में लोगों ने उड़ा रखी है कि वह 'होमोसेक्सुअल` है मुझे हसन साहब ने जब मैथ्यू के साथ लगाया था तो कई लोगों के चेहरे बहुत ताज़ा नज़र आने लगे थे। एडीटिंग में भी कुछ लोग पूछते थे, तुम मैथ्यू के साथ हो। मेरी समझ में नहीं आता था कि ये ऑफिस की भद्र महिलाएं, सीनियर लोग मुझे और मैथ्यू को साथ देखकर क्यों मुस्कुराते हैं। मैथ्यू पचास वर्ष के हैं, अविवाहित हैं, केरल के हैं। कम बोलते हैं। जब हिंदी में बात करते हैं तो हर वाक्या 'साला` शब्द से शुरु होता है। उनकी अंग्रेजी बहुत अच्छी है। पर कहते हैं "साला न्यूज़ पेपर में काम करने से हमारा इंग्लिश खराब हो गया।" उनके पास कभी साउथ और खासकर केरल के लड़के आते हैं जिन्हें देखकर लोग आंखों ही आंखों में इशारे करते हैं।

सबिंग में एक लड़की सुप्रिया है जिस पर यार लोग डोर डालते रहते हैं। इसके अलावा ट्रेनी लड़कियों को काम सिखाने के लिए भी छड़ों में होड़ लगी रहती है। मैं क्योंकि सबसे जूनियर हूं इसलिए मैं किसी गिनती में नहीं हूं। मैं अपनी इस तरह की इच्छाओं का इजहार भी नहीं कर सकता। रिपोर्टिंग में आठ लोग हैं। ज्य़ादातर 'यंग` हैं। हसन साहब कहते हैं बूढ़े घोड़े रेस में नहीं दौड़ते। जवान घोड़ों में प्रभात सरकार और एन.पी. सिंह काफी चमकते हैं। बाकी बंसल और अनिल सेठी काम अच्छा करते हैं लेकिन कुछ ऐसे तीसमारखां नहीं हैं। ज्योति निगम आर्ट, कल्चर, फिल्म करती हैं। करीब चालीस साल की ज्योति निगम ज़रूर अपने ज़माने में 'बहुत कुछ` रही होगी। अब भी आकर्षक हैं और चेन स्मोकर हैं, पार्टी में एक-दो ड्रिंक ले लेती हैं। हसन साहब ज्योति निगम को बहुत मानते हैं। कहते हैं आर्ट और फिल्म की ऐसी समझ जैसी हीरा में है, कम ही देखने को मिलती है।

छः महीने के अंदर में अपनी न्यूज़ सीधे हसन साहब को देने लगा।

प्रभात सरकार ने कहा- "बॉस अब ये काम सीख गये हैं। इसे मैथ्यू साहब से अलग कर दो. . .नहीं तो वे इसे और कुछ सिखा देंगे तो परेशानी हो जाएगी।

>>आगे>>

गरजत-बरसत

असगर वजाहत

 अध्याय 2

मैं सिगरेट खरीदकर मुड़ा ही था कि मोहसिन टेढ़े के दीदार हो गये। दिल्ली की बाज़ार में कोई पुराना मिल जाये तो क्या कहने। मोहसिन टेढ़े ने भी मुझे देख लिया था और उसके चेहरे पर फुलझड़ियां छुट रही थीं।
यार तुम कहां रहते हो. . .कसम खुदा की बड़ा गुस्सा आता है तुम्हारे ऊपर।" मोहसिन आकर लिपट गया। सुना तो था. . .जैदी कह रहा था कि तुम दिल्ली ही में हो और ;नेशन` में हो. . .
"तुम सुनाओ यार मोहसिन क्या हाल है?"
"सब फस्ट क्लास है।"
"क्या कर रहे हो?"
वह हंसने लगा। ऐसी हंसी जिसमें शर्मिन्दगी भी शामिल थी।
"यार मैं सुबह यहीं कनाट प्लेस आ जाता हूं। 'बंकुरा` में लंच लेता हूं. . .एक चक्कर सर्किल का लगाता हूं. . .फिर अमरीकन लायब्रेरी में बैठ जाता हूं. . .शाम को मैक्समुलर भवन में कोई फिल्म देख लेता हूं. . रात दो रुपये वाली टैक्सी पकड़ कर आर.के.पुरम चला जात हूं।" वह फिर शर्मिन्दगी मिश्रित हंसी हंसने लगा।

मुझे यह सब सुनकर हैरत नहीं हुई। मोहसिन टेढ़े के बारे में हम सबको हॉस्टल के दिनों से पता था कि वह अच्छे खासे खाते-पीते जमींदार खानदान से ताल्लुक रखता है।
मैं हॉस्टल के कमरा नंबर तेईस में था और मोहसिन टेढ़े चौबीस में था। मुझसे एक साल जूनियर होने की वजह से पहले तो डरा-डरा रहा करता था फिर दोस्ती-सी हो गयी थी और अक्सर शामें 'कैफे डी फूस` या 'अमीरनिशां` में साथ-साथ गुजार लेते थे। बचपन में उसे पोलियो का कुछ असर हो गया जिसकी वजह से टाँगों मे कुछ टेढ़ापन आ गया था।
लेकिन उसका नाम मोहसिन टेढ़े सिर्फ टांगों के टेढ़ेपन की वजह से पड़ जाता तो बहुत मामूली बात होती। उसमें और कई तरह के टेढ़ेपन थे और शायद अब भी होंगे। पहला टेढ़ापन तो यह नजर आया कि उसने प्रीयूनिवर्सिटी क्लास तीन बार पास की। हर बार 'कम्बीनेशन` बदल जाता था। पहले साल फिजिक्स, कैमिस्ट्री, बाटनी से की, पास हो गया। लेकिन अगले साल सब्जेक्ट बदल कर प्रीयूनिवर्सिटी क्लास का इम्तिहान दिया। तीसरे साल भी यही किया। हम लोग उसे प्रीयूनिवर्सिटी मास्टर कहने लगे थे और उसका ये रिकार्ड बन गया कि जितनी बार

उसने प्रीयूनिवर्सिटी पास की है उतनी बार किसी और ने नहीं की हैं।

मोहसिन टेढ़े ग़ज़ब का कंजूस था और कभी-कभी खूब पैसा उड़ाता था। उसे अपने ही रिश्तेदारों की एक लड़की से इश्क हो गया था। लड़की बहुत समझदार थी। मोहसिन टेढ़े को इश्क आगे बढ़ाने की सलाहें पूरा हॉस्टल दिया करता था। एक बार सभी लड़कों ने तय किया कि मोहसिन टेढ़े को चाहिए कुछ महंगे किस्म के परफ्यूम लड़की को तोहफ़े में पेश करे। मोहसिन टेढ़े परफ्यूम खरीद दिल्ली चला गया था और कोई तीन-चार सौ के परफ्यूम ले आया था। ये लड़की को पेश किए गये थे जिसने इन्हें कुबूल कर लिया था। उसके बाद हॉस्टल ने राय दी थी कि अब मोहसिन टेढ़े को चाहिए कि लड़की को फिल्म दिखाने ले जाये और सिनेमा देखने के दौरान से उसे शादी का प्रस्ताव रख दे। मोहसिन टेढ़े ने यही किया था लेकिन लड़की ने न सिर्फ इंकार किया था बल्कि उस पर नाराज़ भी हुई थी और उठकर चली गयी थी। इस पर हॉस्टल की राय बनी थी कि मोहसिन टेढ़े कम से कम अपने परफ्यूम तो वापस ले आयें। मोहसिन टेढ़े ने ऐसा ही किया था। परफ्यूम वापस लेकर वह हॉस्टल आया था तो उदास था। इश्क में नाकाम लोग शराब पीते हैं। यह सोचकर हॉस्टल ने मोहसिन टेढ़े को हॉस्टल ने शराब पीने की राय दी थी। शराब ने नशे में उसे पता नहीं क्या सूझी थी कि उसने परफ्यूम की दोनों बोतलें हॉस्टल के हर लड़के पर 'स्प्रे` कर दी थीं। और फिर खाली बोतलों को बरामदे में तोड़ डाला था।

मोहसिन टेढ़े ने तीन बार प्री यूनिवर्सिटी करने के बाद इंजीनियरिंग
में डिप्लोमा कर लिया था। लेकिन ये तय था कि वह वैसी नौकरी नहीं करेगा जो डिप्लोमा करने के बाद मिलती है। क्योंकि ज़मीन जायदाद आम और लीची के बागों से उसे हज़ारों रुपये महीने की आमदनी होती थी और वह अकेला है। वालिद का इंतिकाल हो गया और उसकी मां उसे अलीगढ़ इतना पैसा भेजा करती थीं कि उससे पांच लोग पढ़ लेते।

'तो मतलब वही कर रहे हो अलीगढ़ में किया करते थे।` मैंने कहा।

'नहीं यार . . . मैं सोचता हूं सीरियसली फ्रेंच पढ़ डालूं?` वह बोला।

'क्यों क्या यहां फ्रेंच की क्लास में लड़कियां काफी आती है।` मैंने सादगी से पूछा।

वह हंसने लगा, 'हां यार बात तो यही है।`

'ये बताओ, रहते कहां हो?`

'मस्जिद में`, वह हंसकर बोला।

फिर वही टेढ़ापन. . .'अबे मस्जिद में कौन रहता है।`

'यार कसम खुदा की. . .आर.के. पुरम की मस्जिद में रहता हूं।` वह हंसने लगा। 'बड़े सस्ते में कमरा मिला है। वो लोग मुसलमान को ही कमरा देते हैं। बीस रुपये किराया देता हूं. . .पर एक बात है यार।`

'क्या?`

'मस्जिद में दो ग्रुप हैं। दोनों में मुकद्दमा चल रहा है। मौलवी अफ़ताब जिन्होंने मुझे कमरा दिया है, उन्होंने गवाही देने का वायदा भी ले लिया है।`

'तो फंसोगे झंझट में. . .`

'यार मौका आयेगा तो कमरा छोड़ दूंगा।` वह हंसकर बोला।

मैं उसकी समझदारी पर हैरान रह गया लेकिन उसके लिए इस तरह सोचना नया नहीं है। वह ऐसा ही करता आया है।

'चलो कमरे चलो. . .वहीं बैठकर बातें करते हैं`

'यार बसों में इस वक्त बड़ी भीड़ होगी?`

'स्कूटर से चलते हैं।` मैंने कहा।

यार किराया तुम ही देना. . .आज मेरे पास पैसे नहीं हैं।` उसने लाचारी से कहा।

'हां. . .हां ठीक है. . .पैसे मैं ही दूंगा।` मुझे यह अच्छी तरह मालूम है बल्कि यकीन है कि पैसे उसके पास हैं। लेकिन वह अपने पैसे बचाना चाहता है। पता नहीं क्यों उसे यह गहरा एहसास है कि पूरी दुनिया उसके पैसे लूटने के चक्कर में है। और पैसों को किसी भी तरह बचाकर रखना उसकी जिम्मेदारी है। मुझे याद आया एक बार हॉस्टल में पता नहीं कैसे किसी लड़के ने उसके पांच रुपये उधर ले लिए थे और नहीं दे रहा था। मोहसिन टेढ़े ने अपने पांच रुपये वसूल करने के लिए ज़मीन आसमान एक कर दिया था। वार्डेन से शिकायत की थी। सीनियर लड़कों के सामने रोया-गाया था और आखिरकार इस पर भी तैयार हो गया था कि लड़का एक रुपये महीने के हिसाब से पांच रुपये वापस कर देगा।

'तो ये है तुम्हारा घर?`

हां सदर दरवाज़ा. . .कभी बंद नहीं होता। ताला लगा ही रहता है लेकिन पूरा का पूरा दरवाज़ा चौखट समेत अलग हो जाता है। इधर बाथरूम और किचन है। मेरे पीछे पता नहीं कौन-कौन बाथरूम का इस्तेमाल कर जाता है। किचन में स्टोव और चाय का सामान है।

'चाय पियोगे?`

'हां बनाओ।`

'दूध नहीं है।`

'अरे तो फिर चाय में क्या मज़ा आयेगा।`

'पड़ोसी से मांग लाऊं?`

मैं उठने ही वाला था कि बशीर एक ट्रे में दो कप चाय लेकर आ गया।

'अरे तुम चाय ले आये?`

'आपा ने भेजी है।` बशीर चाय देकर चला गया तो मोहसिन टेढ़े ने अजीब टेढ़ी निगाहों से मेरी तरफ देखा।

'क्या मामला है साजिद।`

'यार पड़ोस में इकराम साहब रहते हैं, ये उनका लड़का है
बशीर. . . ।`

'आपा के बारे में बताओ यार।`, वह हंसा।

'यार इकराम साहब की लड़की है। पता नहीं ये लोग कैसे हैं। एक दिन इकराम साहब आये. . .कोई जान न पहचान. . .सौ रुपये उधार ले गये. . .ये लड़का आता रहता है. . .जब मैं घर में नहीं होता तो आपा आकर कपड़े धो जाती है।`

'ठाठ हैं तुम्हारे।`

'यार ठाठ तो नहीं हैं. . .मैं तो कुछ घबरा रहा हूं।`

'आपा हैं कैसी?`

'आज तक देखा नहीं।`

'क्यों झूठ बोलते हो।`

'नहीं यार. . .झूठ क्यों बोलूंगा।`

शाम होते-होते तय पाया कि जामा मस्जिद के इलाके में चलकर खाना खाया जायेगा। प्रोग्राम तय होने के बाद मोहसिन हिसाब-किताब तय करने लगा। उसने कहा कि स्कूटर का किराया तो वह दे नहीं सकता। खाने का बिल शेयर करेगा लेकिन जो वह खायेगी उसी का पेमेण्ट करेगा। मैं अपना पेमेण्ट खुद करूं। मैंने हंसकर कहा, चलो

ठीक है। खाने का पेमेण्ट मैं ही कर दूंगा। इस पर वह बोला कि हां तुम्हें 'द नेशन` में नौकरी मिली चलो उसी को 'सेलीब्रेट` करते हैं।
खाने के दौरान वह बताता रहा कि उसके बहनोई की निगाह उसकी जायदाद पर है। सब उसे लूट खाना चाहते हैं। लेकिन उसने यह तय कर किया है कि धीरे-धीरे पूरी जायदाद बेचकर पैसा खड़ा कर लेगा और दिल्ली शिफ्ट हो जायेगा। मैं उसकी हां में हां मिलाता। सोचा मुझ पर क्या फर्क पड़ता है। जो चाहे करे।

९----

उसके चेहरे से जवानी के अल्हड़ दिनों की छाया हट गयी है लेकिन आकर्षण में कोई कमी नहीं आयी है। बाल कुछ बढ़ा लिए हैं और लंदन में रहने की वजह से रंग कुछ ज़्यादा साफ हो गया है लेकिन दिल वैसा ही है। मिज़ाज वैसा ही है। वह कल ही रात आया है, अकबर होटल में ठहरा है। सुबह-सुबह टैक्सी लेकर मेरे कमरे पहुंच गया था मुझे यहां पकड़ लाया है। कहता है दफ्तर से आज छुट्टी ले लो। चलो दिनभर दिल्ली में मौज करते हैं। करीम में खाना खाते हैं। कनाट प्लेस में टहलते हैं। किसी सिनेमा हाल में बैठ जायेंगे। शाम को किसी बार में खूब पियेंगे और रात में चलेंगे मोती महल। कल राजी आ रही है इसलिए मैं 'बिजी` हो जाऊंगा।
"ले ये देखो तुम्हारे लिए लाया हूं।" उसने एक पैकेट मेरी तरफ उछाल दिया। दो कमीजें, इलेक्ट्रिक शेवर, दो टाइयां, चाकलेट. . .
"सुनो यार साले शकील को फोन करके बुला लेते हैं. . .मज़ा आयेगा. . .हम एक दिन के लिए अलीगढ़ भी जा सकते हैं. . .पांच साल हो गये यार. . .अलीगढ़ छोड़े", अहमद बोला।
"लो फोन करो", मैंने शकील का नंबर दिया। वह फोन मिलाने के लिए आपरेटर से बात करने लगा।
फोन मिला और लाइन पर शकील आया तो वह चिल्लाया "अबे साले चूतिया क्या कर रहा है. . .मैं. . .मैं कौन हूं. .. अब मैं तेरा बाप हूं अहमद. . .कल ही लंदन से आया हूं. . .साजिद के साथ बैठा हूं . . .तुम बेटा ये करो कि आज रात की गाड़ी पकड़ो और सीधे दिल्ली आ जाओ. . .मीटिंग? अब ऐसी मीटिंगे बहुत हुआ करती हैं. . .जानता हूं साले तुम नेता हो गये हो. . .न आये तो अच्छा न होगा. . .समझो।"
अहमद की वही आदतें हैं पैसा इस तरह ख़र्च करता है जैसे पानी बहा रहा हो। जो प्रोग्राम बना लेता है वह किसी भी तरह पूरा ही होना चाहिए। शाम जब उसे चढ़ गयी तो बताने लगा कि वह इन्दरानी को तलाक दे रहा है। मैं सकते में आ गया। लेकिन 'क्यों` पूछने पर उसने बताया कि वह राजी रतना से प्यार करने लगा है। हो सकता है कि यह बात मेरी समझ में इसलिए न आई हो कि मैं पूरी प्रक्रिया से परिचित नहीं था। मुझे यह पता था कि आठ साल पहले मैं उसकी शादी में कलकत्ता गया था जहां इन्दरानी से उसने ब्रह्मसमाज के अनुसार शादी की थी। मंत्र अंग्रेज़ी में पढ़े गये थे। उसके बाद लखनऊ में निकाह हुआ था। दिल्ली में सिविल मैरिज हुई थी। वह इन्दरानी पर जान दिया करता था। बीच में कोई दो साल पहले वह राजी रतना को लेकर केसरियापुर आया था तो मैं यही समझा था, मौज मस्ती मार रहा है। लेकिन यह तो सोच भी न सकता था कि इन्दरानी को, जिसने अपने चाचा के माध्यम से उसके लिए विदेश मंत्रालय में नौकरी दिलाई है, उसे इतनी आसानी से 'टाटा` कर देगा।
"लेकिन हुआ क्या?"
"होना क्या था यार राजी के बिना मैं नहीं रह सकता। मैंने यह बात साफ इन्दरानी को बता दी. . .पहले तो वह बोली यह 'फैचुएशन` है। पर साल भर बाद समझ गयी कि मैं उसके साथ नहीं रहूंगा. . .मैंने उसके साथ 'सोना` बंद

कर दिया था।"

"उसने तुम्हें नौकरी. . .वह भी भारत सरकार के विदेश. ."

"यार नौकरी कोई न कोई किसी न किसी को दिलाता ही है। इसका मतलब ग़ुलामी तो नहीं होता।"

"हां ये तो ठीक है. . .लेकिन. . .।"

"लेकिन क्या?"

"तुम्हारे बेटे का क्या होगा।"

"ओ. . .प्रिंस चार्ल्स. . .हम लोग उसे प्रिंस चार्ल्स कहते हैं. . .वह हॉस्टल में चला जायेगा. . .यहां शिमला में बड़े अच्छे बोर्डिंग हैं वहां पढ़ेगा", वह हंसकर बोला।

"तुमने राजा साहब से बात कर ली है।"

"अब्बा जान से. . .हां. . .क्यों नहीं. .कहते हैं इट्स योर लाइफ़. . .जो ठीक समझते हो करो. . .उन्होंने खुद चार शादियां की थी यार. . .और पता नहीं कितने 'अफेयर्स`।" वह हंसकर बोला।

कुछ देर हम ख़ामोश रहे। मेरी ये समझ में नहीं आ रहा था कि वह जो कुछ करने जा रहा है, सही है या ग़लत।

"यार अहमद कु छ समझ में नहीं आ रहा है।"

"समझने की कोशिश ही क्यों करते हो? लो और पियो", वह हंसकर बोला।

मैं पीने लगा। उसने सिगरेट सुलगा ली और पूछा- "तुम्हारा क्या चल रहा है?"

"यार ऑफिस में एक लड़की है।"

"अरे बेटे. . .मैंने ये तो नहीं पूछा था कि ऑफिस में कोई लड़की है या नहीं है. . .कुछ चल रहा है?" वह जोर देकर बोला।

"कहने की हिम्मत नहीं पड़ती।"

"अबे तेरा वही हाल है. . .फौज़ी से कहने में तूने एक सदी लगा दी थी।"

"हां यार", मैं उदास हो गया।

"उसे खाने पर बुलाया?"

"खाने पर?"

"हां. . .भेजा खाने पर नहीं, खाना खाने पर।"

"नहीं यार. . ."

"तुम मुझको मिलवा दो उससे।"

"बिल्कुल नहीं। हरगिज़ नहीं. . .कभी नहीं।" मैंने कहा और वह हंसने लगा- "शेर को भेड़ से मिलवा दूं?"

सुबह अहमद के कमरे के दरवाज़े की 'कालबेल` बजी तो मैंने उठकर दरवाजा खोला। सामने शकील खड़ा है। चेहरे पर प्यारी-सी मुस्कुराहट के अलावा सब कुछ बदला हुआ था। हम दोनों गले मिले।

अहमद ने बाथरूम से निकलकर शकील को देखा तो जोर का नारा मारा ये मारा पापड़ वाले को` और दौड़कर लिपट गया।

'पर बेटा तुमने ये अपनी हुलिया क्या बना रखी है। पूरे नेता लगते हो।` अहमद ने पूछा।

शकील सफेद रॉ सिल्क का शानदार कुर्ता और खड़खड़ाता हुआ खादी का पजामा पहने था। एक हल्के कत्थई रंग की बास्कट की जेब में महंगा कलम, डायरी साफ नज़र आ रहे थे। एक हाथ में वी.आई.पी. का सूटकेस था। ओमेगा घड़ी बंधी थी। आंखों पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा था। एक हाथ में पान पराग का डिब्बा दबा था। चेहरा कुछ भर गया था और खास बात ये कि एक अच्छी तरह कटी-कटाई फ्रेंचकट दाढ़ी नमूदार हो गयी थी।

'ये तो यार. . .जानते हो न जिला की युवा कांग्रेस का अध्यक्ष हो गया हूं।` वह कुछ मज़ाक में कुछ गंभीरता से बोला।

'अबे साले तो उसके लिए नयी हुलिया बना ली है।`

'यार तुम लोग समझते नहीं। इसी हुलिये से तो वहां रोब पड़ता है, शहर में लोग सलाम करते हैं। अफसर इज्जत करते हैं. . .चार काम निकलते हैं।`

'सुना साले तुमने शादी कर ली और हम लोगों को बुलाया भी नहीं।` अहमद ने कहा।

'यार बस बड़ी हबड़-तबड़ में हो गयी। घर वाले चाहते नहीं थे कि हाजी करामत अंसारी के यहां मेरी शादी हो।`

'क्यों?`

'यार तुम लोग तो जानते ही हो. . .मेरे भाई और अब्बा ने मुझे जायदाद में हिस्सा देने और दुकान की आमदनी से बाहर कर दिया था। दो सौ रुपये महीने दे देते थे और पड़ा सड़ रहा था तो राजनीति में आ गया। कुछ दबने लगे। उसके बाद मैंने खुद भी हाजी करामत अंसारी के यहां बातचीत चलवाई. . .हाजी साहब इलाके के बाअसर आदमी हैं मेरे वालिद को लगा कि अगर मेरी वहां शादी हो जाती तो किसी तरह मुझे दबा न सकेंगे. . .वो लोग तो बरात में गये भी नहीं थे।`

'खैर अब सुनाओ कैसी कट रही है`, अहमद ने पूछा।

'मस्ती है।`

'करते क्या हो?`

'यार नेता हूं. . .वही करता हूं जो नेता करते हैं।` वह मज़ाक में बोला।

'मतलब?`

'नेपाल से लकड़ी मंगवाता हूं. . .`

'और लकड़ी के साथ-साथ लड़की ?` मैंने पूछा।

शकील हंसने लगा।

अहमद ओमेगा घड़ी देखकर बोला, 'लगता है पैसा तो पीट रहे हो।`

'नहीं यार ये घड़ी तो शादी में मिली थी।`

'बीबी कैसी है?`

'बस यार जैसी होती हैं।`

'तो बेटा तुमने उसी तरह शादी की है जैसे अकबर द ग्रेट ने की थी।` अहमद ने कहा और हम सब हंसने लगे। अकबर होटल में नाश्ता करने के बाद कनाट प्लेस आ गये। इन दोनों में अपनी-अपनी प्रेमिकाओं या पत्नियों के लिए कुछ खरीदना था। चाय वाय पीते शकील से बातें होती रहीं. . .ज़मीन खरीदकर डाल दी है. . .सोचा है कभी कॉलोनी कटवा दूंगा. . .बगैर पॉलीटिक्स के पैसा नहीं आता और बिना पैसे के पॉलीटिक्स नहीं होती. . .एम.पी. का टिकट चाहिए तो चार एम.एल.ए. के उम्मीदवारों को पैसा देना है. . .पार्टी जो देती है, नहीं देती है उससे कोई मतलब नहीं है. . .अपना एक सर्किल तो बनाना ही पड़ता है. . .जिसमें सभी होते हैं. . .दाढ़ी न रखूं तो लोग मुसलमान नहीं मानेंगे. . .मुसलमान न माना तो गयी पॉलीटिक्स. . .अब तो ये है कि कितने वोट हैं आपके पास? मैंने शहर ही नहीं ज़िले की मस्जिदों का एक 'नेटवर्क` बना दिया है. . .मदरसे उन्हीं में शामिल हैं।

"तो मतलब तुम्हारे ऐश हैं।"

"पीते-पिलाते हो कि छोड़ दी।"
"यार अब बड़ा डर हो गया है।"
"अबे यहां दिल्ली में कौन देखेगा।"
"हां दिल्ली की बात तो ठीक है. . .है क्या शाम का प्रोग्राम?"
"अबे यहां तो रोज़ ही होता है. . .आज तुझे नहला देंगे", अहमद ने कहा।

रतजगा रही। रात भर पीना-पिलाना और गप्प-शप्प चलती रही। अहमद लंदन की कहानियां सुनाता रहा। शकील ने कहा कि अगली गर्मियों में लंदन ज़रूर जायेगा।
"ये तो साला 'नक्सलाइट` हो गया है", अहमद ने शकील को मेरे बारे में बताया।
"यार तुम भी साजिद. . ."हे वही के वही", शकील ने दुख भरे लहजे में कहा।
"क्यों बे? इसमें क्या बुरी बात है", मुझे गुस्सा आ गया।
"यार गुस्सा न करो. .. इस तरह की पॉलीटिक्स इंडिया में कभी चलेगी नहीं", वह बोला।
"क्यों?"
"देख लेना. . .तुम लोग किताबें पढ़ते हो. . .मैं ज़िंदगी देखता हूं समझे?"
"बड़े काबिल हो गये हो सालेर, अहमद ने कहा।
"देखो, एक बात सुन लो. . .हम लोगों की छोड़कर कोई पार्टी, कोई भी पार्टी ऐसी नहीं है जो गरीब को गरीबी से आज़ाद करना चाहती है। अगर कुछ पार्टियों की ऐसी इच्छा भी है तो उनके पास कोई प्रोग्राम नहीं है, रणनीति नहीं है. . .हम लोग मानते हैं कि राजसत्ता का जन्म बंदूक की नोक से होता है. . .गरीब आदमी के पास ताकत आयेगी तो सत्ता आयेगी. . .सत्ता आयेगी तो उसका भला होगा. .. र, मैंने कहा।
"अरे गरीब अपना भला करना चाहें तब तो कोई आगे आये न? हमारे गरीब तो गरीबी में ही खुश हैं।"
"ये चालाक सत्ताधरियों का प्रोपगेण्डा है. . .समझे? कौन चाहता है भूखा मरना है? किसे पंसद आयेगा कि दवा और इलाज के
अभाव में मर जायेगा? कौन अपने बच्चों को पढ़वाना नहीं चाहता?
"लेकिन यार तुम जंगलों में 'आर्म्स स्ट्रगल` करने न चला जाना", अहमद बोला।
"वक्त आयेगा तो वह भी करना पड़ेगा. . .बात सिर्फ इतनी है कि मैं इस 'सिस्टम` से नफ़रत करता हूं और किसी भी क़ीमत पर इसको बदलना चाहता हूं. . .किसी भी क़ीमत पर, चाहे उसमें मेरी जान ही क्यों न चली जाये।"
"यार हो गये हो बड़े पक्के", अहमद बोला।
"चलो यार मान लिया जो कह रहे हो सच है. . .हम कांग्रेसी किसी से बहस नहीं करते।" शकील बोला।
"हां तुम लोग तो लोकतंत्र के जोड़-तोड़ में माहिर हो गये हो . . .बहस क्यों करोगे", मैंने कहा।
रात में तीन बजे हम दोनों भी अहमद के कमरे में ही पसर गये। इतनी रात गये कौन कहां जाता?

साढ़े नौ बजे काफी हाउस से लोग उठने लगते हैं लेकिन हमारी मण्डली जमी रहती है। लगता है कि करने के लिए इतनी बातें हैं कि समय हमसे मात खा जायेगा। दस बजे जब काफी हाउस के बैरे हम लोगों से तंग आकर बत्तियां बुझाने लगते हैं तो हम उठते हैं और मोहन सिंह प्लेस में ही पंडित जी के कैफे में बैठ जाते हैं। यहां ग्यारह बजे तक बैठ सकते हैं। उसके बाद पंडित को जम्हाइयां आने लगती हैं और छोटू तो खड़े-खड़े सोने लगता है। इस दोनों पर हम में से किसी को तरस आता है और हम उठ जाते हैं। बाहर सड़क की दूसरी तरफ वाला ढ़ाबा बारह बजे तक खुलता है। एक-आद चाय वहां पीने के बाद अपनी-अपनी तरफ जाने वाली आखिरी बसों के लिए डबल मार्च शुरू

हो जाती है जो कभी-कभी दौड़ने जैसी भी लगने लगती है।
रावत को रीगल के स्टाप पर छोड़कर मैं अपने स्टाप की तरफ जाने लगा तो रावत ने कहा, "यार साजिद तुम मेरे घर चलो. . .आराम से बातें करेंगे।"
बली सिंह रावत हमारे ग्रुप में नया है। अभी छः सात महीने ही बंबई से आया है। वह नैनीताल से शाह जी का पत्र नवीन जोशी के नाम लाया था। नवीन ने उससे मेरा परिचय कराते हुए कहा था, "तुम दोनों एक ही संस्था में काम करते हो रावत 'दैनिक राष्ट्र` में सब-एडीटर हैं।"

इसके बाद ऑफिस में जब कभी मौका मिलता हम लोग साथ-साथ कैंटीन में लंच करने लगे। रावत ने खुद ही बताया था कि उसका ताल्लुक भोटिया जन-जाति से है जो भारत और तिब्बत की सीमा पर रहती है। किसी ज़माने में ये लोग तिब्बत के साथ व्यापार करते थे लेकिन अब वह बंद हो गया है और मोटिया जानवर पालकर गुजर-बसर करते हैं। उसने बताया था कि वह अपनी बिरादरी का पहला आदमी है जिसने बी.ए. पास किया है और इतनी बड़ी नौकरी यानी बंबई में 'दैनिक राष्ट्र` की प्रूफरीडरी की है। वह इन बातों पर हँसता था। उसके अंदर शर्म, ग्लानि या अपमानित महसूस होने का भाव नहीं होता था। कहता था जब मेरी मां ने कहा कि मेरी शादी करना चाहती है तो बिरादरी ने शादी लायक सभी लड़कियों को उसके सामने खड़ा कर दिया था और कहा था जिसे चाहो चुन लो। उसे यह बताते हुए संकोच नहीं होता था कि वह मेहनत मजदूरी करके पढ़ा है। शाह लोगों के छोटे-मोटे काम किए हैं। बंबई में ठेला खींचा है।

मैं उसके साथ उसके घर पहुंचा तो बारह बज चुके थे। उसकी पत्नी ने दरवाज़ा खोला। उसे देखकर लगा कि वह सो रही थी। रावत ने उससे मेरा परिचय कराया और कहा कि खाना पकाओ, ये हमारे साथ खाना खायेंगे। मेरे बहुत मना करने के बाद भी रावत इस बात पर अड़ा रहा और कमरे से जुडे किचन में उसकी पत्नी को खाना पकाने में जुट जाना पड़ा।
हम हाथ मुंह धोकर बैठे तो रावत बोला, "देखो मैं जो कुछ हो गया उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था. . .ये बात तो मैंने कभी सोची ही नहीं थी कि मैं 'दैनिक राष्ट्र` में उप-संपादक हो जाऊंगा और अब मैं. . ." वह रुका, फिर बोला, "जानते ही हो मैं फिल्म समीक्षक हूं। कला पर लिखता हूं। मैं तो नहीं कहता कि मेरा लिखा 'ग्रेट` है लेकिन किसी से कम भी नहीं है।"

मैंने इधर-उधर देखा। एक बड़ा-सा कमरा, पीछे बरामदा। कमरे के एक कोने पर बड़े से बेड पर उसके दो बच्चे सो रहे हैं। दूसरे कोने पर लिखने की मेज के साथ एक तख्त़ रखा है जिस पर शायद वह सोता है। दीवारों पर कैलेण्डर और कुछ कलात्मक फिल्मों के पोस्टर लगे हैं।
"मैं आज जो भी हूं अपनी मां की वजह से हूं। तुम उसे देख लो ये कह ही नहीं सकती कि इस बेपढ़ी लिखी, बिल्कुल गांव वाली महिला में इतनी ताकत होगी। उसके अंदर अपार शक्ति है। अब भी वह दिन में दस मील पैदल चल लेती है। यार वहां कि जिंदगी ही ऐसी है। इतनी कठोर, इतनी निर्मम, इतनी संघर्षशील कि आदमी मेहनत किए बिना रह ही नहीं सकता. . .ये बताओ खाने से पहले कुछ पियोगे? मेरे पास मिलिट्री की रम पड़ी है।"
"नेकी और पूछ पूछ", मैंने कहा।

वह रम की बोतल और गिलास लेकर आया। पत्नी से पानी मंगवाया और कुछ नमकीन बना देने की भी फरमाइश कर दी। हम पीने लगे। धीरे-धीरे कमरे का नाक नक्शा बदलने लगा। रावत बिना पिए ही काफी भावुक ढंग से

बोलता है। नशे के बाद उसकी भावुकता और नाटकीय और बढ़ गयी थी। वह हर तरह भंगिमा से अपनी बात प्रमाणिक सि----कर रहा था।

"आज भी तुम वह घर जहां मां रहती है देख लो तो अचंभे में पड़ जाओगे. . .समझ लो इससे थोड़ा बड़ा कमरा. . .कमरा भी क्या है. .कुछ पत्थर लगाकर दीवारें बनी हैं। पिछली दीवार पहाड़ है। लकड़ी के टुकड़े लगाकर दरवाज़ा बंद होता है। इसी में मेरी मां और पच्चीस तीस मेडे रहती हैं।"
"तुम्हारे वालिद गुज़र गये हैं?" मैंने पूछा।
"हां उसे भेड़िये खा गये थे. . .भेड़िये. . .वह इतने जीवट का आदमी था कि जंगली रीछ से लड़ जाता था। एक बार उसने अपने भाले से जंगली रीछ का सामना किया था. . .मां बताती है कि रीछ भाग गया था।"

वह बोल रहा था। उसकी बातों में सच्चाई का ताप था। मुझे लगा रावत अब भी कई मायनों में वही है। उसी इलाके का रहने वाला, सीधा-साधा आदमी जो शहरी हलचल के छल-कपट से दूर है। हमारी शब्दावली में उसे सीध कहा जायेगा जिसके कई अर्थ निकाले जा सकते हैं।

मैं पांच साल का था। मुझ सब याद है। मेरे पिता ने जानवरों के लिए एक बाड़ा बनाया था। रात का समय था। अचानक बाड़ा टूटने की आवाज से पिताजी जाग गये। उन्होंने मां से कहा कि लगता है भेडियों ने बाड़ा तोड़ दिया। इतनी ही देर में भेड़ों के मिमियाने की आवाज़ें आने लगी। कुत्ते बुरी तरह भौंकने लगे। पिताजी लकड़ी के तख्त हटाकर दरवाज़ा खोलने लगे। मां ने कहा 'बाहर मत जाओ।` पिताजी ने कहा, 'मेरे जीते जी भेड़िये उन्हें खा जायें ? ` वे अपना भाला लेकर बाहर निकले, उनके पीछे मां निकली और मां के पीछे मैं निकला। मुझे देखकर पिताजी ने कहा, 'ये कहां आ रहा है। इसे छत पर चढ़ा दे।` मां ने मुझे छत पर उछाल दिया। पिताजी भेडियों से भिड़ गये। लाल लाल आंखें चमक रही थी। भेड़िये पच्चीस-तीस थे। उन्होंने पिताजी पर हमला कर दिया। उनके सामने जो भेड़िया आ जाता था उसे भाले से गोद देते थे लेकिन भेड़िये पीछे से हमला करने में बड़े होशियार होते हैं। मां उन्हें मार रही थी कि पिताजी के पीछे न आ सके। पर भेड़िये एक दो थे नहीं। और फिर उन्हें भेड़ों के रक्त की सुगंध मिल गयी थी। मां ने जब देखा कि भेड़िये भाग नहीं रहे हैं तो अंदर से एक लकड़ी पर कपड़ा जलाकर बाहर आयी और आग से भेड़िये भागने लगे। पर इस बीच पिताजी को भेडियों ने बुरी तरह काट लिया था। वे लेटे हांफ रहे थे। मां कपड़े से खून साफ कर रही थी। पिता ने उससे कहा कि देख मैं नहीं बचूंगा. . .बचते भी कैसे. . .वहां से अस्पताल तक पहुँचने में दो दिन लगते हैं. . .तो पिताजी ने कहा. . .मैं नहीं बचूंगा, मुझे एक वचन दे. . .तू किसी भी तरह इसे पढ़ा देगी. . .मां ने वचन दिया था।"
गरम-गरम पकौड़े आ गये थे लेकिन हम दोनों ने उधर हाथ नहीं बढ़ाया। रावत की आंखों में तो आंसू आ गये थे। वह उन्हें अपने हाथों
से पोंछ रहा था। मैं हैरतज़दा बैठा देख रहा था कि मेरे सामने एक ऐसा आदमी बैठा है जिसकी जिंदगी अच्छी से अच्छी कहानी को भी मात देती है। जो मुझे किसी दूसरी दुनिया की बातें लग रही थीं।

"अब जहां हमारा घर था वहां स्कूल कहां? दस मील दूर एक प्राइमरी स्कूल था। घाटी में उतरना पड़ता था और फिर पहाड़ पर चढ़ना पड़ता था। मां रोज मुझे वहां ले जाती थी. . .घाटी में एक पहाड़ी नदी पार करना पड़ती थी. . .वहां से मैंने पाँचवी की थी। हर साल किताब कापी खरीदने के लिए मां को भेडें बेचना पड़ती थी। मैं जानता था कि और कोई रास्ता नहीं है।"

"पकौड़े ठण्डे हो रहे हैं।" उसकी पत्नी ने हमें याद दिलाया।
पाँचवी के बाद गांव के मुखिया के साथ मां मुझे नैनीताल लाई। हम दो दिन चलकर नैनीताल पहुंचे थे। मुखिया बिकरम शाह को जानता था। बात यह तय हुई कि मैं दुकान, मकान की सफाई किया करूंगा और बदले में वहां सो जाया करूंगा. . .माँ हर महीने आया करती थी। अपने साथ खाने-पीने का सामान लाती थी। वैसे मैंने एक साल बाद सिनेमा हाल में गेट कीपरी भी शुरू कर दी थी। वहां से पंद्रह रुपये महीने मिल जाते थे. . .पर खाने-पीने का तो ठीक नहीं था. . .कभी जब एक दो दिन खाने को न मिलता था तो चेहरा निकल आता था। देखकर बिकरम शाह कहते, लगता है, तुझे कुछ मिला नहीं खाने को. . .जा अंदर खा ले।"

हम खाना खाने लगे। उसकी पत्नी गरम-गरम फुलके दे रही थी। मेरा और रावत के बहुत कहने पर भी हमारे साथ खाने पर नहीं बैठी। रावत ने बताया कि अब हमारे खा लेने के बाद ही खायेगी। खाने के बीच खामोशी रही। हां एक-एक सिगरेट सुलगाने के अंधेरे में उड़ते जुगनू पकड़ने की कोशिश करने लगा। मैं बिल्कुल खामोश था क्योंकि उस वक्त मैं इससे बड़ा और कोई काम नहीं कर सकता था।
"इसी तरह गाड़ी चलती रही। हाई स्कूल किया कुछ नैनीताल की हवा लगी। कालेज में दाखिला लेने के लिए मां ने अपने चांदी के गहने बेचे थे. . .और यार" वह कहते-कहते पहली बार झिझका। लगा कोई ऐसी बात कहने जा रहा है जिसका उसे मलाल है, दुख है।
पर यार उन दिनों मुझे अच्छा नहीं लगता था कि वह मुझसे मिलने आती है. . .यार सब लोग देख कर . . .और फिर वह दो दिन पैदल चलती हुई आती थी। यही नहीं पीठ पर लड़कियों का गट्ठर या भाड़े पर लाये जाने वाला समान भी लाद लेती थी ताकि खाने-पीने के लिए कुछ हो जाये. . .मैंने एक दिन उससे कहा कि वह न आया करे। वह समझदार भी थी मेरे कपड़े लत्ते और मेरे दोस्तों को देखकर समझ गयी थी कि मैं क्यों मना कर रहा हूं। उसने मुझसे कहा कि वह नहीं आयेगी. . .पर यार वह आती थी। मुझे दूर से देखती थी और वापस चली जाती थी।" रावत की आवाज़ बहुत भारी हो गयी और उसके आंसू तेजी से गालों पर ढरने लगे। मैं सटपटा गया।

१०----

दो साल बाद घर पहुंचा तो देखा पानी सिर से ऊंचा हो गया है। अम्मां ने भूख हड़ताल कर दी कि जब तक मैं शादी के लिए 'हां` नहीं करूंगा वे खाना नहीं खायेंगी। अब्बा ने तमाम तर्क दिए कि लड़की में क्या बुराई है। बी.ए. किया है। लंदन में पली बढ़ी है। जाना-बूझा खानदान ही नहीं है हमारे दूर के अजीज भी हैं। मिर्जा इब्राहिम की अकेली लड़की है। मिर्जा साहब का बहुत बड़ा कारोबार है। खाला ने भी समझाया कि बेटा माशा अल्लाह से अट्ठाईस के हो गये हो। कब करोगे शादी? क्या हम तुम्हारे सिर पर सेहरा देखने की हसरत में मर जाएंगे? खालू ने कहा- मियां तुम्हारा 'सेहरा` पिछले दस साल से लिखा पड़ा है। बस लड़की वालों के नाम डालने हैं। अम्मा 'हां` करो तो मैं 'सेहरा` आगे बढ़ाऊं।
अम्मां ने ये भी कहा कि तुम कहीं करना चाहते हो। किसी से इश्क मुहब्बत हो तो बता दो। मैं हंस दिया। ऐसा तो कुछ है नहीं। मैं कई खूबसूरत बहाने बनाकर मामले को टाल दिया। सोचा यार अभी से क्या फंसना शादी-ब्याह के चक्कर में।
शाम चायखाने में हम सब जमा हो गये। उमाशंकर, अतहर, मुख्तार, कलूट के साथ गप्प-शप्प होने लगी। बातचीत में दिल्ली छाई रही। वे यह जानना चाहते थे कि दिल्ली में क्या हो रहा है। देश के भविष्य को निर्धारित

करने वाले क्या कर रहे हैं? मैं इन सवालों के जवाब दे रहा था और सोच रहा था कि पूरे देश को यह बता दिया गया है कि देखो तुम्हारे भविष्य के बारे में फैसला दिल्ली में होता है। और दिल्ली के बारे
में इतनी उत्सुकता से जानकारी लेने वाले अपने शहर के प्रति उदासीन हैं। उनका मानना है यहां कुछ नहीं हो सकता। पता नहीं यह कितना सच है लेकिन दस पन्द्रह साल से जो सड़कें खराब है वे आज तक वैसी ही हैं जैसी थीं। बिजली की जो हालत है वह भी वैसी ही है जैसी थी। अस्पताल के सामने जो अराजकता है वह भी कायम है। मरीज़ों की रेलपेल है और डॉक्टर अपनी प्राइवेट प्रैक्टिस करते हैं। अदालतों में भी रिश्वत का बोलबाला है। पुलिस अपना ताण्डव करती रहती है। अधिकारी मौज मस्ती में दिन बिताते हैं लेकिन लोगों को सिर्फ चिंता दिल्ली की है। शहर में कोई पार्क नहीं है। सड़कें ही नहीं हैं तो फुटपाथ का सवाल नहीं पैदा होता। सड़कों के नाम पर ऊबड़-खाबड़, टूटे, ऐसे चौड़े रास्ते हैं जो कभी सड़कें हुआ करते थे। लायब्रेरी बरसों से बंद पड़ी है और अब बिल्कुल ही गायब हो गयी है। मनोरंजन के लिए दो सिनेमाहॉल हैं जो अपनी खस्ता हालत पर रोते रहते हैं। कूड़ा उठाने वाले शायद यहां हैं ही नहीं। सड़कों के किनारे कूड़े के अम्बार लगे हैं और लोग वहीं रहते हैं। देखते हैं लेकिन फिर भी नहीं देखते। नगरपालिका के चुनाव बहुत साल से हुए नहीं। जब भी नगरपालिका बनती है इतने झगड़े होते हैं, इतनी मारपीट होती है, इतनी गिरोहबंदी रहती हैं कि कोई काम नहीं हो पाता और कलट्टर उसे भंग कर देता है। ऐसा नहीं है कि ज़िला प्रशासन के पास आकर नगरपालिका में कोई काम होता हो। भ्रष्टाचार सीमाएं पार कर चुका है लेकिन जीवन चल रहा है। लोग रह रहे हैं।
मैं आज के शहर की तुलना अपने बचपन के ज़माने के शहर से करता हूं और यह जानकर आश्चर्य होता है कि उस ज़माने में यानी सन् ५६-५७ के आसपास यह शहर ज्यादा साफ सुथरा था। सड़कें अच्छी थीं। लायब्रेरी खुलती थी और लोग वहां जाकर पढ़ते थे। शहर में सफाई थी। गर्मियों के दिनों में एक भैंसा गाड़ी सड़कों पर छिड़काव भी करती थी। आबादी कम थी और बिजली पानी की "आधुनिक सुविधाएं न होने के बावजूद जीवन आरामदेह और अच्छा था।
आज़ादी के बाद ऐसा क्या हो गया है कि सब कुछ खराब हो गया
है। शहर के बाहर जो एक दो कारख़ाने या राइस मिलें खुली थीं सब बंद हो गयी हैं। मज़दूरी के नाम पर रिक्शा चलाने के अलावा और कोई काम नहीं है। ---
सुबह नाश्ते पर पता चला कि सल्लो को टी.वी. हो गयी है और वह कानपुर में हैलट अस्पताल में भर्ती है। इस ख़बर पर मैं सबके सामने क्या प्रतिक्रिया दे सकता था। खामोश रहा और अफसोस का इज़्हार कर दिया लेकिन बुआ से ये पूछना नहीं भूला कि सल्लो किस वार्ड किस बेड पर है।
दोपहर का खाना खाकर ऊपर कमरे में लेटा तो सल्लो की याद अपने आप आ गयी। यह तय किया कि कानपुर में उसे देखता हुआ ही दिल्ली वापस जाऊंगा। पन्द्रह मिनट तक मैं हैलेट अस्पताल के गलियारों और वार्डों का चक्कर लगाता रहा। लोग और मरीज़ वार्ड के बेडों पर ही नहीं, फर्श पर गलियारों में, सीढ़ियों पर, पेड़ों के नीचे, दीवार के साये में, कूड़े के ढेर के पास पसरे पड़े थे। सब साधारण ग़रीब लोग. . .सब मजबूर और बेसहारा लोग. . .यार लोग कुछ कहते क्यों नहीं? यह सरकारी अस्पताल है। इसे सरकार ठीक से चलाती क्यों नहीं? ये अस्पताल कभी चुनाव का मुद्दा क्यों नहीं बनता? और ये अकेला अस्पताल इस हालत में न होगा, बल्कि इस तरह के सैंकड़ों अस्पताल होंगे. . .चीख़, पुकार, रोना, गिड़गिड़ाना, कराहना और दीगर आवाज़ों के बीच आखिऱ वार्ड की गैलरी के एक कोने में मैंने सल्लो और उसकी मां को पहचान लिया। लोग गैलरी में से आ जा रहे थे। ट्रालियां, मरीज़ों के स्ट्रेचरों के लोहे के पुराने पहियों से आवाजें आ रही थीं। लोगों के पैरों की धूल उड़ रही थी और उसी गैलरी के एक कोने में सल्लो दरी पर लेटी थी और उसकी मां उसे पंखा झल रही थी। यह देखकर मैं गुस्से से पागल हो गया।

उन्होंने मुझे पहचान लिया। मैं सोच नहीं सकता था कि सल्लो की यह हालत होगी। उसका सिर बांस के ढांचे जैसा लग रहा था जिस पर
झिल्ली चढ़ा दी गयी हो। गालों की हड्डियां उभरकर ऊपर आ गयी थीं। आंखें अंदर धंस गयी थीं। ठोढ़ी बाहर को निकल आयी थी और गर्दन सूखकर बांस जैसी हो गयी थी। उसके हाथ पैर जैसे निचोड़ दिये गये थे। हाथों की नीली रगें बहुत नुमाया हो गयी थीं। उसने मुझे देखा और चेहरे पर एक मुस्कुराहट आई जिसकी व्याख्या असंभव है। उसकी मां खड़ी हो गयी थी।
"ये यहां क्यों पड़ी है?"
"भइया बेड़वा नहीं मिला।" वह लाचारी से बोली।
"ठहर जाओ. .. अभी मिल जायेगा. . .यही रहना मैं अभी आता हूं।"
हॉस्पिटल सुपरेण्टेंडेंट के कमरे के बाहर बैठे चपरासी ने मुझे रुकने का इशारा किया लेकिन मैं इतना गुस्सा में था कि उसे एक घुड़की देकर कमरे में चला गया। सामने मोटा-ताजा, लाल-लाल फूले गालों वाला एक चिकना चुपड़ा आदमी बैठा था। मैंने उसके सामने अपना विज़िटिंग कार्ड रख दिया। मेरी तरफ देखकर उसने विजिटिंग कार्ड पढ़ा, एस. एस. अली, सीनियर रिपोर्टर, 'द नेशन` दिल्ली, वह उठकर खड़ा हो गया। उसके चेहरे से अफराना रोब झड़ चुका था।
"बैठिये सर बैठिये।"
"मैं बैठूंगा नहीं. . .मेरा एक पेशेन्ट आपके वार्ड की गैलरी में पड़ा है उसे "फौरन बेड दीजिए", मैं गुस्से से बोला।
"कहा कहां सर. . .वार्ड नंबर सर. . ." वह खड़ा होकर किसी का नाम लेकर चिल्लाने लगा।

सल्लो को बेड पर लिटा दिया गया। बेड के पास दो कुर्सियां रख दी गयीं। डॉक्टर ने सल्लो के रिकार्ड चार्ट पर मोटे अक्षरों में कुछ लिखा और पूरे आश्वासन देकर चला गया।
मैं कुर्सी पर बैठ गया। सल्लो की सांस तेज़-तेज़ चल रही थी। वह लगातार मुझे देखे जा रही थी।
"ये सब हुआ कैसे?" मैंने उसकी मां से पूछा।
"क्या बतायें भइया. . .शादी के सालभर बाद लड़की हो गयी . . .फिर दूसरे साल भी विलादत हुई. . .लड़का हुआ. . .जो तीन महीने बाद जाता रहा. . .फिर हमल ठहर गया. . .अब भइया खाने का ठीक है नहीं. . .रहने की जगह नहीं. . .रिक्सा वाले की आमदनी. . .सास-ससुर ऊपर से. .. पहले तो काली खांसी हुई. . .फिर बुखार रहने लगा. . .बलग़म में खून आने लगा तो मोहल्ले के हकीम जी को दिखाया . . .सालभर उनका इलाज चलाता रहा. . ."
"मालूम था आप आयेंगे।" सल्लो की पतली कमज़ोर आवाज़ से मैं चौंक गया। वह अपनी मां के सामने कह रही है कि उसे यकीन था कि मैं आऊंगा. . .शायद अब छिपाने के लिए कुछ बचा नहीं है।
"हां. . .मुझे देर से पता चला. . .अभी घर गया था तो मालूम हुआ कि तुम यहां. . ."
सल्लो की कनपटियों की हड्डियां उभर आई हैं और बाल छितरा गये हैं। उसने चादर के नीचे से अपना सूखा और कमज़ोर हाथ निकाला और अपने सीने पर रख लिया. . .यह वही सल्लो है जिसका शरीर चांदनी रातों में कुंदन की तरह दमक जाता था. . .।
"देर कर दी आपने. . .", वह धीरे से बोली।
फ्चुप रह क्या कह रही है", उसकी मां ने उसे डांटा. . .मैं जैसे अंदर तक कट गया। हां देर. . .बहुत देर. . .इतना तो हो ही सकता था कि मैं दिल्ली जाने के बाद उसकी ख़बर लेता रहता था थोड़ा बहुत पैसा भेजता रहता। तब शायद ऐसा न होता. . .हां ये तो अपराधिक देर की है मैंने।

"पहले आ जाते तो. . .", वह अटक-अटक कर बोलना चाहती थी और उसे यह डर नहीं था कि उसकी मां यहीं बैठी है। मैंने स्थिति को थोड़ा सहज बनाने और सल्लो से कुछ कहने का अवसर निकालने के लिए उसकी अम्मां से कहा "जूस पिलाने को मना नहीं किया है न? जाओ जाकर जूस ले आओ।" मैंने पचास का नोट उसकी तरफ बढ़ाया और वह उठ गयी।

उसने अपना हाथ मेरी तरफ बढ़ाया। ठण्डा बिल्कुल निर्जीव और सूखा हाथ. . .लकड़ी की तरह सूखी और खड़ी उंगलियां. . .मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसकी आंखों से आंसू निकलने लगे। मैं भी अपने को रोक नहीं पाया।

"अब तो कभी-कभी आते रहेंगे न?"

"हां।"

"देखिए?" वह अविश्वास से मुस्कुराई।

मां के आ जाने के बाद भी वह मेरा हाथ पकड़े रही। मां ने यह देखकर कहा "आप लोगों को बहुत मानती है भइया. . .जब तब आप सबकी बात करती रहती है।"

शाम होते-होते मैं वहां से उठा। सल्लो की मां को एक हज़ार रुपए दिये। अपना फोन नंबर दिया, पता दिया। यह भी कहा कि सल्लो ठीक हो जायेगी तो उसके आदमी को मैं दिल्ली में कोई अच्छी नौकरी दिला दूंगा।

लेकिन मुझे नहीं मालूम था कि यह सल्लो से आखिरी मुलाकात होगी। मुझे अब्बा के ख़त से पता चला कि मेरे अस्पताल जाने के कुछ ही दिन बाद वह गुज़र गयी।

मेरा सिर ज़िंदगीभर के लिए मेरे सीने पर एक काला धब्बा पड़ गया।

उन दिनों काफी हाउस में सन्नाटा काफी रहा करता था। मैं सात बजे पहुंचा था क्योंकि अख़बार के दफ्तर में कुछ काम ही नहीं बचा था। हसन साहब लंबी छुट्टी पर चले गये थे। अखबार के समझदार और ऊंचे पदों पर आसीन लोग हवा का रुख समझ गये थे और वही छपता जो छपना चाहिए। कोई नहीं चाहता था कि नौकरी से निकाल दिया जाये और जेल की हवा खाये। अब ये सब बातें, बातें ही नहीं रह गयी थीं क्योंकि कुछ बड़े-बड़े सम्पादक जेल की हवा खा रहे थे।

एक मेज पर नवीन जोशी अकेला बैठा 'ईव्यनिंग-न्यूज़` का पज़ल भर रहा था। मुझे देखते ही उसके चेहरे पर एक फीकी सी मुस्कुराहट आ गयी।

"आज जल्दी कैसे आ गये?"

"क्या करता। काम है नहीं और सात बजे कमरे जा नहीं सकता।"

"और सुनाओ।"

"वैसे तो सब चल ही रहा है. . .खबर ये है कि जार्ज मैथ्यू अरेस्ट हो गये हैं।"

प्धीरे से बोलो यार. . .और सुनो. . .ये सब बातें. . ." वह फिक्रमंद निगाहों से देखने लगा।

"अब इतना मत डरो यार।"

"तुम जानते नहीं. . .ज़रा से शक पर लोग पकड़े जा रहे हैं।"

"हां वो तो होगा ही।"

"अमरेश जी और सरयू से मिलने कोई जेल गया था?"

"मुझे नहीं मालूम. . .इतना सुना है कि सरयू को अमृतसर में रखा है. . .अमरेश जी तो दिल्ली में ही हैं।"

"जार्ज मैथ्यू को कहां पकड़ा" वह फुसफुसाकर बोला।

"पटना में।"

"अमित का तुमने सुना?"

"क्या?"

"वह तो कहते हैं कनाडा चला गया।"

"क्या? कनाडा?"

"हां कहते हैं. . .माफी मांग ली. . .उसके कोई रिश्तेदार किसी बड़े ओहदे पर हैं. . .उन्होंने भिजवा दिया।"

"यार अमित तो शायद स्टेट सेक्रेटरी था।"

"अब ये तुम जानो. . .तुम भी तो उन्हीं लोगों के साथ थे।"

"नहीं. . .नहीं यार. . .मैं किसी के साथ नहीं था. . .उठता बैठता सबके साथ था।" नवीन घबरा कर बोला।

"अब बताओ कि सरयू से कैसे मिला जाये?"

"देखो. . ."

वह कुछ कहने जा ही रहा था कि रावत आ गया। उसका भी चेहरा उतरा हुआ था। वह आते ही रहस्यमय ढंग से बैठ गया। मेज पर झुका और फुसफुसाने वाले अंदाज में बोला, "राजनीति पर कोई बात नहीं होगी।"

हम दोनों ने उसके इस अंदाज पर उसे ध्यान से देखा। वह सीधा बैठता हुआ ज़ोर से बोला, "यार साजिद कमाल है, ट्रेनें समय पर आ रही है। आज स्टेशन गया था क्या सफाई है. . .वाह यार वाह।"

हम जानते थे कि वह यह सब हमारे लिए नहीं बोल रहा है। उसे डर है कि शायद. . .शायद. . .या मान रहा है कि दीवारों के भी कान होते हैं।

"यहां कोई नहीं रावत. . .यार ठीक से बात कर।" नवीन ने उससे कहा।

वह धीरे-धीरे बोलने लगा, "मेरे दो बच्चे हैं, पत्नी है। मेरे अलावा उनका कोई देखने सुनने वाला नहीं है. . .तुम सबके तो चाचा, मामा पता नहीं क्या-क्या हैं। घर है। जायदाद है। मेरा कुछ नहीं है। तीन महीने वेतन न मिले तो मेरा परिवार भूखा मर जायेगा।" वह रुका नहीं धीरे-धीरे इसी तरह की बातें बोलता चला गया। हम दोनों सुनते रहे। वैसे भी हमारे पास बोलने के लिए कुछ ज्यादा नहीं था।

मेरे ऊपर हैरत का पहाड़ टूट पड़ा जब मैंने काफी हाउस में अपनी मेज़ की तरफ शकील अंसारी को आते देखा। वह पूरी तरह खादी में लैस था। टोपी भी लगा रखी थी। तोंद का साइज़ बढ़ गया था। उसके साथ दो-तीन और लोग थे जो उसके लगुए-भफगुए जैसे लग रहे थे। उसका व्यक्तित्व शानदार हो गया था। उसे देख कर रावत तो सकते में आ गया। नवीन के चेहरे पर भी घबराहट आ गयी।

"अरे भाई मैं तुम्हारे ऑफिस गया था। वहां पता चला कि तुम काफी हाउस गये हो. . .तो तुम्हें तलाश करता आ गया।" शकील बोला।

मैंने सोचा सबसे पहले रावत को राहत दी जाये। मैंने कहा, "ये शकील अंसारी साहब हैं। मेरे अलीगढ़ के जमाने के बहुत पुराने और प्यारे दोस्त . . .आजकल अपने जिले की युवा. . ."

शकील बात काटकर बोला, "नहीं नहीं अब मैं प्रदेश युवा कांग्रेस का महामंत्री हूं. . .और जिला इकाई का अध्यक्ष हूं. . .इसके अलावा राष्ट्रीय युवक कांग्रेस की कार्यकारिणी का सदस्य हूं।"

"पिछले चार पांच साल में बड़ी तरक्की की. . ."

"नहीं नहीं. . .ये तो अभी की बात है. . .पार्टी ने युवा शक्ति को पहचान लिया है।" वह हंसकर बोला।

"इन लोगों से मिलो नवीन जोशी और वली सिंह रावत. . .मेरे दोस्त।"

शकील ने कुछ खास ध्यान नहीं दिया। अपने साथ आये एक आदमी से कहा, "करीम तुम इन लोगों को लेकर पार्टी ऑफिस जाओ . . .वहीं रहने खाने की व्यवस्था है. . .और कल स्टेशन पर मिलना. . ." फिर मुझसे बोला,

प्रदर्शन में पांच सौ लोगों को लेकर आया था। उसने पांच सौ पर विशेष जोर दिया। मैंने महसूस किया कि वह अच्छी हिंदी बोलने लगा है।

"तो चलो कमरे चलते हैं।" उसके लोगों के चले जाने के बाद मैंने शकील से कहा।

"नहीं भाई. . .यू.पी. निवास चलो. . .मैं वहीं ठहरा हूं. . .आराम से बातचीत होगी।

यू.पी. निवास के कमरे में अपनी टोपी-वोपी उतारने के बाद वह कुछ नार्मल हो गया और बोला, "यार रैली में जान निकल गयी।"

"अब इतना भी करोगे न पार्टी के लिए?"

"वो तो सब ठीक है यार. . .ये बताओ क्या मंगवाऊं. . .विस्की ठीक रहेगी या कुछ और।"

"विस्की मंगा लो. . .और खाना करीम से मंगवाना. . .ये साला यहां का रद्दी खाना नहीं खाऊंगा।"

"हां. . .हां. . .क्यों नहीं।" वह हंसा।

कुछ देर बाद महफिल जम गयी। अचानक शकील को ख्य़ाल आया कि अहमद को लंदन फोन किया जाये। उसने काल बुक करा दी

और हम बैठ गये नयी-पुरानी यादों के साथ। शकील ने बताया कि माहौल कुछ अच्छा है। बड़ा अच्छा काम हो रहा है। मैंने विरोध किया। वह जानता है कि मैं विरोध ही करूंगा और हमारे बीच यह भी तय है कि दोस्ती के बीच और कुछ नहीं आयेगा।

लंदन फोन मिल गया। अहमद से बात करके मज़ा आ गया। वह बहुत खुश हो गया था और उसने हम दोनों को फिर लंदन आने का न्यौता दिया जिसे शकील ने क़बूल कर लिया।

"चलो यार गर्मियों में लंदन चलते हैं।" उसने मुझसे कहा।

"पैसा?"

"उसकी तुम फिक्र न करो. . .मैं दूंगा. . .पूरा खर्च।"

"लेकिन क्या मैं तुमसे लूंगा।"

"अब यही तुम्हारा चुतियापा है।" वह हंसने लगा।

११----

मैं रात में दस ग्यारह बजे जब भी कमरे पर लौटकर आता तो कपड़े अलगनी पर सूखते मिलते, कमरे में सफाई नज़र आती, किचन में दूध उबला रखा होता, खाना गर्म मिलता।

पास वाले घर में बशीर को पता नहीं कैसे पता चल जाता था कि मैं आ गया हूं। वह सीध मेरे पास चला आता और जो भी चाहिए उसका इंतिज़ाम कर देता। हर सवाल के जवाब में बताता कि यह आपा ने किया, वो आपा ने किया है। आपा कह रही थीं वो ये भी कर सकती है, वो भी कर सकती है। जाड़े आ रहे हैं आपा रज़ाई गद्दे बना देगी। गर्मियां आ रही है आपा मच्छरदानी ले आयेंगी। आपा ने आपके लिए अचार डाला है। आपा आपके लिए आंवले का मुरब्बा बना रही हैं।

शुरू शुरू में तो पता नहीं शायद ये कुछ अच्छा लगता होगा लेकिन बाद में एक बोझ लगने लगा। यह भी अंदाज़ा लगाया कि आपा बहुत आगे की सोच रही हैं।

आज खाना लेकर बशीर नहीं बल्कि आपा खुद आ गयीं। आपा को पहली बार देखा। आपा ने खूब तेल लगाकर दो चोटियाँ की हुई थीं। उनको देखकर पता नहीं क्यों मेरे आग लग गयी। अपने हिसाब से उन्होंने बेहतरीन कपड़े पहने थे जो हिंदी की मुस्लिम सोशल फिल्मों में नायिकाएँ पहना करती थीं लेकिन इन कपड़ों के लिए जिस सुंदर और सुडौल जिस्म की जरूरत होती है वह नदारद था। चेहरे पर पाउडर थोपा हुआ था और होठों पर लाल

लिपिस्टिक के कई लेप लगाये थे।
मैंने सोचा ये लड़की मुझसे शादी करना चाहती है। इसके वालिद कर्ज मांगते रहते हैं। भाई भी फ़रमाइशें किया करता है। कौन है ये लोग
और इसका इन्हें क्या हक है? लेकिन ये लड़की केस बना रही है।
वह खाना रखकर चली गयी। मैंने बैठने के लिए नहीं कहा। खाना खाया तो बरतन लेने बशीर आया। मैंने सिगरेट का धुआं छोड़ते हुए उससे कहा, "सोचता हूं ये मकान छोड़ दूं. . .ऑफिस से दूर पड़ता है।" बशीर ने हैरत में मेरी तरफ देखा और बरतन लेकर चला गया। थोड़ी देर बाद आया और बोला, "आपा कह रही हैं देखेंगे कैसे छोड़ते हैं ये मकान।"
मैं सन्नाटे में आ गया। मतलब साफ था। मेरे मकान छोड़ने से पहले आपा ये शोर मचा देंगी कि मैंने शादी का वायदा करके उसके साथ जिस्मानी रिश्ता बना लिया है या मैंने आपा के साथ बलात्कार किया है। चाहे कुछ हुआ या नहीं लेकिन एक सीन क्रिएट हो जायेगा। मैं फंस भी सकता हूं। इसलिए कुछ होशियारी से काम लेने की जरूरत है। मैंने बशीर से कहा "अभी तय थोड़ी है मकान छोड़ना. . .देखो क्या होता है।"
अगले दिन काफी हाउस में इस मसले पर मीटिंग बैठ गयी। रावत, नवीन जोशी, मोहसिन टेढ़े के अलावा निगम साहब भी थे। सबने राय दी कि भागो. . .जितनी जल्दी हो सकता है भागो। लेकिन कैसे तरह-तरह की रणनीतियां बनने लगीं। आखिरकार तय पाया कि मैं पहले मकान मालिक को हिसाब चुका दूं उसके बाद रात बारह बजे के बाद अपना सामान समेटूं। साढ़े बारह बजे निगम साहब अपनी गाड़ी मेन रोड पर खड़े होंगे। मोहसिन टेढ़े उसके साथ होगा। मैं गाड़ी में सामान रखूंगा और सीधे मोहसिन टेढ़े के साथ मस्जिद वाले कमरे में आ जाऊंगा। उसके बाद कहीं शरीफों के मोहल्ले में बरसाती वग़ैरा देख ली जायेगी।
इस आड़े वक्त निगम साहब ने जो मदद ऑफर की उससे मैं प्रभावित हो गया। निगम साहब की एडवरटाइज़िंग एजेंसी है। कुछ मकान हैं जो किराये पर उठा रखे हैं। उम्र हम लोगों से पांच-सात साल ज्यादा ही होगी। कुछ पॉलीटिक्स में भी दखल है। ऊंचे-ऊंचे लोगों को जानते हैं। हमारे लिए कवि हैं। अपनी तरह की कविताएं लिखते हैं जिनका उनके पीछे अच्छा खासा मज़ाक उड़ता है। जवानी में निगम साहब को पहलवानी का शौक था। यही वजह है कि अब पूरा जिस्म अजीब तरीके
से फूला हुआ-सा लगता है। चेहरे पर छितरी हुई दाढ़ी और सूखे बाल कवि होने की गवाही देते हैं।
घर वालों को टालते-टालते कई साल हो गए थे और अब ये लगने लगा कि ज्यादा टाल पाना नामुमकिन है। अम्मा, खाला और खालू दिल्ली आ गये। एजेण्डा यह था कि किसी सूरत मुझे मिर्जा इब्राहिम की लड़की नूर इब्राहिम से शादी पर रजामंद कर लिया जाये। कहा जाता है कि शादी और जायदाद के बारे में जो बहुत चाक चौबंद रहता है, हर-हर तरह से सौदे को देखता परखता है उसे कुछ नहीं हासिल होता। खालू ने सौ मिसालें देकर समझाया कि शादी कितनी जरूरी है। अम्मा खूब रोयीं और खाला की आंखों में आंसू आ गये। अम्मां ने कहा कि हमारे कहने पर मिर्जा इब्राहिम ने दो साल इंतिज़ार किया है और हम उनसे नहीं नहीं कह सकते। अम्मा ने नूर इब्राहिम का पूरा बायोडेटा याद कर लिया था। जो बार-बार मुझे सुनाया जाता था। नूर इब्राहिम की तस्वीर भी उन्होंने मंगा ली थी। मुझे दिखाई गयी थी। अच्छी खूबसूरत लड़की है, यह कोई तस्वीर देखते ही सकता था। बहरहाल मुझे हां करना पड़ी। मेरी हां होते ही अम्मां ने खालू के साथ जाकर लंदन फोन मिलवाया और इब्राहिम साहब को रिश्ता दे दिया। उसके बाद तो हवा के घोड़े दौड़ने लगे।
मिर्जा इब्राहिम के बारे में जो बताया गया उससे यह अंदाजा हुआ कि वे किसी नाविल का किरदार हो सकते हैं। उनकी उम्र सोलह साल की थी वे घर से भागकर बंबई पहुंच गये। वहां एक मर्चेण्ट शिप में बर्तन धोने का काम

मिल गया। यह जहाज जब लंदन पहुंचा तो मिर्जा इब्राहिम लंदन में ही रह गये। यहां छोटे-मोटे काम किए और पता नहीं कैसे लंदन की सबसे बड़ी जौहरी बाज़ार बाण्ड स्ट्रीट की किसी दुकान में नौकरी मिल गयी। यहां जवाहेरात की पहचान भी होने लगी और शाम की क्लासें भी अटैण्ड करने लगे। दो-तीन साल में खुद छोटी-मोटी खरीद करने लगे। इस बीच हिन्दुस्तान आये और हैदराबाद से उन्हें अक़ीक की एक जोड़ी मिली जिसने उनकी किस्मत बना दी। उसी बाज़ार में जहां नौकरी करते थे दुकान खरीद ली। उसके बाद तो मिर्जा साहब आगे ही आगे चले। साउथ अफ्रीका से हीरे लाने लगे। लंदन शेयर मार्केट में खूब पैसा कमाया। रियल स्टेट बिजनेस में आ गये। एक अमरीकी कम्पनी में खूब पैसा लगा दिया जो सऊदी अरब में तेल के मैदान खोज रही थी। इस तरह पैसे से पैसा आता गया। लेकिन मिर्जा इब्राहिम न अपने को भूले और न अपने देश को भूले। यही वजह है कि जब लड़की की शादी का मामला सामने आया तो हिन्दुस्तान में और वह भी बिरादरी में लड़का तलाश करने लगे।
हीथ्रो एयरपोर्ट से हाईगेट इलाके में मिर्जा इब्राहिम के घर आने में पैंतालीस मिनट लगे होंगे। मैं अपनी हैरत को छुपाये उस दुनिया को देख रहा था जो कागज़ पर छपी हुई रंगीन तस्वीर जैसी दुनिया है। सब कुछ साफ सब कुछ धुला हुआ, सब कुछ चमकता हुआ, सब कुछ व्यवस्थित, सब कुछ ख्वाब जैसा। नूर मुझे खास-खास जगहों के बारे में बताती जा रही थी लेकिन मैं ठीक से न सुन पा रहा था न समझ पा रहा था। लेकिन नूर के चेहरे पर ताज़गी और अपनी जानी-पहचानी चीज़ों के प्रति आत्मीयता का भाव ज़रूर मुझे प्रभावित कर रहा था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं खुश हूं क्योंकि मैं लंदन आ गया हूं या मैं दुखी हूं क्योंकि यहां जो कुछ चमक है वह एशिया अफ्रीका की लूट का नतीजा है। मैं क्या करूं यह तय कर पाना जरूरी है क्योंकि में ऐसी स्थिति में यहां पंद्रह दिन कैसे रहूंगा।
मिर्जा साहब और नूर की मां पहले ही वापस आ चुके थे। उन दोनों ने हमारा स्वागत किया। मिर्जा साहब के लंबे चौड़े चमकते हुए ड्राइंगरूम में सबसे पहले खुलेपन का एहसास हुआ। दो तरफ शीशों की बड़ी-बड़ी खिड़कियां थीं जिनमें रौशनी अंदर आ रही थी और बाहर का बाग दिखाई पड़ रहा था। चमक, चमक और चमक मैं चौंधिया गया। दूसरी मंजिल के बेडरूम में जाकर हम बैठ गये। नूर के चेहरे से नूर फटा पड़ा रहा था। वह बहुत खुश लग रही थी। मैंने सोचा ये शादी कहीं बहुत गलत तो नहीं हो गयी है। नूर की जो दुनिया है वो मेरी नहीं है। मेरी दुनिया इससे कितनी अलग है, कितनी अजीब और भोंड़ी है, कितनी अधूरी है।
मैंने नूर की तरफ देखा बिल्कुल हिन्दुस्तानी नक्शोनिगा" की यह लड़की पूरी हिन्दुस्तानी नहीं लगती। इसके चेहरे पर कुछ ऐसा है जो इसे योरोप से जोड़ता है। लेकिन है ग़जब की खूबसूरत और अगर पन्द्रह बीस दिन के तजरूबे के बाद किसी के बारे में कुछ कहा जा सकता है तो मैं यही कहूंगा कि नूर अच्छी लड़की है, सादगी है, हमदर्दी है, सच्चाई है। वह मुझे गुमसुम बैठा देखकर समझ गयी कि मेरी मानसिक हालत क्या हो सकती है। वह चुपचाप मेरे पास आई और मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर बैठ गयी। मैं मुस्कुराने लगा।
नूर ने मुझे लंदन इस तरह घुमाना शुरू किया जैसे कोई बच्चा अपना खिलौना दिखाता है। वह सेण्ट्रल लंदन की गलियों में इस तरह घुसती थी जैसे किसान अपने खेत में घुसता है। कहां से कहां पहुंच गयी, किधर से किस तरफ ले आयी ये पता ही न चलता और वह इस पर खूब हंसती थ। हर जगह जुड़ी यादें थी उसके पास यहां पहली बार अपनी स्कूल की ट्रिप पर आई थी। यहां पहली बार डैडी के साथ कुछ खरीदने आई थी। मुझे पता था कि यही सेण्ट्रल लंदन में मिर्जा साहब की ज्वलरी का शोरूम है, लेकिन वह मुझे नहीं ले गयी। कहने लगी ये नाम डैडी का है। वही ये सब दिखायेंगे।
नूर अंग्रेजी में 'ऐटहोम फील` करती है। बोलने को हिन्दुस्तानी भी बोल लेती है लेकिन उसके पास हिन्दुस्तानी के बहुत कम शब्द हैं क्योंकि हमेशा घर में ही हिन्दुस्तानी बोली है। अंग्रेजी मेरे लिए विदेशी भाषा ही है। बोलना

अलग बात है लेकिन बोलने का मज़ा मिलना अलग चीज है। तो मुझे अंग्रेजी बोलकर मज़ा नहीं आता। हम दोनों ने दिलचस्प समझौता कर लिया है। वह लगातार अंग्रेज़ी बोलती है मैं लगातार हिन्दुस्तानी बोलता हूं। वह इस पर खुश है कहती है उसे हिन्दुस्तानी के नये-नये शब्द पता चल रहे हैं।
एक दिन मिर्जा साहब ने मुझे अपनी 'इम्पायर` दिखाई। मैं सचमुच बहुत डर गया। मुझे लगा कि मेरे ऊपर इतनी बड़ी जिम्मेदारी आ गयी है। करोड़ों खरबों रुपये का कारोबार अब मेरा हो गया। मिर्जा साहब
बार-बार कह रहे थे कि ये सब नूर का और तुम्हारा है। नूर तो शायद इसकी आदी है लेकिन मैं तो न हूं और न शायद हो सकता हूं। मैं स्वामित्वभाव से परेशान हो जाता हूं और न कि यहां इतना है। शायद सम्पन्नता या विपन्नता का अभ्यस्त होने में समय लगता है।
नूर को आठ महीने लंदन में रुकना था क्योंकि वह कोई कोर्स कर रही थी। मुझे वापस आना था। वापस आने से पहले मिर्जा साहब ने मुझसे कहा कि उन्होंने मुझे शादी का तोहफा नहीं दिया है और अब देना चाहते हैं। तोहफे में उन्होंने मुझे दिल्ली में एक वेल फर्शिण्ड बंगला दिया। मैं तो हैरान रह गया। फिर समझ गया कि यह नूर के ख्याल से दिया गया है। मिर्जा साहब ने कहा कि दिल्ली में मेरा वकील तुम्हें कागज़ात दे देगा। तुम "फौरन शिफ्ट हो जाना। इंशाअल्लाह आठ महीने बाद नूर वहां पहुंच जायेगी।
मुझे एयरपोर्ट छोड़ने नूर और बॉब आये थे। बॉब यानी राबर्ट बर्नाड नूर के स्कूल से लेकर यूनीवर्सिटी तक क्लासमेट रहे हैं। नूर ने जब पहली बार मुझे बॉब से मिलाया था तो मुझे सदमा हुआ था। मेरे दिमाग में अंग्रेजों के बारे में खासतौर पर उनकी जो छवि मेरे दिमाग में थी वह तड़ातड़ यानी बाआवाज़ टूट गयी थी। मतलब यह कि दो-चार मुलाकातों में ही बॉब इतने सज्जन, इतने शरीफ, इतने सीधे, इतने समझदार, इतने योग्य, इतने हमदर्द, इतने नरम दिल, इतने कला और साहित्य प्रेमी, इतने प्रगतिशील, इतने साफगो, इतने अहिंसक, इतने सौम्य, इतने सहिष्णु लगे थे कि मैं उन्हें बेहद पसंद करने लगा था। बॉब के बारे में नूर ने बताया था कि बॉब अपने परिवार की पांचवी पीढ़ी है जो आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी से पढ़ी हुई है और उन्होंने ब्रिटेन की मानवतावादी, उदार, सहिष्णु, वैज्ञानिक मूल्यों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आत्मसात किया है। उनमें किसी तरह के 'रंग-नस्ल` पूर्वाग्रह भी नहीं है। बॉब लंदन के किसी बड़े पुस्तकालय में लायब्रेरियन हैं और इसके अलावा अखबारों में लिखते रहते हैं। सेण्ट्रल लंदन में फ्लैट है जो उनके पितामह ने खरीदा था। बॉब अपने फ्लैट से लायब्रेरी पैदल जाते हैं। इसमें उन्हें पूरे पच्चीस मिनट लगते हैं। वे चाहें तो बस, कार, मैट्रो से भी ऑफिस जा सकते हैं।
बॉबा का पूरा व्यक्तित्व उनके चेहरे पर झलक आया है और सुंदर न होते हुए भी वे बहुत आकर्षक लगते हैं। एयरपोर्ट पर मुझे विदा करते समय नूर के साथ बॉब भी थोड़े भावुक हो गये थे। मेरे लिए यह थोड़ा अटपटा-सा था, पर क्या कर सकता था।
१२----
जनता बहुत जल्दी खुश होती है और बहुत देर में नाराज़ होती है। आजकल देश की जनता खुशी में पागल है। जेलखानों के फाटक खुल रहे हैं और नेता बाहर आ रहे हैं। जश्न मनाया जा रहा है। सरयू भी निकल आया है। लेकिन वह काफी हाउस नहीं आया और न किसी से मिला। बताते हैं वह बहुत 'बिटर` हो गया है। कहता है उससे किसी का कुछ लेना देना नहीं है। वह अकेला कमरे पर पड़ा रहता है। अपने सम्पादक समरेश जी से भी मिलने नहीं गया जो लोकसभा में आ गये हैं। विक्टर डिसूज़ा सिविल एवीएशेन मिनिस्टर हो गये हैं। जो कुछ नहीं थे वे सब कुछ हो गये हैं और जनता मान रही है कि यही सही है, इसलिए हर्ष और उल्लास में डूबी हुई है लेकिन क्या मैं भी खुश हूं? जनता तो अंग्रेजों के जाने के बाद भी बहुत खुश थी, बहुत उत्साह में थी, जश्न मनाये जा रहे थे, गीत गाये जा रहे थे, पर हुआ क्या? और अब क्या होगा? पर जो हुआ अच्छा हुआ क्योंकि यह पता तो चला कि धर्म

और जाति के समीकरणों के ऊपर भी कुछ है। आज बिरादरियों की हार हुई है। आज मैं चुनाव में खड़ा होता तो जीत जाता। घोसी भी मुझे वोट देते।

काफी हाउस में फिर से लोग काफी पीने लगे हैं। सन्नाटा भाग गया है। महफिले जाग उठी हैं। आज निगम जी बहुत चहक रहे हैं क्योंकि उनके करीबी नेता सीताराम केन्द्रीय मंत्री मण्डल में आ गये हैं। उन्हें पर्यटन मंत्रालय मिला है। रावत भी अब राजनीति पर गर्मागर्म बहस कर रहा है। नवीन जोशी ने खुशी में मेरी एक सिगरेट सुलगाई तो रावत ने कहा, 'साले तुम सिगरेट न पिया करो. . .एक फेफड़े के आदमी हो. .

वह भी चला गया तो क्या करोगे।` नवीन ने बुरा-सा मुंह बनाया। वह जब स्कूल में था तो उसे टी.वी. हो गयी थी और एक पूरा फेफड़ा निकाल दिया गया था।

'अरे यार कौन सा मैं 'इनहेल` करता हूं। तुम तो साले हर बात पर टोक देते हो।` नवीन ने कहा।

रात ग्यारह बजे तक मोहन सिंह प्लेस आबाद रहा फिर मैं घर आ गया। नूर टेलीविजन पर खबरें देख रही थी और गुलशनिया किचन में खाना पका रही थी। मुझे लगा चारों तरफ अमन-चैन है। सब कुछ ठीक है। कहीं न तो कुछ कमी है और न कहीं कुछ दरकार है। पता क्यों कभी-कभी कुछ क्षण अपनी बात खुद कहलवा लेते हैं उनमें चाहे जितना सच या झूठ हो।

जब से मैं कोठी में शिफ्ट हुआ हूं शकील दिल्ली में मेरे ही पास ठहरता है क्योंकि ग्राउण्ड फ्लोर पर बड़ा-सा गेस्टरूम है जो पूरी तरह इण्डेपेंनडेण्ट` है। आजकल शकील आया है। उसका 'मॉरल` कुछ गिरा हुआ जरूर है लेकिन फिर भी मजे में हैं। उसने पिछले एक साल में खासी कमाई कर ली है और अपने क्षेत्र में 'कोल्ड स्टोरेज` खोल लिया है। नूर उसे बहुत पसंद तो नहीं करती लेकिन चूंकि मेरा दोस्त है इसलिए सारी औपचारिकताएँ पूरी करती है।

'देखो, कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा, भानमती का कुनबा जोड़ा . . . तुम्हें लगता ये सब चलेगा? मैं चैलेंज करता हूं साल छः महीने के अंदर ही ये सब ढेर हो जायेंगे।` शकील ने कहा।

'हो सकता है तुम ठीक कह रहे हो. . .लेकिन इस वक्त जो हुआ वो अच्छा ही हुआ।`

'ये तुम अखबार वालों का सोचना है यार. . .बताओ क्या फ़र्क़ पड़ेगा।`

'अरे यार नेता जेल में बंद तो नहीं है।`

हम विस्की पीते रहे। गुलशन कबाब ले आया। कुछ देर बाद नूर भी आ गयी। वह किसी तरह का 'एलकोहल` नहीं लेती लेकिन पीना बुरा भी नहीं समझती। नूर के सामने शकील के अंदर और जोश आ गया।

"देख लेना यार सब ठीक हो जायेगा. . ." नूर यह सुनकर कुछ मुस्कुरा दी। शकील देख नहीं पाया।

"और सुनाओ. . .तुम्हारे बीवी बच्चे कैसे हैं?" मैंने बात बदलने के लिए सवाल पूछा।

"यार कमाल की पढ़ाई की तरफ से फिक्रमंद हूं. . .वहां कोई अच्छा स्कूल नहीं है।"

"छोटे शहरों में क्या अच्छा है?"

वह बात को टाल गया और बोला "यार मैं सोचता हूं कि कमाल का एडमीशन दिल्ली के किसी अच्छे स्कूल में करा दूं।"

"क्या उसे हॉस्टल में रखना चाहते हो?"

वह कुछ देर सोचता रहा फिर दाढ़ी खुजाते हुए बोला, 'यार मैं सोचता हूं दिल्ली आ जाऊं।`

"क्या मतलब?"

"मतलब दिल्ली में घर ले लूं।" उसने कहा, "वैसे भी महीने में दिल्ली के चार-पांच चक्कर लग जाते हैं।"

"चुनावक्षेत्र छोड़ दोगे?"

"चुनावक्षेत्र कहां भागा जा रहा है।"

"मतलब?"

"मतलब ये कि दिल्ली में ही सब कुछ होता है।" वह खामोश हो गया।

"क्या?"

"सब कुछ. . .टिकट यहीं से मिलते हैं। नेता यहीं से तय होते हैं। नीतियां यहीं से बनती हैं, बड़े-बड़े नेता यहीं रहते हैं। उनका दरबार यहीं लगता है. . .यहां जो फ़ैसले हो जाते हैं। उन्हें लागू किया जाता है देश में।" वह विश्वास से बोला।

"ओहो।"

"मेरा पन्द्रह साल का यही अनुभव है. . .जो लोग दिल्ली में हैं उन्हें फायदा पहुंचता है. . .जो दूर बैठे हैं. . .वो दूर ही रहते हैं।

"लेकिन तुम्हारा चुनाव क्षेत्र।"

"यार तुम क्या बात करते हो? चुनाव क्षेत्र है क्या? मुश्किल से पचास आदमी हैं जिनके हाथ में वोट हैं। उन पचास आदमियों को दिल्ली बैठकर आसानी से साध जा सकता है। सबके सालों के दिल्ली में काम पड़ते हैं। कोई हज पर जाना चाहता है, कोई अपने लड़के को दुबई में नौकरी दिलाना चाहता है, कोई आल इण्डिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में ऑपरेशन कराना चाहता है. . .ये सब काम कहां होते हैं? दिल्ली में? और फिर क्षेत्र में मेरी उपस्थिति तो है ही है। मेरा घर है, मेरे बाग हैं, मेरा पेट्रोल पम्प है, मेरा कोल्ड स्टोरेज है, मेरी मार्केट है. . .और क्या चाहिए।"

"बेगम रहेंगी तुम्हारी दिल्ली।"

"अब ये उनकी मरज़ी . . .लगता तो नहीं।"

"तो यहां मज़े करोगे।"

वह दबी-दबी सी हंसी हंसने लगा।

मेरी हाथ में वार्ड नंबर और बेड नंबर की पर्ची है जो मुझे कल ही बाबा ने दी थी। उसे किसी ने मेरे लिए मैसेज दिया था कि अलीगढ़ से जावेद कमाल दिल्ली ले लाये गये हैं और अस्पताल में भर्ती है। होते हुआते आज चौथा दिन है। सोचा जावेद कमाल बीमार हैं। इलाज चल रहा है। उनके लिए कुछ फल वग़ैरा ही लेता चलूं। आश्रम के चौराहे से फल खरीदे और अस्पताल आ गया। बेमौसम की बारिश तो नहीं है लेकिन छींटे पड़ रहे हैं।

क्या आदमी है यार जावेद कमाल। मुझे अलीगढ़ में बिताये दिन याद आ गये। वे शामें याद आ गयीं जब जावेद कमाल की कैंटीन में महफ़िलें जमा करती थीं और वे अपने दोस्तों पर पानी की तरह पैसा बहाते थे। उनके शेर याद आ गये। उनकी दावतें याद आ गयीं। उनका फक्क़ड़पन और अकड़ूपन याद आ गया। रॉ सिल्क की शेरवानी, चौड़े पांयचे का पाजामा, सलीम शाही जूते, गेहुआँ रंग, लंबे सूखे बाल, बड़ी बड़ी रौशन आंखें, हाथों में पानों का बण्डल और विल्स फिल्टर सिगरेट की दो डिब्बियां. . .उनकी गलियां. ..रामपुर के लतीफ़े. . .फिर कैंटीन का बंद होना. . .उन्हें पी.आर.ओ. आफिस में क्लर्की करते देखना।

वार्डों के चक्कर लगाता रहा। पता नहीं सोलह नंबर का वार्ड कहां है। वैसे भी अस्पताल मुझे नर्वस कर देते हैं और यह विशाल काय सरकारी अस्पताल जहां हर तरफ गंदगी है, जहां गैलरियों में मरीज़ लेटे हैं, जहां गरीबी और भुखमरी अपने चरम पर दिखाई देती है, मुझे और ज्यादा नर्वस कर रहे हैं लेकिन वार्ड नंबर सोलह और बेड नंबर सात तक तो जाना ही है। वहीं चिर परिचित मुस्कुराहट आयेगी उनके चेहरे पर।

वार्ड के अंदर आ गया। लंबा चौड़ा हाल है जहां तीन तरफ मरीज भरे पड़े हैं। बेड नंबर कहां लिखे हैं? शायद नहीं है? या किसी ऐसी जगह लिखे हैं जो अस्पताल वालों को ही नज़र आते हैं। बहरहाल पूछता हुआ बेड नंबर सात पर पहुंचा देखा बेड खाली है। लगता है कहीं और शिफ्ट कर दिया है। मैं कुछ देर खाली बेड को देखता रहा। आसपास जो मरीज थे वे बता न सके कि जावेद कमाल को किस वार्ड में शिफ्ट किया गया है। कुछ देर बाद गुज़रती हुई नर्स से पूछा तो जवाब देने के लिए रुकी नहीं, चलते चलते बोली- 'ही एक्सपायरड यस्टर डे।`
मैं सन्नाटे में आ गया। जावेद कमाल कल मर गये। मर गये? कई बार अपने आपसे सवाल किया। जवाब नहीं आया कि मर गये। मैं खाली बेड को देखता रहा। मर गये जावेद कमाल? मुझे देर हो गयी। मैं बेड को देखता रहा। वहां कुछ न था। गंदे से गद्दे पर गंदी सी चादर बिछी थी जिसमें इधर-उधर कई धब्बे और छेद थे। मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा। हाथ में फल वाला बैग था उसे बेड के नीचे सिरहाने की तरफ रख दिया। इससे पहले कि आसपास वाले मुझसे कुछ पूछते मैं तेज़ी से बाहर निकल गया। अब भी फुहार पड़ रही थी। पूरा शहर गीला-गीला हो रहा था। मेरी आंखों में आंसू आ गये। मैं अपने आपको कन्विंस नहीं कर पाया कि जावेद कमाल मर गये हैं। यार जावेद कमाल जैसा आदमी कैसे मर सकता है? जो यारों का यार हो, जो मनमौजी और मस्त हो, जो जिंदगी की हर खूबसूरत चीज़ से प्यार करता हो, जो लतीफ़ों का बादशाह हो, जो गालियों का एक्सपर्ट हो वो मर कैसे सकता है. . .मैंने आंखों से आंसू पोंछे. . .नहीं, जावेद कमाल मरे नहीं. . .शायर कभी नहीं मरते
. . . दोस्त कभी नहीं मरते. . .और वो भी जावेद कमाल जैसे दोस्त . . . जो आन-बान से रहते हों, जो दोस्तों के लिए कभी इतना-इतना झुक जाते हों कि जमीन को चूम लें और दुश्मनों के लिए सीना तानकर इस तरह खड़े हो जाते हों कि सिर बादलों से टकराने लगे. . .वो मर कैसे सकते हैं. . .चांदनी रातें. . .कच्ची पगडण्डियां, हवा के झोंके, ओस की बूंद, गुलाब के फूल मर कैसे सकते हैं. . .अब मैं रोने लगा. . . अस्पताल के बाहर शायद बहुत लोग ये करते होंगे. . .किसी ने तवज्जो नहीं दी. . .मुझे यकीन है जावेद कमाल नहीं मरे. . .दुनिया झूठ बोलती है. . .
१३----
सरयू जेल से छूटते ही घर चला गया। वापस तब भी किसी से नहीं मिला। बस उड़ी-उड़ी बातें सुनने में आती रही। ये भी पता नहीं चला कि वह कहां नौकरी कर रहा है क्योंकि उसका अख़बार तो बंद हो ही चुका था। मैंने नवीन जोशी, रावत और मोहसिन टेढ़े ने सोचा कि सरयू से चलकर मिला जाये। हम रावत के नेतृत्व में क्योंकि रावत का नेतृत्व करने का सबसे ज्यादा शौक है, सरयू के कमरे पहुंचे। वह कमरे पर ही था मिल गया। हम सब को एक साथ देखकर उसके चेहरे पर अजीब से भाव आये कि पता नहीं। उसे खुश होना चाहिए या कुछ और महसूस करना चाहिए।
उसने विस्तार से अट्ठारह महीने का लेखा-जोखा दिया। सबसे अहम बात तो यही बताई कि अमरेश जी अपने बयान में साफ-साफ कहा था कि अखबार में केवल उनका नाम संपादक के तौर पर जाता था लेकिन उसमें जो भी छपता था उसका निर्णय सरयू डोभाल लेते थे। मतलब यह कि असली अपराधी वही है। इसके बाद सरयू का कहना था कि जेल में उसे पार्टी की तरफ से कोई मदद नहीं मिली। अगर उसके साथ आर.एस.एस. के लोग न होते तो वह शायद मर जाता। मुझे यह डर लगने लगा कि सरयू कहीं आर.एस.एस. में न चला जाये। लेकिन मैं खामोश रहा। सरयू बताता रहा कि तिहाड़ में दूसरे समाजवादी कैदी आराम से थे। उनके पास पैसा भी था, उनकी जरूरतें भी पूरी होती थी और जेलवाले भी उनसे कुछ डरते थे क्योंकि उनके पीछे राजनैतिक ताकत थी। मुझे पार्टी ने कुछ नहीं समझा क्योंकि शायद मैं उनका मेम्बर
नहीं हूं लेकिन उनके अखबार का पत्रकार था। डिसूज़ा इसके मालिक थे। अमरेश जी प्रधन संपादक थे और इस अखबार के काम करने की वजह से ही गिरफ्तार किया गया था। क्या पार्टी की यह जिम्मेदारी नहीं बनती थी कि

मेरा भी ध्यान रखा जाये? सब जानते हैं विक्टर के पास पैसे की कमी नहीं है, साधनों की कमी नहीं है।``

"और अब तो वह मिनिस्टर है।" रावत ने कहा।

"इन लोगों की तरफ से मैं बहुत निराश हुआ, दुखी हुआ, अपमानित महसूस किया मैंने. . .मुझे यार आर.एस.एस. वाले तौलिया साबुन दिया करते थे. . .यार. . .

"सरयू कहीं तुम आर.एस.एस. तो नहीं ज्वाइन कर लोगे?" मैंने पूछ ही लिया।

"आर.एस.एस. ज्वाइन करने की मेरी उम्र निकल गयी।" वह हंसकर बोला, देख निजी तौर पर, व्यक्तिगत स्तर पर मुझे वे अच्छे लोग लगे। सामाजिक स्तर पर, राजनैतिक स्तर पर मैं उनसे सहमत नहीं हो सकता. . .बल्कि हो सकता है मैं जेल के अनुभवों के आधार पर आर.एस.एस. पर किताब लिखूँ. . .वैसे मैंने ये कुछ कविताएं लिखी है कहो तो सुनाऊं।"

सरयू ने कविताएं सुनाईं तो सन्नाटा गहरा हो गया। बिल्कुल अलग ढंग की बड़ी सशक्त और मार्मिक कविताएं लिखी थी उसने।

"इन कविताओं के छपते ही तुम हिंदी के प्रमुख कवियों में. . ." रावत ने कहा।

"अरे छोड़ो यार।"

"नहीं, कविताएं बहुत ज्यादा अच्छी हैं. . .आज हिंदी में कोई ऐसा नहीं लिख रहा।" नवीन ने कहा।

इसके बाद नवीन ने भी अपनी कुछ नयी कविताएं सुनायीं। देर तक हर सरयू के यहां बैठे रहे। सरयू ने बताया कि उसकी बात 'नया भारत` में चल रही है, हो सकता है वहां नौकरी लग जाये।

वापसी पर मैं मोहसिन टेढ़े को अपने साथ लेता आया। ये हम दोनों के लिए अच्छा है। उसे घर का पका खाना मिल जाता है। नूर उससे गप्प शप्प कर लेती है। उसे मोहसिन टेढ़े के कुछ अंदाज जैसे छोटी-छोटी बातों पर बेहद आश्चर्य व्यक्त करना आदि पसंद आते हैं क्योंकि वह उनके नकलीपन को पहचान लेती है। मोहसिन टेढ़ा उससे योरोप के बारे में सैकड़ों सवाल करता है। नूर थोड़ी बहुत फ्रेंच भी जानती है और मोहसिन को गाइड करती रहती है कि यहां से डिप्लोमा करने के बाद उसे फ्रांस की किस यूनीवर्सिटी में जाना चाहिए।

मोहसिन टेढ़ा नूर को अपनी जायदाद के झगड़ों, अपने अकेले होने, जायदाद बेचकर दिल्ली शिफ्ट हो जाने के इरादों, अपनी पोलियो की बीमारी वगैरा के बारे में बताता रहता है। नूर हिन्दुस्तानी तेजी से सीखी है और अब वह अंग्रेज़ी की बैसाखी के सहारे नहीं है। उसकी सबसे बड़ी टीचर है गुलशनिया यानी गुलशन की बीवी जो हम लोगों के साथ ही रहते हैं। इस कोठी में आने के बाद अब्बा ने गांव से गुलशन को यहां भेज दिया था।

मैं ये समझ रहा था कि शायद नूर को दिल्ली ममें 'एडजस्ट` करना मुश्किल होगा। लेकिन वह बड़े आराम से रहने लगी। पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन सेंटर में उसे नौकरी मिल गयी है। वहां अपने काम से खुश है। सुबह मैं उसे आफिस छोड़ता हूं। शाम कभी-कभी जब मुझे कहीं जाना होता है तो स्कूटर करके घर आ जाती है। बिल्कुल सीधी-साधी सामान्य और निश्चिंत जिंदगी जी रही है। दिन में एक बार लंदन फोन करना नहीं छुटा है। जब तक वह ममी से पन्द्रह मिनट बात नहीं कर लेती तब तक खाना हज़म नहीं होता।

आफिस पहुंचा तो हसन साहब ने बताया कि मेरी तलबी हुई है। ब्यूरो चीफ़ ने मुझे बुलाया है।

"क्या मामला हो सकता है हसन भाई, अब तो दूसरी आजादी का जश्न भी मनाया जा चुका है।"

"टोटल रेवोल्यूशन` आ गया है. . .फिर भी हो सकता है कहीं दुम फंसी रह गयी हो. . .जाओ देखो क्या कहते हैं", वे बोले।

सक्सेना साहब के विशाल कमरे में पहुंचा तो पता चला कि वे एडीटर इन चीफ के पास हैं और मैं कुछ देर बात आऊं। इधर-उधर देखा तो सबिंग में सुप्रिया दिखाई दे गयी। मैं उसके पास आ गया। उसके चेहरे पर वही उदासी

थी। उसने बताया कि उसके भाइयों कोमल और सुकुमार का अभी तक कोई पता नहीं चला है और वह कलकत्ता जा रही है। हम दोनों कुछ देर तक पश्चिम बंगाल के आतंक की चर्चा करते रहे। थोड़ी देर बाद, उसे दिलासा देने के बाद मैं उठा तो उसके हाथ पर मैंने एक क्षण के लिए अपना हाथ रख दिया। वह मुस्कुरा दी। फीकी सी मुस्कुराहट।
सक्सेना साहब हैं तो ब्यूरो चीफ लेकिन माना जाता है कि मैनेजमेण्ट की नाक का बाल हैं और कभी-कभी एडीटर-इन-चीफ के ऊपर भी हावी हो जाते हैं। उन्होंने मुझसे बैठने के लिए और एक दो काग़जों पर दस्तख़त करके बोले "पिछले साल तुमने अलीगढ़, संभल वगैरा पर जो रिपोर्ट की थी वो मैंने पढ़ी हैं।"
"जी।"
"काफी संवेदना है तुम्हारे लेखन में. . .इमोशन्स का भी अच्छा इस्तेमाल करते हो।"
मैं समझ नहीं पा रहा था कि यह भूमिका क्यों बांधी जा रही है। कुछ देर के बाद वे नुक्ते पर आ गये। देखो पार्लियामेंट बंधुआ मज़दूर वाले मसले पर बहुत सीरियल है। हम पर यह इल्जाम तो है ही है कि हम 'अर्बन` हैं। हमारे यहां गांव के बारे में कुछ नहीं छपता या कम छपता है. . .अब सारे अखबार बंधुवा मज़दूरों पर छापें ओर हम ख़ामोश रहें यह भी नहीं हो सकता. . .तुम्हें इस तरह की रिपोर्टिंग में दिलचस्पी भी है", वे बोलते-बोलते रुक गये। आदेश नहीं देना चाहते थे। पहले यह जानना चाहते थे कि मुझे कितनी रुचि है।
"लेकिन हसन साहब. . .मैं तो. . ."
"उनसे बात हो गयी है. . .हम तुम्हें ब्यूरो मे ले लेंगे. . .तुम्हें तो कोई. . .?"
"जी नहीं, मैं तो ये काम खुशी खुशी करूंगा।"
मैंने 'हां` कर दी थी लेकिन एक सवाल मेरे दिमाग की दीवारों से टकराता रहा। अगर पार्लियामेण्ट में 'कुलक लॉबी` और 'उद्योग लॉबी` के बीच टकराव की स्थिति न होती तो क्या बधुआ मज़दूर मुद्दा आज भी उसी तरह दबा न पड़ा रहता जैसे आज़ादी के बाद से लेकर आज तक दबा पड़ा था? क्या इसका मतलब यह हुआ कि मुद्दे भी 'दिए` जाते हैं? कौन देता है? वे लोग जो सत्ता संघर्ष में या सत्ता बनाये रखने की कोशिश में लगे हुए हैं? क्या इसका यह मतलब हुआ कि मुद्दे या तो वास्तविक मुद्दे नहीं होते या उनको उठाने वालों का उद्देश्य मुद्दा विशेष नहीं बल्कि कुछ और होता है। कभी-कभी कुछ मुद्दे इसलिए भी उठाये जाते हैं कि वास्तविक मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाना जा सका। लेकिन इतना तय है कि बंधुआ मज़दूरी का मुद्दा ग्रामीण जीवन के शोषण की 'हाईलाइट` करेगा।
सक्सेना साहब ने जो नाम और फोन नंबर दिया था वहां फोन किया तो "फौरन डॉ. आर.एन. सागर से बात हो गयी। उन्होंने बताया कि 'रुरल इंस्टीट्यूट` की टीम अगले सप्ताह पूर्णिया जा रही है और मैं उस टीम के साथ जाना चाहूं तो जा सकता हूं। अगले दिन मैं इंस्टीट्यूट पहुंच गया। यहां डॉ. आर. एन. सागर से मिलना था। वे अभी तक आये नहीं थे। मैं इंतिज़ार करने लगा। कुछ देर बाद आये तो कई अर्थों में बहुत अजीब लगे। दिन का ग्यारह बजा था लेकिन यह लगता था कि डॉ. सागर के लिए रात के आठ का समय है क्योंकि वे 'महक` रहे थे। उसके विशाल सिर पर ढेर सारे बाल और चेहरे पर कार्ल मार्क्स कट फहराती हुई दाढ़ी थी। बंद गले का काला कोट और पतलून पहने थे पर कपड़े उनके शरीर पर ऐसे लग रहे थे जैसे यह शरीर इस तरह के कपड़ों के लिए बना ही नहीं। कुछ ही देर में उन्होंने बंधुआ मज़दूर सर्वेक्षण के बारे में दुर्लभ जानकारियां दी। यह साबित होते देर नहीं लगी कि डॉ. सागर न सिर्फ विषय के विशेषज्ञ हैं बल्कि बहुत पढ़े लिखे और सोचने समझने वाले, मौलिक किस्म के आदमी हैं। उन्होंने मुझे चाय पिलाई और खुद पानी पीते रहे क्योंकि जाड़े के इस मौसम में भी उन्हें खूब पसीना आ रहा था और रुमाल से अपना माथा पोछ रहे थे।
एयरपोर्ट पर ही पता चला कि पूर्णिया जाने वाली टीम में सरयू भी 'नया भारत` की तरफ से जा रहा है। अब चूंकि मेरा काफी हाउस जाना छूट गया था इसलिए सरयू से मुलाकात ही न होती थी। एयरपोर्ट पर उसे देखकर खुश हो

गया क्योंकि इतने सालों बाद उसके साथ कुछ समय बिता सकूंगा और अपने पुराने साहित्यिक मित्रों के बारे में जानकारियां मिलेंगीं। सरयू जब भी मिलता है यह शिकायत करता है कि मैंने कहानियां लिखना क्यों बंद कर दिया है। मेरे पास इसका सवाल का कोई जवाब नहीं है। पत्रकारिता का काम सोख लेता है लेकिन दूसरे पत्रकार भी तो लिखते हैं? फिर भी शायद यह लगता है कि मैं जैसा लिखना चाहता था वैसा लिख नहीं सकूंगा या लंबे अंतराल के बाद आत्मविश्वास डिग जाता है या दूसरे तो कहां के कहां निकल गये और मैं यही रह गया। मैं उस दौड़ में क्या शामिल होऊं? बहरहाल सरयू ने एयरपोर्ट पर चाय पीते हुए फिर यही से बात शुरू की और कहा कि यार तुमने कहानियां लिखनी क्यों बंद कर दिया है। मैंने सवाल को टालते हुए पुराना जवाब दिया कि यार टाइम ही नहीं मिल पाता, ये अखबार का काम बड़ा जानलेवा होता है।

सरयू सागर साहब को पहले से जानता है। उसने जो जानकारियां दीं उनसे सागर साहब की नामुकम्मल तस्वीर पूरी हो गयी। सरयू ने बताया "दरअसल सागर साहब स्वयं एक बंधुआ मज़दूर परिवार में पैदा हुए थे। सागर उन्होंने उपनाम रखा था कि किसी ज़माने में कविताएं लिखा करते थे। वे पता नहीं कैसे गांव के स्कूल में पहुंच गये थे। उसके बाद तो उन्होंने कभी पीछे नहीं देखा। सरयू ने बताया यार जीनियस हैं सागर साहब. . .तुम सोचो मूल जर्मन में 'दास कैपिटल` पर इनकी टीका बर्लिन विश्वविद्‌यालय ने छापी है। इनके जैसा पढ़ा लिखा और मौलिक सोच रखने वाला यार मैंने तो आजकल देखा नहीं।"

किसी के बारे में कुछ सुनकर न प्रभावित होने वाली प्रवृत्ति के कारण मैंने इन बातों का कोई नोटिस नहीं लिया और सोचा खुद ही पता चल जायेगा सागर साहब क्या है?

यह 'हापिंग` "लाइट है दिल्ली से लखनऊ और फिर पटना और फिर रांची जहां हमें दो दिन रुकना है ताकि 'रीजनल रुरल डवलप्मेंट इंस्टीट्‌यूट` में 'लैण्ड रेवेन्यु` रिकार्ड देख लें। उसके बाद पूर्णिया जाना है। हापिंग "लाइट बड़े मज़े से लखनऊ में दो घण्टे के लिए खड़ी हो गयी। यही हरकत उसने पटना में भी की। लेकिन मैं और सरयू बेफिक्र थे कि सालों बाद मिले हैं और बातचीत करने का मौका मिल रहा है।

- "यार तुम्हें मालूम है अमरेश जी का क्या हुआ?"

- "कौन अमरेश जी?"

- "यार वही. .कभी कभी काफी हाउस भी आते थे. . .जार्ज मैथ्यू के दोस्त. . .

- "हां हां याद आ गया। बताओ क्या हुआ?"

- "यार कुछ समय में नहीं आता क्या हो रहा है। अभी पिछले महीने मुझे अमरेश जी से मिलना था। मैं उनसे मिले डिफेन्स कालोनी डी-१३ में पहुंचा और सीधे सर्वेण्ट क्वार्टर पहुंच गया। क्योंकि अमरेश जी इससे पहले कोठियों के सर्वेण्ट क्वार्टरों में ही किराये पर रहा करता थे। पर कोई हमें मुख्य कोठी में ले गया। यार अमरेश जी ने वह कोठी खरीद ली है। क्या कोठी है यार. . .और डियर क्या लायब्रेरी बनाई है. . .लाखों रुपये की तो किताबें हैं. . .हर चीज़ 'टाप` की है. . .

- "ये सब हुआ कैसे?"

- "यार बताते हैं कि किसी डील में जार्ज मैथ्यू ने कई सौ करोड़ बनाये हैं और इस डील में अमरेश जी भी साथ थे. .अब बताओ यार मैं तो ये सब देखकर भी यक़ीन नहीं कर सकता।" वह बताते बताते शरमाने लगा।

- "जार्ज मैथ्यू की तो समाजवादी छवि है. . .ट्रेड यूनियन बैक ग्राउण्ड है. . .

- "यही तो हैरत है यार. . ."

- "हैरत करने का ज़माना चला गया प्यारे. . ."

- "अच्छा और सुनो. . .कामरेड सी.सी. कनाडा में जाकर बस गये हैं।"

- "क्या अमित के साथ वो भी गये?"

- "हां. . .कहते हैं उन्होंने जेल में माफी मांग ली थी. . .उनके भाई कनाड़ा से आये थे और उन्हें अपने साथ ले गये।"

- "ओर सुनो भुवन पंत. . .उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का पी.एस. हो गया है।"

- "वही जो सब को डांटता था और अपने को सबसे बड़ा क्रांतिकारी समझता था।"

- "हां वही।"

- "तो यार तुम्हारे सब नक्सलवादी वाले ऐसे ही निकले।"

- "नहीं यार. . ." वह बुरा मानकर बोला जो लोग काम करते हैं वो तो जंगलों में हैं. . .उन्हें क्या मतलब है काफी हाउस या शहरों से. . .ऐसे हज़ारों हैं. . .

रांची में ज़मीन खरीद-फ़रोख्त के रिकार्ड देखिए तो आपको हक़ीकत का पता चल जायेगा।" सागर साहब ने हमें एक मोटा-पोथा थमा दिया।

"ये जो आप रांची शहर देख रहे हैं यह आदिवासियों की ज़मीन पर बसा है। आज यह करोड़ों रुपये की ज़मीन है. . .लेकिन यह किस तरह, कितना पैसा देकर खरीदी गयी है, ये रिकार्ड बतायेगा. . .कहीं कहीं . . .ज़मीन खरीदने वालों के नाम नहीं दिए गये हैं. .क्योंकि वे लोग इतने असरदार. . .इतने बड़े. . .इतने सम्मानित हैं कि चोरों की सूची में उनका नाम दर्ज करने की हिम्मत यहां किसी को नहीं है। ये देखिए. ..पांच एकड़ ज़मीन. . .सौ रुपये में बिकी. . .ये देखिए दो एकड़ जमीन. . .दस रुपये में. . .ये कहानियां नहीं हैं. . .लैण्ड रिकार्ड है. . .अगर चाहें तो मूल बैनामे भी देख सकते हैं।"

हम हैरत से रिकार्ड देखने लगे। पता लगने लगा कि देश के अंदर कितने देश हैं। देश किसका है और विदेशी कौन है?

- "हमने इन आदिवासियों के साथ वही किया है जो अमरीकी में 'रेड इण्डियन्स` के साथ किया गया था। पर इस देश में कोई यह मानता नहीं क्योंकि जिनके पास यह मानने का अधिकार है उन्होंने ही यह
अपराध किया है। आज वे सब आदिवासी बंधुआ हैं जिनके पास कल तक ज़मीन थी। उन्हें यह सज़ा क्यों मिली है? क्या इसलिए कि वे हमसे ज्यादा चतुर नहीं हैं?"

रांची में हमारी मुलाकात लेबर कमिश्नर से हुई और एक और आश्चर्य का पहाड़ टूट पड़ा।

कभी-कभी महज़ इत्तफ़ाक़ से कुछ ऐसे लोग ऐसी जगह पहुंच जाते हैं कि उन्हें वहां देखकर हैरानी होती है। लेबर कमिश्नर विनय टण्डन भी ऐसे ही आदमी हैं। उन्हें देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि वे आई.ए.एस. होंगे। उलझे-उलझे से बेतरतीब बाल, लंबा पतला चेहरा, गहरी आंखें जिन पर मोटा चश्मा, बहुत मामूली सीधी-सीधी कमीज़ पैण्ट और पैरों में सस्ती किस्म की चप्पल। हमें बताया गया कि विनय टंडन 'सिंगिल` है मतलब अविवाहित हैं। अपना खाना खुद पकाते हैं और अपने कपड़े भी खुद धोते हैं। आफिस ठीक साढ़े नौ बजे आते हैं और शाम छः बजे जाते हैं। सरकारी गाड़ी सिर्फ दफ्तर लाती ले जाती है। अपने निजी आने-जाने के लिए वे रिक्शे का सहारा लेते हैं। विनय टण्डन को काफी लोग पागल कहते हैं। कुछ सिड़ी, सनकी, दीवाना कुछ घमण्डी और कुछ मूर्ख बताते हैं।

सुबह हम लोग तीन जीपों पर बंधुआ मज़दूरों का पता लगाने निकले। बहुत जल्दी ही डामर वाली सड़क ख़त्म हो गयी और कच्ची धूल उड़ाती पगडण्डियों जैसी सड़कों पर गाड़ी आ गयी। दो ही एक घंटे के अंदर पूरे चेहरे, हाथों और कपड़ों पर धूल की एक गहरी परत जम गयी। रास्ते के धचकों से कमर की ऐसी तैसी हो गयी। दरअसल रास्ते और क्षेत्र की दिक्कतों को छोड़कर हमारा काम आसान था। हम खेतिहर मज़दूरों से यह पूछते थे कि क्या

उन्हें एक जगह से काम छोड़कर दूसरी जगह काम करने की आज़ादी है? यदि उत्तर 'हां` में मिलता था तो बंधुआ मज़दूर नहीं हैं ओर नहीं में मिलता था तो है। उसके बारे दूसरे सवाल भी थे। पूरा परिवार बंधुआ है? कितने समय या कितनी पीढ़ियों से बंधुआ है। क्या पैसा मिलता है? कितना अनाज या जोतने के लिए ज़मीन मिलती है. . .वगैऱा वगैरा. . .हमें यह भी बताया गया था कि कोई
कमिश्नर 'रैंक` का आदमी कभी इस तरह के सर्वेक्षणों में नहीं जाता लेकिन विनय टण्डन के चेहरे पर ज़रा भी उकताहट कभी नज़र नहीं नहीं पड़ती थी। इन सवालों के साथ बंधुआ मज़दूरों से यह सवाल भी पूछा जाता था कि क्या साल भर खाने को अनाज हो जाता है? इसके उत्तर में आमतौर पर वे बताते थे कि दो-एक महीने जंगली पेड़ों की जड़े खाकर गुज़ारा करना पड़ता है।
मैं और सरयू बंधुआ मज़दूरों के झोपड़े नुमा घरों में जाते थे। पूरे घर में जो कुछ भी दिखाई देता था। उस सबको अगर जमा करके बाज़ार में बेचा जाये तो कोई दो रुपये का भी नहीं खरीदेगा, यह हमारी पक्की राय बनी थी। कुछ चटाइयां, चीथड़े हुए कपड़े, मिट्टी के बर्तन, मिट्टी का दिया और मुश्किल से एक टीन का कनस्तर ही दिखाई पड़ते थे। दूसरी तरफ बड़े-बड़े फार्म थे जिनमें पचास हज़ार एकड़ जमीन थी। दो हज़ार एकड़ भगवान के नाम. . .हज़ार एकड़ कुत्ते के नाम. . .इसी तरह ज़मीन पर कब्जा बनाया गया था।
एक दिन कई गांवों का चक्कर काटकर एक दिन हमारा कारवां एक कस्बे के बी.डी.ओ. कार्यालय जा रहा था। हम रास्ते में ही थे कि एक मामूली और गरीब किसान ने हाथ देकर जीप को रुकने का इशारा किया। इस जीप पर विनय टण्डन बैठे थे। उन्होंने "फौरन ड्राइवर से कहा कि जीप रोको। जीप रुकी तो पीछे वाली जीपें भी रुक गयीं और हम लोग जीप से उतर पड़े। यह गरीब किसान बता रहा था कि कस्बे के सिनेमा हाल के मालिक ने उसके लड़के के साथ मारपीट की है और थाने वाले उसकी रपट नहीं लिख रहे हैं। विनय टण्डन ने उस किसान को "फौरन अपनी जीप में बैठा लिया। ब्लाक ऑफिस में बी.डी.ओ. शायद विनय टण्डन को भी दिल्ली से आये कोई शोधकर्ता समझे। टंडन जी ने खाये पिये मोटे और ताज़े देखने में राशी लगने वाले बी.डी.ओ. से कहा कि वे इस किसान को थाने ले जायें और एफ.आई.आर. दर्ज करा दें। इसके बाद हमने वे जानकारियां लीं जो लेना थीं और चाय पानी के बाद आगे बढ़े। कुछ ही दूर गये होंगे कि एक जीप खराब हो गयी। यह तय पाया कि लौटकर ब्लाक ऑफिस चला जाये और वहां से जीप ली
जाये ताकि आगे का कार्यक्रम पूरा हो सके।
हम लौटकर ब्लाक ऑफिस की तरफ जा रहे थे तो फिर वही किसान रास्ते में मिल गया। उसने फिर हाथ दिया और टण्डन जी ने फिर जीप रुकवा दी। किसान ने बताया कि बी.डी.ओ. साहब ने थानेदार के नाम पर्चा लिख कर दिया था लेकिन थाने में फिर भी रपट नहीं लिखी गयी। टण्डन जी ने फिर उसे जीप में बैठा लिया।
बी.डी.ओ. बरात को बिदा करके सो गये थे कि उन्हें पता चला फिर सब आ गये हैं। बी.डी.ओ. को देखते ही टण्डन जी ने कहा मैंने आपको आदेश किया था कि थाने जाकर इस आदमी की एफ.आई.आर. लिखा दीजिए। आपने आदेश का पालन क्यों नहीं किया?"
आदेश शब्द सुनते ही बी.डी.ओ. के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी। जाहिर है कि इस शब्द के प्रयोग का अधिकार सरकारी अधिकारियों को ही है। वे गिड़गिड़ाने लगे. . .सर सर . . .मैंने पर्चा. . . ।
"यह तो आदेश नहीं था कि आप पर्चा लिखकर दें. . .आपने आदेश का पालन नहीं किया है और मैं चाहूं तो आपको अभी सस्पेण्ड कर सकता हूं।"
अब तो बी.डी.ओ. का भारी भरकम शरीर लोच खाकर ज़मीन से आ लगा।
आप सुबह इसके साथ थाने जाइये। रपट लिखवाइये। रहट की कापी लेकर कल ग्यारह बजे तक सर्किट हाउस

आइये. . .और मुझे दिखाइये।"

सर्किट हाउस में रोज़ रात का खाना खाने के बाद पीछे वाले बरामदे में सब बैठ जाते थे। विनय टण्डन और सागर साहब आदिवासी समस्या और बंधुआ मज़दूरी के विषय में बातचीत करते थे। हम चार पांच लोगों का काम सवाल पूछना था। विनय टण्डन सारी उम्र आदिवासी इलाकों में ही रहे हैं। उन्होंने बताया कि मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में एक समय था कि जब आदिवासियों को कपड़े के दुकानदार चारों तरफ से
नाप कर कपड़ा देते थे। लंबाई चार गज़ और चौड़ाई एक गज़ इधर से . . .एक गज़ उधर से। उन्होंने बताया कि पटवारी आदिवासी क्षेत्रों में जाने वाला सबसे बड़ा अधिकारी हुआ करता था। वह मौका मुआयना करने इस तरह जाता था कि चारपाई पर बैठ जाता था और आदिवासी चारपाई अपने कंधें पर उठाये-उठाये उसे खेत-खेत ले जाकर मौका मोआयना कराते थे। एक पटवारी रेडियो का शौकीन था और अपने साथ रेडियो भी ले जाता था। चारपाई पर वह खुद बैठता था। एक आदमी सिर पर रेडियो उठाता था। दूसरा बैटरी उठाता था। दो लोग बांस में बंधे एरियल उठाते थे और इस तरह मौका मोआयना होता था। जब कभी पटवारी का दिल चाहता था वह रेडियो बजाने लगता था। रात में पूरा गांव चंदा करके उसे अच्छा-से-अच्छा खाना खिलाता थे। लेकिन पटवारी कोई बहाना बनाकर खाना नहीं खाता था। जैसे रोटियां जल गयी हैं या मुर्गे में नमक ज्यादा हो गया है। उसके खाना न खाने से पूरा गांव डर जाया करता था और हाथ जोड़ता था कि पटवारी खाना खा लें। पटवारी के खाना न खाने से उन्हें कितना नुकसान होगा इसकी वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे। पटवारी कहता था ठीक है मैं बीस रुपये लूंगा तब खाना खाऊंगा। वे किसी न किसी तरह उसे रुपये देते थे और तब वह खाना खाता था।
सागर साहब ने बताया कि छोटा नागपुर के आदिवासी क्षेत्रों में सूद पर पैसा देना संसार का सबसे ज्यादा मुनाफा देने वाला और सुरक्षित व्यवसाय है। इतना ब्याज संसार में और कहां मिल सकता है। उन्होंने ने बताया कि एक आदिवासी ने किसी तरह सूद समेत अपना सारा कर्जा चुका दिया। महाजन ने आदिवासी से कहा कि आज तो तुम बड़े खुश होंगे कि सारा कर्जा चुका दिया है। उसने कहा- 'हां महाराज बहुत खुश हूं।` साहूकार बोला- 'तो मुंह मीठा कराओ।` वह बोला- 'महाराज अब मेरे पास एक पैसा नहीं है।` साहूकार ने कहा- 'अच्छा अगर तुम्हारे पास पैसा होता तो कितने पैसे से मुंह मीठा करा देते।` उसने कहा- 'महाराज चार आने से करा देता।` साहूकार ने कहा- 'ठीक है. . .चार आने तुम्हारे
नाम खाते में चढ़ाये लेता हूं।`
"आदिवासियों की दुनिया अलग है। इतना सहयोग है उस दुनिया में कि आप उसकी कल्पना नहीं कर सकते। उनके ऊपर हमने अपनी दुनिया लाद दी है। छल, कपट, लालच और हिंसा की दुनिया के नीचे ये पिस गये हैं अब न तो जंगल हैं जो इनके पेट भरते थे, न नदियों में पानी है जहां से इनकी सौ ज़रूरतें पूरी होती थीं। विकास के नाम पर इन्हें हमें लालची और झूठा-मक्कार बना दिया है। भाई ये तो हर तरफ से मारे गये हैं. . .अब शहर में जाकर मज़दूरी के अलावा क्या चारा है? एक ज़माने के गर्वीले आदिवासी जिन्होंने बड़े-बड़े सम्राटों के साथ युद्ध किए थे आज निरीह, कमज़ोर और दया के पात्र बन गये हैं। हमारे लोकतंत्र ने इन्हें यही दिया है।" सागर साहब ने खुलासा किया।

१४----

'द नेशन` में बंधुआ मजदूरों पर मेरी रिपोर्ट छपने लगी तो हंगामा हो गया। पहली बार इतने बड़े पैमाने पर, देश के सबसे बड़े अख़बार में तस्वीरों के साथ एक ऐसी जिंदगी पेश होने लगी कि पढ़कर लोगों के रोंगटे खड़े हो गये। आजादी मिले चौथाई सदी बीत चुकी है और हमारे देश में लोगों की हालत जानवरों से भी बदतर है। एडीटर-इन-

चीफ ने मुझे बुलाकर पीठ ठोकी। सक्सेना साहब तो मुझे अपनी खोज बता-बताकर नाम रोशन कर रहे थे। हसन साहब ने कहा- अच्छा है, देखे कब तक चलता है।" उनके इस कमेण्ट से मैं कुछ परेशान हो गया। सुप्रिया ने खासतौर पर काफी पिलाई और पूछती रही कि वहां क्या क्या देखा। नूर को भी रिपोर्ट पसंद आयीं। उसने उनकी अंग्रेजी भी ठीक की थी। इस तरह उनकी भाषा भी मंझ गयी थी। कहा जा रहा है कि पार्लियामेण्ट के अगले सत्र में मेरी इन रिपोर्ट के आधार पर विषय पर चर्चा का समय भी मांगा जायेगा।

सागर साहब बहुत खुश थे। एक दिन शाम उन्होंने घर बुलाया था। कुछ दूसरे सोशल साइंटिस्ट भी वहां थे। सागर साहब के यहां पीने पिलाने का प्रोग्राम हुआ था। ये कुछ हैरत की बात थी कि सागर साहब ने अब तक अपने रहने का तरीका बिल्कुल गांधीवादी रखा हुआ था। वे खुद एक कमरे में दरी पर बैठते थे। बाकी लोगों के लिए लकड़ी की कुर्सियां थीं। दीवारों पर कैलेण्डर वो छोड़कर कुछ नहीं था। मैं जैसे जैसे सागर साहब के बारे में जानता जा रहा था वैसे वैसे उनकी विलक्षण प्रतिभा का कायल होता जा रहा था। उनका अध्ययन बहुत ज्यादा था। उनकी समझ बहुत साफ थी। शराब में उनकी बहुत ज्यादा दिलचस्पी थी। हम लोग

अपने हिसाब से पी रहे थे लेकिन सागर साहब शराब का सागर पी रहे थे। इतना पीने के बाद भी पूरे होशोहवास में थे। वे अपने इंस्टीट्यूट के नये प्रोजेक्ट की बात कर रहे थे जिसे यू.एन.डी.पी. सपोर्ट कर रहा था। मुझे उन्होंने नयी प्रोजेक्ट साइट यानी छोटा नागपुर के एक आदिवासी गांव में चलने की भी दावत दी जिसे मैंने कुबूल कर लिया। खूब पीने के बाद सागर साहब की दावत पर हम सब एक ढाबे पर गये जहां तली मछली खाई गयी और रात करीब साढ़े ग्यारह बजे बर्खास्त हुई।

बंधुआ मज़दूरों पर मेरी रिपोर्ट अहमद ने मास्को में पढ़ी थी। जहां वह दूतावास में फर्स्ट सेक्रेटरी था। उसने फोन पर मुझे मुबारकबाद दी थी और कहा था कि यार अब मिर्जा इब्राहिम की लड़की से शादी के बाद तुम ये जर्नलिज़्म वगैरा छोड़ो और बिजनेस में आ जाओ। सोवियत यूनियन बहुत बड़ा मार्केट है मैं तुम्हें यहां बेहिसाब बिजनेस दिला सकता हूं. . .अगर चाहो तो तुम और मैं साथ-साथ भी कर सकते हैं। उस इस प्रस्ताव पर मैंने उसे गालियां दी थीं और अपनी दुनिया में चला आया था।

इन रिपोर्टों के छपने के बाद पहली बार मुझे कुछ थोड़ा-सा संतोष हुआ था। दिमाग में 'कुछ करने` के कीड़े ने मुझे कुरेदने की रफ्तार कुछ कम कर दी थी। मैं सोचता था चलो राजनीति में कुछ नहीं कर सका, चुनाव हार गया, पार्टी होल टाइमर नहीं बन सका, लेखक नहीं बन सका तो क्या मैं कुछ ऐसा कर रहा हूं जो गरीब और बेसहारा आदमी के हक में है। कुछ दोस्तों खासतौर पर नवीन जोशी और रावत ने कहा था कि अंग्रेज़ी में आमतौर पर लोग ग्रामीण क्षेत्रों पर नहीं लिखते हैं। तुमने शुरुआत की है। अगर तुम दस-पांच साल इधर ही लगे रहे तो बड़ा 'कान्ट्रीब्यूशन` माना जायेगा। मैं कान्ट्रीब्यूशन से ज्यादा अपने मन को समझाने और संतोष देने के चक्कर में था। सबसे बड़ी बात तो यही कि आपको अच्छा लगे कि जो कर रहे हैं वह 'मीनिंगफुल` है।

शकील ने बसंत विहार में कोठी खरीद ली है। हालांकि आजकल दिल्ली में उसके पास कोई काम नहीं है लेकिन यहीं रहता है। कभी-कभी पार्टी ऑफिस चला जाता है। एक दो नेताओं के घरों के चक्कर मार देता है। कहता है यार जिन नेताओं के यहां पहले घुस नहीं सकता था उनसे इस दौरान पक्का याराना हो गया है। देखो यही फायदा होता है दिल्ली में रहने का।

उसकी अक्सर शामें हमारे यहां गुजरती हैं। नूर मुझसे अक्सर पूछती रहती है कि मैं शकील जैसे लोगों के साथ कैसे 'एडजस्ट` कर लेता हूं जो मुझसे बिल्कुल अलग हैं। मैं इस बात का बहुत तसल्लीबख्श जवाब दे नहीं पाता। आदमी की कैमिस्ट्री बड़ी अजीब होती है और वह समझ में आ जायेगी, यह दावा कोई आदमी खुद अपने बारें में भी नहीं कर सकता। शकील की राजनीति से मैं सहमत नहीं हूं लेकिन इतना पुराना 'एसोसिएशन` है कि हम बाकी

बातें भूल जाते हैं। मैंने नूर को वह किस्सा सुनाया जब शकील ने मुझे पहली बार शराब पिलाई थी।
शकील के बेटे कमाल का दाखला तो किसी तरह दिल्ली पब्लिक स्कूल में हो गया है लेकिन उसका दिल दिल्ली में बिल्कुल नहीं लगता। मौका मिलते ही घर भाग जाता है। वैसे भी उसके रंग-ढंग बड़े लोगों के बेटों जैसे हैं। शकील के पास पैसा है और वह बेटे का दिल्ली में पढ़ाने के चक्कर में उसकी ख्वाहेशात पूरी करता रहता है।
दिल्ली से रांची वाली "लाइट पर सागर साहब ने मुझे गलहौटी प्रोजेक्ट के बारे में बताना शुरू किया था। ख़ासा दिलचस्प प्रोजेक्ट लग रहा था। उन्होंने बताया यू.एन.डी.पी. वाले किसी आदिवासी क्षेत्र में विकास का एक मॉडल प्रोजेक्ट चलाना चाहते थे। इस सिलसिले में उन्होंने हमारे इंस्टीट्यूट से सम्पर्क किया। मैं मिस्टर ब्लेक से मिलने गया। मैंने साफ कह दिया कि पैसे से डिवलपमेंट नहीं होता। मतलब नालियां बना देना, हैण्डपम्प लगा देना, कर्ज दे देना, खुशहाली की गारंटी दे देना विकास नहीं है। इस पर ब्लैक चौंके और पूछा फिर डिवलपमेंट क्या है? मैंने कहा लोगों को बदलना, लोगों को जागरूक बनाना, उनके अंदर बदलाव की चेतना पैदा करना, उनके अंदर संगठन और संयोजन की शक्तियों का विकास करना, उन्हें सामूहिकता से जोड़ना. . .ये विकास है यानी विकास की पहली शर्त है।"
फिर?
"बड़ी बहस होती रही। मैंने उनसे कहा कि प्रोजेक्ट को मैं अपने तौर पर, अपनी परिकल्पना के आधार पर करूंगा। पहले तो उन्होंने सोचने का वक्त मांगा और मुझसे एक नोट बनाकर देने को कहा। मैंने नोट दे दिया और भूल गया। सोचा ये लोग जो खाँचों में सोचते हैं, जो सिर्फ आँकड़ों में बात करते हैं उनकी समझ में यह सब नहीं आयेगी।"
"इसके बाद?"
"तीन महीने बाद उनका फोन आया कि मैं जाकर मिलूं। मैं गया और बताया गया कि प्रोजेक्ट मंजूर हो गया है और प्रोजेक्ट में हमें दस लाख रुपया दिया गया है। फिर वही सवाल सामने आ गया। मैंने कहा, पैसे से विकास नहीं हो सकता। अगर हो सकता होता तो भारत सरकार कर चुकी होती।"
"क्या भारत सरकार विकास करना चाहती हैं?"
"ये और भी बुनियादी सवाल है. . .देखो हम कहते हैं कि हमारे देश की जाति व्यवस्था में एक सुपर जाति पैदा हो गयी है जो हर जाति से ऊंची है।"
"मैं हंसने लगा, ये कौन सी जाति है सागर साहब?"
"इस जाति को कहते हैं आई.ए.एस." मैं ओर जोर से हंसने लगा।
"क्यों क्या मैं ग़लत हूं?"
"आप सौ फीसदी सच कह रहे हैं।"
"पूरे देश पर यह जाति शासन कर रही है जैसे पहले मान लो ब्राह्मण किया करते थे।"
"हर मर्ज की यही दवा है।"
"इनका जाल इतना भयानक है कि इन्होंने पूरे देश को जकड़ रखा है। अरे भाई कहो, कलक्टर का काम लगान वसूली है, प्रशासन है, पर ये जाति विकास पर भी कब्जा करके बैठ गयी। बड़े से बड़े और तकनीकी से भी अधिक तकनीकी संस्थानों पर छा गयी। कोई भी कारपोरेशन ले लो. . . यही लोग जमे बैठे हैं. . .और ये हैं बुनियादी तौर 'नॉन कमिटेड` लोग। इनका धर्म स्वयं अपना और अपनी जाति का भला करने के अलावा कुछ नहीं है।"
"और ये करप्ट भी है. . .शायद पहले न होते होंगे. . .अब।"
"नहीं, 'करप्शन` तो नौकरशाही का बुनियादी कैरेक्टर है। फ़र्क़ सिर्फ इतना आया है कि अब ये कायदा, कानून,

शर्म-हया, क्षेत्र प्रांत छोड़कर खुल्लम खुल्ला भ्रष्ट हो गये हैं. . .और इन्हें राजनेताओं का संरक्षण भी मिल रहा है। वे भी इनके साथ शामिल है. . .अब ऐसे लोग क्या विकास करेंगे?"

"लेकिन इनमें कुछ अच्छे भी होते हैं।" मैंने कहा।

"अरे अच्छे तो कुछ डाकू भी होते हैं. . .पर क्या आप डकैती को अच्छा कहेंगे?" सागर साहब ने हंसकर कहा।

रांची पहुंचकर सागर साहब ने मेरे साथ कुछ ऐसा किया जिसकी उम्मीद नहीं थी और मैं सकते में आ गया। हम दोनों को साथ-साथ गलहौटी गांव जाना था। वही प्रोजेक्ट चल रहा था। सागर साहब ने मुझसे कहा कि उन्हें तो किसी ज़रूरी काम से पलामू जाना है। वे गलहौटी नहीं जा पायेंगे। मैं बस पकड़कर पलेरा चला जाऊं जो मेन हाई वे पर एक छोटा-सा बस स्टाप है। वहां मुझे गलहौटी जाने वाले लोग मिल जायेंगे। गलहौटी पलेरा से बारह किलोमीटर दूर है। ये पैदल का रास्ता है। वहां प्रोजेक्ट का आदमी रविशंकर मिल जायेगा। उसे मेरी विज़िट के बारे में मालूम है। अब मैं बड़ा चक्कर में फंसा। जाहिर है गलहौटी अकेले जाना आसान न होगा। अगर नहीं गया तो यहां तक आना बेकार जायेगा। सागर साहब किसी भी तरह मेरे साथ गलहौटी नहीं जा सकते थे क्योंकि उन्हें पलामू जाना था।

ख़ैर और कुछ हो या न हो, हमने रात खूब जमकर पी। बहुत अच्छी बातचीत हुई और सुबह-सुबह सागर साहब चले गये और मैं अनिश्चय के सागर में डूब गया।

मैं परेला में उतरा तो देखा दो चार छोटी-छोटी लकड़ी की गुमटियों के अलावा और कुछ नहीं है। शाम का चार बज रहा था। बस मुसाफ़िरों को उतारकर आगे बढ़ गयी। मैं एक चाय के खोखे पर आया और पूछा कि गलहौटी जाने वाला कोई है? चाय वाले ने इधर-उधर देखा और बोला, 'नहीं अभी तो नहीं है।`

मैंने यह भी देखा कि चाय वाला कुछ अपनी दुकान बढ़ाने के मूड में है। वह बर्तनों को अंदर रख रहा था।

मैंने उसे एक चाय बनाने को कहा तो वह चाय बनाने लगा।

"अब यहां बस कितने बजे आयेगी?" मैंने पूछा।

"कल सुबह आठ बजे।"

"उससे पहले यहां कोई बस नहीं आयेगी।"

"नहीं", वह चाय बनाता रहा।

मेरे होशो हवास गुम हो गये। रात कहां रहूंगा? ख़ैर अब तो फंस गया था। गलहौटी मैं अकेले पहुंच नहीं सकता था क्योंकि वहां तक जाने के लिए जो पगडण्डी थी वह छितरे पहाड़ों में जाकर खो जाती थी।

चाय पी ही रहा था कि एक आदमी आता दिखाई दिया। चाय वाले ने कहा, 'ये गलहौटी के पास वाले गांव में जायेगा। इससे बात कर लो।`

मैं झपटकर आगे बढ़ा। सफेद कमीज़, पजामे में यह आदमी कहीं स्कूल मास्टर था और अपने गांव जा रहा था। वह मुझे गलहौटी पहुंचा देने पर तैयार हो गया।

पगडण्डी पर चलते हुए उसने मुझसे पूछा, आप तेज़ चलते हैं या धीरे?

मैं क्यों कहता कि धीमे चलता हूं? मैंने कहा, 'तेज़ चलता हूं।` मेरे यह कहते ही वह सरपट रफ्तार से चलने लगा। मैंने भी अपनी रफ्तार तेज़ कर दी लेकिन पन्द्रह मिनट के अंदर ही अंदर लग गया कि मैं उसकी तरह सरपट नहीं चल सकता। मजबूर होकर कहना पड़ा कि 'भाई जी थोड़ा धीमे चलिए।` उसने रफ्तार कम कर दी।

सूरज डूब गया था। पहाड़ियाँ धुंधली छाया में बदल गयी थी। पगडण्डी भी ठीक से नहीं दिखाई पड़ रही थी। अचानक स्कूल मास्टर रुक गया और ज़ोर ज़ोर से कुछ सूँघने लगा।

"क्या सूंघ रहे हैं," मैंने पूछा।

"आसपास कहीं जंगली हाथी का झुण्ड है।" वह बहुत सरलता से बोला और मेरे छक्के छुट गये। यहां तो झाड़ियां छोड़कर ऊंचे पेड़ भी
न थे जिन पर चढ़कर जान बचाई जा सकती।
"अब क्या करें।"
"चले जायेंगे।" वह आराम से बोला।
कुछ देर हम खड़े रहे। वह हवा में सूँघता रहा फिर बोला, 'चले गये।` हम लोग आगे बढ़ने लगे। मैं इतना डर गया था कि उससे यह भी न पूछ सका कि उसे सूँघने से कैसे पता चल गया था कि हाथियों के झुण्ड चले गये।
रात नौ बजे के करीब हम गलहौटी पहुंचे। स्कूल टीचर मुझे सीधा प्रोजेक्ट के ऑफिस ले गया जहां रविशंकर सो चुके थे। वे उठे और उन्होंने मुझसे पहला सवाल यह पूछा कि क्या मैं कम्बल लेकर आया हूं? मेरे यह कहने पर कि मुझे नहीं बताया गया था कि कम्बल लेकर जाना और मैं नहीं लाया, वे परेशान से हो गये। बोले, 'चारपाई तो है लेकिन कम्बल नहीं है। रात में सर्दी बढ़ जाती है।`
हम दोनों एक ही चारपाई पर लेटे। रविशंकर ने मेरे सिरहाने की तरफ पैर कर लिए और मैंने भी यही किया। एक कम्बल से हमने अपने को ढंक लिया। सर्दी बढ़ चुकी थी। तेरह किलोमीटर पैदल चलने और मानसिक कलाबाज़ियों की वजह से गहरी नींद आ गयी।
अचानक आधी रात के करीब आंख खुली तो देखा रविशंकर चारपाई से कुछ दूर चूल्हे में आग जलाये ताप रहे हैं। पूछने पर बताने लगे कि आपने सोते में कम्बल खींच लिया था। हम खुल गये थे। सर्दी लगने लगी। हमने सोचा कि हम भी कम्बल खींचेंगे तो आप को सर्दी लगने लगेगी। आप उठ जायेंगे। सो हमने आग जला ली।
मुझे अपने ऊपर शर्म आयी। मैं उठ बैठा। आधी रात हमने चूल्हे के सामने बैठकर आग तापकर गुजार दी।
छः बजे के करीब मैंने उनसे पूछा, "भाई रविशंकर जी यहां चाय-वाय भी कुछ बनती है?"
"बनाते तो हैं. . .पर लकड़ी नहीं है। रात लकड़ी जला डाली।"
"फिर क्या होगा?"
"लकड़ी बीनना पड़ेगी. . .बाहर ही मिल जायेगी।" वह उठने लगा।
"नहीं आप बैठो मैं बीनकर लाता हूं।"
लकड़ियां बीनकर लाया और चाय का पानी चढ़ा दिया गया। ज़िंदगी में मुझे याद नहीं कि इससे पहले मैनें पानी कभी इतनी देर में उबलते देखा हो। आध घण्टा हो गया। पानी उबलने का नाम ही नहीं ले रहा था और लकड़ियां बीनकर लानी पड़ी। अल्लाह अल्लाह करके पानी उबला, चाय बनी।
चाय पीते हुए मैंने कहा, "भाई रविशंकर जी यहां एक स्टोव तो रखा जा सकता है।" वह हंसने लगा। मैं हैरत से उसे देखने लगा।
"सागर साहब स्टोव के खिलाफ हैं।"
"यार बेचारे स्टोव ने सागर साहब का ऐसा क्या बिगाड़ा है।"
वह हंसने लगा "नहीं, सागर साहब कहते हैं यहाँ वह वैसी कोई चीज़ नहीं होना चाहिए जो आदिवासियों के घरों में नहीं होती। मुझे यहां घड़ी भी लगाने की अनुमति नहीं है।" वह खाली कलाइयां दिखाकर बोला।
"आप यहां करते क्या हैं?"
"हम कुछ नहीं करते।"
"आपके कुछ करने के भी सागर साहब खिलाफ हैं क्या?" वह हंसते हुए बोला "ठीक कहा आपने, सागर साहब कहते हैं। हम कौन होते हैं इन आदिवासियों को यह बताने वाले कि यह करो यह न करो।"

"तो श्रीमान जी फिर आप यहां हैं ही क्यों? अपने घर जाइये?" मैंने कुछ व्यंग्य और कुछ प्यार से कहा।
वह खिलखिलाकर हंस पड़ा।
"मेरा काम यह देखना है गांव के लोग सामूहिकता की भावना से प्रेरित होकर क्या कर रहे हैं और जो कर रहे हैं उसमें उन्हें सफलता मिले. . .कोई अड़चन न आये।"
रविशंकर की उम्र मुश्किल से बाइस- तेइस साल है। पटना विश्वविद्यालय से इसी साल सोशलवर्क में एम.ए. किया है और इस प्रोजेक्ट में लग गया है। छ: महीने से वह यहां लगातार रह रहा है। सागर
साहब आते जाते रहते हैं। रविशंकर ने मुझे विस्तार से छ: महीने की कहानी सुनाई। आमतौर पर लोग इस इलाके के आदिवासी गांवों में पटवारी या पुलिस के सिपाही के साथ आते हैं, अपना काम करते हैं और चले जाते हैं। लेकिन सागर साहब यह चाहते थे कि हमें सरकारी आदमी न समझा जाये। इसलिए हम लोग यहां अकेले ही आये थे। शुरु में न तो कोई हमारे पास आता था, न हमसे बात करता था। पहली रात तो हमने एक पेड़ के नीचे गुजारी थी। उनके बाद कलिया ने वह खपरैल दे दी थी जहां उसके जानवर भी बंधते हैं।"
"बहुत दिलचस्प कहानी है।"
"विश्वास जमाना बहुत टेढ़ी खीर है। हमने धीरे-धीरे विश्वास जमाया। कभी चूके भी, कभी गलती भी हुई लेकिन. . ."
"विश्वास कैसे जमा?"
"ब्लॉक ऑफिस के काम, पटवारी के काम. . .इनको एक तरह से सहायता सहयोग देना और बदले में कुछ न लेना. . .ऐसा इन्होंने कभी देखा नहीं है. . .पहले इन्हें हैरत होती थी कि ये कौन लोग हैं? फिर समझने लगे. . .ये जंगल से जड़ी बूटियाँ, झरबेरी के बेर, आंवला और दूसरी चीज़ें जमा करके बाज़ार में बेचा करते थे. . .हमारे सुझाव पर यह काम अब पूरा गांव मिलकर करता है और आमदनी बढ़ गयी। गांव का एक अपना फण्ड बनाया गया है जिसमें दो-दो चार रुपये जमा होते हैं . . .अभी पिछले महीने पूरे गांव ने मिलकर तीन कुएं खोदे हैं. . .मतलब पूरे गांव के जवान लोग लग गये थे। दो-दो तीन-तीन दिन में एक कुआं खुद गया था।"
मैं चार दिन गलहौटी में रहा और पूरी रिपोर्ट तैयार की। इस रिपोर्ट ने भी राष्ट्रीय स्तर का तहलका मचा दिया। योजना आयोग में विशेष बैठक बुलाई गयी। इसके बाद मैं मध्य प्रदेश के उन आदिवासी क्षेत्रों में गया जहां उद्योग धंधों के कारण आदिवासी उजड़ रहे थे। कारखानों का दूषित पानी नदी की मछलियाँ मार रहा था और गंदा पानी पीने से आदिवासियों में तरह-तरह की नयी बीमारियां फैल रही थी। आदिवासियों की हज़ारों एकड़ जमीन पर उद्योग लग रहे थे, बांध बन रहे थे और
जाहिर था कि वहां पैदा होने वाली बिजली उनके लिए नहीं थी। ये रिपोर्ट भी 'द नेशन` में छपी।
एक दिन सक्सेना साहब ने बुलाया कहा कि अब अखबार आदिवासी अंचलों पर उतना बल नहीं देना चाहता क्योंकि यह संवेदनशील मामला है। मुझे लगा मैं पहाड़ पर से गिर गया हूं। मैंने तो आगे पांच साल तक के लिए अपने 'टारगेट` तय कर लिए थे। मैं सक्सेना साहब से बहस क्या करता। एक अजीब तरह की खीज, अपमानित होने का एहसास, गुस्सा और द्वेष की भावना मेरे अंदर भर गयी। हसन साहब ने कहा, ये तुमने 'इण्डस्ट्री` को 'टारगेट` क्यों किया? तुम्हें नहीं मालूम नेशनल चैम्बर ऑफ कामर्स ने तुम्हारी रिपोर्टों पर एडीटर-इन-चीफ को बड़ा सख्त खत लिखा है।
इस पूरे प्रकरण के बारे में शकील को पता चला था तो उसकी आंखों में चमक आ गयी थी। उसे लगा था कि वह मुझे जो कुछ समझाया करता था उसका निचोड़ सामने आ गया है। मेरे घर में ही टेरिस पर विस्की पीते हुए उसने कहा, यार साजिद तुम इन लोगों से लड़ नहीं सकते। तुम सत्ता से टक्कर ले नहीं सकते। तुम्हारे अख़बार का

मालिक भी इण्डस्ट्रियलिस्ट है। उसकी भी उसी इलाके के पेपर फैक्ट्री है जिसे प्रदेश सरकार ने बीस हज़ार एकड़ बॉस के जंगल सौ रुपये प्रति एकड़ की दर से नब्बे साल के लिए दे दिये हैं. . .अब बताओ. . .और बिजली ये तो जान है यार इण्डस्ट्री की. . .बड़े बांध नहीं बनेंगे तो बिजली कहां से आयेगी?. . .देखा इन लोगों ने अपना हर मामला जमाया हुआ है. . भई सरकारों से इनके क्या संबंध हैं, तुम्हें पता है। अखबार इनके हैं। पार्लियामेंट में इनके कितने लोग हैं तुम जानते हो। सर्विसेज़ के लोग तो इनके पहले से ही गुलाम हैं. . .कला और संस्कृति पर इनका कब्जा है।"

"तुम्हारा मतलब है कुछ नहीं हो सकता।"

"यार फिर वही मुर्गे की एक टांग. . .तुम्हें किस चीज़ की कमी है. . ."

"है. . .कमी है।"

"ये तुम्हारे दिमाग का फितूर है।" वह हंसने लगा।

मेरे अंदर गुस्सा और बढ़ने लगा। इसलिए कि वह जो कुछ कह रहा है सच नहीं है।

>>पीछे>> >>आगे>>

शीर्ष पर जाएँ

गरजत-बरसत

असगर वजाहत

अब्बा और अम्मां नहीं रहे। पहले खाला गुजरी उसके एक साल बाद खालू ने भी जामे अजल पिया। मतलू मंज़िल में अब कोई नहीं रहता। खाना पकाने वाली बुआ का बड़ा लड़का बाहरी कमरे में रहता है। मल्लू मंजिल का टीन का फाटक बुरी तरह जंग खा गया है। ऊपर बेगुन बेलिया की जो लता लगी थी वह अब तक हरी है। मौसम में फूलती है। मैं हर साल मल्लू मंज़िल की देखरेख पर हज़ारों रुपया खर्च करता हूं। यही वजह है कि दादा अब्बा के ज़माने की इमारत अब कि टिकी हुई है। साल दो साल कभी तीन-चार साल बाद घर जाना हो जाता है। मल्लू मंज़िल आबाद होती है। 'द नेशन` जैसे अखबार के ज्वाइंट एडीटर का उस छोटे से शहर में आना अपने आप ही खबर बन जाती है। स्थानीय अखबारों के सम्पादक, बड़े अखबारों के रिपोर्टर और कभी-कभी हमारे अखबार का लखनऊ संवाददाता आ जाते हैं। पत्रकारिता पर बेबाक बहसें होती हैं।

कोई सात-आठ साले आता था तो स्टेशन पर पत्रकार माथुर मिला करते थे। वे उस ज़माने में किस अखबार में काम करते थे, मुझे याद नहीं। हो सकता है या शायद ऐसा था कि किसी अखबार से उनका कोई संबंध न हो और पत्रकार हो गये हों। बहरहाल माथुर मुझे स्टेशन पर रिसीव करते थे। चाय पिलाते थे। उस दौरान आसपास से गुजरने वाले किसी सिपाही को बड़े अधिकार के साथ आवाज़ देकर बुलाते थे और कहते थे, सुनो जी दरोगा जी से कह देता दिल्ली 'द नेशन` के ज्वाइंट एडीटर साहब आ गये हैं। इंतिज़ाम कर लें और सुनो सामने पान वाले की दुकान से दो पैकेट विल्स फिल्टर और चार जोड़े एक सौ बीस के बनवा लेना।

ज़ाहिर है सिपाही पान वाले को पैसे तो न देता होगा। वह दरोगा जी का नाम लेता होगा जैसे माथुर जी मेरा हवाला देते हैं। उन दिनों माथुर जी की ये सब चालाकियां मैं टाल दिया करता था यह सिर्फ अनुभव प्राप्त करने के लिए कुछ नहीं कहता था। कुछ अंदाज़ा था कि मेरे एक बार आने से माथुर के दो चार महीने ठीक गुज़र जाते होंगे।

मुझसे मिलने शहर के अदीब-शायर आ जाते हैं कभी-कभी कुछ पुराने लोग और कभी अब्बा के जानने वाले भी आते हैं। मेरे ज़माने के पार्टी वाले लोगों में करीब-करीब सब हैं। मिश्रा जी काफी लटक गये हैं। मेरे ख्याल से सत्तर से ऊपर है पर अभी भी पार्टी के जिला सैक्रेट्री है। कामरेड बली सिंह पूरी तरह मछली के व्यापार में लग गये हैं।

पिछले सालों जब मैं गया तो मिलने वालों में युवा लड़कों का एक गुट जुड़ गया है जो शहर में शैक्षणिक गतिविधियां करते रहते हैं। कस्बों से शहर आये लोग भी बढ़ गये हैं और उनमें से कुछ आ जाते हैं। मल्लू मंज़िल कुछ दिन के लिए गुलज़ार हो जाती है।

शहर की हालत वही है। उतना ही गंदा, उतना ही उपेक्षित, उतना ही भ्रष्टाचार, उतना ही उत्पीड़न और वही अदालतें जहां मजिस्ट्रेट महीनों नहीं बैठते, अस्पताल जहां डॉक्टर नहीं बैठते, सरकारी दफ्तर जहां बाबू नहीं बैठते।

नूर और उसके अब्बा, अम्मां की यही राय थी कि बच्चा लंदन के हैवेट अस्पताल में पैदा होना चाहिए। मैं जानता था कि मामला दिल्ली के किसी अस्पताल में कुछ गड़बड़ हो गया तो बात मेरे ऊपर आ जायेगी। मैंने नूर को लंदन भेज दिया था। वहां उसने हीरा को जन्म दिया था। हीरा का नाम उसके दादा ने रखा था। जाहिर है हीरे जवाहेरात का व्यापारी और क्या नाम रख सकता था। नाम मुझे इसलिए पसंद आया कि हिंदू मुसलमान नामों के खाँचे से बाहर का नाम है। बहरहाल हीरा के पैदा होने के बाद कुछ महीने नूर वहीं रही। फिर दिल्ली आ गयी। उस जमाने में मल्लू मंजिल आबाद थी। मैं नूर और हीरा को लेकर घर गया था। अब्बा को हीरा का नाम कुछ पसंद नहीं आया था। उन्होंने कुरान से उसका नाम

सज्जाद निकाला था और अम्मां अब्बा जब तक जिंदा रहे हीरा को सज्जाद के नाम से पुकारते थे।

गर्मियां शुरू होने से पहले नूर हीरा को लेकर लंदन चली जाती थी। मिर्जा साहब ने अपने नवासे के लिए लंदन से बाहर एसेक्स काउण्टी के एक गांव में किसी लार्ड का महल खरीद लिया था। इस महल का नाम उन्होंने 'हीरा पैलेस` रखा था। ये सब लोग गर्मियों में 'हीरा पैलेस` चले जाते थे। मैं भी एक आद हफ्ते के लिए वहां जाया करता था। हीरा पैलेस बीस एकड़ के कम्पाउण्ड में एक दो सौ साल पुराना महल है जिसमें चार बड़े हॉल, एक बड़ा डाइनिंग हाल, बिलियर्ड रूम, स्मोकिंग रूम, काफी लाउंज, पिक्चर गैलरी और बीस बेडरूम हैं। मुझे यहां ठहरना अटपटा लगता था। क्योंकि हमेशा ये एहसास होता रहता था कि किसी म्यूजियम में रह रहे हैं। मिर्जा साहब को यह पैलेस इस शर्त पर बेचा गया था कि वहां रखी कोई चीज़ हटायेंगे नहीं और उसमें कोई बड़ा परिवर्तन नहीं करा सकते। इसलिए वहां के बाथरूमों में रखे टोंटी वाले लोटों के अलावा कुछ ऐसा नहीं था जिसका मिर्जा साहब से कोई ताल्लुक हो।

पैलेस की 'विजिटर्स बुक` भी उतनी ही पुरानी थी जितना पुराना पैलेस था। मोटे चमड़े की लाल जिल्द चढ़ी इस किताब में ब्रिटेन के तीन प्रधानमंत्रियों के अलावा बर्टेंड रसेल के भी हस्ताक्षर और रिमार्क्स लिखे थे। इस किताब में जब मुझसे कुछ लिखने और दस्तख़त करने को कहा गया तो मुझे बड़ा मज़ा आया। लगा कि मेरे हस्ताक्षर इस रजिस्टर का मज़ाक उड़ा देंगे।

बुढ़ापे में मिर्जा इस्माइल लार्ड का खिताब हासिल करना चाहते थे और उसके लिए ज़रूरी था कि वो प्रभावशाली अंग्रेजों को एक शानदार महल में बुलाकर इंटरटेन करें। ऐसा करने के लिए ही उन्होंने यह पैलेस खरीदा था। एसेक्स काउण्टी के शेरे गांव के बाहर एक पहाड़ चोटी पर बना यह महल काफी दूर से जंगल में खिले फूल-सा लगता था।

एक बार गर्मियों में नूर ने हीरा का नाम लंदन के किसी मशहूर किण्डरगार्डेन स्कूल में लिखा दिया। मैं समझ गया कि अब वे दोनों वापस नहीं आयेंगे। लेकिन इससे बड़ी चिंता यह थी कि मैं हीरा को कुछ

नहीं सिखा पाऊंगा। मैं यह चाहता था कि वह अवधी लोक गीतों पर सिर धुन सके जैसा मैं करता हूं। वह 'मीर` और 'ग़ालिब` की शायरी से ज़िंदगी का मतलब समझे। लेकिन अब वह सब ख्व़ाब हो गया था। लेकिन मैं नूर के ख्वाब को चूर-चूर नहीं करना चाहता था। लेकिन पता नहीं कैसे नूर ये समझ गयी थी। वह हीरा को हिंदी पढ़ाती थी। पूरा घर उससे हिंदुस्तानी में बातचीत करता था। नूर और हीरा जाड़ों में पन्द्रह दिन के लिए दिल्ली आते थे और मैं उन दिनों छुट्टी ले लेता था। हम खूब घूमते थे और मैं हीरा के साथ ज्यादा से ज्यादा वक्त गुज़ारता था। स्कूल पूरा करने के बाद हीरा अब बी.ए. कर रहा है। उसे समाजशास्त्र में बेहद दिलचस्पी है और इस बारे में हमारी लंबी बातचीत होती रहती है।

नूर के लंदन चले जाने के बाद मैं सुप्रिया के नजदीक आता गया। बंगाली और उड़िया मां-बाप की बेटी सुप्रिया के चेहरे की सुंदरता में दुख की कितनी बड़ी भूमिका है यह किसी से छिपा नहीं रह सकता। उसकी बड़ी-बड़ी ठहरी हुई आंखों से अगर उदासी का भाव गायब हो जाये तो शायद उनकी सुंदरता आधी रह जायेगी। उसमें हाव-भाव में दुख की छाया में तपे हुए लगते हैं। सुप्रिया के दोनों भाई कभी नहीं मिले और यह मान लिया गया कि पुलिस ने जिस बर्बरता से नक्सलवादी आंदोलन को कुचला था, वे उसी में मारे गये हैं। उनका कहीं कोई रिकार्ड न था। कहीं किसी आसतीन पर खून का निशान न था लेकिन दो जवान और समझदार लड़के मारे जा चुके थे।

सुप्रिया की मां उसके साथ रहती है। पिताजी कलकत्ता में ही हैं। उसकी मां को शायद मेरे और सुप्रिया के संबंधों के बारे में पता है लेकिन वह कुछ नहीं बोलती। दरअसल पूरे जीवन का संघर्ष और दो बेटों के दु:ख ने उसे यह मानने पर मजबूर कर दिया है कि कहीं से सुख की अगर कोई परछाई भी आती हो तो उसे सहेज लो. . .पता नहीं कल क्या हो। सुप्रिया और मेरे संबंध गहरे होते चले गये। मैंने सोचा नूर को बता दूं. . .फिर सोचा नूर को पता होगा। वह जानती होगी मैं और नूर साल में दो बार मिलते हैं और उसके बाद साल के दस महीने हम अलग रहते हैं तो जाहिर है. . .

सुप्रिया का संबंध चूंकि राजनैतिक परिवार से है इसलिए उससे मैं कुछ ऐसी बातें भी कर सकता हूं जो नूर से नहीं हो सकती। 'द नेशन` में जब मेरे 'पर कतरे` जाते हैं तो सुप्रिया के संग ही शांति मिलती है। मेरे अंदर उठने वाले तूफ़ानों को दुख से भरा-पूरा उसका व्यक्तित्व शांत कर देता है।

मेरे दो बहुत प्राचीन मित्रों अहमद और शकील के मुकाबले के वे अच्छी तरह समझती है कि मेरे सपने किस तरह छोटे होते जा रहे हैं ओर सपनों का लगातार छोटे होता जाना कैसे मेरे अंदर विराट खालीपन पैदा कर रहा है जो ऊलजलूल हरकतें करने से भी नहीं मरता।

कभी-कभी अपने अर्थहीन होने का दौरा पड़ जाता है। लगता है मेरा होने या न होने का कोई मतलब नहीं है। मैं पूरी तरह 'मीनिंगलेस` हूं। मेरे बस का कुछ नहीं है। मैं पचास साल का हो गया हूं लेकिन कुछ न कर सका और जब जिंदगी कितनी बची है। मेरा 'बेस्ट` जा चुका है। कहां गया, क्या किया, इसका कोई हिसाब नहीं है।

मैं ऑफिस से चुपचाप निकला था। लिफ्ट न लेकर पीछे वाली सीढ़ियाँ ली थीं और इमारत के बाहर निकल आया था। ऐसे मौकों पर मैं सोचता हूं काश मेरा चेहरा बदल जाये और कोई मुझे पहचान सके कि मैं कौन हूं। मैं भी

अपने को न पहचान सकूँ और एक 'नॉन एनटिटी` की तरह अपने को आदमियों के समुद्र में डुबो दूं।

पीछे से घूमकर मुख्य सड़क पर आ गया और स्कूटर रिक्शा पकड़कर जामा मस्जिद के इलाके पहुंच गया। भीड़-भाड़, गंदगी, जहालत, गरीबी, अराजकता, अव्यवस्था की यहां कोई सीमा नहीं है। यहां अपने आपको खो देना जितना सहज है उतना शायद और कहीं नहीं हो सकता। पेड़ की छाया में रिक्शेवाले अपने रिक्शों की सीटों पर इस तरह आराम करते हैं जैसे आरामदेह बेडरूम में लेटे हों। आवाजें, शोर, गालियां, धक्का, मछली बाजार, मुर्गा बाजार, उर्दू बाजार, आदमी बाजार और हर गली का अपना नाम लेकिन कोई पहचान नहीं। मैं बेमकसद तंग गलियों में घूमता रहा। जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठा रहा। नीचे उतरकर ये जानते हुए सीख के कबाब खा लिए कि पेट खराब हो जायेगा

और सुप्रिया को अच्छा नहीं लगेगा। रिक्शा लिया और बल्ली मारान आ गया। गली कासिमजान से निकला तो हौजकाज़ी पहुंच गया बेमकसद।

रात ग्यारह बजे स्कूटर रिक्शा करके मैं ऑफिस के इमारत के सामने अपनी ऑफीशियल गाड़ी के सामने उतरा। मैं बीड़ी पी रहा था। मुझे यकीन था कि ऑफिस के ड्राइवर और मेरा ड्राइवर रतन मुझे देख लेंगे। पागल समझेंगे। ठीक है, मुझे पागल की समझना चाहिए।

रतन ने मुझे देखा। मैं बीड़ी पीता हुआ उसकी तरफ बढ़ा। "सर, आप चलेंगे", उसने पूछा।

"हां चलो", मैं गाड़ी में बैठ गया।

ये ऑफिस वाले मुझे अधपागल, सिड़ी सनकी, दीवाना, मजनूं समझते हैं। ये अच्छा है।

एक दिन एडीटर-इन-चीफ से किसी बात पर कहा-सुनी हो गयी। मुझे गुस्सा आ गया। मैं वापस आया और अपने चैम्बर के बाहर पड़े चपरासी के मोढ़े पर बैठ गया। सब जमा हो गये। कुछ मुस्कुरा रहे थे। कुछ मुझे अफसोस से देख रहे थे। चपरासी परेशान खड़ा था। जब काफी लोग आ गये तो मैंने कहा, "मैं यहां इसलिए बैठा हूं कि इस अख़बार में मेरी वही हैसियत है जो मुरारीलाल की है जो इस मोढ़े पर बैठता है।"

यार लोगों ने ये बात भी एडीटर साहब को नमक-मिर्च लगाकर बता दी।

गुस्से में आकर एडीटर-एन-चीफ ने मेरा ट्रांसफर मीडिया ट्रेनिंग सेण्टर में कर दिया था। ऑफिस आर्डर निकल आया था। मैंने ये आर्डर लेने से इंकार कर दिया था। मेरा कहना था कि मैं पत्रकार हूं और मुझसे पत्रकारिता पढ़ने या अखबार का ट्रेनिंग सेण्टर संचालित करने का काम नहीं लिया जा सकता। मैनेजमेंट कहता था, नहीं, ऐसा हो सकता है। मैंने तीन महीने की छुट्टी ले ली थी और सुप्रिया के साथ पश्चिम बंगाल घूमने चला गया था। हम दोनों ने बहुत विस्तार और शांति से बंगाल का एक-एक जिला देखा था। तस्वीरें खींची थी। मैं खुश था कि चलो इस बहाने कुछ तो हुआ।

शकील उन दिनों उपविदेश राज्यमंत्री था। मेरे मना करने के बावजूद वह 'द नेशन` के मालिक सीताराम बड़जातिया से मिला था और मामले को रफ़ा-दफ़ा करा दिया था। मैंने तो ये सोच लिया था कि 'द नेशन` को

गुडबॉय कहा जा सकता है क्योंकि वैसे भी मैं वहां तकरीबन कुछ नहीं करता हूं। कभी साल छ: महीने में कुछ लिख कर देता हूं तो एडीटर छापता नहीं क्योंकि वह अखबार की पॉलिसी के खिलाफ होता है।

१६

रात के दो बजे फोन की घण्टी घनघना उठी। पता नहीं क्या हो गया है। सुप्रिया भी जाग गयी। मैंने फोन उठा लिया, दूसरी तरफ चीफ रिपोर्टर खरे था, "सर! मंत्री पुत्रों द्वारा फुटपाथ पर सोये लोगों को कुचल दिए जाने की एक और न्यूज़ है। मैं दरियागंज थाने से बोल रहा हूं।"

किस मंत्री का लड़का है?"

"सर, शकील अहमद अंसारी के लड़के कमाल अहमद अंसारी।"

"ओहो. . ." मैं और कुछ न बोल सका।

"सर. . .ऑफिस में अमिताभ है. . .उससे कह दीजिए सर पेज वन पर दो कॉलम की खबर है. . .हमारे पास पूरी डिटेल्स. . ."

"हां मैं फोन करता हूं।" मैंने कहा।

इससे पहले के मैं ऑफिस फोन करके नाइट शिफ्ट में काम करने वाले अमिताभ को निर्देश देता, शकील का फोन आ गया।

"तुम्हें न्यूज़ मिल गयी।" वह बोला।

"हां, अभी-अभी पता चला. . .कमाल कैसा है?"

"वह तो ठीक है. . .हां उसके साथ जो लड़के थे उनमें से एक लड़के को लोगों ने काफी पीट दिया है. . .वह अस्पताल में है।"

किसका लड़का है।"

"बी.एस.एफ. के डायरेक्टर जनरल का बेटा है रवि।"

"दूसरे और कौन थे?"

"हरियाणा के सी.एम. का लड़का था. . ."

"और?" मैंने पूछा।

"ये सब छाप देना।" वह बोला।

"हमारा चीफ रिपोर्टर थाने में है. . .उससे अभी मेरी बात हुई . . .पहले पेज पर दो कालम में खबर जा रही है।"

"यार हम तीस साल से दोस्त है।" वह बोला।

"दोस्ती से कौन इंकार करता है।"

"साजिद ये लोकल खबर है. . .तीसरे पेज पर जहां दिल्ली की खबरें लगती हैं, वहां लगा दो।"

"देखो ये लोकल ही खबर होती. . .इसमें अगर यूनियन पावर एण्ड इनर्जी मिनिस्टर शकील अहमद अंसारी का लड़का न इनवाल्व होता।"

"साजिद ये तुम क्या कह रहे हो. . .यानी मुझे बदनाम. . ."

"प्लीज शकील. . .आई एम सॉरी।"

उसने फोन काट दिया। मैंने ड्यूटी पर बैठे अमिताभ को इंस्ट्रक्शन दिए। सुप्रिया ने चाय बना डाली थी। वह जानती थी कि अब चार बजे के बाद फिर सोना कुछ मुश्किल होगा।

"मैं कमाल को बचपन से जानता हूं. . .तुम्हें पता है मैं शकील और अहमद यूनीवर्सिटी के दिनों के दोस्त हैं. . .शायद मेरे ही कहने पर शकील ने कमाल का एडमीशन दिल्ली पब्लिक स्कूल में कराया था। लेकिन शकील के पास टाइम नहीं है. . .तुम्हें पता कमाल के लिए यू.एस. से एक स्पोर्ट मोटर साइकिल इम्पोर्ट करायी थी शकील ने?"

"ओ हो. . ."

"हां, मेरे ख्याल से पांच हज़ार डालर. . .के करीब. . ."

"माई गॉड।"

"कमाल ने आज जो एक्सीडेंट किया है वह पहला नहीं है. . इससे पहले अपने बाप के चुनाव क्षेत्र में यह सब कर चुका है।"

"एण्ड ही वाज़ नॉट कॉट?"

"वो हम सब जानते हैं।"

"कानून, न्याय, प्रशासन, अदालतें, गवाह, वकील सब पैसे के यार हैं . . .अगर देने के लिए करोड़ों हैं तो कोई कुछ भी कर सकता

है. . .हमने इसी तरह समाज बनाया है. . . हमारे सारे आदर्श इस सच्चाई में दब गये हैं।"

"लेकिन शकील कैन टेल. . ."

"शकील क्या कहेगा? तुम्हें पता है पच्चीस साल की उम्र में ही कमाल शकील की सबसे बड़ी पॉलिटिकल स्पोर्ट है. . .उसके चुनाव की बागडोर वही संभालता है और बड़ी खूबी से 'आरगनाइज़` करता है क्योंकि यह सब बचपन से देख रहा है. . .अपने क्षेत्र से शकील ग़ाफ़िल रहकर दिल्ली की उठापठक में आराम से लगा रहता है और कमाल क्षेत्र संभाले रहता है. . .आजकल चुनाव क्षेत्र जागीरें हैं. . .बाप के बाद बेटे के हिस्से में आती है।"

"कमाल ने पढ़ाई कहां तक की है?"

"मेरे ख्याल से बी.ए. नहीं कर पाया है या 'क्रासपाण्डेन्स` से कर डाला है। बहरहाल, पढ़ाई में वह कभी अच्छा नहीं रहा लेकिन व्यवहारिक बुद्धि ग़ज़ब की है, जन सम्पर्क बहुत अच्छे हैं. . .मतलब वह सब कुछ है जो एक राजनेता में होना चाहिए।"

"वैसे क्या करता है?"

"शकील की कंस्ट्रक्शन कंपनी और 'रियल स्टेट डिवल्पमेंट कंपनी का काम देखता है. . .अभी इन लोगों ने वेस्टर्न यू.पी. के कुछ शहरों में कोई सौ करोड़ की ज़मीन खरीदी है. . दस कालोनियां डिवलप करने जा रहे हैं।"

"ओ माई गॉड इतना पैसा।"

"मैं उसका दोस्त हूं. . .मुझे पता है. . .दौ सौ करोड़ के उसके स्विस एकाउण्ट्स हैं।"

"हजार करोड़।"

"हां. . ."

छोटी उम्र में ही उसका कमाल का चेहरा पक्का हो गया है। उस का कद पांच दस होगा। काठी अच्छी है। कसरती बदन है। देखने से ही सख्त जान लगता है। हाथ मज़बूत और पंजा चौड़ा है। आधी बांह की कमीज़ पहनता है तो बांहों की मछलियाँ फड़कती दिखाई देती रहती है।

रंग गहरा सांवला है। आंखें छोटी हैं पर उनमें ग़जब की सफ़्फ़ाकी दिखाई देती है। लगता है वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कुछ भी कर सकता है। उसमें दया, सहानुभूति, हमदर्दी जैसा कुछ नहीं है। वह जब सीधा किसी की आंखों में देखता है तो लगता है आंखें भेदती चली जा रही हों। एक कठोर भाव है जो अनुशासन प्रियता से जाकर मिल जाता है लेकिन अपनी जैसी करने और अपनी बात मनवा लेने की साध भी आंखों में दिखाई पड़ती है। नाक खड़ी और होंठ पतले हैं। गाल के ऊपर उभरी हुई हड्डियां हैं जो बताती हैं कि वह इरादे का पक्का और अटल है। जो तय कर लेता है वह किए बिना नहीं मानता।। कमाल की गर्दन मोटी और मजबूत है जो सिर और शरीर के बीच एक मजबूत पुल जैसी लगती है। उसके चेहरे पर धैर्य और सहनशीलता का भाव भी है। पतले और तीखे होंठ उसके व्यक्तित्व के अनछुए पहलुओं की तरफ इशारा करते हैं। आंखें शराब पीने की वजह से थोड़ी फूल गयी हैं। लेकिन उनका बुनियादी भाव निर्ममता बना हुआ है। 'द नेशन` के प्रादेशिक क्रासपाण्डेंट बताते रहते हैं कि कमाल का आतंक एक जिले तक सीमित नहीं है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के आठ-दस जिले और यहां तक कि लखनऊ तक कमाल का नाम चलता है। वह इतना शातिर है कि अपनी अच्छी पब्लिक इमेज बनाये रखता है। कभी बाढ़ आ जाये, शीत लहर चल जाये, गरीब की लड़की की शादी हो, बेसहारा को सताया जा रहा हो, कमाल वहां मौजूद पाया जाता है।

"सुनो, क्या हमारे नेता ऐसे ही होते रहेंगे?" सुप्रिया ने पूछा।

"ये राष्ट्रीय नेताओं की तीसरी पीढ़ी है। पब्लिक स्कूलों में पढ़ी लिखी या अध पढ़ी, अंग्रेजी बोलने वाली और हिंदी में अंग्रेज़ी बोलने वाली इस पीढ़ी का सिद्धांत, विचार, मर्यादा, परम्परा से कोई लेना-देना नहीं है. . .ये सिर्फ सत्ता चाहते हैं. . .पावर चाहते हैं ताकि उसका अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करें. . .ये चतुर चालाक लोग जानते हैं कि उनके पूर्वजों ने यानी पिछली पीढ़ी के नेताओं ने जनता को जाहिल रखा है. . .जानबूझ कर जाहिल रखा है ताकि बिना समझे वोट देती रहे।

"जाहिल कैसे रखा है?"

"इस देश को जितने बड़े पैमाने पर शिक्षित किया जाना था वह नहीं किया गया। साहबों और चपरासियों के अलग-अलग स्कूल अब तक चले रहे हैं. . .अब ये सरकार देशवासियों को शिक्षित करना अपनी जिम्मेदारी भी नहीं मान रही है. . .थक गये यार. . .गुलशन से कहो ज़रा चाय और बनाए।"

सुप्रिया लौटकर आयी तो उसके हाथ में अखबारों का पूरा बण्डल था। मैंने सबसे पहले 'द नेशन` खोला पहले पन्ने पर कमाल वाले 'एक्सीडेंट की खबर नहीं थी। ऐसा लगा जैसे मुझे किसी ने ऊपर से लेकर नीचे तक जलाकर राख कर दिया हो। सुप्रिया ने मुझे देखा। अखबार देखा और समझ गयी कि बात क्या है।

इससे पहले कि मैं न्यूज़ एडीटर को फोन करता। शकील का फोन आ गया। वह बोला, 'माफी मांगने के लिए फोन कर रहा हूं।`

किस बात के लिए माफी मांग रहे हो? मुझे ज़लील करके माफी चाहते हो।"

"नहीं. . .फिर तुम गलत समझे. . ."

"तो बताओ सही क्या है? क्या ये सच नहीं कि एक मंत्री होने के नाते तुमने मेरे अखबार पर दबाव डालकर वह खबर उस तरह नहीं छपने दी जैसे छपना चाहिए थी. . .और ऐसा करके तुमने ये साबित किया कि अखबार में मेरी कोई हैसियत नहीं है. . .मैं कुत्ते की तरह जो चाहे भौंकता. . ."

वह बात काटकर बोला, "तुम बहुत गुस्से में हो. . .मैं शाम को फोन करूंगा।"

"नहीं तुम शाम को भी फोन न करना।" मैंने गुस्से में कहा और फोन बंद कर दिया।

खबर न सिर्फ तीसरे पेज पर एक कॉलम में छपी थी बल्कि एक्सीडेंट की वजह टायर पंचर हो जाना बताया गया था। इस तरह कमाल को साफ बचा लिया गया था। यह भी लिखा था कि उस वक्त गाड़ी कमाल नहीं चला रहा था बल्कि ड्राइवर चला रहा था। ड्राइवर को पुलिस ने गिरफ्तार करके हवालात में डाल दिया था। उसकी जमानत करा लेना

शकील के लिए बायें हाथ का काम था।

"ऐसे समाज में इंसाफ हो ही नहीं सकता जहां एक तरफ बेहद पैसे वाले हों और दूसरी तरफ बेहद गरीब।" मैंने सुप्रिया से कहा। वह दूसरे अखबार देख रही थी। सभी अखबारों में खबर इस तरह छपी थी कि कमाल साफ बच गया था।

"अब देखे इस केस में क्या होगा? शकील मरने वालों के परिवार वालों को इतना पैसा दे देगा जितना उन्होंने कभी सोचा न होगा, गवाहों को इतना खिला दिया जायेगा कि उतनी सात पीढ़ियां तर जायेंगी . . .पुलिस को तुम जानती ही हो. . .न्यायालय मजबूर है. . .गवाह सबूत के बिना अपंग है. . .और अगर न भी होता तो शकील के पास महामहिमों का भी इलाज है. . .अब बताओ, किसका मज़ाक उड़ाया रहा है. . .मैं तो पूरे मामले में एक बहुत छोटी-सी कड़ी हूं।"

दफ्तर जाने का मूड नहीं था लेकिन सुप्रिया का जाना जरूरी था। उसकी वीकली मैगज़ीन का मैटर आज फाइनल होकर प्रेस में जाना था। उसके जाने के बाद मैं अखबार लेकर बैठा ही था कि गुलशन ने आकर बताया, मुख्तार आये हैं, मुख्तार का नाम सुनते ही सब कुछ एक सेकेण्ड में अंदर दिमाग में चमक गया।

खेती बाड़ी और राजनीति छोड़कर दिल्ली चले आने से एक-दो साल बाद एक दिन मुख्तार ऑफिस आ गया था। मुझे लगा था कि वह शायद पिए हुए था। मैं उसे लेकर कैंटीन आ गया था।

"आप चले आये तो हम भी चले आये।" वह बोला, मैं कुछ समझ नहीं पाया और उसकी तरफ देखने लगा।

"आपने वतन छोड़ दिया. . .दिल्ली आ गये. . .हम भी दिल्ली आ गये. . ."

"क्या कर रहे हो?"

"फतेहपुरी मस्जिद के पास एक सिलाई की दुकान में काम मिल गया है।"

"और वहां क्या हाल है?"

"ठीक ही है।" वह खामोश हो गया था।

"मिश्रा जी कैसे हैं?"

"उनसे मिलना नहीं होता. . ." मुझे आश्चर्य हुआ। वह बोला, "अब आपसे क्या छिपाना मिश्रा जी के साथ हम लोगों की निभी नहीं। आपके आने के बाद. . .उमाशंकर, हैदर हथियार, कलूट, शमीम सब अलग होते गये. . .रिक्शा यूनियन टूट गयी. . .सिलाई मज़दूर यूनियन भी खतम ही समझो. . .बीड़ी मज़दूर. . ." वह बोलता रहा और मैं अपराध भाव की गिरफ्त में आता चला गया था। मेरे दिल्ली आने के तीन साल के अंदर यूनियनें टूट गयीं, जिला पार्टी में झगड़े शुरू हो गये, जो लोग पार्टी के करीब आये थे, सब दूर चले गये। जिला पाटी सचिव मिश्रा जी का वही हाल हो गया जो पहले था। लाल चौक का नाम फिर बदल कर लाला बाज़ार हो गया. . .इतने लोगों, रिक्शे वालों, बीड़ी मज़दूरों, सिलाई करने वालों के दिल में एक आशा की किरन जगाकर उन्हें अधर में छोड़ देना विश्वासघात ही माना जायेगा। अपने कैरियर और पैसे के लिए मैं उन सबको उनके हाल पर छोड़ कर यहां आ गया. . .मिश्रा जी ने ठीक ही कहा था, "कामरेड हमें पता था, आप यहां रुकोगे नहीं।" इतना तय है कि मैं वहां

रुकता तो यह न होता जो हो गया है और इसकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर आती है। मैं पता नहीं कैसे अपने आपको प्रतिबद्ध और ईमानदार मानता हूं। मैं तो दरअसल अवसरवादी हूं। अगर मेरे अंदर हिम्मत नहीं थी तो मुझे वह सब शुरू ही नहीं करना चाहिए था।

एक बार दिल्ली आने के बाद मुख़्तार वापस नहीं गया। शायद वह इतना हयादार है कि अपना चेहरा उन लोगों को नहीं दिखाना चाहता जिनके साथ उसने मेरी वजह से विश्वासघात किया है। वह दिल्ली में ही रहने लगा। रोज़ जितना पैसा कमाता था उससे शाम को एक 'अद्धा पाउच` खरीदता था। गटगट करके. . .पुराने स्टाइल में अद्धा पेट में उतारकर नमक चाटता था और थोड़ी गप्प-शप्प मारकर दुकान में ही सो जाता था। वह कभी-कभी साल छः महीने में मुझसे मिलने चला आता था। मुझे यह एहसास हो रहा था कि वह 'एल्कोहलिक` होता जा रहा है यानी रात-दिन नशे में डूबा नज़र आता था। मैं सोचता क्या उसकी बर्बादी का जिम्मेदार मैं ही हूं? पता नहीं यह कितना सच है लेकिन इतना तो

है कि अगर वह दिल्ली न आता। इस तरह न उखड़ता तो शायद बर्बाद न होता।

आज भी वह नशे में हैं। उसका दुबला-पतला जिस्म देशी ठर्रे की ताब नहीं ला पाया है और जर्जर हो चुका है। ओवर साइज़ कमीज में वह अजीब-सा लग रहा है। बाल तेज़ी से सफेद हो गये हैं और चेहरे पर लकीरें पड़ने लगी हैं।

"चाय पियोगे?" मैंने उससे पूछा।

"चाय?" वह बेशर्मी वाली हंसने लगा। लेकिन सिर नहीं उठाया।

"क्यों?" मैंने पूछा।

"अब. . .आप जानते हो।"

"तो क्या पियोगे।"

"अरे बस. . .आपको थोड़ी तकलीफ देनी है. . ."

मैं समझ गया। उसका ये रटा हुआ जुमला मुझे याद हो चुका है। इससे पहले कि वह वाक्य पूरा करता मैंने जेब में हाथ डाला पर्स निकालना और दो सौ रुपये उसकी तरफ बढ़ा दिए।

उसने पैसे मुट्ठी में दबाये और तेज़ी से उठकर बाहर निकल गया। वह उसे जाते देखता रहा। फाटक पर उसने गुलशन से कोई बात की और बाहर निकल गया। मैं सोचता रहा कि देखें ये क्या हो गया। मुख़्तार बहुत अच्छा संगठनकर्ता रहा है। वह वक्ता भी अच्छा था। अपने समाज के लोगों को 'कन्विन्स` करने के लिए उसके पास मौलिक तर्क हुआ करते थे। अगर राजनीति में रहता. . .या ये कहें कि अगर मैं राजनीति में रहता . . .अपने जिले में. . .अपने घर में. . .अपने गांव में रहता तो वह भी . . .लेकिन कोई गारंटी तो नहीं है। गारंटी तो वैसे किसी चीज़ की भी नहीं है यही तो जिंदगी की लीला है।

काफी हाउस क्यों उजड़ा? ये कुछ उस तरह की पहेली बन गयी है। जैसे 'राजा क्यों न नहाया, धोबन क्यों पिटी?` पहेली का उत्तर है। धोती न थी। मतलब राजा इसलिए नहीं नहाया कि नहाने के बाद पहनने के लिए दूसरी धोती न थी और धोबन इसलिए पिटी कि धोती न थी, यानी कपड़े न धोती थी। तो 'काफी हाउस क्यों उजड़ा?` पहेली का उत्तर हो सकता है। 'स` न था। 'स` से समय, 'स` से समझदारी, 'स` से सहयोग, 'स` से सगे, 'स` से सत्ता, 'स` से सोना. . .साहित्य. . .

काफी हाउस उजड़ा इसलिए कि वहां बसने वाले परिन्दों ने नये घोंसले बना लिये। मेरी और यार दोस्तों की शादियां हो गयीं। बच्चे हो गये। सास-ससुर और साले सालियों की सेवा टहल और पत्नी की फरमाइशों के लिए वक्त कहां से निकलता? और फिर कनाट प्लेस और काफी हाउस के नज़दीक कोई कहां रह सकता है? इसलिए पटक दिए गये काफी हाउस से दस-दस बीस-बीस मील दूर इलाकों में, वहां से कौन रोज़ रोज़ आता?

कुछ लोग हम लोगों के बारे में कहते हैं जब तक ये लोग संघर्ष कर रहे थे काफी हाउस आते थे। अब स्थापित हो गये हैं। सोशल सर्किल बड़ा हो गया है। जोड़-तोड़, लेन-देन के रिश्ते बन गये हैं। जिनमें काफी हाउस के लिए कोई जगह नहीं है। पता नहीं ये कितना सच है लेकिन कुछ न कुछ सच में इसमें हो सकता है।

पिछले डेढ़ दशक में पन्द्रह बहारें आयीं हैं और पतझड़ गुज़रे हैं। जेल से निकलने के बाद सरयू डोभाल का कविता संग्रह 'जेल की रोटी` छपा था और उसकी गिनती हिंदी के श्रेष्ठ कवियों में होने लगी थी।

उसके बाद 'पहाड़ के पीछे` और 'आवाज का बाना` उसके दो संग्रह आ चुके हैं। वह 'दैनिक प्रभात` का साहित्य संपादक है और हिंदी ही नहीं भारत की अन्य भाषाओं के प्रतिष्ठित साहित्यकारों में उसका अमल-दखल है। उसकी शादी इलाहाबाद में हुई है। पत्नी एन.डी.एम.सी. के किसी स्कूल में पढ़ाती है। एक लड़का है जो बी.ए. कर रहा है। इसमें शक नहीं कि अब सरयू के पास काफी हाउस में दो-दो तीन-तीन घण्टे गप्प मारने का वक्त नहीं है। उसे अपने दफ्तर में ही आठ-साढ़े आठ बजे जाते हैं। बाहर ड्राइवर खड़ा इंतिज़ार करता रहता है कि साहब को जल्दी से जल्दी घर छोड़कर मैं आजाद हो जाऊं। उसकी पत्नी शीला खाने पर इंतिज़ार करती है और बेटा अपनी सहज ज़रूरतों की सूची थामे उसका 'वेट` करता रहता है। ऐसे में सरयू काफी हाउस तो नहीं जा सकता न? और फिर हफ्ते में तीन चार शामें ऑफीशियल किस्म के 'डिनर` होते हैं जहां जाना नौकरी का हिस्सा है। कोई कुछ कहता नहीं लेकिन ऐसे 'डिनरों` में ही नीतियां तय होती, फैसले लिए जाते हैं, लॉबींग की जाती है, समझौते होते हैं, रास्ते निकलते हैं। लखटकिया से लेकर दस हज़ारी इनामों तक की लॉबींग होती है। सरयू को साहित्य की राष्ट्रीय पत्रिका निकालनी है, साहित्यकारों के बीच रहना है, उनका समर्थन प्राप्त करना है, उनसे संबंध बनाना है इसलिए यह सब नौकरी का आवश्यक हिस्सा बन जाता है।

नवीन जोशी की शादी सुमित्रानंदन पंत के परिवार में हुई है। शादी के बाद नवीन ने दो-तीन नौकरियां बदलने के बाद एक बड़ी पब्लिक अंडरटेकिंग में पी.आर.ओ. के पद पर पांव जमा लिए हैं। शादी से पहले उसका एक कविता संग्रह 'चुप का संगीत` छप चुका है। अब शादी, नौकरियों और बाल-बच्चों के झंझटों में इंज्वाय करना सीख गया है। वह दिल्ली के पहाड़ी ब्राहमण समाज का एक प्रतिष्ठित सदस्य है। ऐसा होना अस्वाभाविक भी नहीं है क्योंकि उसके पिताजी अंग्रेजों के ज़माने के सेक्शन ऑफीसर थे, चाचा जी जज थे, छोटे चाचा इलाहाबाद यूनीवर्सिटी में अंग्रेजी के प्रोफेसर थे। आज उसके परिवार में दो दर्जन आई.ए.एस. और प्रोफेसर हैं। अखबारों के सम्पादक हैं, टी.वी. चैनलों के एंकर हैं,

संवाददाता हैं, कुमाऊंनी पंडितों की प्रतिष्ठा और प्रभाव से नवीन गदगद रहता है। वह अपने पिछले राजनैतिक विचारों पर शर्मिन्दा तो नहीं लेकिन उसका उल्लेख करने पर असुविधाजनक स्थिति में आ जाता।

'पब्लिक अण्डरटेकिंग` किस तरह अपने कर्मचारियों और वह भी ऊंचे कर्मचारियों के नाज़ नखरे उठाती हैं इसका सउदाहरण बयान करना नवीन को बहुत पसंद है। वह कंपनी की उन तमाम योजनाओं के बारे में जानता है जिनसे लाभ उठाया जा सकता है। जैसे बच्चे के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा तक कंपनी कितनी छुट्टी मां को और कितनी छुट्टी बाप को देती है। बच्चे के पैदा होने पर कितना एलाउंस मिलता है। स्कूल योग्य हो जाने पर यह एलाउंस कितना बढ़ जाता है। अगर कार खरीद ली जाये तो कितना पैसा कार 'मेनटेनेंस एलाउंस` का मिलता है। ड्राइवर की तनख्वाह मिलती है। ऑफिस अगर तेरह किलोमीटर से दूर है तो पांच रुपये पचास पैसे प्रति किलोमीटर और ज्यादा एलाउंस मिलता है। साल में तीस हज़ार पेट्रोल के लिए बीस हजार इंजन बदलवाने आदि आदि ये सब उसे जबानी याद है और वह धड़ाके से बताना शुरू कर देता है। तीन साल बाद नयी कार खरीदने का इंटरेस्ट फ्री लोन मिल जाता है। पुश्तैनी मकान ठीक कराने और बच्चों की शादी करने के लिए भी दस लाख तक का 'इंटरेस्ट फ्री` लोन मिलता है।

नवीन परिवार के पुराने किस्सों का भी ख़ज़ाना है। अंग्रेजों के ज़माने में राजधानी शिमला चली जाती थी। एक ट्रेन में पूरी भारत सरकारी दिल्ली से शिमला कैसे जाती थी। उसके पिताजी को दो घर एलाट थे। एक दिल्ली में एक शिमला में। सारा काम बहुत व्यवस्थित और योजनाबद्ध हुआ करता था। इन किस्सों के साथ-साथ उसके पास अपने परिवार के बुजुर्गों की ईमानदारी, मेहनत और लगन को दर्शाने वाले अनगिनत किस्से थे। बडे चाचा सन् बीस में जज थे। आठ सौ रुपये महीने तन्खा मिलती थी। वे हर महीने दो सौ रुपये के दस-पन्द्रह मनीआर्डर अल्मोड़ा करते थे। किसी गरीब रिश्तेदार को पांच रुपये, किसी को दस, जैसी जिसकी जरूरत होती थी। पचास रुपये महीने का गुप्तदान करते थे। सौ रुपये महीने हेड़ाखान बाबा के मठ में जाता था।

इसके अलावा परिवार का जो भी लड़का हाईस्कूल कर लेता था उसे इलाहाबाद बुलाकर अपनी कोठी में रख लेते थे और आगे की पढ़ाई का पूरा खर्चा उठाते थे।

नवीन के एक चचा जी पंडित गोविन्द वल्लभ पंत के क्लासफेलो थे। इन दोनों के बड़े रोचक किस्से उसे याद हैं जिनमें पंडित पंत को शिकस्त हुआ करती थी और पंडित भुवन जोशी विजेता और आदर्श पुरुष के रूप में स्थापित होते थे। एक रिश्तेदार शूगरकेन इंस्पेक्टर थे और तरक्की करते करते शूगरकेन कमिश्नर हो गये थे। वे कभी किसी से बहस में हारते नहीं थे। नवीन के अनुसार कहते थे, भाई मैं तो बातचीत को खींचकर गन्ने पर ले आता हूं और वहां अपनी मास्टरी है. . .बड़े से बड़े को वहीं चित कर देता हूं।

हम लोगों ने ये सब किस्से काफी हाउस के जमाने में सुने थे। इनमें अल्मोड़ा के लोगों, वहां आपसे एक नवाब साहब, एक आवारा और न जाने किन-किन लोगों के किस्से नवीन अब भी जब मौका मिल जाता है सुना देता है। उसका मनपसंद काम चाय की प्याली और गपशप्प का आदान-प्रदान है। वह यह काम घण्टों कर सकता है।

कविता का पहला संग्रह छपने के बाद नवीन अपनी पब्लिक सेक्टर नौकरी में आ गया था। पत्नी, बच्चे, रिश्तेदार, नातेदार सब समय की मांग करते थे। इसलिए उसका काफी हाउस आना बंद हो गया था और फिर अकेला क्या आता? न तो सरयू जाता था। न मैं जाता था, न रावत ही जाता था। वह अकेला वहां क्या करता? मेरा कभी-कभी

मूड बन जाता था और कोई काम नहीं होता था। तो मैं उसके आफिस का कभी-कभार एक आद चक्कर लगा लेता था। मैं जानता था उसे आमतौर पर कोई काम नहीं होता है। वह आफिस के दो-चार दूसरे अधिकारियों से गप्प-शप्प करता रहता है। चाय पीता है। ए.सी. की बेहिसाब हवा खाता है। गप्प करने को जब कोई नहीं मिलता तो चपरासियों से खैनी लेकर खाता है और गप्पबाज़ी करता है। यह उसका बड़प्पन है कि वह पद को महत्व नहीं देता जिसकी वजह से कभी-कभी ऑफिस में उसकी आलोचना भी हो जाती है।

अच्छी खासी नौकरी में होते हुए भी नवीन को हम सब की तरह यह कामना तो थी कि यार पैसा बनाया जाये। हम में से किसी को पैसा मिल जाता तो शायद वह सब न करते जो दूसरे पैसे वाले करते हैं। हम फिल्म बनाते, यात्राएं करते, किताबें खरीदते वग़ैरा, वग़ैरा. . .नवीन अक्सर काफी हाउस में भी मोटा पैसा बनाने की योजनाएं बताया करता था और रावत उसका मज़ाक उड़ाया करता था। पैसा कमाने की मोटी योजनाएं अब भी उसके पास आती रहती हैं। एक दिन मैं उसके आफिस गया तो बोला कि यार किसी का फोन आया था, सोवियत यूनियन से एक आर्डर है। पांच करोड़ की प्याज़ भेजना है।?

"क्या?" मुझे अपने कानों पर यकीन नहीं आया।

"हां यार पांच करोड़ की प्याज़ भेजने का आर्डर है।"

"तुम्हारे पास है?"

"हां हां . . .और क्या . . .पांच परसेंट कमीशन।" वह बहुत गंभीर लग रहा था।

"मज़ाक तो नहीं कर रहे हो।"

"नहीं यार. . ." वह नाराज़ होकर बोला।

इसी तरह पुरानी बात है, एक दिन उसका फोन आया कि अमेरिका से पानी का एक जहाज 'डनहिल` सिगरेट लेकर ईरान जा रहा था कि ईरान में क्रांति हो गयी है। अब यह जहाज खुले समुद्र में रुका खड़ा है और विश्व में अपने माल के ग्राहक तलाश कर रहे हैं। नवीन ने बताया कि 'डनहिल` का ग्राहक खोजने की कोशिश कर रहा है।

इस तरह के कोई काम उससे नहीं हो सके। बस टेलीफोन ऑफिस का, क्लर्क और चपरासी, काग़ज स्टेशनरी. . .अपने शौक मुफ्त में पूरे कर लेता था और थोड़ी देर के लिए एक सपना देख लेता था। यार इसमें बुराई क्या है?

"यार ये निगम को साले को हो क्या गया है?" रावत गुस्से में बोला।

"अच्छा खासा पैसा है साले के पास।" नवीन ने कहा।

"भई देखो चाहे जो करे. . .हमें क्यों पार्टी बनाता है. . ." सरयू ने अपनी बात रखी।

"ये बताओ उसने तुमसे कहा क्या था?" सरयू ने मुझसे पूछा।

"यार यही कहा था कि आज रात तुम चारों हमारे साथ डिनर करो. . .और कुछ नहीं बताया था।" मैंने कहा।

"यही चालाकी है उसकी . . .वहां जाकर पता चला कि क्या किस्सा है।"

"देखो मैं तो बहुत पहले से निगम के बारे में 'क्लियर` हूं। मुझे पता है उसका मुख्य धंधा दलाली है . . . वह पैसा कमाने के लिए कोई भी रास्ता अपना सकता है।" रावत ने कहा।

"चलो अब आगे से देखा जायेगा।"

"यार किस बेशर्मी से मंत्री से कह रहा था, सर एक ड्रिंक तो और लीजिए. . .देखिए सर. . .साकी कौन है।" सरयू ने कहा।

"मतलब अपनी पत्नी को साकी बना दिया. . .।"

"यार मंत्री को तो वही सर्व कर रही थी न?" नवीन ने कहा

"मंत्री के बराबर बैठी थी।"

"देखो राजाराम चौधरी पर्यटन मंत्री हैं. . .और निगम की एडवरटाइजिंग. . ."

"वो सब ठीक है. . .पर हद होती है।"

हम चारों में मेरी निगम से ज्यादा पटती है। वह यह जानता है और इन तीनों को 'इनवाइट` करने के लिए भी उसने मेरा ही सहारा लिया था। हम जब उसके घर पहुंचे तब ही पता चला था कि वह अपनी पत्नी का जन्मदिन मना रहा है और उसमें चीफगेस्ट के रूप में राजाराम चौधरी को बुलाया है। वैसे एक-आद बार यह बात काफी हाउस में उड़ती उड़ती सुनी थी कि निगम अपनी पत्नी के माध्यम से बहुत से काम साधता है। उसकी पत्नी सुंदर है। बच्चा कोई नहीं है। आज तो निगम का चेहरा अजीब लग रहा था। उसने उतनी शराब पी नहीं थी जितनी दिखा रहा था। वह नशे में है इसका फ़ायदा उठा रहा था। यह सब समझ रहे थे।

निगम मुझसे बता चुका था कि पार्टी में राजाराम चौधरी होंगे और

उसने यह भी कहा था कि यह बात मैं सरयू और रावत वग़ैरा को न बताऊं। उसे शक था क तब शायद ये लोग न आते।

"लेकिन वो हम लोगों को क्यों बुलाता है।"

"सीधी बात है यार. . .मंत्री को यह बताना चाहता है कि उसके मित्र पत्रकार भी हैं।"

"हां यार मुझे तो उसके दो बार मिला दिया मंत्री से. . .और दोनों बार खूब जोर देकर कहा कि ये 'दैनिक प्रभात` में साहित्य सम्पादक हैं।"

"तो ये बात है।" रावत आंखें तरेरता हुआ बोला।

कुछ महीनों बाद सुनने में आया कि निगम को पर्यटन मंत्रालय से बहुत काम मिल गया है। यह भी सुना गया कि निगम ने दो कोठियां खरीद ली हैं। यह भी पता चला कि गाड़ी बदल ली है। उसने फोन करके खुद बताया कि नैनीताल में एक काटेज खरीद लिया है। जब कभी मिल जाता है तो बड़े जोश में दिखाई देता है। नया ऑफिस खोल लिया है जहां बीस पच्चीस का स्टाफ काम करता है।

मैंने शकील के पास संबंध खत्म कर लिये थे लेकिन उसका फोन अक्सर आता रहता था। वह कहता था कि मैं तुम्हें फोन करता रहूंगा। . . . इस उम्मीद पर के एक दिन हम फिर उसी तरह मिलेंगे जैसे हम पहले मिला करते थे। मैंने भी सोच लिया था कि बस पुरानी दोस्ती जितनी निभ सकी है मैंने निभायी है और अब जिन्दगी के इस मोड़ पर मेरे और शकील के बीच कुछ 'कामन` नहीं है। हमारे रास्ते अलग है।

एक साल तक हमारी मुलाकात नहीं हुई। अहमद टोक्यो से लौट कर आया तो उसने अपना 'ऐजेण्डा` घोषित कर दिया कि वह मेरी और शकील की दोस्ती करवाना चाहता है। मुझे उसकी इस बात पर हँसी आई और उसे समझाया कि यार कि अब हम लोग हॉस्टल के लौण्डे नहीं है हम पचास के आसपास पहुँचे लोग हैं। न तो अब शकील को मेरी ज़रूरत है और मुझे उसकी। हमारी जिन्दगी अलग है, सोचने का तरीका अलग है।

- अरे साले तो मेरा और तुम्हारे सोचने का तरीका कौन सा एक है?``

- कभी एक नहीं रहा`` मैनें कहा।

- यही तो बात है . . . तुम उस साले को इतना 'सीरियसली` क्यों लेते हो``।

मुझे हँसी आ गयी आज भी अहमद उसी तरह के बेतुके तर्क देता है जैसे तीस साल पहले दिया करता था।

अहमद पीछे पड़ गया आखिरकार मैं शकील से एक साल बाद मिला और हैरत ये हुई कि वह मुझसे लिपट कर फूट-फूट कर रोने लगा पहले तो मैं समझा साला 'एक्टिंग` कर रहा है नेता साले एक्टिंग का कोर्स किए बिना 'टॉप` के एक्टर बन जाते है। लेकिन बाद में पता चला कि वह एक्टिंग नहीं कर रहा था।

१८

मोहसिन टेढ़े धड़ाधड़ अपनी जायदाद बेचकर पैसा खड़ा कर रहा है। अभी आम का बाग और वह हवेली नहीं बेची है जहां उसकी मां रहती है। मां से वह काफी परेशान है। कहता है अम्मां दिल्ली आना नहीं चाहती। मोहसिन टेढ़ा किसी भी तरह अब तक इसमें कामयाब नहीं हो सका कि अम्मां को दिल्ली ले आये। हां, उसके बहनोई दिलावर हुसैन एडवोकेट ने कहला दिया है कि पुश्तैनी जायदाद में उनका मतलब उनकी बीवी का भी हिस्सा है। मोहसिन टेढ़े किसी भी तरह जायदाद का एक तिनका अपनी बहन और बहनोई को नहीं देना चाहता।

सौ बीघा कलमी आम का बाग मोहसिन टेढ़े के दादा ने लगवाया था और यह ज़िले के ही नहीं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बड़े बागों में गिना जाता है। बाग में चार कुएं हैं, पक्की नालियां हैं, और हर तरह से कलमी आम के पेड़ हैं। मोहसिन टेढ़े ने जब इस बाग का ग्राहक तय किया तो उसके बहनोई दिलावर हुसैन एडवोकेट ने उसे धमका दिया और वह बयाना देने भी नहीं आया। मोहसिन ने एक और खरीदार को पटाया और उससे बयाना ले लिया। यह बात

दिलावर हुसैन को पता लग गयी। उन्होंने मोहसिन को चैलेंज किया कि वे तहसील में बाग की लिखा-पढ़ी न करा सकेंगे। उनका मतलब यह था कि गुण्डे मोहसिन टेढ़े को तहसील न पहुंचने देंगे। ऐसे मौके पर मोहसिन टेढ़े के काम कौन आता सिवाय शकील अहमद अंसारी के। शकील ने यह छोटा-सा काम करने की जिम्मेदारी अपने सुपुत्र कमाल को सौंप दी।

कमाल ने मोहसिन को यकीन दिलाया कि बैनामा हो जायेगा। दिलावर हुसैन एडवोकेट कुछ नहीं कर सकेंगे। मोहसिन को यह बड़ा

अच्छा लगा। कमाल उन्हें बताता रहता था कि उसने अपने इलाके के इतने लोग बुला लिए हैं, जिले के अफसरों को साउण्ड कर दिया है कि यह मंत्री जी का काम है। सब मदद करने के लिए तैयार हैं। बैनामा अगले दिन होना था।

रात शकील के घर पर खाना-वाना खाने के बाद कमाल ने मोहसिन टेढ़े से पूछा, "अंकिल ये बताइये. . .अगर अपनी सिस्टर को उनका शेयर आपको देना ही पड़ जाता तो वह कितना होता?"

इस सवाल पर मोहसिन टेढ़े के हवास गुम हो गये। वह उड़ती चिड़िया के पर गिन गया।

"क्यों?" उसने पूछा।

"मतलब अंकिल आप जानते हैं. . .हमने पचास लोग बुलाये हैं जो हर तरह से लैस होंगे. . .अधिकारियों को उनका हिस्सा पहुंचा दिया गया है। पुलिस को भी दिया गया है क्योंकि पुलिस किसी के रिश्तेदार नहीं होती. . ."

मोहसिन टेढ़े की अकल के सभी दरवाजे खुल गये। उसने सोचा, कल बैनामा होना है, अगर आज कमाल कह दे कि उसके आदमी वहां नहीं पहुंच पायेंगे, वह नहीं जा सकता तो क्या होगा।

कितना खर्चा लग जायेगा।" मोहसिन टेढ़े मरी हुई आवाज़ में बोला।

पांच लाख।" कमाल ने कहा और मोहसिन टेढ़ा कुर्सी से उछल पड़ा, पांच लाख।"

"हां अंकिल पांच लाख. . .ये कुछ नहीं है. . .आप अस्सी लाख का बाग बेच रहे हैं।"

"ठीक है।"

मोहसिन टेढ़ा यह समझ रहा था कि कमाल शायद किसी काग़ज पर दस्तखत करायेगा। पर ऐसा नहीं हुआ।

अगले दिन जब बैनामा हो रहा था तो मोहसिन टेढ़े को कमाल के पचास आदमी कहीं नहीं दिखाई दिए। पुलिस भी नहीं थी। सब कुछ सामान्य था। मोहसिन टेढ़े ने कमाल से पूछा, तुम्हारे आदमी कहां हैं?"

"अंकिल आप अपना काम कीजिए।" वह सख्ती से बोला था। काम हो गया था। जितना पैसा कैश मिलना था वह सब कमाल ने गिनकर अपने पास रख लिया था। दिल्ली आकर उसमें से पांच लाख बड़ी ईमानदारी से गिनकर बाकी मोहसिन को लौटाते हुए कहा था, पापा को ये सब न बताइयेगा. . ."

मोहसिन ने सिर हिला दिया।

सुप्रिया को यह पसंद नहीं कि उसके रहते मेरे टेरिस पर महफिलें जमें और यार लोग शराब कबाब करें। अगर कभी ऐसा होने वाला होता है तो वह अपनी बरसाती में चली जाती है। लेकिन आजकल वह कलकत्ता गयी है इसलिए मेरी टेरिस आबाद हो गयी है।

मसला जेरेबहस यह है कि बलीसिंह रावत ने लोक सेवा आयोग द्वारा विज्ञापित डायरेक्टर मीडिया की पोस्ट पर अप्लाई कर दिया है। यह एस.टी. के लिए रिजर्व पोस्ट है और रावत के पास एस.टी. का प्रमाण-पत्र है। आज वह जिस वेतनमान पर काम कर रहा है उससे दुगना वेतनमान इस पोस्ट का है।

सरयू, नवीन का कहना है कि यह 'गोल्डन अपारच्युनिटी` है रावत के लिए। मैं इससे सहमत हूं। डायरेक्टर मीडिया की पोस्ट सीधे मंत्रालय में है। क्या कहने?

रावत अपनी जानकारियों, समझदारी, फिल्म और साहित्य की सूक्ष्म दृष्टि के बावजूद सीधा है। उसमें मध्यवर्गीय छल कपट है। हम लोग ये जानते हैं रावत को 'खींचने` का काई मौका नहीं छोड़ते।

पता नहीं कैसे धीरे-धीरे हम लोगों ने रावत को 'कन्विंस` कर लिया कि नौकरी के लिए उसका जो इंटरव्यू लिया जायेगा उसका पूर्वाभ्यास करके देखना चाहिए।

कुछ ही देर में 'मॉक इंटरव्यू` शुरू हो गया। कहावत है कि दाई से पेट नहीं छिपाना चाहिए। हम सब दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह साल पुराने दोस्त, एक दूसरे के बारे में सच जानते हैं। पूरे विश्वास से ऐसे सवाल पूछने लगे जिनका जवाब रावत नहीं दे सकता। चार पांच सवालों का

उत्तर रावत नहीं सके क्योंकि वे वैसे ही सवाल थे जिनके उत्तर की उपेक्षा उनके नहीं हो सकती।

कुछ देर में रावत चिढ़ गया और शायद समझ भी गया कि उनके साथ खेल हो रहा है। वह बोला, "अरे मादरचोदो, सत्यजीत रे पर सवाल पूछो, चार्ली चैपलिन पर पूछो, अम्बादास की पेंटिंग पर पूछो, रवीन्द्र संगीत पर पूछो. . .फिलिस्तीनी प्रतिरोध कविता पर पूछो. . ."

हम सब हंसने लगे।

हम लोगों ने पूरे प्रसंग को चाहे जितना 'नॉन सीरियसली` लिया हो लेकिन बलीसिंह रावत की निदेशक मीडिया के पद पर नियुक्ति हो गयी। हमने जश्न मनाया। रावत पर सब अपने-अपने दावे पेश करने लगे। नवीन ने कहा यार मैंने तो तुझे सूट का कपड़ा खरीदवाया और सूट सिलवाया था। मैंने कहा, मैंने तुम्हें टाई बांधना सिखाई थी। बहरहाल रावत बहुत खुश था।

संबंध ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चल रहे हैं। नूर अब पूरे साल लंदन में रहती हैं। पहले जाड़ों में हीरो के साथ एक दो हफ्ते के लिए आ जाती थी और हीरा का कॉलिज खुलने से पहले लौट जाती थी। धीरे-धीरे साल में एक चक्कर लगना भी बंद हो गया और दो-तीन साल में एक बार आने लगी। मैं भी लंदन जाते-जाते थक गया था। अब वहां सब कुछ नीरस था। मैं गर्मियों में श्रीनगर चला जाता था।

धीरे-धीरे सुप्रिया ने नूर की जगह ले ली थी लेकिन सुप्रिया के साथ भी संबंधों में कोई पक्कापन न था। हमेशा लगता था जब पत्नी ही अपनी न हुई तो प्रेमिका क्या होगी। लेकिन सुप्रिया ने हमेशा विश्वास बनाये रखा। कभी जब नूर को आना होता था तो बिना मुझे बताये अपने कपड़े वग़ैरा लेकर अपनी बरसाती में चली जाती थी और कभी नहीं कहती थी कि ये संबंध कैसे हैं? वह मेरी कौन है? नूर कौन है? मैं ये क्यों कर रहा हूं। लगता है कि सुप्रिया को अपार दुख ने सतह से उखाड़ दिया है वह अब जहां है वहां कोई सवाल जवाब नहीं होते।

लंदन और नूर से दूर होने के साथ-साथ मैं हीरा से भी दूर हो गया

हूं। मैंने उसे लेकर जो ख्वाब पाले थे वे छितरा गये हैं। लेकिन हीरा से मेरी बातचीत होती रहती है। हो सकता है नूर से किसी महीने बात न हो लेकिन हीरा से होती ही है। वह चाहे जहां हो, मैं उसे फोन करता हूं। हॉस्टल में था तो वहां 'काल` करता था। मेरे और उसके बीच सबसे बड़ा विषय तीसरी दुनिया के संघर्ष हैं। उसे राजनीति और अर्थशास्त्र में दिलचस्पी है और मैं पत्रकार होने के नाते इन दोनों विषयों से बच नहीं सकता। 'लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स` के रेडीकल टीचर्स उसके 'आइडियल` हैं। वह बराबर उनकी किताबें और लेख मुझे भेजता रहता है। वह जानता है कि मैं कभी वामपंथी राजनीति में था और भी उससे सहानुभूति रखता हूं। वह बताता रहता है नवपूंजीवाद किस तरह संसार के गरीब देशों पर कब्ज़ा जमाना चाहता है। हीरा अपनी शिक्षा, परिवार के उदार मानवीय विचारों, बॉब से दोस्ती और रेडिकल टीचर्स की संगति में काफी इन्किलाबी बन गया है। वह क्यूबा और चीन की यात्रा कर चुका है। मिर्जा साहब, उसके नाना लेबरपार्टी से अपने पुराने और गहरे रिश्ते की वजह से 'गुलाबी` विचारों को पसंद करते हैं और उन्हें लगता है कि हीरा जवानी के जोश में 'अतिलाल` है जो समय के साथ-साथ 'गुलाबी` हो जायेगा।

सुप्रिया के साथ रहते हुए कभी-कभी यह ख्य़ाल आता है कि मुझे यहां सुप्रिया का सहारा मिल गया है। नूर लंदन में क्या करती होगी? पता नहीं मुझे लगता है लेकिन हो सकता है मैं गल़त हूं कि नूर और बॉब की दोस्ती सिर्फ दोस्ती की हद तक कायम नहीं है। दोनों स्कूल में साथ पढ़ते थे फिर कॉलिज में साथ आये। यूनीवर्सिटी साथ-साथ गये। अंग्रेज़ संस्थानों का माहौल 'वीकली पिकनिक`, 'नाइट आउट`, 'पार्टियां डांस`, 'ड्रिंक्स डिनर` ऐसा कौन है जो इस माहौल में एक बहुत अच्छे आदमी और दोस्त के साथ गहरे और बहुत गहरे संबंध बनाने में हिचकिचायेगा? लंबे जाड़ों और बरफीले तूफान के बाद जब प्रकृति जागती है तो ऐसा लगता है जैसे वीनस की मूर्ति चादर ओढ़े सो रही थी और अचानक उसने चादर फेंककर एक अंगड़ाई ली है। ऐसे मौसम में युवक पागल हो जाते हैं और रंगों के तूफान में अपने को रंग लेते हैं। जाड़ा बीत जाने

के बाद सूखी-सी लगती टहनियों के ऊपर हरे रंग की कोपल जैसी पत्तियां निकलती जिनके रंग हरे होने से पहले कई चोले बदलते हैं और पत्तियाँ हर चोले में मारक नज़र आती है। सड़कें किनारे खड़ी बेतरतीब झाड़ियां इस तरह फूल उठती है कि उन पर से निगाह हटाना मुश्किल होता है। लगता है यह पृथ्वी, पेड़, फूल, रंग, नीला पानी, नीला आसमान सब आज ही बना है। दूर तक फैली हरी पहाड़ियों की गोद में बसे गांवों में बसंत उत्सव मनाये जाते हैं। सेब के बागों में आर्केस्ट्रा बजता है, नृत्य होता है, बियर बहती है, 'बारबीक्यु` होता है और पूरा माहौल नयी जिंदगी का प्रतीक बन जाता है। पता नहीं इस तरह के कितने वसंत उत्सवों में नूर और बॉब गये होंगे। पता कितनी बार हरे पहाड़ों के जंगली फूलों के बीच ट्रैकिंग की होगी। पता नहीं टेम्स के किनारे कितनी दूर तक टहले होंगे।

नूर और बॉब के रिश्ते या उनके बीच शारीरिक संबंधों की बात जब मैं सोचता हूं तो मुझे गुस्सा नहीं आता। मैं मानता हूं अगर ऐसे संबंध होंगे तो नूर की इच्छा बिना न होंगे। और दूसरी बात यह कि बॉब इतना अच्छा आदमी है कि उसे साधारण की परिभाषा में नहीं बाध जा सकता। अगर यह संबंध है तो विशेष संबंध होगा. . .क्या यह मैं किसी और से भी कह सकता हूं।

बाग बेचने के बाद मोहसिन टेढ़े ने शादी कर डाली। चूंकि मोहसिन टेढ़े नौकरी वगैरा तो करता न था सिर्फ ज़मीन जायदाद का खेल था। वह भी तेजी से बेच रहा था इसलिए मोहसिन टेढ़े के लिए लड़की मिलना मुश्किल था। ये बात जरूर है कि इलाके वालों, रिश्ते-नातेदारों में अच्छी साख थी। लोग जानते और मानते थे लेकिन अच्छे घरों से इंकार ही हो रहा था। आखिरकार एक मीर साहब जो मेरठ कचहरी में पेशकार थे, की चौथी लड़की के साथ मोहसिन टेढ़े का रिश्ता तय हुआ।

मोहसिन की शादी सीधी-साधी थी। दोनों पक्षों को अच्छी तरह मालूम था कि 'एडजस्टमेंट` क्यों किया जा रहा है। दहेज वाजिब वाजिब मिला था। रिसेप्शन वाजिब वाजिब था। लड़की इंटर तक पढ़ी थी। घरदारी से अच्छी वाक़िफ़ थी। देखने सुनने में वाजिब वाजिब थी। मोहसिन टेढ़े जानता है कि इससे ज्यादा इन हालात में कुछ नहीं हो सकता। शादी के बाद वह बीवी को लेकर सीधे दिल्ली आ गया। उसने कहा था, यार क्या फायदा पहले घर ले जाऊं? घर में है कौन अम्मां हैं, वो यहीं शादी में आ गयी। बाकी बहनोई साहब ने तो मुकदमा दायर कर दिया है। दूसरे रिश्तेदारों से मेरा मतलब ही नहीं है।

दिल्ली में उसने गुड़गांव के पास किसी सेक्टर में मकान खरीद लिया था। मैंने बहुत समझाया था कि यार इतनी दूर क्यों जा रहे हो। पर वह नहीं माना था। उसका कहना था, "यार मैं रिश्तेदारों से दूर रहना चाहता हूं. . .ये सब मुझे लूटना खाना चाहते हैं। मैं गुड़गांव सेक्टर तेरह में रहूंगा वहां कोई साला क्या पहुंचेगा. . .और फिर वहां सस्ता है और फिर यार कौन-सा मुझे नौकरी करनी है। हफ्ते में एक आद बार दिल्ली चला आया करूंगा और वही सुकून से रहूंगा. . .तुम कभी वहां आकर देखो. . .बड़ी पुरफ़िज़ा जगह है।"

१९

"देखो आदमी सच बोलने के लिए तरसता है। उसकी ये समझ में नहीं आता कि कहां सच बोला जाये? मेरी तो समझ में आ गया कि सच कहां बोलना चाहिए. . .यहीं बोलना चाहिए, यहीं बोलना चाहिए और यहीं बोलना चाहिए. . ." अहमद हंसने लगा।

टेरिस पर चांदनी फैली है नीचे से चमेली की फूलों की तेज़ महक आ रही है। मलगिजी चांदनी में जामो-सुबू का इंतिज़ाम है। तीन पुराने दोस्त ज़िंदगी की दोपहर गुज़ारकर आमने सामने हैं।

"क्या कमजोरी है तुम्हारी।" शकील ने पूछा।

"यार तुम लोग पूछ रहे थे न कि पहले मैंने इंदरानी को छोड़ा था, फिर राजी रतना को छोड़ा। उसके बाद एक रूसी लड़की के साथ रहने लगा. . .मास्को से टोक्यो आ गया तो एक अमरीकी टकरा गयी . . . मैं यार. . ." उसे कुछ नशा आ गया था और जबान लड़खड़ा रही थी।

"तुम्हें नशा ज्यादा हो रहा है।" मैंने कहा।

वह हंसने लगा हां, मैं जानता हूं और ये भी जानता हूं कि कहां नशा होना चाहिए और कहां नहीं. . .डिप्लोमैटिक पार्टियों में नशा होना जुर्म है. . .वहां हम वी.वी.आई.पी को नशे में लाते हैं, उसे खुश करते हैं. . .उसके चले जाने के बाद अपने हाई कमिश्नर साहब को नशे में लाते हैं। ये भी हमारी ड्यूटी होती है. . .जानते हो. . .एक बार मैक्सिको में हमारे एम्बैस्डर एक स्पेशल कोटे वाले आदमी थे और लगता था उन्हें उनके पूरे कैरियर दूसरे तरह के लोगों ने परेशान किया था। अब 'टॉप बॉस` हो जाने के बाद उनके अंदर बदला लेने की ख्वाहिश बहुत मज़बूत

हो गयी थी. . .तो जब उन्हें चढ़ जाती थी तो 'उन लोगों` में से किसी को बुलाकर दिल की भड़ास निकाला करता था. . .गाली गलौज करता था और जवाब में हम सब यस सर, यस सर कहते रहते थे। सब जानते थे दस-पन्द्रह मिनट में थककर चला जायेगा या. . ."

"जो बात शुरू की थी वो तो रह ही गयी।"

"हां सच ये है कि औरतें मेरी कमज़ोरी है. . .और ये भी मेरी कमज़ोरी है कि मैं एक औरत के साथ लंबे अरसे नहीं रह सकता. . .और . . ."

"इतनी बड़ी और भयानक बातें इतनी जल्दी एक साथ न बोलो।" मैंने उससे कहा। शकील हंसने लगा।

"ये बताओ कि तुम राजदूत बन रहे हो न?" शकील ने पूछा।

"टेढ़ा सवाल है. . .देखो हमारी मिनिस्ट्री में जो सबसे पावरफुल लॉबी है वह चाहती है कि अब मुझे दिल्ली में सड़ा दिया जाये क्योंकि मेरी जगह उनका एक आदमी राजदूत बन जायेगा। हमारे सेक्रेटरी उन लोगों के दबाव में हैं. . .अब अगर पी.एम.ओ. और कैबनेट सेक्रेटरी दखल दें तो बात बन सकती है. . .मैंने शूज़ा चौहान से बात की है।"

"वाह क्या तगड़ा सोर्स लगाया है. . .वह तो आजकल कैबनेट सेक्रेटरी की गर्ल फ्रेण्ड है।"

"हां यही सोचकर उससे कहा है।"

"फिर?"

"वह तो एम.ई.ए. में भी बात कर सकती है।"

"नहीं उससे काम नहीं चलेगा. . .तुम लोग या और दूसरे लोग एम.ई.ए. के बारे में नहीं जानते. . .वहां अजीब तरह से काम होता है . . .क्योंकि पब्लिक डीलिंग नहीं है. . .प्रेस तक खबरें कम ही पहुंचती हैं इसलिए अजीब माहौल है. . ."

"कुछ बताओ न?" मैंने कहा।

"नहीं यार तुम प्रेस वाले हो।"

"तो तुम ये समझते हो कि मैं चाहूंगा तो स्टोरी छप जायेगी? ऐसी बात नहीं है मेरी जान. . .सरकार के खिलाफ हमारे यहां कुछ नहीं

या कम ही या नपा तुला छपता है।"

फ्तब तो बता सकता हूं।" वह हंसकर बोला, "तुमने जर्मनीदास की किताब महाराजा पढ़ी है?"

"हां।"

"बस उसे भूल जाओगे।"

"नहीं यार।"

"छोड़ो यार छोड़ो. . .ये तुम लोग कहां से लेकर बैठ गये। दिनभर यही सब सुनते-सुने कान पक गये हैं" शकील ने उकता कर कहा।

"तो तुम्हारे मंत्रालय में भी. . ."

"मेरे भाई कहां नहीं हैं. . .अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान. . .कहां 'करप्शन` नहीं है।

"तो उसके बारे में बात न की जाये?" मैंने कहा।

"जरूर करो. . .मैं चलता हूं. . .यार यहां मैं इसलिए नहीं आया हूं।" शकील बोला, "अहमद ने मुझे आंख मारी।"

"कबाब ठण्डे हो गये हैं।" अहमद ने कहा।

मैंने हांक लगाई "गुलशन. . ."

"तो राजी रतना को तुमने छोड़ दिया?" शकील ने अहमद से पूछा।

"नहीं उसने मुझे छोड़ दिया।"

"कैसे?"

"जब हम मास्को में थे तो एक बड़ी 'डील` जो मेरी वजह से ही मिली थी, राजी ने मुझे बाहर कर दिया था। पूरे पचास लाख का चूना लगाया था।" अहमद ने कहा।

मेरे अंदर ये सब सुनकर 'वहश्त` बढ़ने लगी। यार मैं इस दुनिया में इसलिए हूं कि शकील और अहमद जैसे लोगों की बकवास सुनता रहूं? मैंने अपने ऊपर कितनी ज्यादती की है। दसियों साल से मैं इनकी बकवास सुनता आया हूं। खामोश रहा हूं। पर और कर भी क्या सकता हूं? लेकिन कम से कम से मैं मजबूर तो नहीं हूं उनकी बकवास सुनने

के लिए? सुप्रिया अक्सर कहती है कि तुम इन दोनों को 'टालरेट' कैसे कर लेते हो? मैं पुरानी दोस्ती का हवाला देकर उसे चुप करा देता हूं लेकिन जानता हूं कि यह सही नहीं है। पता नहीं, मेरी क्या कमजोरी है जो मैं इन लोगों से अब तक जुड़ा हुआ हूं। अहमद तो फिर भी ब्यूरोक्रैट है लेकिन शकील अहमद अंसारी ये तो सत्ता का एक पहिया है जो करोड़ों इंसानों को कुचलती आगे बढ़ती चली जा रही है।

"क्या सोच रहे हो उस्ताद?" अहमद ने पूछा।

मैं चौंक गया। सोचा जो सोच रहा हूं सब कह दूं और ये खेल यहीं खत्म हो जाये। लेकिन नहीं। मैंने कहा, "कुछ नहीं यार. . .हीरा की याद आ गयी थी।"

"क्या कर रहा है हीरा?" शकील ने पूछा।

"एशिया पर कुछ रिसर्च का प्रोजेक्ट है।"

"बहुत अच्छा. . .तुम खुशनसीब हो यार. . .हीरा बहुत कामयाब होगा।" शकील ने कहा।

"कमाल का क्या हाल है?" अहमद ने पूछा।

"यार मेरे नक्शे कदम पर चल रहा है। जिला परिषद का चेयरमैन है, जिला सहकारी बैंक का अध्यक्ष है।"

रात घिर आई थी। चांदनी महक गयी थी। मैंने तय किया धीरे-धीरे इन दोनों से पीछा छुटाना है। क्या मैं इनसे अलग हूं? मैंने ऐसा क्या किया है?

"यार ये क्या है प्यारे? इतनी भी कंजूसी ठीक नहीं. . .तुमने खिड़कियों पर पर्दे अब नहीं लगाये हैं?"

मोहसिन टेढ़े हंसने लगा "नहीं यार कंजूसी नहीं. . .कसम खुदा की पर्दे तो रखे हैं. . .लेकिन बस. . ."

चाय लेकर मोहसिन टेढ़े की बीवी आ गयी। हम चाय पीने लगे।

"अच्छा गाड़ी का क्या हुआ? खरीद ली तुमने?"

मोहसिन टेढ़े फिर शर्मिन्दगी वाली हंसी हंसने लगा। उसकी बीवी के चेहरे पर पीड़ा के भाव आ गये।

मोहसिन टेढ़े की शादी को दस साल हो गये हैं। इस बीच उसकी अम्मां गुजर गयी हैं। खानदानी हवेली भी वह बेच चुका है और एक अंदाज़ के तहत उसके पास सत्तर अस्सी लाख रुपये हैं जिनका ब्याज आता है। गुड़गांव में एक और फ्लैट है जो किराये पर उठा दिया है।

शादी के बाद जब मैं एक बार उसके घर आया था तब भी घर में पर्दे नहीं थे। उसने कहा था यार देखो दिन में तो बाहर से कुछ नज़र नहीं आता। रात की बात है। तो रात मैं पहले बत्ती बंद कर देता हूं उसके बाद अपन लेटते हैं, मतलब यार छोटी-सी एहतियात से काम चल जाता है। वैसे पर्दे पांच हजार के लग रहे हैं। अब देखो यार लगवाते हैं,"

धीरे-धीरे उसकी बीवी मुझसे खुलने लगी थी और जब भी जाता था कोई न कोई मसला सामने आ जाता था। शादी के बाद बीवी को मायके भेजने में भी मोहसिन बड़ी कंजूसी करता था। बीवी जब तक दो-तीन दिन खाना नहीं छोड़ती थी। रो-रोकर अपना बुरा हाल नहीं कर लेती थी तब तक उसे लेकर उसके घर न जाता था।

"भाई साहब देखिये किचन का बल्ब पिछले दो महीने से फ्यूज है। अंधेरे में रोटी डालती हूं। हाथ जल जाता है।" उसने एक बार शिकायत की थी।

"यार मोहसिन तुम पैसा किसके लिए बचा रहे हो? तुम्हारे कोई औलाद है नहीं। ले देके एक बहन है जिनसे तुम्हारा मुकदमा चल रहा है. . .तुम्हारी सारी जायदाद उन्हीं को. . ."

"नहीं यार क़सम खुदा की मैं कंजूसी नहीं करता। यार बस बाज़ार जाना नहीं हो पाता।" वह बोला।

मैंने अपने ड्राइवर को भेजकर दो बल्ब मंगवाये और मोहसिन की पत्नी को दे दिए।

कभी वह शिकायत करती थी कि भाई साहब देखिए राशन पूरा नहीं पड़ता`` मोहसिन का ये कहना था कि यार सलमा बर्बादी बहुत करती है, रोटियाँ बच जाती है, दाल दो- दो दिन फ्रिज में पड़ी रहती है, फेंकी जाती है, और इफ़रात में आ जायेगा तो और बर्बादी होगी।

जैसे जैसे वक्त गुज़र रहा था मोहसिन टेढ़े के पैरों की तकलीफ बढ़ रही थी, वह अस्पताल के चक्कर लगाया करता था, कभी-कभी मुझसे भी सरकारी अस्पतालों में फोन कराता था। बीमारी के साथ- साथ उसकी कंजूसी भी बढ़ रही थी।

एक दिन उसने मुझसे कहा, "यार देखो, तुम्हें तो हर महीने तनख्वाह मिलती है न?"

"हां"

"मुझे नहीं मिलती।"

"अरे यार फ्लैट का किराया आता है. . .ब्याज आता है. . .ये क्या है?"

"साजिद. . .यार मुझे डर लगता रहता है कि मेरा पैसा यार ख़त्म हो जायेगा. . .यार फिर मैं क्या करूंगा।"

"तुम पागल हो।" मैंने कहा।

"सच बताओ यार।"

"तुमने पैसा 'इनवेस्ट` किया हुआ है. . .वहां से आमदनी होती है. . .अपने ऊपर भी खर्च न करोगे तो पैसे का फायदा?"

"हां यार बिल्कुल ठीक कहते हो।"

मोहसिन टेढ़े यह वाक्य कई सौ बार बोल चुका है लेकिन करता वही है जो उसका जी चाहता है।

रावत कुछ खुलकर तो नहीं बता रहा है लेकिन इतना अंदाज़ा लग गया है कि हालत गंभीर है।

"यार पहले तो मैं समझा कि ठीक है. . .मुझे नौकरशाही की कोई ट्रेनिंग नहीं है। मैं तो पत्रकार रहा हूं. . .इसलिए गल़तियां होती हैं . . . और फिर अंग्रेज़ी भी उतनी अच्छी नहीं है। फ़ाइल वर्क सारा अंग्रेजी में होता है. . .फिर सालों ने मुझे डरा भी दिया था। रावत साहब सरकारी काम है. . .ज़रा सा भी इधर से उधर हो जाता है तो जेल चला जाता है. . .नौकरी तो जाती ही है।"

"तुम्हारी उम्र दूसरे बराबर के अधिकारियों से कम है। तुम एस.टी. कोटे में हो, तरक्की भी जल्दी ही होगी। बहुत जल्दी वह अपने साथ के दूसरे अफसरों से बहुत आगे निकल जाओगे। असली खेल ये लगता है।" मैंने कहा।

"नहीं यार, ऐसा क्यों होगा?" नवीन बोला।

"है क्यों नहीं, कुलीन इस बात को पसंद क्यों करेंगे कि सत्ता उनके हाथ से निकलकर किसी 'ट्राइबल` के हाथ में जाये।"

"तुम भी तो कुलीन मुसलमान हो।" नवीन हंसकर बोला।

"हां ठीक कहते हो।" मैंने कहा।

"ये बातचीत कुछ ज्यादा ही निजी स्तर पर आ गयी।" सरयू बोला।

"चलो यार रावत को बताने दो।" मैंने कहा।

"देखो भाई हमारे तो ऐसे संस्कार हैं नहीं. . .तुम मेरे दोस्त हो . . .मैं कभी सोचता भी नहीं कि मुसलमान हो. . .जोशी ब्राह्मण है, ये कभी मेरे मन में आया ही नहीं. . .तो मैं ये सब नहीं सोचता लेकिन यहां मतलब मंत्रालय में. . . र वह रूक गया।

"कहो, कहो, इसमें छिपाने की क्या बात है।" सरयू बोला।

"देखो मेरे बॉस ने पहले मुझसे कहा कि आपको फाइल वर्क नहीं आता. . .आप सीख लें. . .मैंने सीख लिया. . .उसके बाद बोले, देखिए इंग्लिश में ही सब कुछ होता है. . .आपकी लैंग्वेज हिंदी रही है. . .खैर मैंने इंग्लिश नोटिंग सीखी. . .अब रोज कोई न कोई गल़ती निकाल देता है. . मैं फाइलों को विस्तार से पढ़ता हूं तो ये 'कमेण्ट` आ जाता है कि 'अनावश्यक देरी हो गयी` अगर ठीक से नहीं पढ़ता तो ये लिख देते हैं कि फाइल पढ़ी नहीं गयी। एक ही अफसर नहीं. . .मुझे तो लगता है सब के सब. . ." वह खामोश हो गया। पिछली नौकरी उसने छोड़ दी है। अब कोई और नौकरी मिलेगी नहीं। डायरेक्टर के पद पर वेतन अच्छा मिलता है। सरकारी मकान मिला हुआ है। लेकिन . . .

"देख यार मैं. . .जंगली हूं. . .मेरा पिता भेड़ियों से लड़ते हुए मर गया था. . .मैं साला आदमियों से लड़ते हुए नहीं मर सकता।" रावत गिलास खाली कर गया।

"यही प्राब्लम है. . .मध्यवर्गीय संस्कार नहीं है।" नवीन बड़बड़ाया जो रावत नहीं सुन सका।

पता नहीं ये मध्यवर्गीय संस्कार क्या होते हैं? क्या वही तो नहीं होते जो निगम साहब के हैं। उनके बारे में उड़ती-उड़ती खबरें आती हैं। अब तो लोग कहने लगे हैं कि निगम ने अपने पत्नी को राजाराम चौधरी की रखैल बना दिया है और दोनों हाथों से पैसा बटोर रहा है। शिमला में फ्लैट खरीद रहा है। रामनगर में बड़ा-सा फार्म लिया है। अय्याशी में खूब पैसा उड़ा रहा है। हर शाम एक नयी लड़की के साथ गुजरती है। इस तरह शायद वह राजाराम चौधरी से बदला ले रहा है। दिखाना चाहता है कि वह घाटे में नहीं है। अगर उसकी पत्नी किसी की रखैल है तो वह हर रात एक नयी लड़की के साथ सोता है।

निगम कभी छटे-छमाहे मुझे फोन भी कर देता है और बड़े 'ऑफर` देता है। जैसे चलो यार जिम कार्बेट पार्क चलते हैं। 'लैण्ड क्रूसर` ले ली है मैंने, ड्राइवर है। मिनी बार साथ ले लेंगे। नमकीन वग़ैरा साथ होगा। पीते-पिलाते चलेंगे. . .रामनगर में बढ़िया खाना खायेंगे . . .अब इन साले एम.पी., एम.एल.ओ. ने वहां होटल डाल दिए हैं। सब फारेस्ट की लैण्ड पर बनाये हैं। कोई साला कहने सुनने वाला नहीं है। जंगल में घूमेंगे. . .सुबह-सुबह तुम्हें चीता दिखायेंगे. . .उसके इस तरह के आफरों को मैं टाल देता हूं।

२०

जगमग जगमग किसी चीज़ पर आंख ही नहीं टिकती। मौर्या शेरेटन के मुग़ल हाल में सब कुछ चमचमा और जगमगा रहा है। झाड़-फानूस इतने रौशन है कि उससे ज्यादा रौशनी की कल्पना नहीं की जा सकती। चार सौ लोगों को समेटे लेकिन मुगलहाल फिर भी छोटा नहीं लग रहा है। नीचे ईरानी कालीन है जिसमें पैर धंसे जा रहे हैं। दीवारों पर ब्रिटिश पीरियड की बड़ी-बड़ी ओरिजनल पेन्टिंग है। चारों कोने में बार है और सफेद ड्रेस पहने वेटर इधर से उधर डोल रहे हैं। हाल में बीचों-बीच शकील खड़ा है. . .बल्कि मुहम्मद शकील अंसारी, यूनियन कैबनेट मिनिस्टर, सिविल एवीएशन. . .उसने बंद गले का सफेद सूट पहन रखा है जो तेज़ रोशनी में नुमायां लग रहा है। सफेद फ्रेंच कट दाढ़ी, आंखों पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा और होंठों पर विजय के गौरव में डूबी मुस्कुराहट. . .

"आज साला रगड़ रगड़ कर नहाया होगा. . .फेशल करायी होगी।" अहमद ने मेरे कान में कहा।

"वैसे जमता है साला।"

"नेता ऐसे ही होते हैं।"

"यहां तो पूरी भारत सरकार मौजूद है।"

शकील को उसके मंत्रालय के ऊंचे अफसर घेरे खड़े हैं। वे यह जानना चाहते हैं कि मंत्री महोदय किस आदमी से कैसे मिलते हैं। मिनिस्ट्री का सेक्रेटरी टेढ़ी-टेढ़ी आंखों से हर उस आदमी को देखता है जो शकील को बधाई देने जाता है। एक अलग कोने में एम.ई.ए. के सेक्रेटरी और दो ज्वाइंट सेक्रेटरी खड़े हैं उनके साथ कैबनेट सेक्रेटरी और शूज़ा दीवान खड़ी हैं। होम मनिस्टरी के भी लोग मौजूद हैं. . .कारपोरेशन्स के चेयरमैन, सुप्रीम कोर्ट के जज, जाने-माने एडवोकेट, यूनीवर्सिटियों के वायस चांसलर, बड़े उद्योगपति, कला, संस्कृति, फिल्म और एन.जी.ओ. क्षेत्र के नामी गिरामी लोग, सब देखे जा सकते हैं।

शकील के कान में किसी ने कुछ कहा और वह तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ने लगा।

"लगता है पी.एम. आ रहे हैं", अहमद बोला।

"पी.एम. का आना तो बड़ी बात है। आमतौर पर यह प्रोटोकाल के खिलाफ भी है।"

'प्रोटोकाल` धरा रह जाता है जब पावर ही पावर नज़र आती है।

"वो बायीं तरफ देख रहे हैं सोफे पर बैठे दाढ़ी वाले।"

"हां यार।"

"शकील ने पूरे मुल्क के प्रभावशाली मौलवियों को बुला रखा है। इनके हाथ में है मुस्लिम वोट. . .यही वजह है जो प्रधानमंत्री आ रहे हैं।

कुछ देर बाद सिक्युरिटी के घेरे में पी.एम. के साथ-साथ शकील अंदर आया। दो भूतपूर्व प्रधानमंत्री पी.एम. की तरफ बढ़े, दो चार पुराने समाजसेवी भी आगे बढ़ने लगे। कैमरा मैन धड़ाधड़ फ्लैश चमकाने लगे। वेटर ट्रे लेकर पी.एम के पास गया पर उन्होंने हाथ उठाकर इंकार कर दिया। भरतनाट्यम नर्तकी प्रधानमंत्री के पास पहुंच गयी और उनसे गले मिल ही ली। प्रधानमंत्री के बूढ़े और जर्जर चेहरे पर संतोष और खुशी की छाया तेज़ी से आई और चली गयी। चार-पांच मिनट के बाद प्रधानमंत्री चले गये।

"चलो अब साले के पास चलते हैं।"

"क्या करोगे यार. . .दूसरों को मौका दो. . .हम तो मिलते ही रहते हैं", मैंने कहा।

"हाय अहमद. . ." मैंने देखा कि शूज़ा दीवान ने अहमद की गर्दन झुकाकर उसके गाल पर प्यार जड़ दिया। अहमद ने भी शिष्टतावश उसका गाल चूम लिया।

मैंने अहमद की तरह देखा। पचपन साल की उम्र में भी वह उतना ही बड़ा 'किलर` लगता है जितना पच्चीस साल की उम्र में लगता था। उसके घुँघराले बाल, चेहरे पर झलकता गुलाबी रंग, क्लीन शेव, बहुत कायदे से पहने गये शानदार विदेशी कपड़े और जानलेवा मुस्कुराहट कम से कम चालीस पार कर चुकी शूज़ा दीवान को दीवाना बना देने के लिए काफी है।

मैं धीरे से खिसक गया। लगता था शूज़ा उसके साथ कुछ बात करना चाहती है। मैंने देखा अहमद ने शूज़ा की कमर के गिर्द हाथ डाल दिया है और वह बहुत प्रसन्न है। दोनों पता नहीं किससे मिलने जा रहे हैं। मैं अखबार वालों की टोली में आ गया। अचानक सरयू दिखाई दिया।

"ओहो. . .चलो तुमसे मुलाकात तो हुई।"

"यार. . .क्या बताऊं. . ." वह शर्मिन्दा सा होकर बोला "हमारे सम्पादक महोदय की "लाइट लेट हो गयी है. . .उन्होंने मुंबई से फोन करके कहा कि तुम वहां चले जाओ और अखबार की तरफ से 'बुके` दे दो. . .ये भी कहा कि यह बहुत ज़रूरी है।"

"ज़रूरी तो है ही है यार. . .जहां पी.एम. आये हों. . .वह जगह।"

वह मेरी बात काटकर बोला "साजिद मुझे इस सबसे घृणा है", मैंने देखा उसे कुछ चढ़ चुकी थी।

"छोड़ो यार इन सबको यहां बैठो" मैं उसे कोने में सोफे पर घसीट लाया।

"बहुत दिनों के बाद मिले हो. . .क्या ज़माना था यार काफी हाउस वाला. . .रोज़ शाम हम लोग मिला करते थे।"

"हां. . .वो हमारी ज़िंदगी का सबसे शानदार दौर था। हालांकि पैसे नहीं होते थे। पेट खाली रहता था, महीने में एक चप्पल घिस जाती थी लेकिन फिर भी. . ."

"और आजकल क्या हो रहा है? कोई कह रहा था तुम्हारा पांचवां संग्रह आ रहा है?"

"हां. . .लेकिन तीन-चार महीने लग जायेंगे।"

"नाम क्या रखा है।"

"कुछ बताओ यार. . .अभी तक फाइनल नहीं किया है।"

"इन्हीं दिनों कविता छपी है 'चुप की आवाज़` यही रख दो संग्रह का नाम।"

नीले सूट में एक अधिकारी आया बोला, "सर आपको साहब के साथ ही जाना है।" उसने कहा और तेज़ी से चला गया। मेरे जवाब का इंतिज़ार भी नहीं किया।

"अब देखो. . . ये बदतमीजी है या नहीं?" सरयू बोला।

"छोड़ो यार. . .ये लोग हमें हमारी जिंदगी जीने ही नहीं देते। टालो. . .कविता संग्रह के नाम की बात हो रही थी।"

"हां, 'चुप की आवाज` पर सोच भी रहा हूं. . .अच्छा यार बढ़िया खबर यह है कि मेरी कविताओं का फ्रेंच अनुवाद पेरिस से छप गया है।" सरयू ने बताया।

"अरे वाह. . .अनुवाद किसने किया है?"

"लातरे वाज़ीना. . .वहां हिंदी पढ़ाती है।"

पार्टी अपने ज़ोर पर आ गयी थी लेकिन शकील को छोड़कर सभी महत्वपूर्ण लोग जा चुके थे। शकील अपने मंत्रालय के अधिकारियों के सुरक्षा घेरे में अब भी लोगों से मिल रहा था।

"रावत का क्या है?"

"यार उसका मामला बड़ा अजीब हो गया है?"

"कौन? उसके बॉस?"

"हां यही समझ लो. . .चार पांच बड़े खूसट, चंट और चालाक . . .बल्कि जातिवादी किस्म के ब्राह्मणों ने उसे घेर रखा है. . .मैं भी यार ब्राह्मण हूं. . .लेकिन उस तरह के ब्राह्मणों से भगवान बचाये।"

"क्या हुआ?"

"यार सब मिलकर उसके साथ खतरनाक किस्म का खेल खेल रहे हैं . . .उस पर इतना काम लाद दिया है जिसे चार आदमी भी नहीं कर सकते हैं. . .जब काम पूरा नहीं हो पाता तो उस पर लिखित आरोप

लगाते हैं कि आप 'अयोग्य` हैं. . .जबकि वह नौ नौ बजे रात तक दफ्तर में बैठा रहता है. . ..जल्दी में वह कोई काम कर देता है तो उसकी गल़ती पकड़ते हैं और उसके लिए दफ़्तरी डांट-फटकार वगै़रा होने लगती है. . .

"यार रावत को चाहिए था कि इन सालों को पटा लेता।"

"उसे तुम जानते हो. . .वह दो ही शब्द जानता है अच्छा और बुरा. . .उसकी नज़र में जो बुरा है उसके साथ वह प्यार, मुहब्बत, सम्मान का ढोंग नहीं रचा सकता. . .।"

"नवीन का क्या हाल है?"

"सरकारी नौकरी में रावत जितना 'अनफिट` है, नवीन उतना ही 'फिट` है।" सरयू हंसकर बोला।

"तुमसे मुलाकात होती है?"

"हां कभी-कभी आफिस चला आता है. . .घण्टों बैठा गप्प मारता रहता है।"

"कुछ लिख रहा है।"

"पन्द्रह साल से उसने कुछ नहीं लिखा. . .अब तो सिर्फ जीभ के बल पर दनदनाता है। कितनी बार कहा, यार नवीन कुछ लिखो। तुम इतनी अच्छी फिल्म समीक्षाएँ करते थे, कविताएं लिखो. . .बस हां-हां करके टाल देता है. . .ऑफिस के कायदे कानून का जानकार बन गया है, कहां से कितना पैसा मिल सकता है, यह उसकी उंगलियों पर रहता है।"

किसी दिन आ जाओ तुम लोग तो टेरिस पार्टी रहे।"

"तुम बताओ. . .तुम्हारा क्या हाल है?"

"अखबार का तुम जानते ही हो. . .यहां मेरा होना न होना बराबर है. . .न तो वे लोग मुझसे काम लेते हैं न मैं करता हूं. . .बस यही सोचता रहता हूं कि काम क्या किया, जीवन क्या जिया. . .बर्बाद किया. . ."

"नहीं यार तुम. . ." वह रुक गया। अहमद हमारी तरफ आ रहा है।

"यार अब तो यहां से खिसकना चाहिए।"

"शकील के साथ चलना है। कह रहा था तुम दोनों धोखे से भी यहां खाना न खाना। मैंने लखनऊ से काकोरी कबाबची बुलवाया है।"

"वाह साले की ठसकों में तरक्की हो रही हैं", अहमद बोला।

"अब तो दुनिया के किसी भी कोने से सीधे माल मसाला आया करेगा. . .एयर इंडिया अपने मिनिस्टर्स की अच्छी देखभाल करता है। योरोप से चेरी आयेंगी. . .पेरिस से 'चीज़` आयेगी. . .मास्को से बोद्का. . .

"यही नहीं . . .ये तो सब हाथी के दांत हैं. . .तुम तो जानते ही होंगे. . .नये एयर क्राफ्ट खरीदे जाने हैं।"

बेडरूम में अखबारों का ढ़ेर पलटने लगा। मंत्री मण्डल की हेडलाइन है, दूसरी सेकेण्ड लीड क्रिकेट मैच में हमारी जीत की है, उसके बाद योरोपियन यूनियन ने सौ मिलियन यूरो पावर जनरेशन के लिए आफर किया है. . .सब अच्छी खबरें हैं। आजकल हम लोगों को मैनेजमेण्ट की हिदायत है कि कम से कम पहले पेज पर अच्छी खबरें छापें। एडीटर और न्यूज़ एडीटर इसका पूरा ध्यान रखते हैं। कहीं धोखे से यह न छान देना कि सात प्रांतों में अकाल की स्थिति है। कहीं भ्रष्टाचार की खबरें न छप जायें पहले पृष्ठ पर. . .हां तीसरे पेज पर अपराध की बहार है. . .लौट फेर का सब अख़बार यही कर रहे हैं . . .ये क्यों निकल रहे हैं? इसका उद्देश्य क्या है? ये अपने को नेशनल डेली कहते हैं। 'नेशन` इन खबरों में कहां है? अख़बार के दफ्तर में मैं ऐसी बहसें बहुत कर चुका हूं पर कोई नतीजा नहीं निकला। अगर ज्यादा कुछ करूं तो नौकरी से हाथ धोना पड़ सकता है। यही अच्छा है कि उस ज़माने की नौकरी है जब परमानेंट नौकरी दी जाती थी। आजकल की तरह 'काण्ट्रेक्ट` वाली नौकरी होती तो कब का निकाल बाहर किया जाता। मैनेजमेण्ट जानता है कि कुछ साल की बात है। साला रिटायर होकर घर बैठ जायेगा। इससे पंगा क्यों किया जाये। तीस साल की नौकरी में इसके भी सम्पर्क बन गये हैं। मंत्रियों के फोन आयेंगे। पचड़ा होगा।

इससे अच्छा है पड़ा रहने दो। सनकी है। सनक में निकल जाता है ऐसे इलाकों में जहां साधारण रिपोर्टर तक जाना न पसंद करेगा। ठीक है थोड़ा खिसका हुआ है। पर कभी-कभी ऐसे लोगों की भी ज़रूरत पड़ जाती है।

सुप्रिया की याद आ गयी। उस प्रसंग को निपटे भी कम से कम पांच साल हो गये हैं। लगता है संबंधों के बनने के पीछे न कोई कारण होता है। और न बिगड़ने की कोई वजह होती है। सुप्रिया से मेरे संबंध बिगड़े भी तो नहीं। बस ठण्डे पड़ते गये। हो सकता है उसका दुख भारी हो गया हो। हो सकता है मुझे ऊब गयी हो, हो सकता है इसकी निरर्थकता का एहसास हो गया हो या हो सकता है सेक्स की ख्वाहिश ही कम होती चली गयी हो. . .लेकिन अब भी मैं उसे फोन कर लेता हूं। वह भी कभी काल करती है। बहुत सालों से हम मिले नहीं हैं लेकिन अगर मिलेंगे तो हो सकता है हमारी बीच शारीरिक संबंध भी बन जाये। मेरे ख्याल से सुप्रिया अब पैंतालीस की होगी और मैं पचास पार कर गया। पहले जैसा जोश और वलवला तो नहीं है लेकिन फिर भी मैं सुप्रिया की प्रतीक्षा करता हूं. . .सोचता हूं जब तक कर सकूँ अच्छा ही है।

सुबोध कुमार चट्टोपाध्याय यानी अपने पिता के स्वर्गवास के बाद सुप्रिया की मां अकेली हो गयी थीं और किसी भी कीमत पर अलीमउद्दीन स्ट्रीट वाले फ्लैट न छोड़ना चाहती थी। इसलिए सुप्रिया को कलकत्ता जाना पड़ा था। वहां उसे एक वीकली में नौकरी मिल गयी थी।

आज इस वक्त उसकी याद आई तो आती चली गयी। दस-बारह साल बहुत होते हैं। एक बज चुका है। सुप्रिया को कलकत्ता फोन नहीं किया जा सकता वह आफिस में होगी लेकिन हीरा को लंदन फोन किया जा सकता है। अभी लंदन में सुबह होगी।

२१

इतने सालों में मेरा शहर बहुत नहीं बदला है। हां, पुरानी मण्डली बिखर गयी है। कलूट नहीं रहे। मुख्तार 'एलकोहलिक` हो गया। सुबह डेढ़ पाव दारु पीकर चचा के होटल आ जाता है और दोपहर तक अखबार पढ़ा करता है, दोपहर को खाना खाकर सो जाता है। शाम फिर शराब शुरु हो जाती है। अब उसका पार्टी से कोई ताल्लुक नहीं है। यूनियनें सब ठप्प हो गयी हैं। अतहर की लखनऊ में नौकरी लग गयी है। वह यहां कम भी आता है। उमाशंकर ने आटा चक्की खोल ली है। पार्टी में अब भी हैं और जितना हो सकता है सक्रिय रहते हैं। कामरेड आर.के. मिश्रा अब भी पार्टी सेक्रेटरी हैं। बूढ़े हो गये हैं। दांतों में बड़ी तकलीफ रहती है। पंडित दीनानाथ गांव जाकर रहने लगे हैं। शहर बहुत कम आते हैं। सूरज चौहान ने पार्टी छोड़ दी थी। कामरेड बली सिंह का स्वास्थ्य बहुत गिर गया है। दिल के दो आपरेशन हो चुके हैं। 'आबरु` बरेलवी केवल प्रैक्टिस करते हैं। साम्प्रदायिक पार्टी ने हिन्दू के नाम पर जातिवादी दलों ने जातियों के नाम पर अपने वोट बैंक बना लिए हैं।

मैं मकान की मरम्मत, देखभाल, टैक्स के नाम पर इतना पैसा भेज देता हूँ। घर में खाना पकाने वाला बुआ का लड़का भी मल्लू मंजिल में आ गया था। मजीद अपनी पत्नी अमीना और आधा दर्जन बच्चों के साथ रहता है।

केसरियापुर वाले चौरे में रहमत का छोटा बेटा अशरफ रहता है। रहमत को गुजरे एक ज़माना हुआ। वहां खेती बटाई पर ही होती है। पहले सारा अनाज घर आ जाया करता था और खाला वगैरा के काम आता था। अब बेच दिया जाता है और अशरफ उसे पैसे से मल्लू मंजिल की

मरम्मत वगैरा करा देता है। गुलशन अक्सर बड़बड़ाता रहता 'अरे एक बोरा लाही तो आ ही सकती है. . . दो मन अरहर आ जाये तो यहां साल भर चले।` मैं उसे कभी-कभी उसे केसरियापुर भेज भी देता हूं और वह अपने हिसाब से ग़ल्ला ले आता है।

ऐसा नहीं है कि अपने वतन में अब मैं बिल्कुल अजनबी हो गया हूं। जब जाता हूं पुराने परिचित और नये लड़के मिलने आ जाते हैं। मैं भी कलक्ट्रेट का एक चक्कर मार लेता हूं। पुराने लोग मिल जाते हैं। ताज़ा हालात की जानकारी हो जाती है। चूंकि शहर में सभी जानते हैं कि मैं 'द नेशन` में हूं इसलिए कभी-कभी छोटे-मोटे काम भी बता देते हैं जिन्हें मैं कर देता हूं।

अगर मैं चाहूं तो वहां बराबर जा सकता हूं लेकिन हर बार वहां जाकर तकलीफ होती है। गुस्सा आता है। दुख होता है। निराशा होती है। ऐसा नहीं है कि इस तरह के छोटे शहर या कस्बे मैंने देखे नहीं हैं। उम्र ही गुज़री रुरल रिपोर्टिंग करते करते। देश का शायद ही कोई ऐसा ग्रामीण क्षेत्र हो जो न देखा हो। लेकिन इस शहर में आकर दुख इसलिए होता है कि मैंने चालीस साल पहले एक छोटा, गरीब पर साफ-सुथरा शहर देखा है जहां सिविल सोसाइटी अपनी पूरी भूमिका निभाया करती थी। आज यह एक गंदा, ऊबड़ खाबड़, सड़कों पर कूड़े के ढ़ेर और गड्ढ़ों वाला एक ऐसा शहर बन गया है जहां सिर्फ पस्ती दिखाई देती है। जो नयी इमारतें बनी हैं वे भी दस-पन्द्रह साल में बूढ़ी और

बेढंगी लगने लगी हैं। क्योंकि ठेकेदारों और सरकारी कर्मचारियों ने इतना पैसा खाया है कि जिसकी कोई मिसाल नहीं दी जा सकती। नगरपालिका की खूबसूरत इमारत के अहाते में सड़क की तरफ दुकानें बना दी गयी हैं जिसके कारण सौ साल पुरानी ऐतिहासिक इमारत छिप गयी है। इस इमारत की भी हालत खराब है। कहा जा रहा है इसे गिराने की बात चल रही है। जिला अस्पताल साफ-सुथरा हुआ करता था अब वह गंदगी का अड्डा है और मरीज़ों की भीड़ लगातार डाक्टरों की प्रतीक्षा करती रहती है जो प्राइवेट क्लीनिकों के काम करते हैं। सरकार स्कूलों की अंग्रेज़ों के ज़माने में बनी इमारतों का हाल बेहद खराब है। रख रखाव की बात छोड़

दें, फुलवारी और लान को जाने भी दें तो इमारत का प्लास्टर गिर रहा है। दसियों साल से पुताई नहीं हुई है। यह देखकर विश्वास नहीं होता कि चालीस साल पहले यह एक 'वेलमेनटेण्ड` और खूबसूरत स्कूल हुआ करता था। सड़कों पर कूड़े के बड़े-बड़े ढेऱ लगे रहते हैं और नालियां नाले कीचड़, गंदगी, मच्छरों से बजबजाते रहते हैं। कहते हैं नगरपालिका में जब भी 'ड्रेनेज सिस्टम` बनाने की बात होती है दो गुटों में लड़ाई हो जाती है और उसे मंज़ूरी नहीं मिल पाती।

आबादी बेहिसाब बढ़ी है। गांवों में अपराध और जतीय तनाव इतना ज्यादा हो गया है कि बड़ी संख्या में लोग शहर आ गये हैं। इसके साथ रिक्शों की संख्या बढ़ती चली गयी है। शहर के किनारों पर जो नयी बस्तियाँ बनी हैं उनमें कलेक्ट्रेट के पास बनी धनवान वकीलों और व्यापारियों की कोठियों के अलावा दसियों 'सल्म एरिया` बन गये हैं। बच्चे-पक्के मकान, अधूरे मकान, गड्डमड्ड मकान, पतली-पतली गलियां, नालियां, कूड़े के ढेऱ और गलियों में बेहिसाब ग़रीब बच्चे नज़र आते हैं। मोहल्ले की गलियां कुछ पक्की हो गयी हैं जिन्हें विधायकों ने अपनी निधि से इन्हें पक्का कराया है। पता नहीं विधायकों और सांसदों की निधि सड़कों पर क्यों नहीं लग सकती?

पुराने प्राइवेट कालिजों की मैनेजिंग कमेटियों पर उन लोगों ने कब्ज़ा जमा लिया है जिन्होंने अपराध के माध्यम से व्यापार में मुनाफा कमाया था और अब अपनी सामाजिक हैसियत बना रहे हैं। ग्राम पंचायतों और जिला पंचायत पर दंबगों का कब्ज़ा है। राजनीति अपराधियों के हाथ में खिलौना बन गयी है। हर जाति के अपने-अपने गुण्डे, अपराधी और बदमाश हैं जिनका जाति विशेष में बड़ा सम्मान होता है। जिसने जितनी हत्याएं की हैं उसका पद उतना ऊंचा समझा जाता है। 'आबरु` बरेली ने एक बार बताया कि उनके पास कत्ल का एक केस आया। कातिल पुराना हत्यारा और अपराधी था। उससे वकील साहब ने पूछा 'तुमने क्यों गोली चलाकर किसी अजनबी को मार डाला`। उसने जवाब दिया वकील साब देखना चाहता था कि दोनाली चलती भी है या नहीं।` मतलब यह कि अपराध करना अपराध नहीं है। हर चीज़ का पैसा तय

है। एफ.आई.आर. बदलना है, गवाह तोड़ने हैं, फाइल में कागज़ लगवाना है, तारीख बढ़वानी है, सम्मन तामील कराना है या नहीं कराना, बड़े साहब को पैसा पहुंचाना है। बताया गया कि कुछ बड़े साहब तो दोनों पार्टियों को बुला लेते हैं और दो टूक कहते हैं ये फैसला लिखवाना हो तो इतना, यह लिखवाना हो तो इतना। अब यहां पैसे का खेल शुरु हो जाता है। जो धनवान है वह जीत जाता है। यही वजह है कि अगर किसी चीज़ की 'वैल्यू` बढ़ी है तो वह पैसे की। कैसे आता है? किसी तरह आता है? ये सवाल ही नहीं बचे। सवाल यह है कि जल्दी से जल्दी कितना आता है।

रात के अंधेरे में बिस्तर पर लेटकर कभी-कभी ख्य़ाल आ जाता है कि इतना जीवन गुज़ारा क्या किया? मतलब क्या करना चाहता था और क्या किया? लेखक बनना चाहता था। अगर लेखक ही बन गया होता तो कुछ लिख-लिखाकर संतोष हो जाता। वह भी नहीं हो पाया। पत्रकार बन गया, लेकिन किया क्या? ग्रामीण क्षेत्रों के रिपोर्टें

छपवाई, पर उनसे क्या हुआ? एक ज़माना था जब सोचता था कि पूरा संसार बदल जायेगा। अच्छा हो जायेगा। अब लगता है पूरा संसार और ज्यादा बिगड़ गया है। पहले सोचता था पूंजी का दबाव कम होगा. . .आदमी राहत की सांस ले पायेगा. . .पर हुआ इसका उलटा. . .सोचता था एशिया के देश खुशहाल होंगे. . .साम्राज्यवाद की गिरफ्त से छूटे देश आगे बढ़ेंगे। लेकिन ऐसा भी नहीं दिखाई पड़ता। देश में क्या है आज? तरक्की और प्रगति के आंकड़े किसकी सम्पन्नता दर्शाते हैं क्योंकि बहुसंख्यक जनता तो उसी तरह चक्की के पाटों के बीच है जैसे पहले थी और सोने पर सुहागा यह कि धर्मान्धता और जातीयता ने मुद्दों को ढांक लिया है। अब सब कुछ साम्प्रदायिकता, जातीयता, प्रांतीयता के आधार पर नापा जाता है। यही वजह है कि मुख्य मुद्दों पर कोई बात नहीं करता। लोकतंत्र का विकास इस तरह हुआ कि आम आदमी की आवाज़ ज्यादा कमज़ोर पड़ी है। आज चुनावी लेख पैसा, सम्प्रदाय, जाति का खेल बन गया है। ऐसे हालात में क्या किया जा सकता है? मैं क्या करूं? कुछ न करने से यह अच्छा है कि कुछ किया जाये, चाहे उसमें कमियां हों, चाहे गल़तियां हों,

चाहे 'लूपहोल` हों, लेकिन कुछ किया जाना चाहिए। क्या? क्या कोई बना बनाया रास्ता है? कोई राजनैतिक दल, कोई विचारधारा?

"यार ये खेल तो तुम खतरनाक खेल रहे हो", मैंने अहमद से कहा।

"खतरा तो कुछ नहीं. . .बस थोड़ी दिक्व़फ़त होती है", वह बोला और शकील हंसने लगा।

"इससे संभल नहीं रही है", शकील ने आंख मारी।

"बात सीरियस है यार. . .अबे तुझे मालूम है वह कैबनेट सेक्रेटरी की गर्लफ्रेण्ड है", मैंने कहा।

"ये कौन नहीं, पूरी सरकार जानती है", अहमद ने कहा।

"उसे पता चल गया तो तुम्हारा क्या होगा ?"

"क्या वो उसे सती-सावित्री मानता है?"

"फिर वही बेतुकी 'लाजिक`. . .अरे यार 'इगो` भी तो होता है

"देखो, मेरे सामने और कोई रास्ता है नहीं. . .मैं ये मानता हूं कि मेरी ज़िंदगी में हमेशा औरतें काम आयी हैं. . .और ये भी मानता हूं कि अब मतलब पचपन साल का हो जाने के बाद. . .या समझो. . . चार पांच साल बाद मेरी यू.एस.पी. खत्म हो जायेगी. . .समझे।"

हम तीनों हंसने लगे।

"शकील से कहो", ये कुछ करेगा।``

"यार मेरी मिनिस्ट्री की बात होती तो जो कहते कर देता. . .पर मामला एम.ई.ए. का है", वह बोला।

"कहीं से दबाव डालो।"

"मिनिस्टर तो उल्लू का पट्ठा है. . .सेक्रेटरी के आगे उसके एक नहीं चलती. . . वह क्या करेगा?"

"देखो. . .बात साफ है. . .शूज़ा दीवान मेरे बारे में कैबनेट सेक्रेटरी से बात करेगी. . .उनकी बात मेरा सेक्रेटरी टाल नहीं सकता. .यार मैं 'एम्बेस्डर` हो जाऊंगा तो तुम लोगों को भी ऐश करा दूंगा. . .

वैसे इस सरकार का कोई भरोसा नहीं है. . .जल्दी करना चाहिए।"

"सरकार की तुम फिक्र न करो. . .चलेगी. . .", शकील बुरा मान कर बोला।

"ठीक है भई. . .

-तो अब पोज़ीशन क्या है?"

"मैं शूज़ा से मिलता हूं. . .अभी तो मैंने कुछ कहा नहीं है।"

"कैसी है?"

"अरे यार खूब खेली खाई है. . .अब तुम समझ लो. . .करोड़ों की प्रापर्टी बनाई है इसने. . .और बस वैसे ही. . .इधर का माल उधर करने में।"

"तो आगे क्या करोगे?" मैंने पूछा।

"यार ये इस काम में माहिर हैं. . .अपने आप सेट कर लेगा। ये चाहे तो कोई भी औरत इसके लिए ख़ुदकुशी कर सकती है", शकील ने कहा।

"ये न कहो यार. . .औरतों ने ही इसे चूना लगाया है. . ."

"इसने भी तो चूना लगाया है. . .बल्कि इसने इम्पोरटेड चूना लगाया है", वह हंसने लगा।

"तीन साल का टिन्योर 'पोस्टिंग` होती है न एम्बेस्डर की?"

"हां. . .तीन साल. . ."

"तुम लोग भी जिस तरह 'टैक्स पेयर` का पैसा बरबाद करते हो वह 'क्रिम्नल` है", मैंने अहमद से कहा।

"अब तुम कहते रहो. . .उससे क्या होता है. . .ये तो साले तुम अपने अखबार में भी नहीं लिख सकते" अहमद ने मेरी दुखती रग पर हाथ रख दिया।

"हां जानता हूं. . .ये सब अखबार में नहीं लिख सकता. . .अखबार में ये भी नहीं लिख सकता कि राष्ट्रपति तीन सौ कमरे के पैलेस में क्यों रहता है? हज़ारों एकड़ उपजाऊ जमीन पर बड़े-बड़े लॉन और मुगल़ गार्डेन बनाने की क्या

ज़रूरत है. . .करोड़ों लोग लगातार अकाल, बाढ़ और सूखे से मरते रहते हैं और राजधानी में बारह महीने शहनाई बजती रहती है", मैंने कहा।

"ये रूरल रिपोर्टिंग से तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है. . .जो तुम चाहते हो वो तो समाजवादी देशों में भी होता है. . .देखो यह तो देश के गौरव का सवाल है, प्रतिष्ठा का सवाल है, सम्मान की बात है. .हमें इस संसार में रहना है तो यहां. . ."

मैं शकील की बात काटकर बोला "ये बताओ ये देश किसका है?"

"सबका है।"

"उसका भी है जो अकाल में मर रहा है. . .उसका भी जो बाढ़ में बह गया. . .उसका भी जो. . . अगर यह देश उनका भी है तो उन्हें क्या मिल रहा है जिनका देश है. . .बहुसंख्यक जनता।"

"इन सब बहसों से कुछ नहीं होगा। अहमद बोला "चलो . . .खाना लगवाओ।"

शिप्रा को मेरे सख्त़ निर्देश हैं कि जब भी कोई मुझसे मिलने आये, उसे आने दिया जाये। लोग जानकारियों का ख़ज़ाना हैं और पता नहीं किसके पास क्या मिल जाये। मैंने यह भी कह रखा है कि ये सवाल भी न किए जायें कि क्या काम है? और कहां से आये हैं? मेरे ख्याल से ये सवाल मानवीय गरिमा के प्रतिकूल हैं। आदमी होना अपने आप में बहुत से सवालों का जवाब है।

आफिस में मैं जब तक रहता हूं मिलने वाले लगातार आते रहते हैं। दूरदराज इलाकों से आये लोग वहां के हालचाल बताते हैं मैं जानता हूं कि जिस तरह मैं अखबार में सब कुछ नहीं लिख सकता उसी तरह दूसरे अखबार भी बहुत कुछ नहीं छाप सकते। इसलिए आज भी जानकारी विश्वस्त जानकारी का सूत्र मनुष्य ही है। संचार क्रांति के इस युग में आदमी से आदमी का मिलना उतना ही ज़रूरी है जितना हज़ारों साल पहले था।

दूरदराज़ इलाकों से लोग, छात्र, स्वतंत्र लेखन करने वाले पत्रकार, एन.जी.ओ., राजनैतिक कार्यकर्ता, संगठनों और यूनियनों के लोगों से मिलता रहता हूँ। अखबार के दूसरे वरिष्ठ लोग यह देखकर मुंह बनाते हैं और ऐसी अटकलें लगाते हैं कि मेरा बड़ा मनोरंजन होता है। कहते हैं अली साब चुनाव लड़ना चाहते हैं या कोई कहता है अपनी पार्टी बनाना चाहते हैं। एक अफवाह यह भी उड़ाई थी कि सरकार में कोई बड़ा पद प्राप्त करना चाहते हैं। बहरहाल मैंने इनमें से किसी बात का खण्डन नहीं किया।

जहां तक अखबार की राजनीति मतलब अन्दरुनी उठा-पटक वाली राजनीति का सवाल है उससे मैं बहुत दूर हूं। पक्की नौकरी है कोई निकाल सकता नहीं। तरक्की मुझे चाहिए नहीं क्योंकि वह मेरे ख्याल से अर्थहीन है। मैं अगर एसोसिएट सम्पादक के रूप में रिटायर होता हूं या चीफ एडीटर के रूप में तो उससे क्या फ़र्क पड़ता है? मानता हूं कि अपना संतोष और अपने हिसाब से अपनी प्रसांगिकता से बड़ी कोई चीज़ नहीं है।

"आपको कल प्रधानमंत्री के साथ श्रीनगर जाना है", शिप्रा ने ऑफिस में घुसते ही मुझे बिग-बॉस का आदेश सुना दिया।

"क्यों क्या और कोई नहीं है।"

"बड़े बॉस मिनिस्टर फॉर एक्सट्रनल अफेयर्स के साथ चीन गये हैं, त्रिवेदी जी छुट्टी पर हैं।"

"हां तो अब मैं ही बचता हूं. . .ठीक है पी.एम. ऑफिस फोन करके प्रोग्राम पूछ लो। घर फोन करके गुलशन से कहो सामान पैक कर दे और ड्राइवर से कह दो कि "लाइट टाइम पर घर जा जाये।"

"मैंने यह सब काम कर दिए हैं मिस्टर अली. . .ये देखिए प्रोग्राम. . .", वह बोली।

"ओ गॉड शिप्रा. . .इतनी स्मार्ट नेस. . .तुम्हें मेरे जैसे आदमी की सेक्रेटरी नहीं किसी मल्टीनेशनल कारपोरेशन के सी.ई.ओ. की सेक्रेटरी होना चाहिए", मैंने कहा और वह हंसने लगी। उसके सफेद दांत

गुलाबी होंठ। फिर मैंने सोचा कि वह बहुत सुंदर है. . .ताज़ा है. . .ताज़गी उसके व्यक्तित्व से पानी की गरम फुहार की तरह बरसती रहती है. . .वाह इस उम्र में खूबसूरती को 'एप्रीशिएट` करने का ये जज्बा. . .सच पूछा जाये तो पचास साल का हो जाने के बाद ही यह पता चलता है कि औरतें कितनी सुंदर होती हैं उससे पहले तो आदमी जल्दी से होता है। सुंदरता को देखते और सराहने के लिए वक्त चाहिए, धैर्य चाहिए, अनुभव चाहिए, परिपक्वता चाहिए. . .कहीं ये न हो कि तुम बुढ़ापे में शायरी शुरू कर दो. . .।

प्रधानमंत्री के साथ श्रीनगर गया ऊब और निरर्थकता का भाव लेकर लौट आया। सोचा कि क्या दूसरे पत्रकारों को भी यही लगा होगा? हो सकता है लगा हो लेकिन जिस तरह मैं यह सब लिख नहीं सकता, कह नहीं सकता उसी तरह वे भी मजबूर होंगे। यह भी हो सकता है कि अपना महत्व बनाये रखना जरूरी होता है।

२२

मेरी टेरिस पार्टी में एक मेम्बर नहीं है। उसका फोन आया है कि वह बस आ ही रहा है। शकील के इसरार पर हम शुरू कर चुके हैं। गुलशन कबाब ले आया है।

"यार ये अहमद कह रहा था कि उसे दिल्ली पेरिस-दिल्ली दो कम्पलिमेण्ट्री टिकट दिला दूं।"

"क्यों?"

"शूजा के साथ एक हफ्ते को पेरिस जाना चाहता है।"

"लगता है अभी पूरी तरह काबू में नहीं आई है।"

"वो तो जो है जो है. . .मैं परेशानी में पड़ गया हूं।"

"क्या परेशानी?"

"यार टिकट तो मिल जायेंगे. . .लेकिन अगर कैबनेट सेक्रेटरी को यह पता चल गया तो पता नहीं उसका क्या 'रिएक्शन` हो?"

"क्या होगा?"

"कुछ भी हो सकता है।"

"फिर भी तुम क्या सोचते हो?"

"बहुत बुरा मानेगा. . .रिपोर्ट ये हैं कि दोनों में बहुत निकटता हो गयी है। अलवर के किसी 'रिज़ाट` में जाते हैं. . ."

"हां ये तो हो सकता है. . ."

अहमद आ गया और बातचीत में शामिल हो गया।

"देखो वैसा कुछ नहीं होगा. . .एक हफ्ते की बात है. . .शूज़ा ने उन्हें बता दिया है वह अपनी बहन से मिलने इंग्लैण्ड जा रही है... वहां से कुछ दिन के लिए पेरिस जायेगी. . .यार तुम्हें पेरिस में ठहरने का भी इंतिजाम करना होगा", उसने शकील से कहा।

"लो सोने पर सुहागा. . .बहुत गड़बड़ हो जायेगी।"

"अमां तुम बेकार में डर रहे हो", वह बोला।

"तुम तो जानते ही हो कि बड़े लोगों की बेटियों से 'स्प्रिचुअल` इश्क करने वालों का भी क्या हाल होता है. .. और यहां तुम्हारा मामला तो सौ फीसदी 'फिज़िकल` है।"

"देखा इसका एक सीधा रास्ता हो सकता है", मैंने कहा।

"क्या?"

"तुम सीधे इस झंझट में पड़ते ही क्यों हो।"

"मतलब?"

"यार पैलेस इंटर कांटिनेण्टल वालों को इशारा करो. . .वे अपने आप सब इंतिज़ाम करा देंगे. . .तुम्हारी एयर लाइंस में 'केटरिंग` करते हैं. . .इतनी मदद भी न करेंगे।"

"हां ये तो हो सकता है।"

"यार साजिद के दिमाग में आइडिये खूब आते हैं. . .लेकिन खुद साला तरसता रहता है", अहमद ने कहा।

"अपनी अपनी किस्मत है", अहमद बोला।

"नहीं ये साला सोचता बहुत है. . .सोचने वाले 'इम्पोटेण्ट` हो जाते हैं।"

"वाह. . .ये कहां से खोज लाये?"

"देखो बेटा. . .आदमी की औरत के साथ और औरत की आदमी के साथ रहने की ख्वाहिश 'नेचुरल` है। अगर ये नहीं होता तो आदमी. . ."

"'अननेचुरल` हो जाता है?"

"नहीं नहीं ये बात नहीं है. . .लेकिन आदमी. . .तुम्हारे जैसा हो जाता है", वह हंसकर बोला।

अहमद ने मज़ाक में ही सही पर सही बात कही है। सात साल हुए सुप्रिया को गये और उसके बाद से मैं अकेला हूं। साल में एक-दो बार या उससे ज्यादा वक्फ़े के बाद लंदन जाता हूं तो मुझे तन्नो अजनबी लगती है। उसे मैं भी शायद अजनबी लगता हूंगा। हद ये है कि हम एक दूसरे के सामने कपड़े नहीं बदलते। वैसे सब कुछ ठीक है। हम एक दूसरे को पसंद करते हैं। चाहते हैं, पर बस. . .हो सकता है उम्र की वजह से हो. . .हो सकता है कुछ और हो. . .

"क्या सोचने लगे", अहमद ने बोला।

"तुम ठीक कहते हो यार।"

"तो अपनी सेक्रेटरी पर दांव लगाओ।"

"अरे यही यार. . .", मैं घबरा गया।

"देख साले को।"

"इसका इलाज कराओ", शकील ने कहा।

"देखो इसकी प्राब्लम यह है कि इसने अपने बारे में बहुत कम सोचा है।"

"बिल्कुल ठीक कहा तुमने।"

"इसकी जगह कोई ओर होता तो आज पता नहीं क्या हो गया होता।"

"वह बात अलग है. . .बात तो ये हो रही थी कि मैं 'अकेला` हूं।"

"यार तुम अपनी वजह से. . .अपनी 'चोवइस` से अकेले हो।"

"अब तुम भी कुछ बोल दो. . .खामोश क्यों बैठते हो", शकील ने मुझसे कहा।

"अब मैं क्या बताऊं. . .सुप्रिया के बाद. . ."

"अरे छोड़ो सुप्रिया को. . .इतने साल हो गये. . .पता नहीं कहां होगी।"

"तुम लंदन क्यों नहीं चले जाते।"

अब मैं उन लोगों को क्या बताता कि पति और पत्नी होने के बावजूद समय ने हम दोनों के साथ क्या अन्याय किया है।

"नहीं यार. . .वहां मैं क्या करूंगा।"

"करने की ज़रूरत क्या है. . .ससुर साहब खरबों छोड़ गये हैं", अहमद ने कहा।

"यार तुम पागल हो गये हो. . . मतलब मैं पड़ा पड़ा खाता रहूं।"

"तुम दरअसल 'रियल्टी` को 'फेस` नहीं करना चाहते", अहमद बोला।

"देखो तुम और हम लोग सभी पचास से ऊपर हैं. . .अब इस उम्र में कोई 'ठिया` न हुआ तो मुश्किल हो जायेगी।"

"अहमद का क्या 'ठिया` है?"

"यार मैं बस साल दो साल में ही किसी अच्छी औरत से. . ."

"अरे छोड़ो. . .ये तुमने जिंदगीभर नहीं किया।"

अभी तो रात के तीन बजे हैं। पता नहीं क्यों डियरपार्क से किसी मोर के बोलने की आवाज़ लगी। मैं उठकर खिड़की तक आया। अंधेरा है। रौशनी का इंतिज़ार बेकार है क्योंकि अभी उसमें समय है। एक बजे जब वे दोनों चले गये तो मैं स्टडी में आ गया था। जब कभी उकताहट बढ़ती है और 'डिप्रेशन` सा होने लगता है तो अपनी किताबें देख लेता हूं. . .चार किताबें. . .देश के नामी पब्लिशर्स ने छापी है। चारों ग्रामीण और आदिवासी भारत की विभिन्न समस्याओं पर आधारित है। इन किताबों पर सात 'एवार्ड` मिले हैं जो स्टडी में सजे हुए हैं। तस्वीरें हैं. . . .तो क्या जिंदगी के एक-एक पहल का हिसाब देना पड़ता है? कौन मांगता है यह हिसाब? शायद हम अपने आपसे ही मांगते हैं। अपने को संतुष्ट करना बहुत मुश्किल काम है। मैं तो काम बिल्कुल नहीं कर पाता। मैं सोचता हूं छोटा होते-होते, होते-होते अब ये 'सपना` क्या रह गया? मर तो नहीं गया? मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि 'सपने` के बिना भी मैं ज़िंदा हूं तो अब वह सपना क्या है? मैं दसियों साल देश के गांवों में घूमता रहा, लिखता रहा। 'सपने` की तलाश करता रहा। कभी बड़ी हास्यास्पद लेकिन आंखें खोल देने वाली परिस्थितियों से दो चार भी हुआ। एक बार बैतूल के एक आदिवासी गांव में मुझे और मेरे साथ एक दो और जो लोग थे उन्हें देखकर गांव में भगदड़ मच गयी थी। आदमी

अपना काम छोड़कर भागने लगे थे। औरतें बच्चों को बगल़ में दबाये भागने लगीं थीं। मैं हैरान था कि यह क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है? ये लोग हमें क्या समझ रहे हैं। तब साथ वाले एक स्थानीय कार्यकर्ता ने बताया था कि ये लोग हमें बैंक वाले समझ कर भाग रहे हैं। मेरी समझ में फिर भी बात नहीं आई थी। पहले तो कार्यकर्ता ने आवाज़ देकर इन लोगों को रोका था और उनकी भाषा में ही कहा था कि हम बैंक वाले नहीं हैं। ये सुनकर कुछ लोग पास आये थे।

पता चला कि कर्ज लेना भी विकास की एक पहचान माना जाता है। इसके अंतर्गत एक बैंक ने आदिवासियों को कर्ज देने के लिए एक राशि निश्चित की थी। आदिवासियों को कर्ज की कोई ज़रूरत न थी ओर न वे बैंक से कर्ज

लेना जानते थे और न इसके अभ्यस्त थे। इस कारण बैंक का ब्रांच मैनेजर परेशान हो गया कि 'टारगेट` पूरा नहीं हो सकेगा तो उसकी तरक्की में अड़चन आयेगी। किसी ने सुझाया कि गांव ही जाकर कर्ज दे दो। वहीं कागज़ी कार्यवाही कर लो। वह दो तीन बिचौलियों के साथ आया और गांव के सबको पैसा दे दिया। उनसे अंगूठा निशान लगवा लिए। इन लोगों को कुछ पता नहीं था कि यह कैसा पैसा है? इसका क्या करना है? यह किस तरह लौटाया जायेगा? लौटाया भी जायेगा या नहीं। बैंक मैनेजर कर्ज देकर चला गया। इन लोगों ने पैसे की शराब पी डाली। अनाप-शनाप ख़र्च कर दिया। साल भर बाद दूसरा बैंक मैनेजर कर्ज की किश्त वसूल करने आया। कर्ज की किश्त वसूल हो जाना भी विकास की पहचान और बैंक मैनेजर के 'प्रोमोशन` के लिए आवश्यक माना जाता है। इस बैंक मैनेजर ने जब देखा कि आदिवासियों के पास किश्त देने के पैसे नहीं हैं तो इससे उन्हें और कर्ज दे दिया और उसमें से किश्त के पैसे काट लिए। फिर तो यह रास्ता ही निकल आया। कई साल तक यही होता रहा। हर बैंक मैनेजर अपना 'कैरियर` बनाता रहा है और आदिवासी भयानक कर्ज में डूबने लगे। होते-होते स्थिति थोड़ी स्पष्ट होने लगी। किसी ने इन्हें बताया कि तुम लोगों के तो जानवर, खेत, घर बिक सकते हैं। ये समझ में आते ही ये डर गये और अब बैंक वालों को आता देखकर जंगल में भाग जाते हैं।

विकास के लिए प्रेरणा देने वाले अटपटे किस्म के बोर्ड अब भी ग्रामीण क्षेत्रों में दिखाई पड़ते हैं। मैं सोचता हूं आदिवासी या पिछड़े वर्गों में गांव वालों को चाहिए कि एक बोर्ड लगवायें जिस पर लिखा हो "कृपया हमारा विकास न कीजिए. . .हमें जीवित रहने दीजिए।" त्रासदी यह है कि चालीस साल तक विकास का विनाश चलता रहा और आज भी जारी है।

मैं सोचता हूं कि लिखने से क्या होगा? इतना लिखा क्या हुआ? मेरा नाम हुआ। मेरा सम्मान किया गया। मुझे 'एवार्ड` मिले। मुझे पैसा मिला। लेकिन उनका क्या हुआ जिनके बारे में मैंने लिखा था। फिर क्या करूं? सागर साहब की तरह उनके बीच रहकर काम करूं? अब सुना है सागर साहब ने नौकरी छोड़ दी है और अपनी पत्नी के साथ गलहौटी गांव में ही बस गये हैं। उनका काम गलहौटी के आसपास के गांवों में भी फैल गया है। इसके साथ यह भी हुआ है स्थानीय माफिया उनसे बहुत नाराज़ हैं। उन्हें कई बार मार डालने की धमकियां दी जा चुकी हैं। क्या सागर साहब जैसा साहस मुझमें है?. . .वाह ये तो अजीब बात है, साहस है नहीं और इच्छाएं इतनी हैं? दोनों का कोई मेल भी है?

२३

अहमद ने मोर्चा मार लिया। शूजा के साथ पेरिस में एक सप्ताह रहा। लौटकर आया तो शूजा ने कैबनेट सेक्रेटरी पर ज़ोर डाला कि उसकी सिफारिश करें और अनंत: वह राजदूत हो गया। कहता है यार बड़ी 'मेहनत` करनी पड़ती है 'एम्बैस्डर` बनने के लिए।

यह भी मसला था कि किन-किन देशों में वह भेजा जा सकता है और उसमें से कौन-से देश ऐसे हैं जहां वह जाना चाहेगा या जहां जाने से फ़ायदा होगा। मैं और शकील ये समझ रहे थे कि वह योरोप के किसी सुंदर देश को पसंद करेगा लेकिन उसने कहा तुम लोग जानते नहीं योरोप में कहां वे मज़े हैं जो 'मिडिल ईस्ट` में हैं. . .मतलब यार तीन साल मरेंगे तो कुछ कमा लें। जहां सोना होगा- काला सोना वहां जाना चाहिए. . .योरोप के छोटे मोटे देशों में क्या है, कुछ नहीं, उसने बताया था कि एक 'आर्डर` को वह इधर से उधर खिसका देगा तो करोड़ों बन जायेगा।

उसने भ्रष्ट राजदूतों के बड़े-बड़े किस्से सुनाये। एक राजदूत की पत्नी तो सुबह नाश्ते के लिए दूध, अण्डे और ब्रेड तक पर अपना पैसा नहीं खर्च करती थी। उसने ड्राइवर को आदेश दे रखा था कि वह नाश्ते का सामान लाया करे और बदले में उसका 'ओवर टाइम` मंजूर कर लिया जायेगा। ड्राइवर भी खुश रहता था क्योंकि इसमें उसे अच्छा खासा बच जाता था।

हमने अहमद से कहा कि यार ये काम राजदूतों की पत्नियां कर सकती हैं। अफसोस तुम कुंवारे हो. . .कैसे करोगे. ..उसने कहा था, यार इस तरह के टुच्चे काम तो मैं करूंगा भी नहीं। मैं तो बड़ा खेल खेलना चाहता हूं. . .ऊंचा दांव लगाऊंगा।``

"आमतौर पर 'एम्बैसडर` पत्नी या बच्चों के नाम पर धंध कर लेते हैं। तुम्हारे साले जोरू न जाता, दूसरी औरतों से नाता. . .क्या करोगे?"

"देखो रास्ता एक नहीं होता. . ."

"क्या मतलब हुआ इसका?"

"तुम दोनों को मज़ा आयेगा एक किस्सा सुनो. . .या बेचारे से हमदर्दी करोगे।"

किससे? तुमसे?"

"नहीं किसी और से. . ."

किससे यार?"

"सुन तो लो।"

"सुनाओ।"

"शूजा कह रही थी कि अपने सी.एस. के साथ उसके बड़े दिलचस्प संबंध हैं। वे शूजा को अपनी प्रेमिका मानते हैं और उसी तरह मिन्नतें करते हैं, ध्यान रखते हं नाज़ उठाते हैं, जैसे महबूबा के उठाये जाते हैं। शूजा भी उन्हें प्रेमी मानकर पूरा अधिकार जताती है, आदेश देती है, ज़िद करती है, रूठती, मनती है वगैरा़ वगैरा. . .लेकिन दोनों के बीच जिस्मानी रिश्ता नहीं बन पाता. . . र

"क्यों?"

"सुनो दिलचस्प है. . .शूजा के मुताबिक सी.एस. को यह यक़ीन है कि शूजा किसी 'क्लासिकल` प्रेमिका की तरह अब तक उन्हें जिस्मानी रिश्ता नहीं बनाने दे रही। लेकिन शूज़ा को पक्का यक़ीन है कि सी.एस. जिस्मानी रिश्ता बना ही नहीं सकते, लेकिन इसका इल्ज़ाम भी अपने सिर नहीं लेना चाहते। वे दिल से चाहते हैं कि शूजा उन्हें जिस्मानी रिश्ता बनाने के लिए टालती रहे तो अच्छा है लेकिन ज़ाहिर ये करते हैं वे जिस्मानी रिश्ता बनाने के लिए बेचैन हैं. . .और नहीं बन पाता। तो इसके ज़िम्मेदार 'वो` नहीं शूज़ा है।"

मैं चपरासी की कुर्सी पर बैठा अखबार पढ़ रहा था कि किसी की आवाज़ सुनी- "हम अली साहब से मिलना चाहते है।"

सिर उठाकर सामने देखा तो कांप गया। सामने सल्लो खड़ी थी। बिल्कुल सल्लो, सौ फीसदी सल्लो, वही रंग, वही नक्श, वैसे ही बाल और उसी तरह की ढीली ढाली सलवार कुर्ता और मोटा दुपट्टा. . .बिल्कुल सल्लो. . .मैं हैरान होकर उसे देखने लगा. . .ये कैसे हो सकता है. . .चालीस साल बाद सल्लो फिर आ गयी?

"हम अली साहब से मिलना चाहते हैं", उसने कोई जवाब न पाकर मुझे फिर पूछा।

"आइये", मैं उठा और ऑफिस के अंदर आ गया और अपनी कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

"बैठिये. . .", वह बैठ गयी।

"आपका नाम क्या है?"

"हमारा नाम अनुराध है. . .सब अनु कहते हैं।"

"हां तो बताइये अनु जी मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं।"

"एक गिलास यानी मिल जायेगा?" वह संकोच करते हुए बोली।

"हां. . .हां क्यों नहीं", मैं उठा जग में पानी उंडेलने लगा तो वह आ गयी और बोली "हम ही ले लेंगे।"

"नहीं, आप बैठिये. . .हमारे कल्चर में मेहमान के सामने पानी पेश किया जाता है. . .अमरीकी कल्चर में कहा जाता है, वो उधर पानी रखा है या चाय रखी है जाकर ले लो. . .लेकिन मैं तो अमरीकन नहीं हूं और न आप हैं।"

"शुक्रिया" वह पानी का गिलास लेकर हँसते हुए बोली।

उसके चेहरे पर पसीने की बूंदों और कपड़ों के इधर-उधर से कुछ गीले होने की वजह से मैं समझ गया था कि वह बस से आई हैं और इससे यह पता चल गया था कि वह किस वर्ग से संबंध रखती है लेकिन इतना काफी नहीं है। हम लोगों की अजीब आदत है कि नये आदमी के बारे में सब कुछ जानना चाहते हैं। गांव गिराव में तो साफ-साफ पूछ लेते हैं किस जाति के हो? या कौन लोग हो? लेकिन अखबार के दफ्तर में तो यह सवाल नहीं किया जा सकता। इसलिए जाति जानने के लिए दसियों सवाल करने पड़ते हैं। जाति का पता लगते ही बहुत सी बातें साफ हो जाती हैं। लड़की ने अपना नाम अनुराध बताया है, फैमली नाम भी नहीं बताया। अनुराध वर्मा या शर्मा, यादव, पंत, जोशी. . .क्या?

"जी बताइये?", जब उसने पानी पी लिया तो मैंने सवाल किया।

"पिछले सण्डे हमने आपका 'आरटिकल` पढ़ा था।"

"ब्राइड बर्निंग वाला. . ."

"जी हां।"

ओहो, 'जी हां` कह रही है। 'हां जी` नहीं कर रही है इसका मतलब पंजाब या हरियाणा की नहीं हैं।

"अच्छा तो फिर. . ."

"हम आपसे कहना चाहते हैं. . ."

हम, हमने, हमारा. . .इसका मतलब है उत्तर प्रदेश या बिहार की लगती है।

"जी आप क्या कहना चाहती हैं।"

"हमें आपका लेख पसंद आया. . .बहुत अच्छा लगा।"

"शुक्रिया।"

"हमने आपका लेख दो-तीन बार पढ़ा।"

लगभग पौने पांच फुट लंबी और चालीस किलो वज़न वाली यह लड़की जब हम, हमारी, हमें कहती है तो कितना अजीब लगता है। इसकी उम्र पच्चीस छब्बीस साल से ज्यादा क्या होगी।

"मुझे बहुत खुशी है. . .", मैंने ऐसी नज़रों से देखा जैसा कह रहा हूं भई आगे बढ़ो. . .भूमिका काफी लंबी हो गयी है। लेकिन मैं उसे देखे जा रहा हूं उसमें सल्लो नज़र आ रही है। उसी तरह का जिस्म. . .वही सांवला रंग. . .उसी तरह के नाज़ुक हाथ. . .और चेहरा भी. . .

बस आंखें अलग हैं। सल्लो की आंखों में किसी हिरनी का भाव हुआ करता था। इसकी आंखों में गहरी उदासी ओर आत्मविश्वास की छींटे आपस में घुल मिल गये हैं।

"जला देना तो एक बात है. . .लेकिन रोज़ का जो जीवन है . . . उस पर कोई नहीं लिखता. . .आप. . .क्यों नहीं लिखते?"

"देखिए. . .यह सच्चाई है कि महिलाओं के दैनिक जीवन के दु:ख कितने बड़े और कैसे हैं. . .मैं नहीं जानता. . .अगर आप बतायें तो. . ."

"हां हम आपको बता सकते हैं", वह उत्साह से बोली।

मैंने सोचा, वाह इससे बढ़िया क्या हो सकता है। पत्रकारिता में फलसफ़ा और सिद्घांत बघारने से कहीं अच्छा होता है मानवीय अनुभवों को सामने रखना इसी में पाठकों को मज़ा आता है. . .

"मैं आपका बड़ा आभारी हूंगा. . . अब बताइये. . .यह होगा कैसे?"

"हम आपके ऑफिस में . . यार

"ठीक है. . .तो क्यों न आज से ही शुरु कर दें।"

"जैसा आप कहें।"

"पहले चाय मंगाते हैं", मैंने इंटरकाम पर शिप्रा को बुला लिया।

शिप्रा आई। "आधुनिक योरोपीय कपड़ों में सजी एक तेज़ तर्रार गोरी, लंबी, आत्मविश्वास में शराबोर लड़की. . .और अनुराध दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा और दोनों ने एक दूसरे का नापसंद किया।

"देखो . . .करीब एक घण्टे मेरे पास किसी 'विज़ीटर` को न आने दो. . .और दो चाय. . .भिजवा दो।"

वह चली गयी।

अनु बताने लगी हमारी एक सहेली है। स्कूल में टीचर है। मैरीड है। उसके ससुराल वाले कहते हैं जो कुछ कमाती तो वह परिवार की 'इन्कम` है। उसका पति उससे एक-एक पेसा ले लेता है। फिर बस का पास बनवा कर दे देता है। लंच अपने साथ ले जाती है। वह स्कूल में चाय तक नहीं पी सकती। उससे कहा जाता है ज्यादा चाय पीना बुरी बात

है। सेहत खराब हो जाती है. ..कभी-कभी हमारी दोस्त को कापियां जांचने या इम्तिहान में ड्यूटी करने के कुछ पैसे मिल जाते हैं तो उन्हें छिपा लेती है। पति को नहीं बताती। उन्हीं पैसों से अपने लिए कुछ खरीदती है. . .पर डरती है कि पति ने देख लिया और पूछा कि कहां से आया? तो क्या जवाब देगी। अगर नहीं बता पायेगी तो सीधे चरित्र पर हमला करेगा. . .बता देगी तो पैसे देने पड़ेंगे. . .डांट-डपट अलग पिलायेंगे. . .एक दिन उसने हमें स्कूल से फोन किया और बोली "देख मैंने सैण्डिल ली है।" उसने बड़ी खूबसूरत सैण्डिल दिखाई। बोली "तू इसे ले जा. . .पहन ले. . .जब थोड़ी पुरानी पड़ जायेंगी तो मैं ले लूंगी. . .नयी सैण्डिल लेकर घर जाऊंगी तो सबकी निगाह पड़ेगी. . .पूछेंगे तो क्या बताऊंगी. . .कुछ दिन पहनी हुई कोई देखेगा नहीं. . .अगर पूछा भी तो कह दूंगी कि अनु की हैं. . .एक दिन के लिए बदल ली है।"

वह बताती रही और हैरत से उसे देखता रहा. . .ये कैसे संभव है? ये है क्या. . .अपनी मेहनत. . .अपना पैसा. . .लेकिन. . .

उसी दिन में एडीटर-इन-चीफ से मिला और 'वीकली कालम` शुरु कर दिया। मैं यह समझ रहा था कि अनु के अनुभव कहीं जल्दी ही चुक गये तो क्या होगा. . .लेकिन ऐसा हुआ नहीं। कालम के बारे में 'वीमेन ग्रुप` उत्साहित हो गये। वहां से स्टोरीज़ आने लगीं।

अनु अक्सर बिना बताये, बिना फोन किये ऑफिस आ जाती थी और मैं घण्टों उससे बातचीत करता था। यह तय है कि यह एक नयी दुनिया थी जो मेरे ऊपर खुल रही थी। मेरे अपने कोई अनुभव न थे। हां इधर-उधर कभी कुछ कान में पड़ जाता था। वैसे अखबार दहेज के चक्कर में जला दी गयी लड़कियों से भरे रहते हैं लेकिन इससे यह पता न चलता था कि उनकी दुनिया कैसी है? या पैदा होते ही. . .होश संभालते ही उन्हें क्या झेलना पड़ता है, किस तरह के व्यवहार को सहने की आदतें डाली जाती हैं ताकि शादी के बाद सब कुछ सहन कर लें। हद ये है कि जलकर मर जाये और कुछ न बोले।

"अनुराध. . .तुमने अब तक अपना पूरा नाम नहीं बताया है।"

वह बच्चों की तरह खुश हो गयी और बोली "अरे ये कैसे हो गया. . . हमारा पूरा नाम अनुराध सिंह है।"

"तुम रहती कहां हो।"

"हम आर.के.पुरम में रहते हैं। पिताजी कृषि मंत्रालय में सेक्शन आफीसर हैं।"

"तुम लोग रहने वाले कहां के हो?"

"हम लोग इलाहाबाद के हैं. . ."

मैं चुप हो गया।

"और कुछ पूछिये?", वह शरारत से बोली।

"तुम करती क्या हो?"

"मैं गणित के ट्यूशन करती हूं।"

किस क्लास के बच्चों को पढ़ाती हो?"

किसी भी क्लास के बच्चों को मैथ्स पढ़ा देती हूं।"

"क्या मतलब?"

"मतलब हम कक्षा एक से लेकर एम.एस.सी. को मैथ्स पढ़ा सकते हैं?"

-ये कैसे? तुमने मैथ्स कहाँ तक पढ़ी है?``

"हमने इंटर तक पढ़ी है मैथ्स. . .हमें अच्छी लगती है. . .मैथ्स में हमने जितने भी इम्तिहान दिए हैं, हमारे सौ में सौ नंबर आये हैं।"

"लेकिन इसका ये मतलब तो नहीं कि तुम एम.एस.सी. को मैथ्स पढ़ा सको।"

"पढ़ाते हैं. .. हम बता रहे हैं न।"

मैंने सोचा ये हो कैसे सकता है। झूठ बोल रही है। लेकिन इसको मालूम नहीं कि पत्रकार से झूठ बोलने का क्या नतीजा होता है क्योंकि पत्रकार बेशर्म होता है।

मैंने दिल्ली यूनिवर्सिटी में अपने दोस्त मैथ्स के प्रोफेसर लाल को फोन मिलाया और कहा कि ज़रा इस लड़की से फोन पर बात करके बताओ कि वह एम.एस.सी. को मैथ्स पढ़ा सकती है या नहीं।

मेरे इस फोन पर वह हंस रही थी। बुरा नहीं मान रही थी कि मैं उसकी परीक्षा लेना चाहता हूं।

"लो बात करो. . ."

"जी मेरा नाम अनुराध सिंह है. . .हम इंटर तक पढ़े है. . . .जी. . ."

मैं सिर्फ वह सुन रहा था जो अनुराध कर रही थी।

"जी रियल एनालिसिस और काम्पलेक्स एनालिसिस में मेरी रूचि है. . .जी? . . .जी.एच. हार्डी की किताब है न. ..'प्योर मैथमेटिक्स` वह पढ़ी है मैंने. . .किताब मेरे पास है. . .जी अपने आप . . .जी हां. . .कॉपसन की 'फन्कन्शस् ऑफ काम्पलेक्स वैरियेबुल्स`. . जी ट्यूशन करती हूं. . .और और कुछ तो मैं कर नहीं सकती. . .डिग्री नहीं है मेरे पास. .. ये लीजिए आपसे बात करेंगे", उसने फोन मेरी तरफ बढ़ा दिया. ..

"हां बताओ।"

"लड़की सच बोल रही है. . ."

"क्या?"

"हां।"

"यार ये कैसे. .."

"सब कुछ हो सकता है. . .तुम्हारे बड़े-बड़े पत्रकार हाई स्कूल फेल नहीं थे?"

"लेकिन. . ."

"इसको शौक है. ..ये 'जीनियस` है. . .और क्या कह सकता हूं।"

मैंने फोन रख दिया वह हंसने लगी।

"देखिए हम झूठ नहीं बोलते", वह आत्मविश्वास के साथ बोली। मैं सिर्फ उसकी तरफ देखने लगा। कायदे से मुझे अपने व्यवहार पर शर्म आनी चाहिए थी। मान लीजिए प्रोफेसर लाल कह देते कि लड़की 'फेक` है तब क्या होता?

"देखो मुझे अफसोस है. . . पर हमें इतना निमर्म होने की आदत पड़ जाती है।"

"हमने बुरा तो नहीं माना. . .आप की जगह हम होते तो यही करते", वह बोली।

"चलो आज से मान लिया कि तुम झूठ नहीं बोलती हो. . .ये भी बताओ कि क्या तुमसे जो पूछा जाये सच-सच बताती भी हो।"

"हां क्यों नहीं. . .", वह बोली।

मैंने घड़ी देखी शाम के सात बज गये हैं। गर्मी के दिनों में इस समय का अपना विशेष महत्व है। बाहर हवा ठंडी चल रही होगी। टेरिस पर गुलशन ने छिड़काव कर दिया होगा। पंखे लगा दिए होंगे. . .केन का सोफा बाहर निकाल

दिया होगा। क्या मैं इस लड़की से घर चलने के लिए कहूं? नहीं पता नहीं क्या समझे. . .और फिर मेरे घर क्यों जायेगी? कोई बात नहीं टटोल कर तो देखा जा सकता है।

"ये बताओ तुम घर कितने बजे तक लौटती हो।"

"कोई तय नहीं है. ..कभी रात वाले ट्यूशन में देर हो जाती है तो दस साढ़े दस भी बज जाते हैं।"

"तुम्हारे पापा. . ."

"नहीं पापा मम्मी कुछ नहीं कहते वे जानते हैं।"

"तुम आर.के.पुरम में रहती हो न?"

"हां।"

"मैं सफदरजंग एन्क्लेव में रहता हूं. . .जानती हो अफ्रीका ऐवेन्यू से जो सड़क डियर पार्क की तरफ जाती है. . .उसी सड़क पर।"

"अरे तो सड़क के दूसरी तरफ वाले ब्लाक में तो हमारा घर है।"

"तो देखो. . .अगर तुम चाहो तो. . .मेरे साथ चलो. . .थोड़ी देर मेरे यहां बैठो. . .चाय पियो. . .फिर मैं तुम्हें घर छोड़ दूंगा।"

"अरे वहां से तो मैं पैदल चली जाऊंगी", वह बोली।

मकान उसे पसंद आया। वह बच्चों की तरह 'रिएक्ट` करती है। उसका इसका डर नहीं रहता कि उसे लोग क्या समझेंगे। 'माइक्रोवेव` ओवन देखकर बोली "अरे ये तो मैंने पहले कभी नहीं देखा था।"

खरगोश पसंद आये। गुलशन के तोते को हरी मिर्च खिला दी।

हम टेरिस पर आकर बैठे। गुलशन मेरे लिए ड्रिंक्स की ट्राली ले अनु के लिए ट्रे में चाय लाया। वह दूर तक फैली हरियाली को देखने लगी।

"हरियाली नीचे से देखने और ऊपर से देखने में बड़ा फ़र्क़ होता है", वह हसंकर बोली।

"हां. .. सिर्फ हरियाली ही नहीं बल्कि सब कुछ।"

"जहाज़ में बैठकर कैसा लगता होगा", वह इतने उत्साह से बोली कि मैं समझ नहीं पाया।

"तुम कभी नहीं बैठी?"

"हम बैठना चाहते हैं।``

गुलशन पकौड़े ले आया। हमने पकौड़े लिए। अनु ने गुलशन से कहा फ् गुलशन भाई. . .फूल गोभी को छौंक कर पकौड़े बनाओ. . . बहुत अच्छे बनते हैं।"

"कैसे हमें नहीं आता।"

"चलो बताती हूं", वह उठकर गुलशन के साथ चली गयी और मैं हैरत में उसे जाता देखता रहा।

यार ये लड़की बन रही है। इतनी सहजता दिखा रही है। इतनी 'रिलैक्स` लग रही है। ऐसा हो नहीं सकता। फिर ये इतनी खुश कैसे रहती है? मैं ये सब सोच ही रहा था कि अनु पकौड़े लेकर आ गयी। खाया मज़ा बहुत अच्छा था।

"मैंने गुलशन भइया को सीखा दिए हैं", वह हंसकर बोली।

गुलशन आ गया और कहने लगा "अमीना को भी अच्छा लगा। अब इसी तरह बनाया करेंगे।"

"अनु दीदी हमें कटहल पकाना सिखा दो. . .कहते हैं हिन्दू कटहल बड़ा अच्छा बनाते हैं", गुलशन ने कहा। मैंने हिंदू पर विशेष ध्यान दिया लेकिन अनु के चेहरे पर कोई भाव नहीं आया। वह सहज ढंग से बोली "ठीक है. . .किसी दिन सिखा दूंगी. . .आजकल तो मिलता

नहीं कटहल।"

कुछ देर बाद अहमद आ गया। मैंने अनु से मिलवाया और अनु को बताया "ये राजदूत हैं. . .जानती हो. . .भारत को विदेशों में 'रिप्रीजेंण्ट` करते हैं।"

उसने अपनी आंखें फाड़ते हुए कहा "अरे. . .राजदूत. . .हम ने तो आजतक कोई राजदूत नहीं देखा थार, वह आश्चर्य से बोली।

मैंने हंसकर कहा "हां देख लो. . .ऐसे होते हैं राजदूत।"

अहमद ने कुछ बुरा माना। वह अनु की तरफ भी नहीं देख रहा था। लगता था उसे अनु का वहां होना अच्छा नहीं लगा। अनु भी शायद समझ गयी और बोली हम अब जायेंगे।"

"तुम्हें गुलशन छोड़ देगा।"

वह तैयार हो गयी।

"यार तुम 'भी कहां-कहां से न जाने क्या क्या जमा कर लेते हो", अहमद बुरा मानता हुआ बोला।

"अबे वो 'जीनियस` है।"

"होगी यार. . .हमसे क्या।"

"साले जिससे तुम्हारा मतलब न सधे. . .वो सब बेकार है।"

"पकौड़े अच्छे हैं", वह पकौड़ा खोते हुए बोला।

"उसी ने बनाये हैं।"

किसने? उसी 'जीनियस` ने?"

"हां", मैंने कहा और वह हंसने लगा।

>>पीछे>> >>आगे>>

शीर्ष पर जाएँ

गरजत-बरसत

असगर वजाहत

अनुक्रम

अध्याय 4

पीछे

आगे

रात तीन बजे के आसपास अक्सर कोई जाना पहचाना आदमी आकर जगा देता है । किस रात कौन आयेगा? कौन जगायेगा? क्या कहेगा यह पता नहीं होता। जाग जाने के बाद रात के सन्नाटे और एक अनबूझी सी नीरवता में यादों का सिलसिला चल निकलता है। कड़ियां जुड़ती चली जाती है और अपने आपको इस तरह दोहराती है कि पुरानी होते हुए भी नयी लगती है।

ये उस ज़माने की बात है जब मैंने रिपोर्टिंग से ब्यूरो में आ गया था। हसन साहब चीफ रिपोर्टर थे। उन्होंने खुशी-खुशी मेरे प्रोमोशन पर मुहर लगायी थी। उसके बाद नये चीफ के साथ उनके मतभेद शुरू हो गये। हसन साहब उम्र की उस मंज़िल में थे जहां लड़ने झगड़ने से आदमी चुक गया होता है। रोज़-रोज़ के षड्यंत्रों और दरबारी तिकड़मों से तंग आकर उन्होंने एक दिन मुझसे कहा था "मियां मैं सोचता हूं दिल्ली छोड़ दूं।"

मुझे हैरत हुई थी। सन् बावन से दिल्ली के राजनैतिक, सामाजिक परिदृश्य के साक्षी हसन साहब दिल्ली छोड़ने की बात कर रहे हैं जबकि लोग दिल्ली आने के लिए तरसते हैं। इसलिए कि दिल्ली में ही तो लोकतंत्र का दिल है। यही से उन तारों को छेड़ा जाता है जो पद, प्रतिष्ठा और सम्मान की सीढ़ियों तक जाते हैं।

"ये आप क्या कह रहे हैं हसन भाई?"

"बहुत सोच समझ कर कह रहा हूं. . .देखो हम मियां, बीवी अकेले हैं. . .हम कहीं भी बड़े आराम से रह लेंगे. . .मैं किसी तरह का 'टेंशन` नहीं चाहता. . .मैंने जी.एम. से बात कर ली है। अखबार से एक स्पेशल क्रासपाण्डेंट शिमला भेजा जाना है. . .हो सकता है, मैं चला जाऊं।"

"इतने सालों बाद दिल्ली. . ."

"मियां दिल्ली से मैंने दिल नहीं लगाया हैं।``

हसन साहब शिमला चले गये। सुनने में आता था बहुत खुश है। स्थानीय पत्रकारों से खूब पटती है। अपने स्वभाव, लोगों की मदद, हारे हुए के पक्ष में खड़े होने के अपने बुनियादी गुण के कारण बहुत लोकप्रिय हैं। शिमला से वे जो

भेजते थे उसे चीफ रद्दी में डाल देते थे लेकिन उन्होंने कभी प्रतिरोध नहीं किया। पता नहीं जिंदगी के इस मोड़ पर उन्हें कहां से सहन करने की ताकत मिलती थी।

उनके शिमला जाने के कुछ साल बाद मैं तन्नो और हीरा के साथ शिमला गया था। वो वे मेरा सामान होटल से 'लिली काटेज` उठा लाये थे। पहाड़ के ऊपर ब्रिटिश पीरियड की इस काटेज में वे और भाभी रहते थे। यहां से शिमला की घाटी दिखाई देती थी। उन्होंने बाग़वानी भी शुरू कर दी थी और शहद के छत्ते लगाये थे। 'लिली काटेज` भी उनके साफ सुथरे और संभ्रांत अभिरुचियों से मेल खाती थी। नफ़ासत, तहजीब, तमीज़, खूबसूरती, मोहब्बत और रवायत के पैरवीकार हसन साहब अपनी जिंदगी से खुश थे। रोज कई किलोमीटर पैदल चलते थे। शाम बियर पीते हुए क्लासिकल संगीत सुनते थे। जाड़ों की सर्द रातों में आतिशदान के सामने बैठकर 'रूमी' और 'हाफ़िज़` का पाठ करते थे। उन्हें देखकर मैं बहुत खुश हुआ था।

शिमले एक दिन मुझे जबरदस्ती घसीटते हुए पता नहीं क्यों मुख्यमंत्री से मिलवाने ले गये थे। सचिवालय में मुख्यमंत्री के पी.एस. ने बताया कि कैबनेट की मीटिंग चल रही है। मैं खुश हो गया था कि यार मुख्यमंत्री से मिलना टल गया। मुझे यकीन था कि तन्नो और तीन साल के हीरा को मुख्यमंत्री से मिलने में कोई दिलचस्पी नहीं है लेकिन हसन साहब मानने वाले नहीं थे। न्यूज़ वाले जो ठहरे।

तन्नो और हीरा को ऑफिस में छोड़कर वे मुझे लेकर गैलरी में आ गये। फिर गैलरियों की भूल भुलइया से होते एक छोटे से कोटयार्ड में पहुँचे जहां उस कमरे की खिड़कियां थी जिनमें कैबनेट की मीटिंग हो रही थी। वहां से मुख्यमंत्री दिखाई पड़े। उन्होंने जब हसन साहब को देखा तो हसन साहब ने उन्हें हाथ से इशारा किया और मुझसे बोले "चलो निकल आयेगा।"

हम ऑफिस में आये तो मुख्यमंत्री मीटिंग से निकलकर अपने चैम्बर में आ चुके थे।

मुख्यमंत्री से हम लोगों का परिचय हुआ। परिचय के बाद मुख्यमंत्री बड़ी बेचैनी से बोले "लाइये. . .लाइये. . ." मतलब वे यह आशा कर रहे थे कि हम किसी काम से आये हैं। हमारे पास काई प्रार्थना पत्र है जिस पर उनके हस्ताक्षर चाहिए।

"ये लोग तो घूमने आये हैं", हसन साहब ने बताया।

"घूमने आये हैं. . .तो मैनेजिंग डायरेक्टर टूरिज्म़ को फोन करो", उन्होंने अपनी पी.एस. से कहा।

एक दो अनौपचारिक बातों के बाद मुख्यमंत्री कैबनेट बैठक में चले गये।

"आपने काफी काबू में किया हुआ है", मैंने बाद में हसन साहब से कहा।

"अरे भई. . . ये तो चलता ही रहता है. . .अभी यहां तूफान आया था। एक अंदाजे के मुताबिक दस करोड़ का नुकसान हुआ है. .मुझसे ये कह रहे हैं मैं 'द नेशन` में रिपोर्ट के साथ बीस करोड़ का नुकसान बताऊं. . .सेंटर से ज्यादा पैसा मिल जायेगा।"

शिमला जाने के कोई दस-ग्यारह साल बाद यह ख़बर मिली थी कि हसन साहब रिटायर होकर दिल्ली आ गये हैं ओर 'नोएडा` में किराये का मकान लिया है। सन् बावन से दिल्ली में रहने वाले हसन साहब के पास शहर में कोई अपना मकान या फ्लैट नहीं है।

एक बार बता रहे थे। काफी पुरानी बात है। दिल्ली के किसी मुख्यमंत्री को किसी 'घोटाले` के बारे में हसन साहब स्टोरी कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने उन्हें ऑफिस बुलाकर उनके सामने पूरी 'सेलडीड` के काग़ज़ात रख कर कहा था हसन साहब दस्तख़त कर दो. . .कैलाश कालोनी का एक बंगला तुम्हारा हो जायेगा।

हसन साहब ने उसी के सामने काग़ज फाड़कर फेंक दिये थे। उनके 'नोएडा` वाले मकान में मैं कभी-कभी जाता था। रिटायरमेण्ट के बाद वे अपने नायाब 'कलेक्शन` को 'अरेन्ज` कर रहे थे। उनके पास सिक्कों का बड़ा 'कलेक्शन` था। एफ. एम. हुसैन ने उन्हें कुछ स्केच बना कर दिए थे। बेगम अख्त़र ने उनके घर पर जो गाया था उसकी कई घण्टों की रिकार्डिंग थी। चीन यात्रा के दौरान उन्होंने बहुत नायाब दस्तकारी के नमूने जमा किये थे। जापान से वे पंखों का एक 'कलेक्शन` लाये थे। इस सब में वे लगे रहते थे और वही उत्साह था, वही लगन, वही समर्पण और वही सहृदयता जो मैंने तीस साल पहले देखी थी।

एक ही आद साल पता चला उन्हें 'थ्रोट कैन्सर` हो गया है। वह बढ़ता चला गया। उन्हें 'ऐम्स` में भरती कराया गया। कुछ ठीक हुए। फिर बीमार पड़े और साले होते-होते 'सीरियस` हो गये। 'ऐम्स` में उनसे मिलने गया तो लिखकर बात करते थे। बोल नहीं सकते थे। आठ बजे रात तक बैठा रहा। घर आया तो खाना खाया ही था कि उमर साहब का फोन आया कि हसन साहब नहीं रहे।

भाभी को उमर साहब की बीवी लेकर चली गयी। हम लोगों ने रिश्तेदारों को फोन किए। रात में बारह के करीब उनकी 'बॉडी` मिली। दफ्ऩ वगैरा तो सुबह ही होना था। सवाल यह था कि 'बॉडी` लेकर कहां जायें। उमर साहब ने राय दी कि जोरबाग वाले इमाम बाड़े चलते हैं। वहीं सुबह गुस्ल हो जायेगा और दफ्ऩ का भी इंतिज़ाम कर दिया जायेगा।

इमामबाड़े वालों ने कहा कि रात में 'डेड बॉडी` को अकेले नहीं छोड़ा जा सकता। आप लोगों को यहां रुकना पड़ेगा। जाड़े के दिन थे। हम वहां कहां रुकते 'डेड बॉडी` के लिए जो कमरा था वहां 'बॉडी` रख दी गयी थी। उसके बराबर के मैदान में मैंने गाड़ी खड़ी कर दी। मैंने और उमर साहब ने सोचा, गाड़ी रात गुज़ार देंगे।

जब सर्दी बढ़ने लगी तो उमर साहब ने कहा "अभी पूरी रात पड़ी है और गाड़ी में बैठना मुश्किल हो जायेगा. . .चलिए घर से कम्बल और चाय वगैरा ले आते हैं।"

उमर साहब ने बताया कि वे पास ही में रहते हैं। तुगल़काबाद एक्सटेंशन के पीछे उन्होंने मकान बनवाया है। गाड़ी लेकर चले तो पता चला कि तुगलकाबाद से चार पांच किलोमीटर दूर किसी 'अनअथाराइज़` कालोनी में उमर साहब का मकान है। कालोनी तक पहुंचते-पहुंचते सड़क कच्ची हो गयी और इतनी ऊबड़-खाबड़ हो गयी कि गाड़ी चलाना मुश्किल हो गया। कई गलियों में गाड़ी मोड़ने के बाद उनके कहने पर मैंने जिस गली में गाड़ी मोड़ी वह गली नहीं तालाब था। पूरी गली में पानी भरा था। दोनों तरफ अधबने कच्चे, पक्के घर थे और गली में बिल्कुल अंधेरा था।

मैंने उनसे कहा "भाई ये तालाब के अंदर से गाड़ी कैसे निकलेगी।"

-यहां से गाड़ियां निकलती है`` उन्होंने कहा।

"मैं निकाल दूं। पर अगर गाड़ी फंस गयी तो क्या होगा? रात का दो बजा है. . ."

बात उनकी समझ में आ गयी। बोले "मेरा घर यहां से ज्यादा दूर नहीं है। मैं कम्बल और चाय लेकर आता हूं। आप यहीं रुकिए।"

उमर साहब के जाने के बाद पता नहीं कहां से इलाके के करीब पच्चीस तीस कुत्तों ने गाड़ी घेर ली और लगातार भौंकने लगे. एक टार्च की रौशनी भी मेरे ऊपर पड़ी। मैं कुत्तों की वजह से उतर नहीं सकता था। लोगों का शक हो रहा था कि मैं कौन हूं और रात में दो बजे उनके घर के सामने गाड़ी रोके क्यों खड़ा हूं।

ख़ासी देर के बाद उमर साहब आये और हम इमामबाड़े आ गये। रातभर हम लोग हसन साहब के बारे में बातचीत करते रहे।

अगले दिन हसन साहब को दफ्ऩ कर दिया गया। उनके रिश्तेदार सुबह ही पहुंच गये थे। हम दस-पन्द्रह लोग थे कब्रिस्तान में किसी ने मेरे कान में कहा "वो हिम्मत से ज़िंदा रहे और हिम्मत से मरे।"

२५

"भई माफ करना. .. तुम्हारी बातें बड़ी अनोखी हैं. . .पहली बात तो ये कि मुझे अजीब लगती हैं. . .दूसरी यह कि उन पर यक़ीन नहीं होता. . .मैं यह सोच भी नहीं सकता कि कोई दिल्ली में पैदा हुआ। पला बढ़ा लिखा और उसने लाल किला, जामा मस्जिद नहीं देखी", मैंने अनु से कहा।

"अब हम आपको क्या बतायें. . .पापा की छुट्टी इतवार को हुआ करती थी। स्कूल भी इतवार को बंद होते थे. ..पापा कहते थे कि हफ्ते में एक दिन तो छुट्टी का मिलता है आराम करने के लिए. .. उसमें भी बसों के धक्के खायें तो क्या फ़ायदा. . .फिर कहते थे अरे घूमने फिरने में पैसा ही तो बर्बाद होगा न? उस पैसे से कुछ आ जायेगा तो पेट में जायेगा या घर में रहेगा. .."

"और स्कूल वाले. . ."

"अली साहब. ..म्युनिस्पल स्कूल वाले पढ़ा देते हैं यही बहुत है. . .वे बच्चों को पिकनिक पर ले जायेंगे?"

"दूसरी लड़कियों के साथ।"

"वे भी हमारी तरह थीं. . .छुट्टी में लड़कियां गुट्टे खेलती थीं और हम गणित के सवाल लगाते थे. . .सब हमें पागल समझते थे", अनु हंसकर बोली।

"तो तुमने आज तक लाल किला और जामा मस्जिद नहीं देखी?"

"हां अंदर से. . .बाहर से रेलवे स्टेशन जाते हुए देखी है।"

"क्या ये अपने आप में स्टोरी नहीं है?"

"स्टोरी?" वह समझ नहीं पाई।

"ओहो. . .तुम समझी नहीं. . . मैं कह रहा था कि क्या ये एक नयी और अजीब बात नहीं है कि दिल्ली में . . ."

"मेरी बड़ी बहन ने भी ये सब नहीं देखा है और छोटी बहन ने भी नहीं देखा।"

"तुम्हारा कोई भाई है?"

"नहीं भाई नहीं है. . .हम तीन बहने हैं।"

"ओहो. . ."

"चलो तुम्हें जामा मस्जिद दिखा दूं. . .चलोगी", मैंने अचानक कहा।

"अभी?"

"हां. . . अभी?"

"चलिए", वह उठ गयी।

दरियागंज में गाड़ी खड़ी करके हम रिक्शा पर बैठ गये। मेरी एक बहुत बुरी आदत है. . .इतनी बुरी कि मैं उससे बेहद तंग आ गया हूं. . .छोड़ना चाहता हूं पर छूटती नहीं. . .ये आदत है सवाल करने और ग़लत चीज़ों को सही रूप में देखने की आदत. . .रिक्शे, भीड़, फुटपाथ पर होटल, फुटपाथ पर जिंदगी. . .अव्यवस्था, अराजकता. . .सड़क ही पतली है, उस पर सितम ये कि दोनों तरह से बड़ी-बड़ी गाड़ियां आ जा रही है। सड़क पर भी जगह नहीं है. . .क्योंकि ठेलियां खड़ी हैं। रिक्शेवाले फुटपथिया होटलों में खाना खा रहे हैं। फक़ीर बैठे हैं। लावारिस लड़के बूट पालिश कर रहे हैं। रिक्शेवाले रिक्शे पर सो रहे हैं। बूढ़े और बीमार फुटपाथ पर पसरे पड़े हैं। धुआं और चिंगारियां निकल रही हैं।

कौन लोग हैं ये? जाहिर है इसी फुटपाथ पर तो पैदा नहीं हुए होंगे। कहीं से आये होंगे? क्या वहां भी इनकी जिंदगी ऐसी ही थी या इससे अच्छी या खराब थी? ये आये क्यों?

इसमें शक नहीं कि ये भूखों मर रहे हैं। इनकी जिंदगी बर्बाद है और चाहे जो हो वह इन हालात को अच्छा और जीने लायक नहीं मान सकता।

अब सोचना ये है कि वे यहां भुखमरी से बचने के लिए अपने-अपने इलाकों से आये हैं लेकिन आते क्यों हैं। ये लोग पेड़ तो लगा सकते हैं? गांवों के आसपास से महुए के पेड़ कम होते जा रहे हैं। महुआ इनके लिए बड़ा उपयोगी पेड़ हे। ये लोग महुए के पेड़ क्यों नहीं लगाते? जानवर क्यों नहीं पालते? अगर गुजरात में सहकारी आंदोलन सफल हो सकता है तो यहां क्यों नहीं हो सकता? क्या इलाके के लोग मिलकर सड़क या रास्ता नहीं बना सकते? शायद

समस्या है कि इन लोगों के सामूहिकता की भावना को, एकजुट होकर काम करने की लाभकारी पद्धति को विकसित नहीं किया गया। सागर साहब ने जिन गांवों में यह प्रयोग किए हैं वे सफल रहे हैं। फिर ऐसा क्यों नहीं होता?

सामूहिक रूप से अपने जीवन को बदलने और संघर्ष करने की प्रक्रिया इन्हें सशक्त करेगी और सत्ता शायद ऐसा नहीं चाहती। आम लोगों का सशक्तिकरण सत्ता के समीकरण बदल डालेगा। क्या इसका यह मतलब हुआ कि गरीब के हित में किए जाने वाले काम दरअसल सत्ता के लिए चुनौती होते हैं और सत्ता उन्हें सफल नहीं होने देती। सत्ता ने बड़ी चालाकी से विकास की जिम्मेदारी भी स्वीकार कर ली है। इसका मतलब यह है कि विकास पर उनका एकाधिकार हो गया है। विकास की परिकल्पना, स्वरूप, कार्यक्रम और उपलब्धियों से वे लोग बाहर कर दिए गये हैं जिनके लिए विकास हो रहा है।

"आप क्या सोच रहे हैं", जब हम जामा मस्जिद की सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे तो अनु ने पूछा।

"बहुत कुछ. . .सब बताऊंगा लेकिन अभी नहीं. . .अभी तुम्हें जामा मस्जिद के बारे में बताऊंगा क्योंकि यहां तुम पहली बार आ रही हो", हम अंदर जाने लगे तो किसी ने रोका कि इस वक्त औरतें अंदर नहीं जा सकतीं।

"मैं प्रैस से हूं. . .'द नेशन` का एसोसिएट एडीटर. . .एस.एस. अली. .. इमाम साहब का दोस्त हूं. . ." वह आदमी घबरा कर पीछे हट गया।

"आप लोगों के बड़े ठाट हैं।"

"हां यार. . .ये लोगों ने अपने-अपने नियम बना रखे हैं. . .जितने भी नियम कायदे बनाये जाते हैं सब लोगों को परेशान करने के लिए, आदमी को सबसे ज्यादा मज़ा शायद दूसरे आदमी को परेशान करने में आता है।"

वह हंसने लगी।

"आप कह रहे थे कुछ बतायेंगे मस्जिद के बारे में।"

"सुनो एक मजे का किस्सा. . .शाहजहां चाहता था कि मस्जिद जल्दी से जल्दी बनकर तैयार हो जाये। एक दिन उसने दरबार में प्रधानमंत्री से पूछा कि मस्जिद बनकर तैयार हो गयी है क्या?" प्रधानमंत्री ने कहा "जी हां हुजूर तैयार है" इस पर सम्राट ने कहा ठीक है अगले जुमे की नमाज़ मैं वहीं पढ़ूंगा। दरबार के बाद मस्जिद के निर्माण कार्य के मुखिया ने प्रधानमंत्री से कहा कि आपने भी ग़ज़ब कर दिया। मस्जिद तो तैयार है लेकिन उसके चारों तरफ जो मलबा फैला हुआ वह हटाना महीनों का काम है। उसे हटाये बगैर सम्राट कैसे मस्जिद तक पहुंचेंगे? प्रधानमंत्री ने एक क्षण सोचकर कहा "शहर में डुग्गी पिटवा दो कि मस्जिद के आसपास जो कुछ पड़ा है उसे जो चाहे उठा कर ले जाये।"

ये समझो कि तीन दिन में पूरा मलबा साफ हो गया।

वह हंसने लगी।

यह लड़की मुझे अच्छी लगी है। मैं अब उसकी सहजता का रहस्य समझ पाया हूं।

"और बताइये?"

"सुनो. . .जैसा कि मैंने बताया शाहजहां चाहता था कि मस्जिद जल्दी से जल्दी बनकर तैयार हो जाये. . .मस्जिद का 'बेस` और सीढ़ियाँ बनाकर 'चीफ आर्कीटेक्ट` ग़ायब हो गया। काम रुक गया। सम्राट बहुत नाराज़ हो गया। सारे साम्राज्य में उसकी तलाश की गयी। वह नहीं मिला. . .अचानक एक दिन दो साल बाद वह दरबार में हाजिर हो गया। सम्राट को बहुत गुस्सा आया। वह बोला "सरकार आप चाहते थे कि मस्जिद जल्दी से जल्दी बन जाये। लेकिन मुझे मालूम था कि इतनी भारी इमारत के 'बेस` में जब तक दो बरसातों का पानी नहीं भरेगा तब तक इमारत

मजबूती से टिकी नहीं रह पायेगी। अगर मैं यहां रहता तो आपका हुक्म मानना पड़ता और इमारत कमज़ोर बनती। हुक्म न मानता तो मुझे सज़ा होती। इसलिए मैं गायब हो गया।"

"मेरी भी अच्छी कहानी है", वह बोली।

"मस्जिद से जुड़ी. . .कहानियां तो दसियों हैं. . .नीचे देखो वहां सरमद का मज़ार है. . .कहते हैं औरंगजेब ने सरमद की खाल खिंचवा कर उनकी हत्या करा दी थी. . .मुझे पता नहीं यह बात कितनी ऐतिहासिक है लेकिन किस्सा मज़ेदार है और लोग जानते हैं। एक दिन औरंगजेब की सवारी जा रही थी और रास्ते में सरमद नंगा बैठा था। उसके पास ही एक कम्बल पड़ा था। औरंगजेब ने उसे नंगा बैठा देखकर कहा कि कम्बल तुम्हारे पास है, तुम अपने नंगे जिस्म को उससे ढांक क्यों नहीं लेते?" सरमद ने कहा "मेरे ऊपर तो इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। तुम्हें कोई परेशानी है तो कम्बल मेरे ऊपर डाल दो।`` खैर सम्राट हाथी से उतरा। कम्बल जैसे ही उठाया वैसे ही रख उल्टे पैर लौटकर हाथी पर चढ़ गया।" सरमद हंसा और बोला "क्यों बादशाह, मेरे नंगा जिस्म छिपाना ज़रूरी है या तुम्हारे पाप?`` कहते हैं औरंगजेब ने जब कम्बल उठाया था तो उसके नीचे उसे अपने भाइयों के कटे सिर दिखाई दिए थे जिनकी उसने हत्या करा दी थी. . .कहो कैसी लगी कहानी?"

उसने मेरी तरफ देखा। उसकी उदास और गहरी आंखों में संवेदना के तार झिलमिला रहे थे।

२६

तीन अकेलों के मुकाबले एक अकेला ज्यादा अकेला होता है। शकील को लगा था कि उसके क्षेत्र से उसे उखाड़ फेंकने की कोशिश हो रही है. .. वह क्षेत्र में चला गया। दिल्ली कभी-कभार ही आता है। अहमद राजदूत बनकर अपना 'ऐजेण्डा` लागू कर रहा है। फोन करता रहता है लेकिन विस्तार से बात नहीं होती। बता रहा था उसके चार्ज लेते ही शूज़ा आ गयी थी। करीब एक हफ्ते रही। उसको रेगिस्तान बहुत पसंद नहीं आया क्योंकि वह अंदर के रेगिस्तान से बड़ा नहीं था, वापस चली गयी।

शाम की महफिलें नहीं जम पातीं। वैसे तो जानने वालों, परिचितों, जान-पहचान वाले दोस्तों की लंबी फेहरिस्त है लेकिन जो मज़ा दो पुराने दोस्तों के साथ 'टेरिस` पर बैठकर गप्प-शप्प में आता था वह कहां बचा? जिससे मिलो, जिसके पास जाओ, उसके पास एक 'ऐजेण्डा` होता है, 'हमसे तो छूटी महफिलें।`

हीरा से लंबी बातचीत होती रहती है। वह एशियाई देशों के विकास पर एक प्रोजेक्ट कर रहा है और बांग्लादेश जाना चाहता है। तन्नो ने बिजनेस को समेटकर पैसा 'ब्लूचिप कंपनियों` में 'इनवेस्ट` कर दिया है। कहती है अब वह इतना काम नहीं कर सकती। उसने 'पेंटिंग` करने का शौक चर्राया है और 'आर्टिस्ट` से चेहरे बनाना सीख रही है। किसी होटल 'चेन` को एसेक्स काउण्टी वाला 'हीरा पैलेस` किराये पर दे दिया है कि वहां की देखभाल पर जो खर्च आता था और जो 'टैक्स` पड़ते थे, वे लगातार बढ़ते जा रहे थे और मिर्जा साहब के ज़माने वाला 'एक्टिव बिजनेस` भी रह गया था जिसके लिए शानदार पार्टियाँ ज़रूरी थी, जो वही दी जाती थीं।

मुझे लगता था कि अनु उसी तरह धीरे-धीरे ग़ायब हो जायेगी जैसे दूसरे समाचार देने वाले या कभी अखबार में रूचि लेने वाले आते हैं और चले जाते हैं। लेकिन कालम बंद होने के बाद भी वह चली आती है। उसने साफ बताया है कि वह शहर में बहुत कम लोगों को जानती है। उसका कोई दोस्त नहीं है। उसे मुझसे मिलना अच्छा लगता है। वह उम्र दराज़ लोगों को पसंद करती है क्योंकि उनमें ठहराव और संयम होता है। मैं उसकी इस बात से सहमत हूं कि उम्र चाहिए। अच्छे काम करने के लिए नव-सिखिए या अनाड़ी तो भाग खड़े होते हैं। नौजवान लोगों के हाथों से रिश्ते शीशे के प्याले की तरह फिसलकर टूट जाते हैं।

एक साल हो गया जब मैं उसे पहली बार जामा मस्जिद ले गया था। इसके बाद दिल्ली के कई कोने, कई दबी और विशाल इमारतों के बीच छिपी और खण्डहर हो गयी ऐतिहासिक धरोहरों मैं उसे दिखा चुका हूं,। 'टूरिस्ट गाइड` बनना संतोषजनक काम है क्योंकि आप अपनी जानकारियां 'शेयर` करते हैं और अगर यह लग जाये कि जिसके साथ 'शेयर` कर रहे हैं वह गंभीर है, रूचि ले रहा है, कृतज्ञता भी दिखा रहा है तो आपका उत्साह बढ़ जाता है।

खुशी, विनम्रता और सहजता अनु के स्वभाव के बुनियादी बिन्दु हैं। वह अपनी क्षमताओं, योग्यताओं और उपलब्धियों पर पता नहीं क्यों कभी गर्व नहीं करती। गणित के साथ-साथ वह कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर की भी चैम्पियन है लेकिन उसे देखकर, उसके हाव-भाव से यह लगता है कि अपनी योग्यता, विलक्षण क्षमता पर उसे विश्वास तो है लेकिन गर्व नहीं है। मेरा निजी पी.सी. उसके हवाले है, तरह-तरह के प्रोग्राम डालती रहती है और मुझे समझाती है। उसने गुलशन को भी कम्प्यूटर चलना इतना सिखा दिया है कि खोल और बंद सकता है।

पहले मैं सोचकर परेशान रहा करता था कि वह ऐसा क्यों करती है? उसको क्या लाभ है? वह दरअसल चाहती क्या है? मैं प्रतीक्षा करता था कि उसका असली चरित्र नहीं बल्कि असली 'ऐजेण्डा` कब खुलता है। लेकिन मुझे निराशा ही हाथ लगी। मैं प्रतीक्षा करता रहा। अब भी कर रहा हूं।

मुझे यह सब क्यों अच्छा लगता है? गाड़ी में बीसियों किलोमीटर का चक्कर काटकर उसे मेवात के मध्यकालीन खण्डहर क्यों दिखाता हूं? मुझे उसकी आंखों में जिज्ञासा, कृतज्ञता, सहमति और संतोष का भाव आकर्षित करता है। लोगों से सहज संबंध और कठिन परिस्थितियों में संयम बनाये रखने की आदत भी निराली मालूम होती है क्योंकि आज किसके पास धैर्य है? किसके पास संतोष है?

मेवात के एक बीहड़ इलाके से गुजरते हुए अचानक अनु ने अपने पर्स में से भुने हुए चने निकाल लिए और मुझे ऑफर कर दिए। हम ग्यारह बजे चले थे और अब एक बज रहा था लेकिन इन कच्ची-पक्की पगडण्डियों जैसे सड़कों पर कोई ढाबा नहीं मिल पाया था जहां कुछ खा-पी सकते।

'अरे तुम चने लाई हो।`

'ये तो हम हमेशा अपने पास रखते हैं।`

'अच्छा? क्यों?`

'हमें कभी-कभी तेज़ भूख लगती है. . .बस चने निकाले खा लिए।`

'हूं` मैंने उसके कंधे पर हाथ रख दिया। वह बुरी तरह चौंक कर उछली। उसका सिर गाड़ी की छत पर टकराया। चने गाड़ी में बिखर गये। उसके चेहरे पर भय और आतंक छा गया, माथे पर पसीने की बूंदें उभर आयी और वह कांपने लगी।

मैंने गाड़ी एक पेड़ के साये में खड़ी कर दी। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी ऐसी प्रतिक्रिया क्यों हुई?

'क्या बात है?` मैंने पूछा।

'कुछ नहीं. . .कुछ नहीं. . .` वह माथे का पसीना पोंछती हुई बोली।

'कुछ तो है?`

'नहीं. . .नहीं. . .`

'बताओ न? तुम पहली बार कुछ छिपा रही हो?`

उसने भयभीत निगाहों से मेरी तरफ देखा।

'इससे पहले मुझे कभी नहीं लगा कि तुमने मुझसे कुछ छिपाया है।`

'हम. . .` वह कहते-कहते रुक गयी। मैं प्रतीक्षा करता रहा।

'हम बता देंगे. . .पर अभी नहीं. . .अभी हम डर गये हैं।`

'किससे? मुझसे?`

'नहीं आपसे नहीं।`

'फिर?`

'हमने कहा न. . .हम बता देंगे।`

'इमरजेंसी` बैठक थी। तनाव बहुत था। इसलिए हम कुछ ज्यादा ही पी रहे थे। शकील भी क्षेत्र से आ गया था। अहमद का मसला क्योंकि 'एजेण्डे` पर था इसलिए वह भी था। समस्या के हर पक्ष पर गंभीर चर्चा हो रही थी। अहमद के चेहरे से ही लग रहा था कि वह बहुत तनाव में है।

'लेकिन दो-तीन महीने पहले तक तो ऐसा कुछ नहीं था`, शकील बोला 'तुम उससे क्या लगातार मिलते रहे हो?`

'देखो. . .पहले मैं उसे लेकर पेरिस गया था। बल्कि तुम्हीं ने बंदोबस्त किया था. . .फिर वह मेरे पास आई. . .उसके बाद हम 'मानट्रियाल` में मिले जहां मैं 'कामनवेल्थ` सेमीनार गया था. . .फिर लंदन में मुलाकात हुई थी. . .`

'यार तुम काम हो जाने के बाद उससे इतना मिल क्यों रहे थे?` शकील ने दो टूक सवाल किया।

'यार वो ज़ोर डालती थी. . .बहुत इसरार करती थी. ..फोन पर फोन आते थे. . .मैं क्या करता।`

'लगता है तुमसे सचमुच प्यार करने लगी है`, मैंने कहा और अहमद ने घूर कर मुझे ज़हरीली नज़रों से देखा।

'सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज्ज को चली है`, शकील बोला।

'सत्तर से भी ज्यादा. . .यार वो तो पता नहीं क्या है? लंदन में दो-दो दिन के लिए गायब हो जाया करती थी`, अहमद ने बताया।

'क्या तुमने उससे साफ-साफ बात की है?`

'बिल्कुल कई बार. . .मैंने कहा है कि तीन शादियां करते-करते और तलाक देते-देते मैं थक चुका हूं और अब शादी नहीं करना चाहता।`

'फिर क्या कहती है?`

'कहती है मुझसे बहुत ज्यादा प्यार करती है और किसी भी कीमत पर मुझे खोना नहीं चाहती`, अहमद ने कहा। मैंने उसकी तरफ देखा, हां इस उम्र में भी वह इतना शानदार लगता है कि कोई औरत उसे हमेशा-हमेशा के लिए पाना चाहेगी।

'तो ठीक है. . .तुम हो तो उसके साथ`, मैंने कहा।

'हां. . .`, वह दबी आवाज में बोला।

हम दोनों हंसने लगे।

'यार खाने के बाद आज हुक्का पिया जाये`, शकील ने सुझाव दिया।

'लखनऊ वाली तम्बाकू तो होगी?`

'हां है`, मैंने गुलशन से हुक्का तैयार करने को कह दिया।

खाने के बाद हुक्का पीते हुए शकील ने कहा 'यार एक बात समझ में नहीं आती. . . तुम लोग कुछ मशविरा दो?`

'क्या?`

'भई कमाल. . .की वजह से मैं फिक्रमंद हूं. . .पढ़ाई तो उसने छोड़ दी है. . .यहां उसका अपना अजीब-सा सर्किल है जिसमें कुछ प्रापर्टी डीलर, कुछ पॉलीटिशयन, कुछ अजीब तरह के लोग शामिल है. . .रात में देर तक गायब रहता

है. . .मैं. . .कुछ पूछना चाहता हूं तो हमारे बीच तकरार शुरू हो जाती है।`

'ये बताओ उसके पास पैसा कहां से आता है? तुम देते हो?`

'पहले मैं दिया करता है. . .अब नहीं देता. . .फिर भी उसका कोई काम नहीं रुकता. . .

'तुम्हारी बीवी देती है. . .`

'हां वो देती है. . .और मैंने सुना है कुछ और 'लोग` भी उसे पैसा देते हैं`, वह बोला।

'और कौन?`

'यार मैं वहां से लगातार एम.पी. होता हूं. . .मंत्री हूं. . .उसे कौन मना कर सकता है. . .``

शकील सोच में डूब गया फिर बोला - और अब पॉलीटिक्स में आना चाहते हैं``

- ये कौन सा जुर्म है`` अहमद बोला ।

बुरा नहीं है . . . लेकिन यार कम से कम बी.ए. तो कर ले. . . कोई काम धंधा पकड़ ले. . . ये ऊपर टंगे रहना तो ठीक नहीं हैं।``

- यार ये कैसी कोई प्राब्लम तो नहीं लगती .`` मैंने कहा ।

-कमाल तुम्हारे काम धंधे को देखता है न? शायद तुम्हें वहाँ 'रिप्रजेण्ट` भी करता है?``

- हाँ वो मैं चाहता नहीं . . . मैंने सुना है अब वो कुछ उन लोगों से भी मिलने लगा है जो मेरे साथ नहीं है``

-अरे ये क्यों?``

- पता नहीं . . . मैंने उससे कह रखा है कि तुम बी.ए. कर लो मैं तुम्हें एम. एल. ए. का टिकट दिला दूँगा. . . मैं जानता हूँ वो अगर किसी और पार्टी के टिकट पर खड़ा हो गया तो गज़ब हो जायेगा।

- क्या कुछ हो सकता है?``

-सब कुछ हो सकता है,`` वह लम्बी और गहरी सांस लेकर बोला।

अलवर के आसपास जिन ऐतिहासिक इमारतों की तलाश थी वे मिल गयी थी लेकिन उन्हें देखने में देर हो गयी थी और सूरज हुआ इधर-उधर छिपने की जगह तलाश कर रहा था।

पर्यटनवालों के कॉम्पलेक्स में चाय पीते हुए मैंने अनु की तरफ देखा। लंबा परिचय, अपेक्षाओं पर खरे उतरने के कारण एक दूसरे के प्रति विश्वास, पसंद करने वाली भावना, व्यक्तित्व का रहस्य मेरे देखने में व्याप्त था।

'अब वापस दिल्ली पहुंचने में रात हो जायेगी।` वह जानती है

कि मैं रात में गाड़ी नहीं चलाता था कुछ कठिनाई होती है।

'हां रात तो हो जायेगी।`

'तो रात में यही 'टूरिस्ट रिज़ाट` में रुक जायें?` इतने दिनों से अनु को देख रहा हूं। लुके छिपे आकर्षण महत्वपूर्ण हो गये हैं।

वह एक क्षण देखती रही। इस एक क्षण में उसने एक यात्रा तय कर ली या शायद उस छलांग की भूमिका पहले ही बन चुकी थी।

'मुझे घर फोन करना पड़ेगा।`

'कर दो`, मैंने रिसेप्शन की तरफ इशारा किया।

पुराने फैशन के इस विशाल कमरे में एक तरफ की दीवार पर ऊपर से नीचे तक शीशे की खिड़कियां हैं जो जंगल की तरफ खुलती हैं। एक दरवाजा बॉलकनी में खुलता है। ऊंची छत, डबल बेड, वार्डरोब के अलावा पढ़ने की मेज़ और कुर्सियां हैं इस कमरे में।

'हम रात सोफे पर बैठे-बैठे बिता देंगे`, अनु ने कहा।

हम खाना खा चुके थे। रात का दस बज रहा था। मैंने खिड़की के पर्दे हटा दिये थे और जंगल कमरे के अंदर घुस आया था। जंगल की नीरवता पूरी तरह चारदीवारी के बीच ध्वनित हो रही थी।

'ठीक है, तुम्हारा जो जी चाहे करो. . .पर एक बात सुन लो. . .मेरे जीवन में बहुत कम महिलाएं आयी हैं. . .और वे सब अपनी मर्जी से आई हैं. . .मेरे लिए इससे बड़ा कोई अपराध हो ही नहीं सकता कि मैं किसी लड़की के साथ उसकी मर्जी के बिना संबंध स्थापित करूं।`

अनु कुर्सी पर बैठ गयी। मैंने उससे पूछकर लाइट बंद कर दी। कमरे के अंदर बाहर का जंगल जीवंत हो गया।

'रात भर बैठे-बैठे थक नहीं जाओगी?`

'नहीं. . .मैंने इस तरह न जाने कितने रातें गुज़ारी हैं।`

'क्या मतलब?` मैंने तकिए को दोहरा करके उस पर सिर रख लिया ताकि अंधेरे में वह जितना दिख सकती तो दिखे।

वह खामोश हो गयी। कुछ शब्द या वाक्य ख़ज़ाने की कुंजी जैसे होते हैं। अनु का वाक्य ऐसा ही था। मैं खामोश रहा। शब्द मानसिक अंतर्दव्न्द्व को बढ़ाते हैं और खामोशी समतल बनाती है। दीवार पर घड़ी की 'टिक-टिक` और बाहर से आती झींगुर की तेज़ आवाज़ों के अलावा सन्नाटे का साम्राज्य पसरा पड़ा था।

'हम कहां से शुरू करें`, उसकी आवाज़ अतीत के अनुभवों से टकरा कर मुझ तक आयी। स्वर और लहजे में सपाटपन था।

'कहीं से भी. . .`

'बात लंबी है।`

'पूरी रात पड़ी है. . .कहो तो मैं भी कुर्सी पर बैठ जाऊं।`

'नहीं. . .`, वह हंसने लगी।

'हम उन बातों को याद भी नहीं करना चाहते।`

'ठीक है. . .मत याद करो. . .लेकिन बड़ा बोझ जितना बांटा जाता है, उतना हल्का होता है।`

फिर वह खामोश हो गयी। सच्चाई विचलित करती हैं संतुलन बिगाड़ देती है। एक ऐसे धरातल पर ले आती है जहां चीज़ों और व्यक्तियों को देखने के नजरिये बदल जाते हैं लेकिन आखिरकार सच्चाई एक शांत नदी की तरह बहने लगती है। इस प्रक्रिया से गुज़रना आसान नहीं है।

सच्चाई या आत्म स्वीकृति शायद ऊंची आवाज़ में संभव नहीं है। वह उठी और बिस्तर पर आकर लेट गयी।

- हम आठवीं में थे। स्कूल से आने के बाद ब्लाक के पार्क में चले जाते थे. . .वहां खेलते थे। लड़कियां बैडमिंटन खेलती थीं और लड़के फुटबाल खेलते थे। शाम ढलने से पहले घर लौट आते थे. . .एक दिन हम खेल रहे थे। सी-४० वाली मिसिज़ वर्मा एक दो और आण्टियों के साथ उधर से निकली। मेरी तरफ इशारा करके मिसिज़ वर्मा ने कहा 'इस लड़की की शादी हो रही है।` हम अपना रैकेट लेकर रोते हुए घर आ गये। मम्मी रसोई में खाना पका रही थी, हमने उनसे कहा कि देखा मिसिज़ वर्मा ने हमारे बारे में ऐसा कहा है। मम्मी ने हंसकर कहा, 'नहीं झूठ बोलती हैं। तेरी शादी क्यों होगी अभी से. . .पर मम्मी ने मुझसे झूठ बोला था. . .`

धीरे-धीरे कक्षा आठ में पढ़ने वाली लड़की की सिसकियां अंधेरे कमरे में इस तरह सुनाई देने लगी जैसे संसार की सारी औरतें विलाप कर रही हों। मैं खामोश ही रहा। मैं जानता था कि मेरा एक शब्द इस सामूहिक रुदन को तोड़ देगा। मैं चुपचाप खामोशी से लेटा रहा। छत की तरफ देखता रहा। पंखा धीमी गति से चल रहा था और बाहर से आते मलगिजे उजाले में केवल उसके पर दिखाई दे रहे थे।

आठवीं कक्षा में पढ़ने वाली लड़की रो रही थी।

'हम पढ़ने में बहुत अच्छे थे। कुछ लड़कियां खासकर सरोज मुझसे बहुत जलती थी। उसने पूरे स्कूल में ये बात फैला दी. . .टीचर ने हमें बुला कर पूछा। हमने मना कर दिया. . .पर लड़कियां हमें छेड़ने लगीं. . .लड़के हमारे ऊपर हंसने लगे. . .हमें बहुत गुस्सा आया। हम पढ़ नहीं पाये स्कूल में. . .हमने टिफिन भी नहीं खाया. . .भूखे रहे दिनभर।`

सिसकियां फिर जारी हो गयी।

वह काफी देर तक रोती रही, मैंने उसे चुप कराने की कोशिश नहीं है। लगता था अंदर इतना भरा था अंदर इतना भरा हुआ है कि उसे बाहर निकल ही जाना चाहिए।

रोते-रोते उसकी हिचकियाँ धीरे-धीरे बंद हो गयी।

मैंने उठकर एक गिलास पानी उसको दे दिया। पानी पीने के बाद वह मेरी तरफ पीठ करके लेट गयी और धीरे-धीरे बोलने लगी - जैसे -जैसे दिन बीतते गये चिढ़ाने लगे हम सब से लड़ते थे घर में मम्मी ने बताया कि हमारा रिश्ता तय हो गया I शादी अभी नहीं होगी, लेकिन हम ये नहीं चाहते थे कि कोई शादी -वादी की बात करे. . . पर धीरे-धीरे घर बदल रहा था. . . सामान आ रहा था. . . घर में पुताई हो रही थी. . . कोई मुझे साफ-साफ नहीं बताता था पर हम इन तैयारियों से हम डर गये . . . हमने खाना छोड़ दिया. . . हम से कहा अब तुम शलवार -कमीज पहना करो, दुपट्टा ओढ़ा करो. . . हमने स्कूल जाना बंद कर दिया . . . हम सबसे लड़ नहीं सकते है. . . टीचरें हमें देखकर मुस्कुराती थी. . . हम खेलने भी नहीं जाते थे. . . हम भगवान जी से माँगते थे कि हम मर जाये. . . हम मर जायें. . .

धीरे-धीरे शब्द डूबते चले गये लेकिन फिर भी कक्षा आठ में पढ़ने वाली लड़की बोल रही थी

२७

मोहसिन टेढ़े की आँखों में आँसू हैं। वह पत्नी के मर जाने से कितना दुखी है ये तो कहना मुश्किल है लेकिन उसे देखकर उसके दुखी होने पर विश्वास-सा हो जाता है। उम्र ने उसके चेहरे की विद्रूपता को कुछ और उभार दिया है। गालों के ऊपर वाली हड्डियां उभर आई हैं, गर्दन और पतली हो गयी है। पिचका हुआ सीना कुछ ज्यादा ही अंदर को धंस गया है। हाथ और पैर ज्यादा दुबले लगते हैं। पेट छोटे-सी मटकी की तरह फूला हुआ है। आंखों में लाल डोरे दिखाई देते हैं। सबसे बड़ी दिक्कत ये हो रही है कि पोलियो का पुराना मर्ज ज़ोर पकड़ रहा है और उसके पैरों की मांस पेशियां मर रही हैं। डॉक्टर इसका कोई इलाज नहीं बताते। मोहसिन कई जगह तरह-तरह के डॉक्टरों, हकीमों वैद्यों को दिखा चुका है लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अभी तो घर के अंदर थोड़ा बहुत चल फिर भी लेता है लेकिन अगर मर्ज बढ़ा तो बड़ी कयामत हो जायेगी।

मुझे मालूम था कि उसकी बीवी सख़्त बीमार है। पिछले कई साल से उसके गुर्दों का इलाज चल रहा था। इस बीच अस्पताल में भी दाखिल थी और फिर अस्पताल वालों ने जवाब दे दिया था। घर ले आये थे और एक तरह से सब उसके मर जाने का इंतिज़ार कर रहे थे। मोहसिन की एक छोटी साली आ गयी थी जिसने खाने पीने की जिम्मेदारी संभाल ली थी।

मोहसिन टेढ़े ने कभी अपने रिश्तेदारों से कोई ताल्लुक न रखा था। बहनोई से तो मुक़दमेबाज़ी तक हो गयी थी इसलिए जनाज़े में उसका कोई रिश्तेदार नहीं था। हां, ससुर आ गये थे जो मोहसिन से खुश नहीं

थे क्योंकि यह सबको पता था कि मोहसिन ने बीवी के इलाज पर ध्यान नहीं दिया था, पैसा नहीं खर्च किया था। इसीलिए दफ़न के बाद उसके ससुर अपनी छोटी लड़की को लेकर चले गये थे।

शाम के वक्त उसके घर में अजीब दमघोंटू सन्नाटा था। जीरो पावर के बल्ब मरी-मरी सी रौशनी फेंक रहे थे। खिड़कियों पर पर्दे न थे हर चीज़ खस्ता और गंदी नज़र आ रही थी। एक कुर्सी पर मोहसिन सिर झुकाए बैठा था।

"चलो तुम मेरे साथ यहां क्या रहोगे।"

उसने मेरी तरफ देखा और बोला "नहीं साजिद. . .कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा. . .ये तो यार एक दिन होना ही था।"

"तुम्हारा काम कैसे चलेगा?"

"यार यहां खाना लग जाता है. . .खाना लगवा लूंगा. . और क्या काम है?"

मैं उसे हैरत से देखने लगा। मुझे उस पर दया भी आई और गुस्सा भी आया। वह समझता है बस दो रोटी मिलती रहे तो बस और कोई काम नहीं है। घर बेहद गंदी हालत में है। कपड़े शायद वह कभी महीने दो महीने में ही धोता या धुलवाता होगा। चादरें मैली कीचट है, तकिये के ग़िलाफ़ काले पड़ गये हैं। पूरे घर के हर कमरे में ज़ीरो पावर के बल्ब लगे हैं जो अजीब मनहूस सी रौशनी देते हैं। घर में फ्रिज नहीं है। कहता है यार मुझे ताज़ा खाना पसंद है। फ्रिज में रखा खाना नहीं खा पाता। ए.सी. नहीं लगवाया है। कहता है यार ये ए.सी. और कूलर मुझे सूट नहीं करते. . .नज़ला हो जाता है। पूरा घर कबाड़ खाना बना हुआ है। मैंने कई बार कहा कि किसी को पार्टटाइम सफाई के लिए बुला लिया करो। इस पर कहता है यार नौकर चोर होते हैं। मैं बहुतों को आज़मा चुका हूं। अब तो अच्छा है कोई नौकर न रखा जाये।

एक बार मुझे गुस्सा आ गया था और मैंने सख्ती से कहा था "देखो ये जो तुम कंजूसी करते हो. . .एक-एक पैसा दांत से पकड़ते हो . . . किसके लिए? तुम्हारा कोई आगे पीछे है नहीं, ले देके एक बहन और बहनोई हैं जिनसे तुम्हारी मुक़दमेबाज़ी हो चुकी है और वे तुम्हारे खून के प्यासे हैं। क्या तुम उन्हीं के लिए ये सब जमा कर रहे हो।"

"नहीं यार तौबा करो।"

"तो फिर?"

वह खामोश हो गया। खाली खाली आंखों से देखने लगा। लेकिन पांच साल बाद भी वही हाल था। दस साल बाद भी वही हाल और मुझे यकीन हो गया था कि मोहसिन टेढ़े को पैसा बचाने में इतना सुख मिलता, इतना मज़ा आता है, इतना संतोष होता है, इतना नशा आता है कि वह पैसा बचाने से आगे की बात सोचता ही नहीं. . .बिल्कुल वैसे ही जैसे तेज़ नशा करने वाले ये नहीं सोचते कि नशा उतरने के बाद क्या होगा।

"न तो संविधान किसी को कुछ दे सकता है और न कानून ही किसी को कुछ दे सकता है। हज़ारों साल की सामाजिक संरचना और उससे जुड़ी सामाजिक मान्यताएं एकदम या पच्चीस पचास साल में तो टूट नहीं सकतीं।" सरयू ने कहा।

"लेकिन तुम वह सब 'जस्टिफाई` नहीं कर सकते हो जो रावत के साथ किया जा रहा है।" मैंने कहा।

ताज मानसिंह के टेरेस गार्डेन में रात ढल रही है। लताओं और पौधों के पीछे से दूधिया रौशनी अपनी अंदर एक छद्म हरियाली लिए बाहर आ रही है। कोई एक पाँच सौ हज़ार लोग तो होंगे इस लोकार्पण समारोह में। मैं और

सरयू थोड़ा हटकर किनारे बैठे थे।

"तुमने कभी सोचा था ऐसे भी हुआ करेंगे लोकार्पण समारोह" मैंने सरयू से पूछा।

"ये . . .अब क्या बताऊं. . .ये लोकार्पण नहीं है और फिर लोकार्पण है. . .किताब का दाम पच्चीस हज़ार रुपये है. . .विषय है भारत की "आधुनिक आध्यात्मिक कला।"

"इस्पानसर किसने किया है?"

"बीना रंजू ने. . .जिसने पिछले साल सौ करोड़ का 'आक्शन` किया था. . .कहा जा रहा है यह भारतीय कला के लिए बिकने की दृष्टि

से स्वर्णिम युग है. . .करोड़ की रकम छोटी हो गयी है।"

फ्हिंदी लेखन का यह कौन सा युग चल रहा है?" मैंने सरयू से चुटकी ली।

"इतने सुंदर वातावरण में एक दुख भरी दास्तान क्यों सुनना चाहते हो?" वह हंसकर बोला।

"तो अच्छा ही हुआ मैंने कहानियां लिखना बंद कर दिया. ."

"अब क्या कहें यार. . .तुमने दो चार अच्छी कहानियां लिखी थीं।"

राजधानी में साहित्य, कला, संगीत, पत्रकारिता, मीडिया, फैशन, प्रकाशन के जितने भी नामी और बड़े लोग हैं सब यहां देखे जा सकते हैं। अब ऐसा कोई 'इवेण्ट` हो ही नहीं सकता जिसका 'बिजनेस एन्गिल` न हो।

"हां तो तुम कुछ रावत के बारे में कह रहे थे।"

"वो यहां आया हुआ है. . .देखो लाता हूं. . .तुम यही बैठना।" सरयू उठकर चला गया।

रावत को मैंने बहुत दिनों बाद देखा वह झटक गया है।

"कहो क्या हाल है?" मैंने पूछा।

"बस समझो यु----चल रहा है।" वह बड़े तनाव में लग रहा था।

"क्या मतलब?"

"यार वो मैंने तुझे कहानी सुनाई थी न कि मेरा पिता भेड़ियों से लड़ गया था. . .तो मैं भी साला इन भेड़ियों से लड़ रहा हूं. . .

"अरे यार तुम इसको इतनी गंभीरता से क्यों ले रहे हो. . .ये तो सरकारी ऑफिसों में होता ही है।" सरयू ने कहा।

रावत को गुस्सा आ गया। उसका चेहरा जो पहले से लाल था कुछ और लाल हो गया।

"सीरियसली न लूं? वो साले मेरे नौकरी ले लेना चाहते हैं। मुझे जेल भिजवाना चाहते हैं. . .तुम कह रहे हो सीरियसली न लो।"

"यार मेरा ये मतलब नहीं था। मैं कह रहा करो सब पर दिल पर न लो. . .हाई ब्लड प्रेशर वगैरा का चक्कर अच्छा नहीं है।"

"अरे यार चेक करा लिया है. . .बहुत थोड़ा है. . .डॉक्टर ने दवा दी है. . .।"

"लेकिन तुम पी क्यों रहे हो?"

"मैंने पूछ लिया है यार डॉक्टर से. . .वह कहता है थोड़ी बहुत चलेगी।"

"तुम्हारा डॉक्टर कौन है?"

"वही यार ब्लाक के मोड़ पर बैठता है. . .अच्छा होम्योपैथ है।"

मैंने और सरयू ने एक दूसरे को देखा लेकिन हम कुछ बोले नहीं।

"पिछले हफ्ते मुझे एक फाइल पकड़ा दी गयी है. . .एक 'इन्क्वायरी` करना है मुझे. . .कुछ अधिकारियों पर पांच करोड़ हज़म कर जाने का आरोप है। मिनिस्टर ने 'इन्क्वायरी आर्डर` की है, फाइल घूमती फिरती मेरे पास आ गयी है। अब मैं वो काम करूंगा जो सी.बी.आई. करती है. . .और थोड़ी गफ़लत हो गयी तो मैं भी चपेट में आ जाऊंगा. . .यार ये काम होता है डायरेक्टर मीडिया का?" वह खामोश हो गया।

"पानी अब सिर से ऊपर जा रहा है. . .तुम इन साले अफसरों के नाम बताओ. . .मैं इनकी नाक में नकेल डलवाता हूं।" मैंने कहा।

"तुम क्या करोगे।" वह बोला।

"यार मेरे दोस्त की गर्लफ्रेण्ड कैबनिट सेक्रेटरी की गर्लफ्रेण्ड भी है।" मैंने उत्साह से कहा।

सरयू हंसने लगा और पूरी फ़िज़ा अगंभीर हो गयी।

"देखो मैं चूड़ियां नहीं पहनता. . .मैं सालों को ज़मीन चटा दूंगा . . . बस देखते जाओ।" वह उत्तेजना में बोला।

"चलो अब जैसी तुम्हारी मर्जी।"

रावत जल्दी चला गया क्योंकि उसके पास मंत्रालय की गाड़ी थी। हम दोनों को जल्दी नहीं थी। सरयू पीने पर आता है तो आउट हुए बिना नहीं मानता। मैं भी आज मूड़ में हूं। दोनों ने सोचा, खूब पी जाये. . . फिर जामा मस्जिद जाकर खाना खाया जाये।

"तुम्हें पता है नवीन रिटायर हो गया।" सरयू ने कहा।

"अरे यार वो है कहां?"

"घर पर ही है. . ."

"तो अब क्या कर रहा है?"

"कह रहा था यार सेहत ऐसी है नहीं कि कोई 'जॉब` पकड़ू . . .बस वैसे ही लिखना पढ़ना होता रहेगा।"

"गुड. . .अपने अखब़ार में उसे जगह दो।"

"हां हां. . .

२८

मैं जानता था कि मेरा बोलना एक विस्फोट की तरह लिया जायेगा। मैं खामोश था। कुछ लोग मेरी तरफ इस तरह देख रहे थे जैसे ये उम्मीद कर रहे हों कि मैं अपनी बात भी सामने रखूं लेकिन मैं खामोश था। मुझे मालूम था कि मैंने अगर कुछ कहा तो 'द नेशन` के दफ्तर में मेरे लिए तंग करने की नयी रणनीति तय कर ली जायेगी। उनका यह दुर्भाग्य ही है कि मैं उस ज़माने से काम कर रहा हूं जब परमानेंट नौकरी नाम की कोई चीज़ हुआ करती थी और दिल्ली पत्रकार संघ नाम की एक सक्रिय और प्रभावशाली यूनियन थी। आज हालात ये हैं कि मैंनेजमेण्ट जब चाहे जिसकी नौकरी ले सकता है। नाकरी ले लेना केवल शब्द नहीं है।

एडीटर-इन-चीफ विस्तार से बता रहे थे कि अब अखबार का वह 'रोल` नहीं रह गया है जो तीस साल पहले हुआ करता था। अब अखबार भी एक 'प्रोडक्ट` है और उसे खरीदने वाले 'पाठक` नहीं बल्कि 'बायर` हैं। मार्केट की ज़रूरतें हैं। सम्पन्न मध्यवर्ग की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व अखबार में नहीं होगा तो उसे कौन खरीदेगा। खासतौर से टी.वी. चैनलों की इस 'रेलपेल` में अखबार खो जायेगा। उन्होंने कहा 'न्यूज़ इज़ गुड न्यूज़`

हरीश कह रहा था 'अली साब, हम आप अखबारों को रोते हैं। चैनलों की तरफ देखिए तो आंखें खुल जाती हैं. . .

'देखो मुझे तो लगता है फिलहाल लोग हर मोर्चे पर लड़ाई हार चुके हैं।`

'यु----तो नहीं हारे हैं अली साहब।`

'मैं तो ये सोचता हूं हमें अब तो ये तय करना पड़ेगा कि युद्ध शुरू कहां से किया जाये? हमारे जो जाने बूझें तरीके थे वे तो शायद कुंठित हो गये हैं. . .देख रहे हो ट्रेड यूनियन आंदोलन खत्म हो गया। किसानों के बड़े-बड़े संगठन लापता हो गये। पत्रकारों के संघ छिन्न-भिन्न हो गये. . .और सब ख़ामोश हैं। अखबार किसानों की आत्महत्याओं को चौथे पाँचवें पेज पर डाल देते हैं. . .संवेदन हीनता सरकार, प्रशासन, संस्थाओं पर ही नहीं पूरे समाज पर अधिकार जमा चुकी है।`

'अली साब आज की मीटिंग में आप कुछ बोले नहीं?` हरीश ने कहा।

'मैं क्या बोलता तुम जानते हो। यह भी जानते हो उससे क्या होता? तुम तो ये भी जानते हो कि नौकरी मेरे लिए मजबूरी नहीं है. . .`

'एक करोड़ का तो अपना बंगला है।`

'वो मेरी 'वाइफ` का है।`

वाइफ`भी तो आपकी है।`

'हां, टेक्नीकली सही कह रहे हो।`

वह हंसने लगा।

'देखो अकेले आदमी के बोलने और झगड़ने से क्या होगा? थोड़ा चीजों को समझने की कोशिश करते हैं। मैंने जिंदगीभर 'रुरल इंडिया` पर रिर्पोटिंग की है। चार किताबें हैं। एवार्ड्स हैं लेकिन आज जब किसान आत्महत्याएँ कर रहे हैं तो मेरा अखबार मुझसे यह नहीं कहता कि मैं उन इलाकों का दौरा करूं और लिखूँ। क्यों? अख़बार ने अपनी प्राथमिकताएं तय कर ली है। . . .पहले भी सरकार, प्रशासन, कानून, न्यायालय, विकास योजनाएं केवल दो प्रतिशत लोगों के लिए थीं लेकिन यह माना जाता था कि गरीबों और पिछड़े हुओं की ज़िम्मेदारी भी हमारे ऊपर है। पर अब यह नहीं माना जाता है। यह 'पैराडाइम शिफ्ट` है। पहले भी बड़े उद्योगपति अपने हितों को पूरा करने के लिए अखबार निकालते थे पर अब वे एक जीवनशैली, एक विचार, एक सिद्धांत जो उन्हें फलने-फूलने में मदद करता है, के लिए समाचार-पत्र निकाल रहे हैं, टी.वी. चैनल चला रहे हैं. . .और यह सिद्धांत पूंजी की सत्ता. . .

यानी पूंजी ही सब कुछ है. . .उसके अतिरिक्त और कुछ भी कुछ नहीं है. . .और पूंजी अपने सत्ता के रास्ते में किसी को नहीं आन देती. . .जो आता है उसे बर्बाद कर देती है. . .वह जानती है कि लोगों की इच्छा शक्ति उससे बड़ी है. . .इसलिए सबसे पहले वह लोगों को तोड़ती है, . . .ऐसे समाज का निर्माण कर रही है तो उसके साथ चले, उसे समर्थन दे, उसके शोषण में शामिल हो, उसका शोषण किया जा सके और वह दूसरे का शोषण कर सके. . .बिल्कुल निर्मम और अमानवीय तरीके से. . .`

'ये बातें आपने मीटिंग में क्यों नहीं कही?`

'यार तुम्हारे ये सवाल पूछने से अपने एक पुराने दोस्त की याद आ गयी और उनका एक लतीफा याद आ गया. . .हमारे इन दोस्त का नाम जावेद कमाल था. . .रामपुर के पठान थे। अलीगढ़ में कैंटीन चलाते थे। शायर थे। दुनिया का कोई ऐसा काम नहीं है जो उन्होंने न किया हो। अव्वल नंबर के गप्पबाज़ और दोस्त नवाज़ आदमी थे। रामपुर के लतीफ़े सुनाया करते थे। उनके लतीफ़ों में 'हब्बी` नाम का एक पात्र आया करता था जो अर्धपागल बुद्धिमान चरित्र था। एक बार हुआ यह कि पता नहीं हब्बी के दिमाग में क्या आई कि शहर के सबसे बड़े चौराहे पर खड़े होकर शहर के दरोगा को गालियां देने लगा। ख़ैर साहब नवाब का ज़माना। शहर दरोगा के पेशाब से चिराग जला करता था। उसे खबर हो गयी। उसने चार सिपाही भेजे और 'हब्बी` को पकड़कर थाने बुलाया लिया। वहां 'हब्बी` की बहुत कटाई की। बुरी तरह से पिटे ठुके हब्बी घर आये। बिस्तर पर पड़ गये। हल्दी-वल्दी लगाई गयी। लोग देखने आने लगे। किसी ने पूछा क्यों हब्बी, दरोगा जी को फिर गालियां दोगे?` हब्बी ने कहा 'दूंगा और ज़रूर दूंगा लेकिन अपने झोपड़े में।`

'तो आप भी क्रांतिकारी बातें अपने कैबिन ही में करेंगे?` हरीश ने कहा।`

'हां, यही समझ लो. . .बात दरअसल में है कि हमारे पास रास्ता नहीं है. . .रास्ते की तलाश करनी चाहिए।`

'आप तो अपना अख़बार शुरू कर सकते हैं अली साहब`, हरीश ज़ोर देकर बोला।

'हां, कर सकता हूं. . .किसके लिए और किन शर्तों पर. . .और किस व्यवस्था के अंतर्गत? दिल को तस्कीन देने के लिए कुछ किया जा सकता है, पर मकसद दिल को तस्कीन देना तो नहीं है।`

'अली साब आप जो 'क्लैरिटी` चाहते हैं वह कभी मिलेगी?` उसने बुनियादी सवाल किया और मैं खुश हो गया।

'हां ये बिल्कुल ठीक कहा तुमने. . .बिल्कुल ठीक।`

कमरे का अंधेरा धीरे-धीरे आकृतियों को मिटा रहा था। ऊपर पंखे पर अदृश्य हो गये थे। बस सर सर की आवाज़ धीमे-धीमे रो रही थी।

. . .हम स्कूल से लौट कर आये तो देखा कपड़ों और सामान का ढेऱ लगा हुआ है। नये-नये कपड़े, गहने, सामान. . .सब रखा था. . .गांव से ताऊ और ताई आ गये थे। ताई जब भी आती थीं हमें टोकने-टाकने का काम शुरू हो जाता था। ऐसे मत बैठो, ऐसे लड़कियां नहीं बैठतीं. . .ताऊ जी कहते. . .अब इसे सलवार कमीज़ पहनाया करो . . .बड़ी हो गयी है. . .पर स्कूल की ड्रेस तो यही है. . .वे बुरा-सा मुंह बनाकर अपनी सफेद मूंछों को मरोड़ते हुए कहते क्या विद्वान बनाओगे इसे. . .हम डर जाते थे कि पता नहीं कब हमारा नाम स्कूल से कटवा दिया जाये. . .ऐसे मत बैठा करो, ऐसे मत चला करो, ऐसे मत हंसा करो. . .ऐसे मत खाया करो. . .इसको ये मत खिलाया करो, ताड़ की तरह लंबी हो जायेगी. . .रोटी ऐसे नहीं डाली जाती, ऐसे डालते हैं . . . अचार डालना सिखाया है? ऐसे टुकुर-टुकुर क्या देखती रहती है . . .हमने ताऊजी और ताईजी के पैर छुए। ताऊजी ने पिताजी से कहा 'बस यही आयु है. . .तुम सही समय पर विवाह कर रहे हो।` हम सुनकर भौंचक्के रह गये। कमरे में आ गये और रोने लगे। मम्मी खाने के लिए बुलाने आयी। तो हमने उनके दोनों हाथ पकड़कर पूछा- 'हमारी शादी तो नहीं हो रही है न?` मम्मी हंसने लगी, 'अरे पगली शादी तो हर लड़की की होती है।`

'तो तुमने मुझसे झूठ बोला था।`

'चल, मां-बाप में सच-झूठ कुछ नहीं होता।`

'मैं शादी नहीं करूंगी. . .पढ़ूंगी. . .स्कूल में सब मुझे छेड़ते हैं।`

'अरे तो छेड़ने। दे`

'नहीं. . .मेरा मन पढ़ाई में नहीं लगता।`

'अरे तो क्या है. . .`

'मैं शादी नहीं करूंगी. . .नहीं करूंगी. . .नहीं करूंगी. . .जोर डालोगे तो ज़हर खा लूंगी।`

'चल हट, पागल हुई है क्या. . .आ खाना खा ले।`

'नहीं, पहले ये कहो कि मेरी शादी नहीं होगी।`

'चल कह दिया नहीं होगी।`

'ये नहीं. . .ऐसे कहो कि अनु तुम्हारी शादी नहीं होगी।`

'चल कह दिया, अनु तेरी शादी नहीं होगी।`

'झूठ तो नहीं बोल रही हो?` मम्मी हंसने लगी। हमें गुस्सा आ गया।

'हम पढ़ना चाहते हैं. .. हमें गणित अच्छी लगती है. . .हम पढ़ना चाहते हैं।`

'अरे तो तुझे पढ़ने से कौन रोक रहा है. . .जितना पढ़ना है उतना पढ़. . .रोकता कौन है।`

. . .शाम को हम बाहर निकल रहे थे तो ताऊजी ने कहा, 'कहां जा रही है?`

'सहेली के यहाँ।`

'बस अब सब बंद. . .जा अंदर जाकर बैठ। ताई के पैर दाब।`

हम खड़े सोचते रहे। पापा भी वहीं बैठे थे। वे चुप रहे। हमें पापा पर गुस्सा आया। बोलते क्यों नहीं। ताऊ जी जब भी आते हैं पापा का मुंह बंद हो जाता है। बस हां भइया हां भइया. . .करते रहते हैं।

कमरे में सिसकियां उभरने लगीं. . . दबी-दबी और भीतर तक आत्मा को छीलती सिसकियां. . .

. . .हमने ये सब किसी को कभी नहीं बताया है. . .हमारी कोई फ्रेण्ड नहीं है। स्कूल में थे। पता नहीं कहां चले गये. . .कॉलिज हम कभी गये नहीं. . .हमारी कोई फ्रेण्ड. . .ये हमने किसी को नहीं बताया है. . .आपको बता रहे हैं. . .आपको. . .पता नहीं क्यों. . .जी चाहता है. . .बताने को. . .

मेरा हाथ अनु के कंधे पर चला गया। वह खिसक कर और पास आ गयी। स्पर्श की भाषा शब्दों की भाषा से ज्यादा विकसित है।

. . .फिर तो ये हमारी आदत हो गयी. . .जब कोई दुख हमें होता तो अपने को ही चोट पहुंचाते. . .इससे शांति मिलती थी। दर्द होता था, हम रोते थे. . .रोते रहते थे. . .।

. . .स्कूल में टीचरें हमें देखने आती थीं. . .हंसती थीं कि देखो इतनी छोटी लड़की की शादी हो रही है. . .हम डरकर भाग जाते थे. . फील्ड में बैठ जाते थे. . .टीचरें कहती थीं कैसे जाहिल मां-बाप हैं. . हमें ये अच्छा नहीं लगता था. . .लड़कियां. . .तो. . .बस. . .एक दिन गणित की टीचर ने बुलाया. . .हमें बहुत चाहती थी। पार्क में ले गयी। पूछती रहीं कि तुम्हारी शादी किससे हो रही है? इतनी जल्दी क्या है . . .हम क्या बताते. . .हम बोलते तो रुलाई छुट जाती. . .हम सिर हिलाकर या चुप रहकर जवाब देते रहे. . .फिर हमें देखकर गणित की टीचर की आंखों में आंसू

आ गये. . .उन्होंने हमें गले लगाया. . .तो हम रो पड़े. . .वे हमारे सिर पर हाथ फेरती रहीं. . .कहने लगीं. . .कितनी लड़कियां हैं जिनके कक्षा एक से लेकर सात तक गणित में हमेशा सौ में सौ नंबर आये हैं. . .क्या ये तुम्हारे पिताजी को नहीं मालूम?. . .हम क्या बोलते. . .

हम पढ़ना चाहते थे. . .मम्मी कहती थीं जाओ न स्कूल कौन रोकता है. . .लेकिन हम क्या जाते . . .लगता था हमारा दिमाग फट जायेगा. . .हम घर में गणित के सवाल हल करते थे तो अच्छा लगता था. . .फिर हमें शहला के भाई ने दसवें की गणित की किताब दे दी. . .उसे हम पढ़-पढ़कर सवाल हल करने लगे . . .बस यही हमें अच्छा लगता था. . .

उसके शरीर के कम्पन को मैं पूरी तरह महसूस कर रहा था। अंधेरा होने के बाद भी आंसू चमक जाते थे. . .ऐसा लगता था जैसे दुख का बांध टूट गया हो और तूफानी वेग के साथ पानी अपने साथ सब कुछ बहाये लिए जा रहा हो. . .हम दोनों उसी तूफान में बहने लगे. . . हो न हो. . .आदमी को आदमी का सहारा चाहिए ही होता है. . .जब कोई अपने दिल की बात कहता है तो सीधे दूसरे दिल तक पहुंचती है. . . दुख पास लाता है और सुख दूर करता है. . .मैं गुस्सा होने वाली मानसिकता से निकल चुका था। शुरू-शुरू में मेरी यह प्रतिक्रिया थी कि अनु के साथ जिन लोगों ने घोर अन्याय, अत्याचार किया है उन्हें सज़ा मिलनी चाहिए लेकिन फिर लगा दुख का सम्मान द्रवित होकर ही किया जा सकता है. . .और यही दुख का निदान है. . .जो होना था हो चुका है. . .बीत चुका है. . .पर वह हमारे अंदर है. . .जीवित है. . .उसका हम यही कर सकते हैं कि उसे बांट लें. . .

अनु रात कितने बजे सो गयी मैं ही कह सकता क्योंकि मैं समय की सीमाओं से बाहर हो गया था। हो सकता है मेरी भी पलक एक-दो मिनट को झपकी हो लेकिन मैं लगातार पंखे की गति के साथ रातभर घूम रहा था।

सुबह जब दोनों की आंख एक साथ खुली और हम दोनों को कुछ क्षण यह अजीब लगा कि रातभर हम इतना पास, इतनी निकट रहे हैं।

वह हड़बड़ाकर नहीं धीरे-धीरे उठी।

अहमद बहुत गुस्से में था ये वाजिब भी था। वह फोन पर दहाड़ रहा था। मैं चुपचाप सुन रहा था। जाहिर है वह दिल का गुबार कम करने के लिए ऐसा कर रहा था क्योंकि उसे अच्छी तरह मालूम था कि मैं इस सिलसिले में कुछ नहीं कर सकता। न तो सरकार में मेरा अमल-दखल है और न मेरे पास इस तरह के काम कराने की सलाहियत है।

'कहीं तुमने सुना है या देखा है कि 'एम्बैस्डर` की 'टर्म` पूरी होने से पहले ही 'कालबैक` किया गया हो. . .एम.ई.ए. ने टास्क फोर्स

बनाई है तो उसे कोई ज्वाइंट सेक्रेटरी 'हेड` कर सकता है। मुझमें क्या सुर्खाब के पर लगे हैं?`

'तुमने सेक्रेटरी से बात की?`

'हां. . .वो कहते हैं. . .कैबनेट डिसीजन` है. . . हम कुछ नहीं कर सकते।`

'अरे कैबनेट ने तो 'पॉलिसी डिसीजन` लिया होगा. . .ये तो नहीं कहा होगा कि तुम. . .`

'हां. . .इस तरफ के फैसलों में नाम कहां होते हैं।`

'फिर तुम्हारा नाम कैसे जुड़ गया इस फैसले में?`

'पहले तो मैं नहीं समझ पाया था. . .लेकिन शूज़ा के फोन आने के बाद 'क्लियर` हो गया।`

'क्या? शूज़ा।`

'हां।`

'तुम 'श्योर` हो. . .मुझे नहीं लगता सरकार में उसकी इतनी चलती है।`

'ये तुम नहीं जानते. . .उसकी पहुंच कहां नहीं है।`

'तो ये फैसला. . .`

मेरी बात काटकर वह बोला 'कई महीने से मुझे फोन कर रही थी कि कहीं मिलो. . .मैं टाल रहा था. . .बराबर टाल रहा था. . .उसे ये आदत नहीं है कि कोई उसकी बात टाले. . . उसने ही ये शगूफ़ा . . .

'लेकिन यार समझ में नहीं आता?`

'मेरी समझ में तो आ गया. . .सुबह उसका फोन आया था. . बड़ी खुश थी कि मैं दिल्ली आ रहा हूं।`

'तुमने क्या कहा?`

'मैं क्या कहता यार. . .ज़ाहिर है कि. . .तुम जानते ही हो. .``

एक हफ्ते के अंदर-अंदर अहमद को दिल्ली आना पड़ा। उसे साउथ ब्लाक में ऑफिस मिल गया। उसे एक ऐसी कोठी मिल गयी जो

उसके 'रैंक` के किसी ऑफीसर को मिल ही नहीं सकती।

शाम वाली बैठकें आबाद हो गयी हैं। इस दौरान कभी अनु आ जाती है तो देर हम लोगों के साथ बैठा देखकर गुलशन के बच्चों को पढ़ाने चली जाती हैं। वह जानती है कि अहमद उसे पसंद नहीं करता। अहमद दरअसल साधारण चीज़ों, लोगों, संबंधों, जगहों को बहुत नापसंद करता है। मुझसे कई बार कह चुका कि यार कहीं 'कुछ` करना है तो अपने स्टैण्डर्ड में जाओ. . .ये क्या तुम अनाड़ी टाइप की लौण्डियों को मुंह लगाते हो। मैं उसे टाल जाता हूं क्योंकि कुछ बताने का मतलब पूरी राम कहानी सुनाना होगा जो मैं नहीं चाहता। और वह सुनेगा भी नहीं।

एक शाम अहमद कुछ देर से आया। हमें मालूम था कि आज तक उसका बंगला सजाया जा रहा है और यह काम शूज़ा ने अपने हाथ में ले लिया है और आजकल अहमद शूज़ा के साथ रह रहा है।

दो 'ड्रिंक` लेने के बाद बोला 'यार ये शूज़ा का मामला उलझता जा रहा है।`

'हम तो समझ रहे थे कि सीधा होता जा रहा है`, शकील ने दाढ़ी खुजाते हुए कहा।

'नहीं यार. . .सच पूछो. . .तो. . .`

'बता यार बात क्या है? शर्म आती है।`

'नहीं शर्म की क्या बात. . .मैं उसकी 'डिमाण्ड्स` पूरी नहीं सकता।`

'क्या मतलब?`

'यार वो. . .'निम्फ़ो` है।`

'आहो. . .`

'मत पूछो. . .मेरे लिए इस उम्र में. . .कितना मुश्किल होगा . . . वह मेरे लिए कुछ 'स्ट्रांगपिल्स` ले आई है।`

'यार ये तुम उसके हाथ में खिलौना क्यों बन गये हो।`

'नहीं नहीं ऐसी बात नहीं है।`

'बात तो ऐसी ही है`, मैंने कहा।

'जिंदगीभर इसने औरतों को खींचा है और अब इसे एक औरत

खींच रही है तो परेशान हो रहा है`, शकील बोला।

'तुम्हारी कोठी ठीक होने के बाद शायद वह तुम्हारे साथ आ जायेगी?` उसके चेहरे का रंग उतर गया। लेकिन संभलकर बोला- 'जरूरी नहीं है।`

कुछ देर बाद बोला, 'मैं उससे पीछा छुड़ाना चाहता हूं।`

'तो फिर तुम उसे अपने निजी कामों में इतना दखल क्यों देने देते हो।`

वह खामोश हो गया। कुछ नहीं बोला। हम दोनों हैरानी से उसे देखते रहे।

अहमद ने कोठी में जो पहली पार्टी दी उसमें शूज़ा बिल्कुल उसकी पत्नी जैसा व्यवहार कर रही थी। वेटरों को ऑर्डर देना। मेहमानों की ख़ातिर तवाज़ों, राजदूतों के साथ-साथ चलना, अहमद से हंस-हंसकर बातें करना, बहुत शानदार और महंगे कपड़ों में अपने को श्रेष्ठ दिखा रही थी।

बगैर सोचे समझे ज़िंदगी गुज़र रही है। सुबह क्यों उठ जाता हूं? क्यों गुलशन चाय ले आता है? क्यों दस बजे के करीब नहाने चला जाता हूं? क्यों ग्यारह बजे नाश्ता करता हूं। ऑफिस की गाड़ी आती है। बैठता हूं चल देता हूं।

रिसेप्शन से होता, एक-दो के सलाम लेता-देता ऊपर पहुंचता हूं। मैं जानता हूं कि मेरे लिए लगभग कोई काम नहीं है। दो चार अखबार पढ़ना है। एक-दो चैनल देखने हैं। बड़े अधिकारी बुलायें तो जाना है और बस खत्म. . .कभी-कभी संकट हो जाता है तो सम्पादकीय लिख देता हूं. . .

पूरी जिंदगी बगैर सोचे विचारे बीत रही है। उसका क्या उद्देश्य है और क्या करना है? बड़े-बड़े सपने छोटे होते चले गये और अब छोटे होते-होते, होते-होते इतने छोटे हो गये कि मेरे सिफारिशी ख़त से किसी को नौकरी मिल जाती है तो लगता है सपना पूरा हो गया है।

मैं ही नहीं मेरी पीढ़ी और मेरा युग मिट चुका है। मेरा देश और मेरा समय हार चुका है ओर हम सपनों की राख के हिमालय पर बैठे हैं। सब कहते हैं निराश और उदास होना मेरी आदत है। विदेशी मुद्रा से देश का ख़ज़ाना भर गया है, आई.टी. में भारत ने बड़े-बड़े देशों को पीछे छोड़ दिया है। विदेशों से खरबों डालर देश में 'इनवेस्ट` हो रहा है। आज शहरों में जो चमक-दमक, पैसे की रेल-पेल, मल्टी प्लेक्स, कारें, लक्जरी अपार्टमेंट्स, फार्म हाउसेस है जो कि पहले कभी न थे। मैं इन सब बातों को मानता हूं लेकिन मुझे गालिब का एक शेर याद आता है

तारीफ़ जो बेहेश्त की सुनते हैं सब दुरुस्त

लेकिन खुदा करे वो तेरी ज्लवागाह हो।

मतलब यह कि स्वर्ग की जितनी प्रशंसा सुनते हैं सब ठीक है लेकिन ईश्वर करे वह ----स्वर्ग----तेरी ----प्रेमी/प्रेमिका----की ज्लवागाह ----जहां वह दिखाई देता है----हो. . .मैं कहता हूं करोड़ों, खरबों डालर की विदेशी मुद्रा हमारे ख़जाने में हैं, बहुत अच्छा आई.टी. के हम लीडर हैं, बहुत उत्तम, हज़ारों अरब डालर का निवेश हो रहा है, उत्तम है, मध्यम वर्ग में ऐसी सम्पन्नता कभी थी ही नहीं, बहुत अच्छा, लेकिन खुदा करे इस नये भारत में गरीब कम हो, बेरोज़गारी कम हो, दवा-इलाज की सुविधा, बच्चे स्कूल में पढ़ सकते हों, पीने का पानी मिल सकता हो, भ्रष्टाचार न हो, शासन का डण्डा न चलता हो, धर्मों और जातियों के बीच भयानक हिंसा न हों . . .विस्थापन. . .न हो लेकिन मेरी दुआ पूरी नहीं होती। दो प्रतिशत लोगों के जीवन में जो शानो शौकत आई है उसकी क्या क़ीमत देनी पड़ी है?

"सर. . ." मैं चौंक गया।

लिफ्टमैन दूसरे "लोर पर लिफ्ट रोके खड़ा था और मैं अपने सवालों में खोया हुआ था।

मैं लिफ्ट से बाहर आ गया।

एस.एस. अली. . .मेरा ये नाम कैसे हो गया? नौकरी की शुरुआत की थी और पहली बार कार्ड छपकर आये थे तो उन पर यही नाम था। सैयद साजिद अली. . .की जगह एस.एस.अली सुविधाजनक. . .छोटा . . . उच्चारण में आसान. . .

शीशा लगी काली मेज़ पर कुछ नहीं है। मेरा ये सख्त आदेश है कि मेज़ खाली रहना चाहिए। सामने कुर्सियां उनके पीछे सोफा, बराबर में कांफ्रेंस टेबुल जो ज़रूरत पड़ने पर डाइनिंग टेबुल भी बन जाती है।

ऑफिस की एक दीवार शीशे की बड़ी खिड़की है जिससे अंग्रेज़ों की बनाई दिल्ली दिखाई देती है।

ऑफिस में बैठकर सोचा यार मैं कितना सुरक्षित, कितने मज़े में, कितनी मस्ती में हूं. . .मैं 'द नेशन` का एसोसिएट एडीटर हूं. . .मैं सत्ता के एक खम्बे का हिस्सा हूं। मैं बड़े-से-बड़े सरकारी अधिकारी से सीधे फोन पर बात कर सकता हूं। मंत्री खुशी-खुशी समय देते हैं। बड़ा से बड़ा काम, मुश्किल से मुश्किल काम यहां से हो जाता है. . .मेरी सेक्रेटरी करा देती है. . .बस कहने की देर है। हर त्यौहार पर कमरा उपहारों और मिठाई के डिब्बों से भर जाता है। नये साल, बड़े दिन और क्रिसमस के मौके पर दूतावासों से डालियां आती है जिनमें स्काच विस्की के अलावा और न जाने क्या-क्या पटा पड़ा रहता है। पब्लिक सेक्टर भी पत्रकारों को उत्कृष्ट करने में आगे आ गया है। हूं तो ठाठ ही ठाठ है . . .जब तक नौकरी है तब तक ठाठ है. . .तो ठाठ मेरे नहीं ठाठ तो पद के हैं. . .और उसका क्या मतलब. . . ज़िंदगी सब की कटती है . . .किसी की बहुत आराम से, किसी की तकलीफ से, लेकिन कट जाती है. . .और यह सोचना ही पड़ता है कि क्यों जिंदगी कटने का उद्देश्य क्या है, मकसद क्या है? मौज, मस्ती, मज़ा, पैसा, औरत, शराब, सैर सपाटा? अफसोस कि मैं इस बात से अपने को 'कन्विन्स` नहीं पाता. . .कुछ और करना चाहता हूं जो कुछ ज्यादा बड़ा आधार दे सके। ज्यादा आनंद दे सके, ज्यादा संतोष दे सके. . .

शिप्रा अंदर आई मेरा आज के 'एप्वाइंटमेंण्ट्स` और कार्यक्रम सामने रख दिया।

"सर आज आपको 'एडोटोरियल` देना है।"

"दो लोग आउट ऑफ स्टेशन हैं।"

"ठीक है. . .बैठ जाओ।"

चौबीस साल की अति सुंदर और अति स्मार्ट शिप्रा पाश्चात्य शैली के कपड़े पहने सामने बैठ गयी।

"जाओ, एडीटोरियल लिखो।" मैंने उससे कहा।

"जी?" वह कुरसी से उछल पड़ी।

"हां. . .इसमें हैरत की क्या बात।

"मैं? सर मैंने कभी 'एडीटोरियल` नहीं लिखा।"

"और मैं जब पैदा हुआ तो 'एडीटोरियल` लिख रहा था।

"नहीं. . .नहीं. . ."

"जाओ लिखो. . .लेकिन 'इफ़`, 'बट`, 'परहैप्स`, 'लाइकली` वगैरा वगैरा का अच्छा इस्तेमाल करना. . ."

"सर . . .ऑफिस में लोग. . ."

"हां मैं जानता हूं. . .मेरे खिलाफ हैं. . .बात का बतंगड़ बनायेंगे. . .कहेंगे शिप्रा से 'एडीटोरियल` लिखवाता है. . .बहस होगी . . .मीटिंग होगी. . .मैं यही तो चाहता हूं. . .यही . . .और जो 'ईडियट्स` 'एडीटोरियल` लिखते हैं उनमें

और तुममें क्या फर्क है? तुम ज्यादा 'इंटीलिजेंट` हो।

वह हंसने लगी।

मैं उठकर खिड़की के पास आ गया। दूर तक अंग्रेज़ों की बनाई हुई दिल्ली फैली है। सुखद है कि यह हरी है। इस दिल्ली में पेड़ हैं। घास के मैदान है। हमने जो दिल्ली बनाई वह बंजर दिल्ली है। यह अंग्रेजों ने नहीं बनाई। हमें इसका 'क्रेडिट` या 'डिस्क्रेडिट` जाता है। यमुना जैसी सुंदर नदी को नाले में बदलने का काम भी अंग्रेज़ों ने नहीं किया है। दिल्ली के मास्टर प्लान से खिलवाड़ भी हमीं ने किया है। शहर के चारों तरफ बड़ी मात्रा में 'सलम` भी हमने ही बनाये हैं। हमने ही अपने लोगों को बिजली और पानी के लिए तरसाया है।

"क्या कर रहे हो उस्ताद।"

पीछे मुड़कर देखा तो नवीन. . .नवीन जोशी।

"आओ बैठो।"

अब उसके चेहरे पर इतमीनान वाला भाव आ गया है। सहजता दिखाई देती है। पता नहीं क्या होता पर कोई न कोई 'कैमिस्ट्री` काम करती है, 'रिटायर` आदमी के हाव-भाव, भाव भंगिमाएं, चलने फिरने का तरीका, सुनने-सुनाने के अंदाज़ बदल जाते हैं। 'रिटायर` होने का एक अजीब किस्म का असहजबोध चेहरे पर आ जाता है जिसका मेरे ख्याल से कोई औचित्य नहीं है।

"कहो क्या हाल है?"

"अरे यार, क्या हाल होंगे. . .हमें कौन पूछता है?"

"मतलब. . .?"

"यार सरयू को फोन करता हूं, वो नहीं उठाता. . .वो तो अपना यार साहित्य की राजनीति में डूब चुका है. . .पिछले साल नेशनल एवार्ड लिया, इस साल उसकी जूरी में आ गया है, अगले साल. . .

"शायद तुम्हारा नंबर आ जाये।" मैंने कहा और वह हंसने लगा।

"यार साजिद तुम्हें तो याद होगा।" वह कुछ ठहरकर बोला।

"हां प्यारे याद है. . . उस ज़माने में पूरी मण्डली का काम तुम्हारे बिना न चलता था. . .यार हम सब तो दिल्ली में बाहर से आये थे. . .तुम तो दिल्ली में ही पैदा हुए थे. . .असली दिल्ली वाले तो तुम थे।"

"मैं हर मर्ज की दवा हुआ करता था।" वह बोला।

"हां. . .ये तो है ही यार।"

चाय पीते हुए मैंने पूछा "और बताओ रावत का क्या हाल है?"

"यार दरअसल मैं आया ही रावत के बारे में बात करने था।"

"क्या बात है।"

"यार. . .भाभी का फोन आया था कि ऑफिस से आठ-नौ बजे से पहले नहीं आते। उसके बाद पीने बैठ जाते हैं। इस बीच थोड़ी सी बात भी मर्जी के खिलाफ़ हो जाये तो चिल्लाने लगते हैं. . .रात को सो नहीं पाते. . .उठ-उठकर टहलते हैं. . .बड़े तनाव में. . .।"

"तो तुमने रावत से बात की?"

"लाओ यार. . .ऑफिस का फोन दो।"

मैंने उसे घूरकर देखा।

"साले किसी की ज़िंदगी का सवाल है और तुम अपना फोन का बिल बचा रहे हो।"

"नहीं यार. . .दरअसल मोबाइल चार्ज नहीं किया है।"

हम दोनों ने रावत से लंबी बातचीत की। ऑफिस में होने की वजह से वह खुलकर बोल नहीं रहा था। लेकिन इतना तो पता चल रहा था कि वह भयानक तनाव में है और किसी दूसरे से मदद लेना अपमान समझता है। जितना हो सकता था हम लोगों ने उसे समझाया और मिलने के प्रोग्राम पर बात ख़त्म हो गयी।

- तुम क्या कर रहे हो? क्या सोचा है?``

- यार देखे नौकरी तो बहुत कर ली . . . और फिर सेहत भी

अब. . . तुम जानते ही हो. . .

- हम सब जानते और मानते है कि तुमने ऐसी सेहत में जो कुछ किया है वह क़ाबिले तारीफ है``

वह धीरे से बोला है - ठीक है यार . . .

- आगे क्या सोचा है?``

- कुछ सोचना ही पड़ेगा. . . घर में सब अपने-अपने कामों पर निकल जाते हैं मैं पड़ा-पड़ा क्या करता हूँ? कहाँ तक टी.वी. देखू. . .``

- लायब्रेरी चले जाया करो . . .

- यार गाड़ी कहाँ रहती है . . . बच्चे गाड़ी नहीं छोड़ते``

- घर पर लिखा करो``

- हाँ यार . . . यहीं सोचा है . . . लेकिन यार लिखने के लिए माहौल जरूरी है. . . और पुराने दोस्त हमें पूछते नहीं, सब साले बडे -बडे लोग हो गये है।``

- तुम्हारे लिए नहीं`` मैंने कहा वह हँसने लगा।

दो-तीन घण्टे नवीन से बात होती रही। मैंने अंदाजा लगाया कि वह गुज़रे जमाने की बातें बता रहा है, अपने परिवार के पुराने किस्से सुना रहा है रिटायरमेंट के बाद दोस्तों के बदल जाने की चर्चा कर रहा है।

मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि मोहसिन टेढ़े इतना खुश होगा। अंधेरे, छोटे और चारों तरफ से बंद कमरे में वह उसी तरह बैठा है जैसे अक्सर बैठाता है। लेकिन चेहरे पर खुशी फूटी पड़ रही है। मैंने इधर-उधर देखा। कोई वजह ऐसी नज़र न आई जो मोहसिन टेढ़े की खुशी की वजह हो।

"कहो. . .कैसे हो?"

"बस यार साजिद. . .परेशान आ गया था. . .खाने नाश्ते वाले चक्कर से तो. . .एक लड़की को लगा लिया है।"

"मैं तो तुमसे पहले ही कह रहा था।"

एक नेपाली-सी लगने वाले लड़की किचन से निकली जिसने जीन्स और छोटा-सा टाप पहन रखा था। लड़की की उम्र करीब बाइस-तेइस साल लगी। खूबसूरत कही जा सकती है। बाल लंबे और सीधे हैं। नाक चपटी है। आंखें छोटी हैं। गाल के ऊपर की हड्डियां उभरी हुई हैं. . .लेकिन मुहावरा है कि जवानी में तो गधी सी सुंदर होती है।

उसने चाय मेज पर रख दी।

"इनको आदाब करो. . .ये मेरे भाई हैं।" मोहसिन ने उससे कहा।

लड़की ने बड़े अदब से झुककर मुझे आदाब किया।

"यार साजिद मैं इसे अपना कल्चर सिखा रहा हूं।" वह गर्व और खुशी से बोला।

"माशा अल्लाह" मैंने व्यंग्य में कहा। वह हंसने लगा।

"इसका नाम क्या है?"

"इधर आओ. . .बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है?"

"जी मेरा नाम रिकी है. . .दार्जिलिंग में घर है।" वह किचन में चली गयी।

"तो तुमने इसे मुस्तकिल मुलाज़िम रखा हुआ है।"

"नहीं यार, इतना पैसा कौन देगा. . .ये पार्ट टाइम आती है।"

"और तुम इसे अपना कल्चर सिखा रहे हो।" मैंने कहा। वह हंसने लगा।

"सुबह आती है. . .एक घण्टे के लिए. . .शाम को आती है एक घण्टे के लिए. . .यार बहुत दुखी लड़की है।"

"तो इसका दुख बांट तो नहीं रहे हो।"

मोहसिन टेढ़े हो-हो करके हंसने लगा।

"तुम तो इसे 'फुल टाइम` रख लो।

"नहीं यार" वह घबरा कर से बोला।

"क्या लेगी. . .चार-पांच हज़ार . . .और क्या? कपड़े वगैरा तो तुम दिला ही दिया करोगे।"

"नहीं. . .नहीं यार लफड़ा हो जायेगा।"

"अभी क्या सिलसिला है।"

वह आगे झुक आया। इसे कभी-कभी मैं रात में रोक लेता हूं। रुक जाती है। यार साजिद बिस्तर में लावे की तरह लगती है। यार मैं तो पागल हो जाता हूं।

"ज़रा संभलकर. . .तुम पचास के हो।"

"हां-हां यार. . ."

>>पीछे>> >>आगे>>

शीर्ष पर जाएँ

गरजत-बरसत

असगर वजाहत

 अध्याय 5

रात तीन बजे के आसपास अक्सर कोई जाना पहचाना आदमी आकर जगा देता है । किस रात कौन आयेगा? कौन जगायेगा? क्या कहेगा यह पता नहीं होता। जाग जाने के बाद रात के सन्नाटे और एक अनबूझी सी नीरवता में यादों का सिलसिला चल निकलता है। कड़ियां जुड़ती चली जाती है और अपने आपको इस तरह दोहराती है कि पुरानी होते हुए भी नयी लगती है।

ये उस ज़माने की बात है जब मैंने रिपोर्टिंग से ब्यूरो में आ गया था। हसन साहब चीफ रिपोर्टर थे। उन्होंने खुशी-खुशी मेरे प्रोमोशन पर मुहर लगायी थी। उसके बाद नये चीफ के साथ उनके मतभेद शुरू हो गये। हसन साहब उम्र की उस मंज़िल में थे जहां लड़ने झगड़ने से आदमी चुक गया होता है। रोज़-रोज़ के षड्यंत्रों और दरबारी तिकड़मों से तंग आकर उन्होंने एक दिन मुझसे कहा था "मियां मैं सोचता हूं दिल्ली छोड़ दूं।"

मुझे हैरत हुई थी। सन् बावन से दिल्ली के राजनैतिक, सामाजिक परिदृश्य के साक्षी हसन साहब दिल्ली छोड़ने की बात कर रहे हैं जबकि लोग दिल्ली आने के लिए तरसते हैं। इसलिए कि दिल्ली में ही तो लोकतंत्र का दिल है। यही से उन तारों को छेड़ा जाता है जो पद, प्रतिष्ठा और सम्मान की सीढ़ियों तक जाते हैं।

"ये आप क्या कह रहे हैं हसन भाई?"

"बहुत सोच समझ कर कह रहा हूं. . .देखो हम मियां, बीवी अकेले हैं. . .हम कहीं भी बड़े आराम से रह लेंगे. . .मैं किसी तरह का 'टेंशन` नहीं चाहता. . .मैंने जी.एम. से बात कर ली है। अखबार से एक स्पेशल क्रासपाण्डेंट शिमला भेजा जाना है. . .हो सकता है, मैं चला जाऊं।"

"इतने सालों बाद दिल्ली. . ."

"मियां दिल्ली से मैंने दिल नहीं लगाया हैं।``

हसन साहब शिमला चले गये। सुनने में आता था बहुत खुश है। स्थानीय पत्रकारों से खूब पटती है। अपने स्वभाव, लोगों की मदद, हारे हुए के पक्ष में खड़े होने के अपने बुनियादी गुण के कारण बहुत लोकप्रिय हैं। शिमला से वे जो

भेजते थे उसे चीफ रद्दी में डाल देते थे लेकिन उन्होंने कभी प्रतिरोध नहीं किया। पता नहीं जिंदगी के इस मोड़ पर उन्हें कहां से सहन करने की ताकत मिलती थी।

उनके शिमला जाने के कुछ साल बाद मैं तन्नो और हीरा के साथ शिमला गया था। वो वे मेरा सामान होटल से 'लिली काटेज` उठा लाये थे। पहाड़ के ऊपर ब्रिटिश पीरियड की इस काटेज में वे और भाभी रहते थे। यहां से शिमला की घाटी दिखाई देती थी। उन्होंने बाग़वानी भी शुरू कर दी थी और शहद के छत्ते लगाये थे। 'लिली काटेज` भी उनके साफ सुथरे और संभ्रांत अभिरुचियों से मेल खाती थी। नफ़ासत, तहजीब, तमीज़, खूबसूरती, मोहब्बत और रवायत के पैरवीकार हसन साहब अपनी जिंदगी से खुश थे। रोज कई किलोमीटर पैदल चलते थे। शाम बियर पीते हुए क्लासिकल संगीत सुनते थे। जाड़ों की सर्द रातों में आतिशदान के सामने बैठकर 'रूमी' और 'हाफ़िज़` का पाठ करते थे। उन्हें देखकर मैं बहुत खुश हुआ था।

शिमले एक दिन मुझे जबरदस्ती घसीटते हुए पता नहीं क्यों मुख्यमंत्री से मिलवाने ले गये थे। सचिवालय में मुख्यमंत्री के पी.एस. ने बताया कि कैबनेट की मीटिंग चल रही है। मैं खुश हो गया था कि यार मुख्यमंत्री से मिलना टल गया। मुझे यकीन था कि तन्नो और तीन साल के हीरा को मुख्यमंत्री से मिलने में कोई दिलचस्पी नहीं है लेकिन हसन साहब मानने वाले नहीं थे। न्यूज़ वाले जो ठहरे।

तन्नो और हीरा को ऑफिस में छोड़कर वे मुझे लेकर गैलरी में आ गये। फिर गैलरियों की भूल भुलइया से होते एक छोटे से कोटयार्ड में पहुँचे जहां उस कमरे की खिड़कियां थी जिनमें कैबनेट की मीटिंग हो रही थी। वहां से मुख्यमंत्री दिखाई पड़े। उन्होंने जब हसन साहब को देखा तो हसन साहब ने उन्हें हाथ से इशारा किया और मुझसे बोले "चलो निकल आयेगा।"

हम ऑफिस में आये तो मुख्यमंत्री मीटिंग से निकलकर अपने चैम्बर में आ चुके थे।

मुख्यमंत्री से हम लोगों का परिचय हुआ। परिचय के बाद मुख्यमंत्री बड़ी बेचैनी से बोले "लाइये. . .लाइये. . ." मतलब वे यह आशा कर रहे थे कि हम किसी काम से आये हैं। हमारे पास काई प्रार्थना पत्र है जिस पर उनके हस्ताक्षर चाहिए।

"ये लोग तो घूमने आये हैं", हसन साहब ने बताया।

"घूमने आये हैं. . .तो मैनेजिंग डायरेक्टर टूरिज्म़ को फोन करो", उन्होंने अपनी पी.एस. से कहा।

एक दो अनौपचारिक बातों के बाद मुख्यमंत्री कैबनेट बैठक में चले गये।

"आपने काफी काबू में किया हुआ है", मैंने बाद में हसन साहब से कहा।

"अरे भई. . . ये तो चलता ही रहता है. . .अभी यहां तूफान आया था। एक अंदाजे के मुताबिक दस करोड़ का नुकसान हुआ है. .मुझसे ये कह रहे हैं मैं 'द नेशन` में रिपोर्ट के साथ बीस करोड़ का नुकसान बताऊं. . .सेंटर से ज्यादा पैसा मिल जायेगा।"

शिमला जाने के कोई दस-ग्यारह साल बाद यह ख़बर मिली थी कि हसन साहब रिटायर होकर दिल्ली आ गये हैं ओर 'नोएडा` में किराये का मकान लिया है। सन् बावन से दिल्ली में रहने वाले हसन साहब के पास शहर में कोई अपना मकान या फ्लैट नहीं है।

एक बार बता रहे थे। काफी पुरानी बात है। दिल्ली के किसी मुख्यमंत्री को किसी 'घोटाले` के बारे में हसन साहब स्टोरी कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने उन्हें ऑफिस बुलाकर उनके सामने पूरी 'सेलडीड` के काग़ज़ात रख कर कहा था हसन साहब दस्तख़त कर दो. . .कैलाश कालोनी का एक बंगला तुम्हारा हो जायेगा।

हसन साहब ने उसी के सामने काग़ज फाड़कर फेंक दिये थे। उनके 'नोएडा` वाले मकान में मैं कभी-कभी जाता था। रिटायरमेण्ट के बाद वे अपने नायाब 'कलेक्शन` को 'अरेन्ज` कर रहे थे। उनके पास सिक्कों का बड़ा 'कलेक्शन` था। एफ. एम. हुसैन ने उन्हें कुछ स्केच बना कर दिए थे। बेगम अख्तर ने उनके घर पर जो गाया था उसकी कई घण्टों की रिकार्डिंग थी। चीन यात्रा के दौरान उन्होंने बहुत नायाब दस्तकारी के नमूने जमा किये थे। जापान से वे पंखों का एक 'कलेक्शन` लाये थे। इस सब में वे लगे रहते थे और वही उत्साह था, वही लगन, वही समर्पण और वही सहृदयता जो मैंने तीस साल पहले देखी थी।

एक ही आद साल पता चला उन्हें 'थ्रोट कैन्सर` हो गया है। वह बढ़ता चला गया। उन्हें 'ऐम्स` में भरती कराया गया। कुछ ठीक हुए। फिर बीमार पड़े और साले होते-होते 'सीरियस` हो गये। 'ऐम्स` में उनसे मिलने गया तो लिखकर बात करते थे। बोल नहीं सकते थे। आठ बजे रात तक बैठा रहा। घर आया तो खाना खाया ही था कि उमर साहब का फोन आया कि हसन साहब नहीं रहे।

भाभी को उमर साहब की बीवी लेकर चली गयी। हम लोगों ने रिश्तेदारों को फोन किए। रात में बारह के करीब उनकी 'बॉडी` मिली। दफ्ऩ वगैरा तो सुबह ही होना था। सवाल यह था कि 'बॉडी` लेकर कहां जायें। उमर साहब ने राय दी कि जोरबाग वाले इमाम बाड़े चलते हैं। वहीं सुबह गुस्ल हो जायेगा और दफ्ऩ का भी इंतिज़ाम कर दिया जायेगा।

इमामबाड़े वालों ने कहा कि रात में 'डेड बॉडी` को अकेले नहीं छोड़ा जा सकता। आप लोगों को यहां रुकना पड़ेगा। जाड़े के दिन थे। हम वहां कहां रुकते 'डेड बॉडी` के लिए जो कमरा था वहां 'बॉडी` रख दी गयी थी। उसके बराबर के मैदान में मैंने गाड़ी खड़ी कर दी। मैंने और उमर साहब ने सोचा, गाड़ी रात गुज़ार देंगे।

जब सर्दी बढ़ने लगी तो उमर साहब ने कहा "अभी पूरी रात पड़ी है और गाड़ी में बैठना मुश्किल हो जायेगा. . .चलिए घर से कम्बल और चाय वगैरा ले आते हैं।"

उमर साहब ने बताया कि वे पास ही में रहते हैं। तुगल़काबाद एक्सटेंशन के पीछे उन्होंने मकान बनवाया है। गाड़ी लेकर चले तो पता चला कि तुगलकाबाद से चार पांच किलोमीटर दूर किसी 'अनअथाराइज़` कालोनी में उमर साहब का मकान है। कालोनी तक पहुंचते-पहुंचते सड़क कच्ची हो गयी और इतनी ऊबड़-खाबड़ हो गयी कि गाड़ी चलाना मुश्किल हो गया। कई गलियों में गाड़ी मोड़ने के बाद उनके कहने पर मैंने जिस गली में गाड़ी मोड़ी वह गली नहीं तालाब था। पूरी गली में पानी भरा था। दोनों तरफ अधबने कच्चे, पक्के घर थे और गली में बिल्कुल अंधेरा था।

मैंने उनसे कहा "भाई ये तालाब के अंदर से गाड़ी कैसे निकलेगी।"

-यहां से गाड़ियां निकलती है`` उन्होंने कहा।

"मैं निकाल दूं। पर अगर गाड़ी फंस गयी तो क्या होगा? रात का दो बजा है. . ."

बात उनकी समझ में आ गयी। बोले "मेरा घर यहां से ज्यादा दूर नहीं है। मैं कम्बल और चाय लेकर आता हूं। आप यहीं रुकिए।"

उमर साहब के जाने के बाद पता नहीं कहां से इलाके के करीब पच्चीस तीस कुत्तों ने गाड़ी घेर ली और लगातार भौंकने लगे. एक टार्च की रौशनी भी मेरे ऊपर पड़ी। मैं कुत्तों की वजह से उतर नहीं सकता था। लोगों का शक हो रहा था कि मैं कौन हूं और रात में दो बजे उनके घर के सामने गाड़ी रोके क्यों खड़ा हूं।

ख़ासी देर के बाद उमर साहब आये और हम इमामबाड़े आ गये। रातभर हम लोग हसन साहब के बारे में बातचीत करते रहे।

अगले दिन हसन साहब को दफ्ऩ कर दिया गया। उनके रिश्तेदार सुबह ही पहुंच गये थे। हम दस-पन्द्रह लोग थे कब्रिस्तान में किसी ने मेरे कान में कहा "वो हिम्मत से ज़िंदा रहे और हिम्मत से मरे।"

२५

"भई माफ करना. .. तुम्हारी बातें बड़ी अनोखी हैं. . .पहली बात तो ये कि मुझे अजीब लगती हैं. . .दूसरी यह कि उन पर यक़ीन नहीं होता. . .मैं यह सोच भी नहीं सकता कि कोई दिल्ली में पैदा हुआ। पला बढ़ा लिखा और उसने लाल किला, जामा मस्जिद नहीं देखी", मैंने अनु से कहा।

"अब हम आपको क्या बतायें. . .पापा की छुट्टी इतवार को हुआ करती थी। स्कूल भी इतवार को बंद होते थे. ..पापा कहते थे कि हफ्त़े में एक दिन तो छुट्टी का मिलता है आराम करने के लिए. .. उसमें भी बसों के धक्के खायें तो क्या फ़ायदा. . .फिर कहते थे अरे घूमने फिरने में पैसा ही तो बर्बाद होगा न? उस पैसे से कुछ आ जायेगा तो पेट में जायेगा या घर में रहेगा. .."

"और स्कूल वाले. . ."

"अली साहब. ..म्युनिस्पल स्कूल वाले पढ़ा देते हैं यही बहुत है. . .वे बच्चों को पिकनिक पर ले जायेंगे?"

"दूसरी लड़कियों के साथ।"

"वे भी हमारी तरह थीं. . .छुट्टी में लड़कियां गुट्टे खेलती थीं और हम गणित के सवाल लगाते थे. . .सब हमें पागल समझते थे", अनु हंसकर बोली।

"तो तुमने आज तक लाल किला और जामा मस्जिद नहीं देखी?"

"हां अंदर से. . .बाहर से रेलवे स्टेशन जाते हुए देखी है।"

"क्या ये अपने आप में स्टोरी नहीं है?"

"स्टोरी?" वह समझ नहीं पाई।

"ओहो. . .तुम समझी नहीं. . . मैं कह रहा था कि क्या ये एक नयी और अजीब बात नहीं है कि दिल्ली में . . ."

"मेरी बड़ी बहन ने भी ये सब नहीं देखा है और छोटी बहन ने भी नहीं देखा।"

"तुम्हारा कोई भाई है?"

"नहीं भाई नहीं है. . .हम तीन बहने हैं।"

"ओहो. . ."

"चलो तुम्हें जामा मस्जिद दिखा दूं. . .चलोगी", मैंने अचानक कहा।

"अभी?"

"हां. . . अभी?"

"चलिए", वह उठ गयी।

दरियागंज में गाड़ी खड़ी करके हम रिक्शा पर बैठ गये। मेरी एक बहुत बुरी आदत है. . .इतनी बुरी कि मैं उससे बेहद तंग आ गया हूं. . .छोड़ना चाहता हूं पर छूटती नहीं. . .ये आदत है सवाल करने और गल़त चीज़ों को सही रूप में देखने की आदत. . .रिक्शे, भीड़, फुटपाथ पर होटल, फुटपाथ पर जिंदगी. . .अव्यवस्था, अराजकता. . .सड़क ही पतली है, उस पर सितम ये कि दोनों तरह से बड़ी-बड़ी गाड़ियां आ जा रही है। सड़क पर भी जगह नहीं है. . .क्योंकि ठेलियां खड़ी हैं। रिक्शेवाले फुटपथिया होटलों में खाना खा रहे हैं। फक़ीर बैठे हैं। लावारिस लड़के बूट पालिश कर रहे हैं। रिक्शेवाले रिक्शे पर सो रहे हैं। बूढ़े और बीमार फुटपाथ पर पसरे पड़े हैं। धुआं और चिंगारियां निकल रही हैं।

कौन लोग हैं ये? जाहिर है इसी फुटपाथ पर तो पैदा नहीं हुए होंगे। कहीं से आये होंगे? क्या वहां भी इनकी जिंदगी ऐसी ही थी या इससे अच्छी या खराब थी? ये आये क्यों?

इसमें शक नहीं कि ये भूखों मर रहे हैं। इनकी जिंदगी बर्बाद है और चाहे जो हो वह इन हालात को अच्छा और जीने लायक नहीं मान सकता।

अब सोचना ये है कि वे यहां भुखमरी से बचने के लिए अपने-अपने इलाकों से आये हैं लेकिन आते क्यों हैं। ये लोग पेड़ तो लगा सकते हैं? गांवों के आसपास से महुए के पेड़ कम होते जा रहे हैं। महुआ इनके लिए बड़ा उपयोगी पेड़ हे। ये लोग महुए के पेड़ क्यों नहीं लगाते? जानवर क्यों नहीं पालते? अगर गुजरात में सहकारी आंदोलन सफल हो सकता है तो यहां क्यों नहीं हो सकता? क्या इलाके के लोग मिलकर सड़क या रास्ता नहीं बना सकते? शायद

समस्या है कि इन लोगों के सामूहिकता की भावना को, एकजुट होकर काम करने की लाभकारी पद्धति को विकसित नहीं किया गया। सागर साहब ने जिन गांवों में यह प्रयोग किए हैं वे सफल रहे हैं। फिर ऐसा क्यों नहीं होता?

सामूहिक रूप से अपने जीवन को बदलने और संघर्ष करने की प्रक्रिया इन्हें सशक्त करेगी और सत्ता शायद ऐसा नहीं चाहती। आम लोगों का सशक्तिकरण सत्ता के समीकरण बदल डालेगा। क्या इसका यह मतलब हुआ कि गरीब के हित में किए जाने वाले काम दरअसल सत्ता के लिए चुनौती होते हैं और सत्ता उन्हें सफल नहीं होने देती। सत्ता ने बड़ी चालाकी से विकास की जिम्मेदारी भी स्वीकार कर ली है। इसका मतलब यह है कि विकास पर उनका एकाधिकार हो गया है। विकास की परिकल्पना, स्वरूप, कार्यक्रम और उपलब्धियों से वे लोग बाहर कर दिए गये हैं जिनके लिए विकास हो रहा है।

"आप क्या सोच रहे हैं", जब हम जामा मस्जिद की सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे तो अनु ने पूछा।

"बहुत कुछ. . .सब बताऊंगा लेकिन अभी नहीं. . .अभी तुम्हें जामा मस्जिद के बारे में बताऊंगा क्योंकि यहां तुम पहली बार आ रही हो", हम अंदर जाने लगे तो किसी ने रोका कि इस वक्त औरतें अंदर नहीं जा सकतीं।

"मैं प्रैस से हूं. . .'द नेशन` का एसोसिएट एडीटर. . .एस.एस. अली. .. इमाम साहब का दोस्त हूं. . ." वह आदमी घबरा कर पीछे हट गया।

"आप लोगों के बड़े ठाट हैं।"

"हां यार. . .ये लोगों ने अपने-अपने नियम बना रखे हैं. . .जितने भी नियम कायदे बनाये जाते हैं सब लोगों को परेशान करने के लिए, आदमी को सबसे ज्यादा मज़ा शायद दूसरे आदमी को परेशान करने में आता है।"

वह हंसने लगी।

"आप कह रहे थे कुछ बतायेंगे मस्जिद के बारे में।"

"सुनो एक मजे का किस्सा. . .शाहजहां चाहता था कि मस्जिद जल्दी से जल्दी बनकर तैयार हो जाये। एक दिन उसने दरबार में प्रधानमंत्री से पूछा कि मस्जिद बनकर तैयार हो गयी है क्या?" प्रधानमंत्री ने कहा "जी हां हुज़ूर तैयार है" इस पर सम्राट ने कहा ठीक है अगले जुमे की नमाज़ मैं वहीं पढ़ूंगा। दरबार के बाद मस्जिद के निर्माण कार्य के मुखिया ने प्रधानमंत्री से कहा कि आपने भी ग़ज़ब कर दिया। मस्जिद तो तैयार है लेकिन उसके चारों तरफ जो मलबा फैला हुआ वह हटाना महीनों का काम है। उसे हटाये बगैर सम्राट कैसे मस्जिद तक पहुंचेंगे? प्रधानमंत्री ने एक क्षण सोचकर कहा "शहर में डुग्गी पिटवा दो कि मस्जिद के आसपास जो कुछ पड़ा है उसे जो चाहे उठा कर ले जाये।"

ये समझो कि तीन दिन में पूरा मलबा साफ हो गया।

वह हंसने लगी।

यह लड़की मुझे अच्छी लगी है। मैं अब उसकी सहजता का रहस्य समझ पाया हूं।

"और बताइये?"

"सुनो. . .जैसा कि मैंने बताया शाहजहां चाहता था कि मस्जिद जल्दी से जल्दी बनकर तैयार हो जाये. . .मस्जिद का 'बेस` और सीढ़ियाँ बनाकर 'चीफ आर्कीटेक्ट` ग़ायब हो गया। काम रुक गया। सम्राट बहुत नाराज़ हो गया। सारे साम्राज्य में उसकी तलाश की गयी। वह नहीं मिला. . .अचानक एक दिन दो साल बाद वह दरबार में हाजिर हो गया। सम्राट को बहुत गुस्सा आया। वह बोला "सरकार आप चाहते थे कि मस्जिद जल्दी से जल्दी बन जाये। लेकिन मुझे मालूम था कि इतनी भारी इमारत के 'बेस` में जब तक दो बरसातों का पानी नहीं भरेगा तब तक इमारत

मजबूती से टिकी नहीं रह पायेगी। अगर मैं यहां रहता तो आपका हुक्म मानना पड़ता और इमारत कमज़ोर बनती। हुक्म न मानता तो मुझे सज़ा होती। इसलिए मैं गायब हो गया।"

"मेरी भी अच्छी कहानी है", वह बोली।

"मस्जिद से जुड़ी. . .कहानियां तो दसियों हैं. . .नीचे देखो वहां सरमद का मज़ार है. . .कहते हैं औरंगजेब ने सरमद की खाल खिंचवा कर उनकी हत्या करा दी थी. . .मुझे पता नहीं यह बात कितनी ऐतिहासिक है लेकिन किस्सा मज़ेदार है और लोग जानते हैं। एक दिन औरंगजेब की सवारी जा रही थी और रास्ते में सरमद नंगा बैठा था। उसके पास ही एक कम्बल पड़ा था। औरंगजेब ने उसे नंगा बैठा देखकर कहा कि कम्बल तुम्हारे पास है, तुम अपने नंगे जिस्म को उससे ढांक क्यों नहीं लेते?" सरमद ने कहा "मेरे ऊपर तो इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। तुम्हें कोई परेशानी है तो कम्बल मेरे ऊपर डाल दो।`` खैर सम्राट हाथी से उतरा। कम्बल जैसे ही उठाया वैसे ही रख उल्टे पैर लौटकर हाथी पर चढ़ गया।" सरमद हंसा और बोला "क्यों बादशाह, मेरे नंगा जिस्म छिपाना ज़रूरी है या तुम्हारे पाप?`` कहते हैं औरंगजेब ने जब कम्बल उठाया था तो उसके नीचे उसे अपने भाइयों के कटे सिर दिखाई दिए थे जिनकी उसने हत्या करा दी थी. . .कहो कैसी लगी कहानी?"

उसने मेरी तरफ देखा। उसकी उदास और गहरी आंखों में संवेदना के तार झिलमिला रहे थे।

२६

तीन अकेलों के मुकाबले एक अकेला ज्यादा अकेला होता है। शकील को लगा था कि उसके क्षेत्र से उसे उखाड़ फेंकने की कोशिश हो रही है. .. वह क्षेत्र में चला गया। दिल्ली कभी-कभार ही आता है। अहमद राजदूत बनकर अपना 'ऐजेण्डा` लागू कर रहा है। फोन करता रहता है लेकिन विस्तार से बात नहीं होती। बता रहा था उसके चार्ज लेते ही शूज़ा आ गयी थी। करीब एक हफ्ते रही। उसको रेगिस्तान बहुत पसंद नहीं आया क्योंकि वह अंदर के रेगिस्तान से बड़ा नहीं था, वापस चली गयी।

शाम की महफिलें नहीं जम पातीं। वैसे तो जानने वालों, परिचितों, जान-पहचान वाले दोस्तों की लंबी फेहरिस्त है लेकिन जो मज़ा दो पुराने दोस्तों के साथ 'टेरिस` पर बैठकर गप्प-शप्प में आता था वह कहां बचा? जिससे मिलो, जिसके पास जाओ, उसके पास एक 'ऐजेण्डा` होता है, 'हमसे तो छूटी महफिलें।`

हीरा से लंबी बातचीत होती रहती है। वह एशियाई देशों के विकास पर एक प्रोजेक्ट कर रहा है और बांग्लादेश जाना चाहता है। तन्नो ने बिजनेस को समेटकर पैसा 'ब्लूचिप कंपनियों` में 'इनवेस्ट` कर दिया है। कहती है अब वह इतना काम नहीं कर सकती। उसने 'पेंटिंग` करने का शौक चर्राया है और 'आर्टिस्ट` से चेहरे बनाना सीख रही है। किसी होटल 'चेन` को एसेक्स काउण्टी वाला 'हीरा पैलेस` किराये पर दे दिया है कि वहां की देखभाल पर जो खर्च आता था और जो 'टैक्स` पड़ते थे, वे लगातार बढ़ते जा रहे थे और मिर्जा साहब के ज़माने वाला 'एक्टिव बिजनेस` भी रह गया था जिसके लिए शानदार पार्टियाँ ज़रूरी थी, जो वही दी जाती थीं।

मुझे लगता था कि अनु उसी तरह धीरे-धीरे ग़ायब हो जायेगी जैसे दूसरे समाचार देने वाले या कभी अखबार में रूचि लेने वाले आते हैं और चले जाते हैं। लेकिन कालम बंद होने के बाद भी वह चली आती है। उसने साफ बताया है कि वह शहर में बहुत कम लोगों को जानती है। उसका कोई दोस्त नहीं है। उसे मुझसे मिलना अच्छा लगता है। वह उम्र दराज़ लोगों को पसंद करती है क्योंकि उनमें ठहराव और संयम होता है। मैं उसकी इस बात से सहमत हूं कि उम्र चाहिए। अच्छे काम करने के लिए नव-सिखिए या अनाड़ी तो भाग खड़े होते हैं। नौजवान लोगों के हाथों से रिश्ते शीशे के प्याले की तरह फिसलकर टूट जाते हैं।

एक साल हो गया जब मैं उसे पहली बार जामा मस्जिद ले गया था। इसके बाद दिल्ली के कई कोने, कई दबी और विशाल इमारतों के बीच छिपी और खण्डहर हो गयी ऐतिहासिक धरोहरों मैं उसे दिखा चुका हूं,। 'टूरिस्ट गाइड` बनना संतोषजनक काम है क्योंकि आप अपनी जानकारियां 'शेयर` करते हैं और अगर यह लग जाये कि जिसके साथ 'शेयर` कर रहे हैं वह गंभीर है, रूचि ले रहा है, कृतज्ञता भी दिखा रहा है तो आपका उत्साह बढ़ जाता है।

खुशी, विनम्रता और सहजता अनु के स्वभाव के बुनियादी बिन्दु हैं। वह अपनी क्षमताओं, योग्यताओं और उपलब्धियों पर पता नहीं क्यों कभी गर्व नहीं करती। गणित के साथ-साथ वह कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर की भी चैम्पियन है लेकिन उसे देखकर, उसके हाव-भाव से यह लगता है कि अपनी योग्यता, विलक्षण क्षमता पर उसे विश्वास तो है लेकिन गर्व नहीं है। मेरा निजी पी.सी. उसके हवाले है, तरह-तरह के प्रोग्राम डालती रहती है और मुझे समझाती है। उसने गुलशन को भी कम्प्यूटर चलना इतना सिखा दिया है कि खोल और बंद सकता है।

पहले मैं सोचकर परेशान रहा करता था कि वह ऐसा क्यों करती है? उसको क्या लाभ है? वह दरअसल चाहती क्या है? मैं प्रतीक्षा करता था कि उसका असली चरित्र नहीं बल्कि असली 'ऐजेण्डा` कब खुलता है। लेकिन मुझे निराशा ही हाथ लगी। मैं प्रतीक्षा करता रहा। अब भी कर रहा हूं।

मुझे यह सब क्यों अच्छा लगता है? गाड़ी में बीसियों किलोमीटर का चक्कर काटकर उसे मेवात के मध्यकालीन खण्डहर क्यों दिखाता हूं? मुझे उसकी आंखों में जिज्ञासा, कृतज्ञता, सहमति और संतोष का भाव आकर्षित करता है। लोगों से सहज संबंध और कठिन परिस्थितियों में संयम बनाये रखने की आदत भी निराली मालूम होती है क्योंकि आज किसके पास धैर्य है? किसके पास संतोष है?

मेवात के एक बीहड़ इलाके से गुजरते हुए अचानक अनु ने अपने पर्स में से भुने हुए चने निकाल लिए और मुझे ऑफर कर दिए। हम ग्यारह बजे चले थे और अब एक बज रहा था लेकिन इन कच्ची-पक्की पगडण्डियों जैसे सड़कों पर कोई ढाबा नहीं मिल पाया था जहां कुछ खा-पी सकते।

'अरे तुम चने लाई हो।`

'ये तो हम हमेशा अपने पास रखते हैं।`

'अच्छा? क्यों?`

'हमें कभी-कभी तेज़ भूख लगती है. . .बस चने निकाले खा लिए।`

'हूं` मैंने उसके कंधे पर हाथ रख दिया। वह बुरी तरह चौंक कर उछली। उसका सिर गाड़ी की छत पर टकराया। चने गाड़ी में बिखर गये। उसके चेहरे पर भय और आतंक छा गया, माथे पर पसीने की बूंदें उभर आयी और वह कांपने लगी।

मैंने गाड़ी एक पेड़ के साये में खड़ी कर दी। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी ऐसी प्रतिक्रिया क्यों हुई?

'क्या बात है?` मैंने पूछा।

'कुछ नहीं. . .कुछ नहीं. . .` वह माथे का पसीना पोंछती हुई बोली।

'कुछ तो है?`

'नहीं. . .नहीं. . .`

'बताओ न? तुम पहली बार कुछ छिपा रही हो?`

उसने भयभीत निगाहों से मेरी तरफ देखा।

'इससे पहले मुझे कभी नहीं लगा कि तुमने मुझसे कुछ छिपाया है।`

'हम. . .` वह कहते-कहते रुक गयी। मैं प्रतीक्षा करता रहा।

'हम बता देंगे. . .पर अभी नहीं. . .अभी हम डर गये हैं।`

'किससे? मुझसे?`

'नहीं आपसे नहीं।`

'फिर?`

'हमने कहा न. . .हम बता देंगे।`

'इमरजेंसी` बैठक थी। तनाव बहुत था। इसलिए हम कुछ ज्यादा ही पी रहे थे। शकील भी क्षेत्र से आ गया था। अहमद का मसला क्योंकि 'एजेण्डे` पर था इसलिए वह भी था। समस्या के हर पक्ष पर गंभीर चर्चा हो रही थी। अहमद के चेहरे से ही लग रहा था कि वह बहुत तनाव में है।

'लेकिन दो-तीन महीने पहले तक तो ऐसा कुछ नहीं था`, शकील बोला 'तुम उससे क्या लगातार मिलते रहे हो?`

'देखो. . .पहले मैं उसे लेकर पेरिस गया था। बल्कि तुम्हीं ने बंदोबस्त किया था. . .फिर वह मेरे पास आई. . .उसके बाद हम 'मानट्रियाल` में मिले जहां मैं 'कामनवेल्थ` सेमीनार गया था. . .फिर लंदन में मुलाकात हुई थी. . .`

'यार तुम काम हो जाने के बाद उससे इतना मिल क्यों रहे थे?` शकील ने दो टूक सवाल किया।

'यार वो ज़ोर डालती थी. . .बहुत इसरार करती थी. ..फोन पर फोन आते थे. . .मैं क्या करता।`

'लगता है तुमसे सचमुच प्यार करने लगी है`, मैंने कहा और अहमद ने घूर कर मुझे ज़हरीली नज़रों से देखा।

'सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज्ज को चली है`, शकील बोला।

'सत्तर से भी ज्यादा. . .यार वो तो पता नहीं क्या है? लंदन में दो-दो दिन के लिए गायब हो जाया करती थी`, अहमद ने बताया।

'क्या तुमने उससे साफ-साफ बात की है?`

'बिल्कुल कई बार. . .मैंने कहा है कि तीन शादियां करते-करते और तलाक देते-देते मैं थक चुका हूं और अब शादी नहीं करना चाहता।`

'फिर क्या कहती है?`

'कहती है मुझसे बहुत ज्यादा प्यार करती है और किसी भी कीमत पर मुझे खोना नहीं चाहती`, अहमद ने कहा। मैंने उसकी तरफ देखा, हां इस उम्र में भी वह इतना शानदार लगता है कि कोई औरत उसे हमेशा-हमेशा के लिए पाना चाहेगी।

'तो ठीक है. . .तुम हो तो उसके साथ`, मैंने कहा।

'हां. . .`, वह दबी आवाज में बोला।

हम दोनों हंसने लगे।

'यार खाने के बाद आज हुक्का पिया जाये`, शकील ने सुझाव दिया।

'लखनऊ वाली तम्बाकू तो होगी?`

'हां है`, मैंने गुलशन से हुक्का तैयार करने को कह दिया।

खाने के बाद हुक्का पीते हुए शकील ने कहा 'यार एक बात समझ में नहीं आती. . . तुम लोग कुछ मशविरा दो?`

'क्या?`

'भई कमाल. . .की वजह से मैं फिक्रमंद हूं. . .पढ़ाई तो उसने छोड़ दी है. . .यहां उसका अपना अजीब-सा सर्किल है जिसमें कुछ प्रापर्टी डीलर, कुछ पॉलीटिशयन, कुछ अजीब तरह के लोग शामिल है. . .रात में देर तक गायब रहता

है. . .मैं. . .कुछ पूछना चाहता हूं तो हमारे बीच तकरार शुरू हो जाती है।`

'ये बताओ उसके पास पैसा कहां से आता है? तुम देते हो?`

'पहले मैं दिया करता है. . .अब नहीं देता. . .फिर भी उसका कोई काम नहीं रुकता. . .

'तुम्हारी बीवी देती है. . .`

'हां वो देती है. . .और मैंने सुना है कुछ और 'लोग` भी उसे पैसा देते हैं`, वह बोला।

'और कौन?`

'यार मैं वहां से लगातार एम.पी. होता हूं. . .मंत्री हूं. . .उसे कौन मना कर सकता है. . .``

शकील सोच में डूब गया फिर बोला - और अब पॉलीटिक्स में आना चाहते हैं``

- ये कौन सा जुर्म है`` अहमद बोला ।

बुरा नहीं है . . . लेकिन यार कम से कम बी.ए. तो कर ले. . . कोई काम धंधा पकड़ ले. . . ये ऊपर टंगे रहना तो ठीक नहीं हैं।``

- यार ये कैसी कोई प्राब्लम तो नहीं लगती .`` मैंने कहा ।

-कमाल तुम्हारे काम धंधे को देखता है न? शायद तुम्हें वहाँ 'रिप्रजेण्ट` भी करता है?``

- हाँ वो मैं चाहता नहीं . . . मैंने सुना है अब वो कुछ उन लोगों से भी मिलने लगा है जो मेरे साथ नहीं है``

-अरे ये क्यों?``

- पता नहीं . . . मैंने उससे कह रखा है कि तुम बी.ए. कर लो मैं तुम्हें एम. एल. ए. का टिकट दिला दूँगा. . . मैं जानता हूँ वो अगर किसी और पार्टी के टिकट पर खड़ा हो गया तो गज़ब हो जायेगा।

- क्या कुछ हो सकता है?``

-सब कुछ हो सकता है,`` वह लम्बी और गहरी सांस लेकर बोला।

अलवर के आसपास जिन ऐतिहासिक इमारतों की तलाश थी वे मिल गयी थी लेकिन उन्हें देखने में देर हो गयी थी और सूरज हुआ इधर-उधर छिपने की जगह तलाश कर रहा था।

पर्यटनवालों के कॉम्पलेक्स में चाय पीते हुए मैंने अनु की तरफ देखा। लंबा परिचय, अपेक्षाओं पर खरे उतरने के कारण एक दूसरे के प्रति विश्वास, पसंद करने वाली भावना, व्यक्तित्व का रहस्य मेरे देखने में व्याप्त था।

'अब वापस दिल्ली पहुंचने में रात हो जायेगी।` वह जानती है

कि मैं रात में गाड़ी नहीं चलाता था कुछ कठिनाई होती है।

'हां रात तो हो जायेगी।`

'तो रात में यही 'टूरिस्ट रिज़ाट` में रुक जायें?` इतने दिनों से अनु को देख रहा हूं। लुके छिपे आकर्षण महत्वपूर्ण हो गये हैं।

वह एक क्षण देखती रही। इस एक क्षण में उसने एक यात्रा तय कर ली या शायद उस छलांग की भूमिका पहले ही बन चुकी थी।

'मुझे घर फोन करना पड़ेगा।`

'कर दो`, मैंने रिसेप्शन की तरफ इशारा किया।

पुराने फैशन के इस विशाल कमरे में एक तरफ की दीवार पर ऊपर से नीचे तक शीशे की खिड़कियां हैं जो जंगल की तरफ खुलती हैं। एक दरवाजा बॉलकनी में खुलता है। ऊंची छत, डबल बेड, वार्डरोब के अलावा पढ़ने की मेज़ और कुर्सियां हैं इस कमरे में।

'हम रात सोफे पर बैठे-बैठे बिता देंगे`, अनु ने कहा।

हम खाना खा चुके थे। रात का दस बज रहा था। मैंने खिड़की के पर्दे हटा दिये थे और जंगल कमरे के अंदर घुस आया था। जंगल की नीरवता पूरी तरह चारदीवारी के बीच ध्वनित हो रही थी।

'ठीक है, तुम्हारा जो जी चाहे करो. . .पर एक बात सुन लो. . .मेरे जीवन में बहुत कम महिलाएं आयी हैं. . .और वे सब अपनी मर्जी से आई हैं. . .मेरे लिए इससे बड़ा कोई अपराध हो ही नहीं सकता कि मैं किसी लड़की के साथ उसकी मर्जी के बिना संबंध स्थापित करूं।`

अनु कुर्सी पर बैठ गयी। मैंने उससे पूछकर लाइट बंद कर दी। कमरे के अंदर बाहर का जंगल जीवंत हो गया।

'रात भर बैठे-बैठे थक नहीं जाओगी?`

'नहीं. . .मैंने इस तरह न जाने कितने रातें गुज़ारी हैं।`

'क्या मतलब?` मैंने तकिए को दोहरा करके उस पर सिर रख लिया ताकि अंधेरे में वह जितना दिख सकती तो दिखे।

वह खामोश हो गयी। कुछ शब्द या वाक्य ख़ज़ाने की कुंजी जैसे होते हैं। अनु का वाक्य ऐसा ही था। मैं खामोश रहा। शब्द मानसिक अंतर्दव्न्द्व को बढ़ाते हैं और खामोशी समतल बनाती है। दीवार पर घड़ी की 'टिक-टिक` और बाहर से आती झींगुर की तेज़ आवाज़ों के अलावा सन्नाटे का साम्राज्य पसरा पड़ा था।

'हम कहां से शुरू करें`, उसकी आवाज़ अतीत के अनुभवों से टकरा कर मुझ तक आयी। स्वर और लहजे में सपाटपन था।

'कहीं से भी. . .`

'बात लंबी है।`

'पूरी रात पड़ी है. . .कहो तो मैं भी कुर्सी पर बैठ जाऊं।`

'नहीं. . .`, वह हंसने लगी।

'हम उन बातों को याद भी नहीं करना चाहते।`

'ठीक है. . .मत याद करो. . .लेकिन बड़ा बोझ जितना बांटा जाता है, उतना हल्का होता है।`

फिर वह खामोश हो गयी। सच्चाई विचलित करती हैं संतुलन बिगाड़ देती है। एक ऐसे धरातल पर ले आती है जहां चीज़ों और व्यक्तियों को देखने के नजरिये बदल जाते हैं लेकिन आखिरकार सच्चाई एक शांत नदी की तरह बहने लगती है। इस प्रक्रिया से गुज़रना आसान नहीं है।

सच्चाई या आत्म स्वीकृति शायद ऊंची आवाज़ में संभव नहीं है। वह उठी और बिस्तर पर आकर लेट गयी।

- हम आठवीं में थे। स्कूल से आने के बाद ब्लाक के पार्क में चले जाते थे. . .वहां खेलते थे। लड़कियां बैडमिंटन खेलती थीं और लड़के फुटबाल खेलते थे। शाम ढलने से पहले घर लौट आते थे. . .एक दिन हम खेल रहे थे। सी-४० वाली मिसिज़ वर्मा एक दो और आण्टियों के साथ उधर से निकली। मेरी तरफ इशारा करके मिसिज़ वर्मा ने कहा 'इस लड़की की शादी हो रही है।` हम अपना रैकेट लेकर रोते हुए घर आ गये। मम्मी रसोई में खाना पका रही थी, हमने उनसे कहा कि देखा मिसिज़ वर्मा ने हमारे बारे में ऐसा कहा है। मम्मी ने हंसकर कहा, 'नहीं झूठ बोलती हैं। तेरी शादी क्यों होगी अभी से. . .पर मम्मी ने मुझसे झूठ बोला था. . .`

धीरे-धीरे कक्षा आठ में पढ़ने वाली लड़की की सिसकियां अंधेरे कमरे में इस तरह सुनाई देने लगी जैसे संसार की सारी औरतें विलाप कर रही हों। मैं खामोश ही रहा। मैं जानता था कि मेरा एक शब्द इस सामूहिक रुदन को तोड़ देगा। मैं चुपचाप खामोशी से लेटा रहा। छत की तरफ देखता रहा। पंखा धीमी गति से चल रहा था और बाहर से आते मलगिजे उजाले में केवल उसके पर दिखाई दे रहे थे।

आठवीं कक्षा में पढ़ने वाली लड़की रो रही थी।

'हम पढ़ने में बहुत अच्छे थे। कुछ लड़कियां खासकर सरोज मुझसे बहुत जलती थी। उसने पूरे स्कूल में ये बात फैला दी. . .टीचर ने हमें बुला कर पूछा। हमने मना कर दिया. . .पर लड़कियां हमें छेड़ने लगीं. . .लड़के हमारे ऊपर हंसने लगे. . .हमें बहुत गुस्सा आया। हम पढ़ नहीं पाये स्कूल में. . .हमने टिफिन भी नहीं खाया. . .भूखे रहे दिनभर।`

सिसकियां फिर जारी हो गयी।

वह काफी देर तक रोती रही, मैंने उसे चुप कराने की कोशिश नहीं है। लगता था अंदर इतना भरा था अंदर इतना भरा हुआ है कि उसे बाहर निकल ही जाना चाहिए।

रोते-रोते उसकी हिचकियाँ धीरे-धीरे बंद हो गयी।

मैंने उठकर एक गिलास पानी उसको दे दिया। पानी पीने के बाद वह मेरी तरफ पीठ करके लेट गयी और धीरे-धीरे बोलने लगी - जैसे -जैसे दिन बीतते गये चिढ़ाने लगे हम सब से लड़ते थे घर में मम्मी ने बताया कि हमारा रिश्ता तय हो गया । शादी अभी नहीं होगी, लेकिन हम ये नहीं चाहते थे कि कोई शादी -वादी की बात करे. . . पर धीरे-धीरे घर बदल रहा था. . . सामान आ रहा था. . . घर में पुताई हो रही थी. . . कोई मुझे साफ-साफ नहीं बताता था पर हम इन तैयारियों से हम डर गये . . . हमने खाना छोड़ दिया. . . हम से कहा अब तुम शलवार -कमीज पहना करो, दुपट्टा ओढ़ा करो. . . हमने स्कूल जाना बंद कर दिया . . . हम सबसे लड़ नहीं सकते है. . . टीचरें हमें देखकर मुस्कुराती थी. . . हम खेलने भी नहीं जाते थे. . . हम भगवान जी से माँगते थे कि हम मर जाये. . . हम मर जायें. . .

धीरे-धीरे शब्द डूबते चले गये लेकिन फिर भी कक्षा आठ में पढ़ने वाली लड़की बोल रही थी

२७

मोहसिन टेढ़े की आँखों में आँसू हैं। वह पत्नी के मर जाने से कितना दुखी है ये तो कहना मुश्किल है लेकिन उसे देखकर उसके दुखी होने पर विश्वास-सा हो जाता है। उम्र ने उसके चेहरे की विद्रूपता को कुछ और उभार दिया है। गालों के ऊपर वाली हड्डियां उभर आई हैं, गर्दन और पतली हो गयी है। पिचका हुआ सीना कुछ ज्यादा ही अंदर को धंस गया है। हाथ और पैर ज्यादा दुबले लगते हैं। पेट छोटे-सी मटकी की तरह फूला हुआ है। आंखों में लाल डोरे दिखाई देते हैं। सबसे बड़ी दिक्कत ये हो रही है कि पोलियो का पुराना मर्ज ज़ोर पकड़ रहा है और उसके पैरों की मांस पेशियां मर रही हैं। डॉक्टर इसका कोई इलाज नहीं बताते। मोहसिन कई जगह तरह-तरह के डॉक्टरों, हकीमों वैद्यों को दिखा चुका है लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अभी तो घर के अंदर थोड़ा बहुत चल फिर भी लेता है लेकिन अगर मर्ज बढ़ा तो बड़ी कयामत हो जायेगी।

मुझे मालूम था कि उसकी बीवी सख़्त बीमार है। पिछले कई साल से उसके गुर्दों का इलाज चल रहा था। इस बीच अस्पताल में भी दाखिल थी और फिर अस्पताल वालों ने जवाब दे दिया था। घर ले आये थे और एक तरह से सब उसके मर जाने का इंतिज़ार कर रहे थे। मोहसिन की एक छोटी साली आ गयी थी जिसने खाने पीने की जिम्मेदारी संभाल ली थी।

मोहसिन टेढ़े ने कभी अपने रिश्तेदारों से कोई ताल्लुक न रखा था। बहनोई से तो मुक़दमेबाज़ी तक हो गयी थी इसलिए जनाज़े में उसका कोई रिश्तेदार नहीं था। हां, ससुर आ गये थे जो मोहसिन से खुश नहीं

थे क्योंकि यह सबको पता था कि मोहसिन ने बीवी के इलाज पर ध्यान नहीं दिया था, पैसा नहीं खर्च किया था। इसीलिए दफ़न के बाद उसके ससुर अपनी छोटी लड़की को लेकर चले गये थे।

शाम के वक्त उसके घर में अजीब दमघोंटू सन्नाटा था। जीरो पावर के बल्ब मरी-मरी सी रौशनी फेंक रहे थे। खिड़कियों पर पर्दे न थे हर चीज़ खस्ता और गंदी नज़र आ रही थी। एक कुर्सी पर मोहसिन सिर झुकाए बैठा था।

"चलो तुम मेरे साथ यहां क्या रहोगे।"

उसने मेरी तरफ देखा और बोला "नहीं साजिद. . .कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा. . .ये तो यार एक दिन होना ही था।"

"तुम्हारा काम कैसे चलेगा?"

"यार यहां खाना लग जाता है. . .खाना लगवा लूंगा. . और क्या काम है?"

मैं उसे हैरत से देखने लगा। मुझे उस पर दया भी आई और गुस्सा भी आया। वह समझता है बस दो रोटी मिलती रहे तो बस और कोई काम नहीं है। घर बेहद गंदी हालत में है। कपड़े शायद वह कभी महीने दो महीने में ही धोता या धुलवाता होगा। चादरें मैली कीचट है, तकिये के ग़िलाफ़ काले पड़ गये हैं। पूरे घर के हर कमरे में ज़ीरो पावर के बल्ब लगे हैं जो अजीब मनहूस सी रौशनी देते हैं। घर में फ्रिज नहीं है। कहता है यार मुझे ताज़ा खाना पसंद है। फ्रिज में रखा खाना नहीं खा पाता। ए.सी. नहीं लगवाया है। कहता है यार ये ए.सी. और कूलर मुझे सूट नहीं करते. . .नज़ला हो जाता है। पूरा घर कबाड़ खाना बना हुआ है। मैंने कई बार कहा कि किसी को पार्टटाइम सफाई के लिए बुला लिया करो। इस पर कहता है यार नौकर चोर होते हैं। मैं बहुतों को आज़मा चुका हूं। अब तो अच्छा है कोई नौकर न रखा जाये।

एक बार मुझे गुस्सा आ गया था और मैंने सख्ती से कहा था "देखो ये जो तुम कंजूसी करते हो. . .एक-एक पैसा दांत से पकड़ते हो . . . किसके लिए? तुम्हारा कोई आगे पीछे है नहीं, ले देके एक बहन और बहनोई हैं जिनसे तुम्हारी मुक़दमेबाज़ी हो चुकी है और वे तुम्हारे खून के प्यासे हैं। क्या तुम उन्हीं के लिए ये सब जमा कर रहे हो।"

"नहीं यार तौबा करो।"

"तो फिर?"

वह खामोश हो गया। खाली खाली आंखों से देखने लगा। लेकिन पांच साल बाद भी वही हाल था। दस साल बाद भी वही हाल और मुझे यकीन हो गया था कि मोहसिन टेढ़े को पैसा बचाने में इतना सुख मिलता, इतना मज़ा आता है, इतना संतोष होता है, इतना नशा आता है कि वह पैसा बचाने से आगे की बात सोचता ही नहीं. . .बिल्कुल वैसे ही जैसे तेज़ नशा करने वाले ये नहीं सोचते कि नशा उतरने के बाद क्या होगा।

"न तो संविधान किसी को कुछ दे सकता है और न कानून ही किसी को कुछ दे सकता है। हज़ारों साल की सामाजिक संरचना और उससे जुड़ी सामाजिक मान्यताएं एकदम या पच्चीस पचास साल में तो टूट नहीं सकतीं।" सरयू ने कहा।

"लेकिन तुम वह सब 'जस्टिफाई` नहीं कर सकते हो जो रावत के साथ किया जा रहा है।" मैंने कहा।

ताज मानसिंह के टेरेस गार्डेन में रात ढल रही है। लताओं और पौधों के पीछे से दूधिया रौशनी अपनी अंदर एक छद्म हरियाली लिए बाहर आ रही है। कोई एक पाँच सौ हज़ार लोग तो होंगे इस लोकार्पण समारोह में। मैं और

सरयू थोड़ा हटकर किनारे बैठे थे।

"तुमने कभी सोचा था ऐसे भी हुआ करेंगे लोकार्पण समारोह" मैंने सरयू से पूछा।

"ये . . .अब क्या बताऊं. . .ये लोकार्पण नहीं है और फिर लोकार्पण है. . .किताब का दाम पच्चीस हज़ार रुपये है. . .विषय है भारत की "आधुनिक आध्यात्मिक कला।"

"इस्पानसर किसने किया है?"

"बीना रंजू ने. . .जिसने पिछले साल सौ करोड़ का 'आक्शन` किया था. . .कहा जा रहा है यह भारतीय कला के लिए बिकने की दृष्टि

से स्वर्णिम युग है. . .करोड़ की रकम छोटी हो गयी है।"

फ्हिंदी लेखन का यह कौन सा युग चल रहा है?" मैंने सरयू से चुटकी ली।

"इतने सुंदर वातावरण में एक दुख भरी दास्तान क्यों सुनना चाहते हो?" वह हंसकर बोला।

"तो अच्छा ही हुआ मैंने कहानियां लिखना बंद कर दिया. ."

"अब क्या कहें यार. . .तुमने दो चार अच्छी कहानियां लिखी थीं।"

राजधानी में साहित्य, कला, संगीत, पत्रकारिता, मीडिया, फैशन, प्रकाशन के जितने भी नामी और बड़े लोग हैं सब यहां देखे जा सकते हैं। अब ऐसा कोई 'इवेण्ट` हो ही नहीं सकता जिसका 'बिजनेस एन्गिल` न हो।

"हां तो तुम कुछ रावत के बारे में कह रहे थे।"

"वो यहां आया हुआ है. . .देखो लाता हूं. . .तुम यही बैठना।" सरयू उठकर चला गया।

रावत को मैंने बहुत दिनों बाद देखा वह झटक गया है।

"कहो क्या हाल है?" मैंने पूछा।

"बस समझो यु----चल रहा है।" वह बड़े तनाव में लग रहा था।

"क्या मतलब?"

"यार वो मैंने तुझे कहानी सुनाई थी न कि मेरा पिता भेड़ियों से लड़ गया था. . .तो मैं भी साला इन भेड़ियों से लड़ रहा हूं. . .

"अरे यार तुम इसको इतनी गंभीरता से क्यों ले रहे हो. . .ये तो सरकारी ऑफिसों में होता ही है।" सरयू ने कहा।

रावत को गुस्सा आ गया। उसका चेहरा जो पहले से लाल था कुछ और लाल हो गया।

"सीरियसली न लूं? वो साले मेरे नौकरी ले लेना चाहते हैं। मुझे जेल भिजवाना चाहते हैं. . .तुम कह रहे हो सीरियसली न लो।"

"यार मेरा ये मतलब नहीं था। मैं कह रहा करो सब पर दिल पर न लो. . .हाई ब्लड प्रेशर वगैरा का चक्कर अच्छा नहीं है।"

"अरे यार चेक करा लिया है. . .बहुत थोड़ा है. . .डॉक्टर ने दवा दी है. . .।"

"लेकिन तुम पी क्यों रहे हो?"

"मैंने पूछ लिया है यार डॉक्टर से. . .वह कहता है थोड़ी बहुत चलेगी।"

"तुम्हारा डॉक्टर कौन है?"

"वही यार ब्लाक के मोड़ पर बैठता है. . .अच्छा होम्योपैथ है।"

मैंने और सरयू ने एक दूसरे को देखा लेकिन हम कुछ बोले नहीं।

"पिछले हफ्ते मुझे एक फाइल पकड़ा दी गयी है. . .एक 'इन्क्वायरी` करना है मुझे. . .कुछ अधिकारियों पर पांच करोड़ हज़म कर जाने का आरोप है। मिनिस्टर ने 'इन्क्वायरी आर्डर` की है, फाइल घूमती फिरती मेरे पास आ गयी है। अब मैं वो काम करूंगा जो सी.बी.आई. करती है. . .और थोड़ी गफ़लत हो गयी तो मैं भी चपेट में आ जाऊंगा. . .यार ये काम होता है डायरेक्टर मीडिया का?" वह खामोश हो गया।

"पानी अब सिर से ऊपर जा रहा है. . .तुम इन साले अफसरों के नाम बताओ. . .मैं इनकी नाक में नकेल डलवाता हूं।" मैंने कहा।

"तुम क्या करोगे।" वह बोला।

"यार मेरे दोस्त की गर्लफ्रेण्ड कैबनिट सेक्रेटरी की गर्लफ्रेण्ड भी है।" मैंने उत्साह से कहा।

सरयू हंसने लगा और पूरी फ़िज़ा अगंभीर हो गयी।

"देखो मैं चूड़ियां नहीं पहनता. . .मैं सालों को ज़मीन चटा दूंगा . . . बस देखते जाओ।" वह उत्तेजना में बोला।

"चलो अब जैसी तुम्हारी मर्जी।"

रावत जल्दी चला गया क्योंकि उसके पास मंत्रालय की गाड़ी थी। हम दोनों को जल्दी नहीं थी। सरयू पीने पर आता है तो आउट हुए बिना नहीं मानता। मैं भी आज मूड़ में हूं। दोनों ने सोचा, खूब पी जाये. . . फिर जामा मस्जिद जाकर खाना खाया जाये।

"तुम्हें पता है नवीन रिटायर हो गया।" सरयू ने कहा।

"अरे यार वो है कहां?"

"घर पर ही है. . ."

"तो अब क्या कर रहा है?"

"कह रहा था यार सेहत ऐसी है नहीं कि कोई 'जॉब` पकड़ू . . .बस वैसे ही लिखना पढ़ना होता रहेगा।"

"गुड. . .अपने अखब़ार में उसे जगह दो।"

"हां हां. . .

२८

मैं जानता था कि मेरा बोलना एक विस्फोट की तरह लिया जायेगा। मैं खामोश था। कुछ लोग मेरी तरफ इस तरह देख रहे थे जैसे ये उम्मीद कर रहे हों कि मैं अपनी बात भी सामने रखूं लेकिन मैं खामोश था। मुझे मालूम था कि मैंने अगर कुछ कहा तो 'द नेशन` के दफ्तर में मेरे लिए तंग करने की नयी रणनीति तय कर ली जायेगी। उनका यह दुर्भाग्य ही है कि मैं उस ज़माने से काम कर रहा हूं जब परमानेंट नौकरी नाम की कोई चीज़ हुआ करती थी और दिल्ली पत्रकार संघ नाम की एक सक्रिय और प्रभावशाली यूनियन थी। आज हालात ये हैं कि मैंनेजमेण्ट जब चाहे जिसकी नौकरी ले सकता है। नाकरी ले लेना केवल शब्द नहीं है।

एडीटर-इन-चीफ विस्तार से बता रहे थे कि अब अखबार का वह 'रोल` नहीं रह गया है जो तीस साल पहले हुआ करता था। अब अखबार भी एक 'प्रोडक्ट` है और उसे खरीदने वाले 'पाठक` नहीं बल्कि 'बायर` हैं। मार्केट की ज़रूरतें हैं। सम्पन्न मध्यवर्ग की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व अखबार में नहीं होगा तो उसे कौन खरीदेगा। खासतौर से टी.वी. चैनलों की इस 'रेलपेल` में अखबार खो जायेगा। उन्होंने कहा 'न्यूज़ इज़ गुड न्यूज़`

हरीश कह रहा था 'अली साब, हम आप अखबारों को रोते हैं। चैनलों की तरफ देखिए तो आंखें खुल जाती हैं. . .

'देखो मुझे तो लगता है फिलहाल लोग हर मोर्चे पर लड़ाई हार चुके हैं।`

'यु----तो नहीं हारे हैं अली साहब।`

'मैं तो ये सोचता हूं हमें अब तो ये तय करना पड़ेगा कि युद्ध शुरू कहां से किया जाये? हमारे जो जाने बूझें तरीके थे वे तो शायद कुंठित हो गये हैं. . .देख रहे हो ट्रेड यूनियन आंदोलन खत्म हो गया। किसानों के बड़े-बड़े संगठन लापता हो गये। पत्रकारों के संघ छिन्न-भिन्न हो गये. . .और सब ख़ामोश हैं। अखबार किसानों की आत्महत्याओं को चौथे पाँचवें पेज पर डाल देते हैं. . .संवेदन हीनता सरकार, प्रशासन, संस्थाओं पर ही नहीं पूरे समाज पर अधिकार जमा चुकी है।`

'अली साब आज की मीटिंग में आप कुछ बोले नहीं?` हरीश ने कहा।

'मैं क्या बोलता तुम जानते हो। यह भी जानते हो उससे क्या होता? तुम तो ये भी जानते हो कि नौकरी मेरे लिए मजबूरी नहीं है. . .`

'एक करोड़ का तो अपना बंगला है।`

'वो मेरी 'वाइफ` का है।`

वाइफ`भी तो आपकी है।`

'हां, टेक्नीकली सही कह रहे हो।`

वह हंसने लगा।

'देखो अकेले आदमी के बोलने और झगड़ने से क्या होगा? थोड़ा चीजों को समझने की कोशिश करते हैं। मैंने जिंदगीभर 'रुरल इंडिया` पर रिर्पोटिंग की है। चार किताबें हैं। एवार्ड्स हैं लेकिन आज जब किसान आत्महत्याएँ कर रहे हैं तो मेरा अखबार मुझसे यह नहीं कहता कि मैं उन इलाकों का दौरा करूं और लिखूँ। क्यों? अख़बार ने अपनी प्राथमिकताएं तय कर ली है। . . .पहले भी सरकार, प्रशासन, कानून, न्यायालय, विकास योजनाएं केवल दो प्रतिशत लोगों के लिए थीं लेकिन यह माना जाता था कि गरीबों और पिछड़े हुओं की ज़िम्मेदारी भी हमारे ऊपर है। पर अब यह नहीं माना जाता है। यह 'पैराडाइम शिफ्ट` है। पहले भी बड़े उद्योगपति अपने हितों को पूरा करने के लिए अखबार निकालते थे पर अब वे एक जीवनशैली, एक विचार, एक सिद्धांत जो उन्हें फलने-फूलने में मदद करता है, के लिए समाचार-पत्र निकाल रहे हैं, टी.वी. चैनल चला रहे हैं. . .और यह सिद्धांत पूंजी की सत्ता. . .

यानी पूंजी ही सब कुछ है. . .उसके अतिरिक्त और कुछ भी कुछ नहीं है. . .और पूंजी अपने सत्ता के रास्ते में किसी को नहीं आन देती. . .जो आता है उसे बर्बाद कर देती है. . .वह जानती है कि लोगों की इच्छा शक्ति उससे बड़ी है. . .इसलिए सबसे पहले वह लोगों को तोड़ती है, . . .ऐसे समाज का निर्माण कर रही है तो उसके साथ चले, उसे समर्थन दे, उसके शोषण में शामिल हो, उसका शोषण किया जा सके और वह दूसरे का शोषण कर सके. . .बिल्कुल निर्मम और अमानवीय तरीके से. . .`

'ये बातें आपने मीटिंग में क्यों नहीं कही?`

'यार तुम्हारे ये सवाल पूछने से अपने एक पुराने दोस्त की याद आ गयी और उनका एक लतीफा याद आ गया. . .हमारे इन दोस्त का नाम जावेद कमाल था. . .रामपुर के पठान थे। अलीगढ़ में कैंटीन चलाते थे। शायर थे। दुनिया का कोई ऐसा काम नहीं है जो उन्होंने न किया हो। अव्वल नंबर के गप्पबाज़ और दोस्त नवाज़ आदमी थे। रामपुर के लतीफ़े सुनाया करते थे। उनके लतीफ़ों में 'हब्बी` नाम का एक पात्र आया करता था जो अर्धपागल बुद्धिमान चरित्र था। एक बार हुआ यह कि पता नहीं हब्बी के दिमाग में क्या आई कि शहर के सबसे बड़े चौराहे पर खड़े होकर शहर के दरोगा को गालियां देने लगा। ख़ैर साहब नवाब का ज़माना। शहर दरोगा के पेशाब से चिराग जला करता था। उसे खबर हो गयी। उसने चार सिपाही भेजे और 'हब्बी` को पकड़कर थाने बुलाया लिया। वहां 'हब्बी` की बहुत कटाई की। बुरी तरह से पिटे ठुके हब्बी घर आये। बिस्तर पर पड़ गये। हल्दी-वल्दी लगाई गयी। लोग देखने आने लगे। किसी ने पूछा क्यों हब्बी, दरोगा जी को फिर गालियां दोगे?` हब्बी ने कहा 'दूंगा और ज़रूर दूंगा लेकिन अपने झोपड़े में।`

'तो आप भी क्रांतिकारी बातें अपने कैबिन ही में करेंगे?` हरीश ने कहा।`

'हां, यही समझ लो. . .बात दरअसल में है कि हमारे पास रास्ता नहीं है. . .रास्ते की तलाश करनी चाहिए।`

'आप तो अपना अख़बार शुरू कर सकते हैं अली साहब`, हरीश ज़ोर देकर बोला।

'हां, कर सकता हूं. . .किसके लिए और किन शर्तों पर. . .और किस व्यवस्था के अंतर्गत? दिल को तस्कीन देने के लिए कुछ किया जा सकता है, पर मकसद दिल को तस्कीन देना तो नहीं है।`

'अली साब आप जो 'क्लैरिटी` चाहते हैं वह कभी मिलेगी?` उसने बुनियादी सवाल किया और मैं खुश हो गया।

'हां ये बिल्कुल ठीक कहा तुमने. . .बिल्कुल ठीक।`

कमरे का अंधेरा धीरे-धीरे आकृतियों को मिटा रहा था। ऊपर पंखे पर अदृश्य हो गये थे। बस सर सर की आवाज़ धीमे-धीमे रो रही थी।

. . .हम स्कूल से लौट कर आये तो देखा कपड़ों और सामान का ढेऱ लगा हुआ है। नये-नये कपड़े, गहने, सामान. . .सब रखा था. . .गांव से ताऊ और ताई आ गये थे। ताई जब भी आती थीं हमें टोकने-टाकने का काम शुरू हो जाता था। ऐसे मत बैठो, ऐसे लड़कियां नहीं बैठतीं. . .ताऊ जी कहते. . .अब इसे सलवार कमीज़ पहनाया करो . . .बड़ी हो गयी है. . .पर स्कूल की ड्रेस तो यही है. . .वे बुरा-सा मुंह बनाकर अपनी सफेद मूंछों को मरोड़ते हुए कहते क्या विद्वान बनाओगे इसे. . .हम डर जाते थे कि पता नहीं कब हमारा नाम स्कूल से कटवा दिया जाये. . .ऐसे मत बैठा करो, ऐसे मत चला करो, ऐसे मत हंसा करो. . .ऐसे मत खाया करो. . .इसको ये मत खिलाया करो, ताड़ की तरह लंबी हो जायेगी. . .रोटी ऐसे नहीं डाली जाती, ऐसे डालते हैं . . . अचार डालना सिखाया है? ऐसे टुकुर-टुकुर क्या देखती रहती है . . .हमने ताऊजी और ताईजी के पैर छुए। ताऊजी ने पिताजी से कहा 'बस यही आयु है. . .तुम सही समय पर विवाह कर रहे हो।` हम सुनकर भौंचक्के रह गये। कमरे में आ गये और रोने लगे। मम्मी खाने के लिए बुलाने आयी। तो हमने उनके दोनों हाथ पकड़कर पूछा- 'हमारी शादी तो नहीं हो रही है न?` मम्मी हंसने लगी, 'अरे पगली शादी तो हर लड़की की होती है।`

'तो तुमने मुझसे झूठ बोला था।`

'चल, मां-बाप में सच-झूठ कुछ नहीं होता।`

'मैं शादी नहीं करूंगी. . .पढ़ूंगी. . .स्कूल में सब मुझे छेड़ते हैं।`

'अरे तो छेड़ने। दे`

'नहीं. . .मेरा मन पढ़ाई में नहीं लगता।`

'अरे तो क्या है. . .`

'मैं शादी नहीं करूंगी. . .नहीं करूंगी. . .नहीं करूंगी. . .जोर डालोगे तो ज़हर खा लूंगी।`

'चल हट, पागल हुई है क्या. . .आ खाना खा ले।`

'नहीं, पहले ये कहो कि मेरी शादी नहीं होगी।`

'चल कह दिया नहीं होगी।`

'ये नहीं. . .ऐसे कहो कि अनु तुम्हारी शादी नहीं होगी।`

'चल कह दिया, अनु तेरी शादी नहीं होगी।`

'झूठ तो नहीं बोल रही हो?` मम्मी हंसने लगी। हमें गुस्सा आ गया।

'हम पढ़ना चाहते हैं. .. हमें गणित अच्छी लगती है. . .हम पढ़ना चाहते हैं।`

'अरे तो तुझे पढ़ने से कौन रोक रहा है. . .जितना पढ़ना है उतना पढ़. . .रोकता कौन है।`

. . .शाम को हम बाहर निकल रहे थे तो ताऊजी ने कहा, 'कहां जा रही है?`

'सहेली के यहाँ।`

'बस अब सब बंद. . .जा अंदर जाकर बैठ। ताई के पैर दाब।`

हम खड़े सोचते रहे। पापा भी वहीं बैठे थे। वे चुप रहे। हमें पापा पर गुस्सा आया। बोलते क्यों नहीं। ताऊ जी जब भी आते हैं पापा का मुंह बंद हो जाता है। बस हां भइया हां भइया. . .करते रहते हैं।

कमरे में सिसकियां उभरने लगीं. . . दबी-दबी और भीतर तक आत्मा को छीलती सिसकियां. . .

. . .हमने ये सब किसी को कभी नहीं बताया है. . .हमारी कोई फ्रेण्ड नहीं है। स्कूल में थे। पता नहीं कहां चले गये. . .कॉलिज हम कभी गये नहीं. . .हमारी कोई फ्रेण्ड. . .ये हमने किसी को नहीं बताया है. . .आपको बता रहे हैं. . .आपको. . .पता नहीं क्यों. . .जी चाहता है. . .बताने को. . .

मेरा हाथ अनु के कंधे पर चला गया। वह खिसक कर और पास आ गयी। स्पर्श की भाषा शब्दों की भाषा से ज्यादा विकसित है।

. . .फिर तो ये हमारी आदत हो गयी. . .जब कोई दुख हमें होता तो अपने को ही चोट पहुंचाते. . .इससे शांति मिलती थी। दर्द होता था, हम रोते थे. . .रोते रहते थे. . .।

. . .स्कूल में टीचरें हमें देखने आती थीं. . .हंसती थीं कि देखो इतनी छोटी लड़की की शादी हो रही है. . .हम डरकर भाग जाते थे. . फील्ड में बैठ जाते थे. . .टीचरें कहती थीं कैसे जाहिल मां-बाप हैं. . हमें ये अच्छा नहीं लगता था. . .लड़कियां. . .तो. . .बस. . .एक दिन गणित की टीचर ने बुलाया. . .हमें बहुत चाहती थी। पार्क में ले गयी। पूछती रहीं कि तुम्हारी शादी किससे हो रही है? इतनी जल्दी क्या है . . .हम क्या बताते. . .हम बोलते तो रुलाई छुट जाती. . .हम सिर हिलाकर या चुप रहकर जवाब देते रहे. . .फिर हमें देखकर गणित की टीचर की आंखों में आंसू

आ गये. . .उन्होंने हमें गले लगाया. . .तो हम रो पड़े. . .वे हमारे सिर पर हाथ फेरती रहीं. . .कहने लगीं. . .कितनी लड़कियां हैं जिनके कक्षा एक से लेकर सात तक गणित में हमेशा सौ में सौ नंबर आये हैं. . .क्या ये तुम्हारे पिताजी को नहीं मालूम?. . .हम क्या बोलते. . .

हम पढ़ना चाहते थे. . .मम्मी कहती थीं जाओ न स्कूल कौन रोकता है. . .लेकिन हम क्या जाते . . .लगता था हमारा दिमाग फट जायेगा. . .हम घर में गणित के सवाल हल करते थे तो अच्छा लगता था. . .फिर हमें शहला के भाई ने दसवें की गणित की किताब दे दी. . .उसे हम पढ़-पढ़कर सवाल हल करने लगे . . .बस यही हमें अच्छा लगता था. . .

उसके शरीर के कम्पन को मैं पूरी तरह महसूस कर रहा था। अंधेरा होने के बाद भी आंसू चमक जाते थे. . .ऐसा लगता था जैसे दुख का बांध टूट गया हो और तूफानी वेग के साथ पानी अपने साथ सब कुछ बहाये लिए जा रहा हो. . .हम दोनों उसी तूफान में बहने लगे. . . हो न हो. . .आदमी को आदमी का सहारा चाहिए ही होता है. . .जब कोई अपने दिल की बात कहता है तो सीधे दूसरे दिल तक पहुंचती है. . . दुख पास लाता है और सुख दूर करता है. . .मैं गुस्सा होने वाली मानसिकता से निकल चुका था। शुरू-शुरू में मेरी यह प्रतिक्रिया थी कि अनु के साथ जिन लोगों ने घोर अन्याय, अत्याचार किया है उन्हें सज़ा मिलनी चाहिए लेकिन फिर लगा दुख का सम्मान द्रवित होकर ही किया जा सकता है. . .और यही दुख का निदान है. . .जो होना था हो चुका है. . .बीत चुका है. . .पर वह हमारे अंदर है. . .जीवित है. . .उसका हम यही कर सकते हैं कि उसे बांट लें. . .

अनु रात कितने बजे सो गयी मैं ही कह सकता क्योंकि मैं समय की सीमाओं से बाहर हो गया था। हो सकता है मेरी भी पलक एक-दो मिनट को झपकी हो लेकिन मैं लगातार पंखे की गति के साथ रातभर घूम रहा था।

सुबह जब दोनों की आंख एक साथ खुली और हम दोनों को कुछ क्षण यह अजीब लगा कि रातभर हम इतना पास, इतनी निकट रहे हैं।

वह हड़बड़ाकर नहीं धीरे-धीरे उठी।

अहमद बहुत गुस्से में था ये वाजिब भी था। वह फोन पर दहाड़ रहा था। मैं चुपचाप सुन रहा था। जाहिर है वह दिल का गुबार कम करने के लिए ऐसा कर रहा था क्योंकि उसे अच्छी तरह मालूम था कि मैं इस सिलसिले में कुछ नहीं कर सकता। न तो सरकार में मेरा अमल-दखल है और न मेरे पास इस तरह के काम कराने की सलाहियत है।

'कहीं तुमने सुना है या देखा है कि 'एम्बैस्डर` की 'टर्म` पूरी होने से पहले ही 'कालबैक` किया गया हो. . .एम.ई.ए. ने टास्क फोर्स

बनाई है तो उसे कोई ज्वाइंट सेक्रेटरी 'हेड` कर सकता है। मुझमें क्या सुर्खाब के पर लगे हैं?`

'तुमने सेक्रेटरी से बात की?`

'हां. . .वो कहते हैं. . .कैबनेट डिसीजन` है. . . हम कुछ नहीं कर सकते।`

'अरे कैबनेट ने तो 'पॉलिसी डिसीजन` लिया होगा. . .ये तो नहीं कहा होगा कि तुम. . .`

'हां. . .इस तरफ के फैसलों में नाम कहां होते हैं।`

'फिर तुम्हारा नाम कैसे जुड़ गया इस फैसले में?`

'पहले तो मैं नहीं समझ पाया था. . .लेकिन शूज़ा के फोन आने के बाद 'क्लियर` हो गया।`

'क्या? शूज़ा।`

'हां।`

'तुम 'श्योर` हो. . .मुझे नहीं लगता सरकार में उसकी इतनी चलती है।`

'ये तुम नहीं जानते. . .उसकी पहुंच कहां नहीं है।`

'तो ये फैसला. . .`

मेरी बात काटकर वह बोला 'कई महीने से मुझे फोन कर रही थी कि कहीं मिलो. . .मैं टाल रहा था. . .बराबर टाल रहा था. . .उसे ये आदत नहीं है कि कोई उसकी बात टाले. . . उसने ही ये शगूफ़ा . . .

'लेकिन यार समझ में नहीं आता?`

'मेरी समझ में तो आ गया. . .सुबह उसका फोन आया था. . बड़ी खुश थी कि मैं दिल्ली आ रहा हूं।`

'तुमने क्या कहा?`

'मैं क्या कहता यार. . .ज़ाहिर है कि. . .तुम जानते ही हो. .``

एक हफ्ते के अंदर-अंदर अहमद को दिल्ली आना पड़ा। उसे साउथ ब्लाक में ऑफिस मिल गया। उसे एक ऐसी कोठी मिल गयी जो

उसके 'रैंक` के किसी ऑफीसर को मिल ही नहीं सकती।

शाम वाली बैठकें आबाद हो गयी हैं। इस दौरान कभी अनु आ जाती है तो देर हम लोगों के साथ बैठा देखकर गुलशन के बच्चों को पढ़ाने चली जाती हैं। वह जानती है कि अहमद उसे पसंद नहीं करता। अहमद दरअसल साधारण चीज़ों, लोगों, संबंधों, जगहों को बहुत नापसंद करता है। मुझसे कई बार कह चुका कि यार कहीं 'कुछ` करना है तो अपने स्टैण्डर्ड में जाओ. . .ये क्या तुम अनाड़ी टाइप की लौण्डियों को मुंह लगाते हो। मैं उसे टाल जाता हूं क्योंकि कुछ बताने का मतलब पूरी राम कहानी सुनाना होगा जो मैं नहीं चाहता। और वह सुनेगा भी नहीं।

एक शाम अहमद कुछ देर से आया। हमें मालूम था कि आज तक उसका बंगला सजाया जा रहा है और यह काम शूज़ा ने अपने हाथ में ले लिया है और आजकल अहमद शूज़ा के साथ रह रहा है।

दो 'ड्रिंक` लेने के बाद बोला 'यार ये शूज़ा का मामला उलझता जा रहा है।`

'हम तो समझ रहे थे कि सीधा होता जा रहा है`, शकील ने दाढ़ी खुजाते हुए कहा।

'नहीं यार. . .सच पूछो. . .तो. . .`

'बता यार बात क्या है? शर्म आती है।`

'नहीं शर्म की क्या बात. . .मैं उसकी 'डिमाण्ड्स` पूरी नहीं सकता।`

'क्या मतलब?`

'यार वो. . .'निम्फ़ो` है।`

'आहो. . .`

'मत पूछो. . .मेरे लिए इस उम्र में. . .कितना मुश्किल होगा . . . वह मेरे लिए कुछ 'स्ट्रांगपिल्स` ले आई है।`

'यार ये तुम उसके हाथ में खिलौना क्यों बन गये हो।`

'नहीं नहीं ऐसी बात नहीं है।`

'बात तो ऐसी ही है`, मैंने कहा।

'जिंदगीभर इसने औरतों को खींचा है और अब इसे एक औरत

खींच रही है तो परेशान हो रहा है`, शकील बोला।

'तुम्हारी कोठी ठीक होने के बाद शायद वह तुम्हारे साथ आ जायेगी?` उसके चेहरे का रंग उतर गया। लेकिन संभलकर बोला- 'जरूरी नहीं है।`

कुछ देर बाद बोला, 'मैं उससे पीछा छुड़ाना चाहता हूं।`

'तो फिर तुम उसे अपने निजी कामों में इतना दखल क्यों देने देते हो।`

वह खामोश हो गया। कुछ नहीं बोला। हम दोनों हैरानी से उसे देखते रहे।

अहमद ने कोठी में जो पहली पार्टी दी उसमें शूज़ा बिल्कुल उसकी पत्नी जैसा व्यवहार कर रही थी। वेटरों को ऑर्डर देना। मेहमानों की ख़ातिर तवाज़ों, राजदूतों के साथ-साथ चलना, अहमद से हंस-हंसकर बातें करना, बहुत शानदार और महंगे कपड़ों में अपने को श्रेष्ठ दिखा रही थी।

बगैर सोचे समझे ज़िंदगी गुज़र रही है। सुबह क्यों उठ जाता हूं? क्यों गुलशन चाय ले आता है? क्यों दस बजे के करीब नहाने चला जाता हूं? क्यों ग्यारह बजे नाश्ता करता हूं। ऑफिस की गाड़ी आती है। बैठता हूं चल देता हूं।

रिसेप्शन से होता, एक-दो के सलाम लेता-देता ऊपर पहुंचता हूं। मैं जानता हूं कि मेरे लिए लगभग कोई काम नहीं है। दो चार अखबार पढ़ना है। एक-दो चैनल देखने हैं। बड़े अधिकारी बुलायें तो जाना है और बस खत्म. . .कभी-कभी संकट हो जाता है तो सम्पादकीय लिख देता हूं. . .

पूरी जिंदगी बगैर सोचे विचारे बीत रही है। उसका क्या उद्देश्य है और क्या करना है? बड़े-बड़े सपने छोटे होते चले गये और अब छोटे होते-होते, होते-होते इतने छोटे हो गये कि मेरे सिफारिशी ख़त से किसी को नौकरी मिल जाती है तो लगता है सपना पूरा हो गया है।

मैं ही नहीं मेरी पीढ़ी और मेरा युग मिट चुका है। मेरा देश और मेरा समय हार चुका है ओर हम सपनों की राख के हिमालय पर बैठे हैं। सब कहते हैं निराश और उदास होना मेरी आदत है। विदेशी मुद्रा से देश का ख़ज़ाना भर गया है, आई.टी. में भारत ने बड़े-बड़े देशों को पीछे छोड़ दिया है। विदेशों से खरबों डालर देश में 'इनवेस्ट` हो रहा है। आज शहरों में जो चमक-दमक, पैसे की रेल-पेल, मल्टी प्लेक्स, कारें, लक्जरी अपार्टमेंट्स, फार्म हाउसेस है जो कि पहले कभी न थे। मैं इन सब बातों को मानता हूं लेकिन मुझे गालिब का एक शेर याद आता है

तारीफ़ जो बेहेश्त की सुनते हैं सब दुरुस्त

लेकिन खुदा करे वो तेरी ज्लवागाह हो।

मतलब यह कि स्वर्ग की जितनी प्रशंसा सुनते हैं सब ठीक है लेकिन ईश्वर करे वह ----स्वर्ग----तेरी ----प्रेमी/प्रेमिका----की ज्लवागाह ----जहां वह दिखाई देता है----हो. . .मैं कहता हूं करोड़ों, खरबों डालर की विदेशी मुद्रा हमारे ख़जाने में हैं, बहुत अच्छा आई.टी. के हम लीडर हैं, बहुत उत्तम, हज़ारों अरब डालर का निवेश हो रहा है, उत्तम है, मध्यम वर्ग में ऐसी सम्पन्नता कभी थी ही नहीं, बहुत अच्छा, लेकिन खुदा करे इस नये भारत में ग़रीब कम हो, बेरोज़गारी कम हो, दवा-इलाज की सुविधा, बच्चे स्कूल में पढ़ सकते हों, पीने का पानी मिल सकता हो, भ्रष्टाचार न हो, शासन का डण्डा न चलता हो, धर्मों और जातियों के बीच भयानक हिंसा न हों . . .विस्थापन. . .न हो लेकिन मेरी दुआ पूरी नहीं होती। दो प्रतिशत लोगों के जीवन में जो शानो शौकत आई है उसकी क्या क़ीमत देनी पड़ी है?

"सर. . ." मैं चौंक गया।

लिफ्टमैन दूसरे "लोर पर लिफ्ट रोके खड़ा था और मैं अपने सवालों में खोया हुआ था।

मैं लिफ्ट से बाहर आ गया।

एस.एस. अली. . .मेरा ये नाम कैसे हो गया? नौकरी की शुरुआत की थी और पहली बार कार्ड छपकर आये थे तो उन पर यही नाम था। सैयद साजिद अली. . .की जगह एस.एस.अली सुविधाजनक. . .छोटा . . . उच्चारण में आसान. . .

शीशा लगी काली मेज़ पर कुछ नहीं है। मेरा ये सख्त़ आदेश है कि मेज़ खाली रहना चाहिए। सामने कुर्सियां उनके पीछे सोफा, बराबर में कांफ्रेंस टेबुल जो ज़रूरत पड़ने पर डाइनिंग टेबुल भी बन जाती है।

ऑफिस की एक दीवार शीशे की बड़ी खिड़की है जिससे अंग्रेज़ों की बनाई दिल्ली दिखाई देती है।

ऑफिस में बैठकर सोचा यार मैं कितना सुरक्षित, कितने मज़े में, कितनी मस्ती में हूं. . .मैं 'द नेशन` का एसोसिएट एडीटर हूं. . .मैं सत्ता के एक खम्बे का हिस्सा हूं। मैं बड़े-से-बड़े सरकारी अधिकारी से सीधे फोन पर बात कर सकता हूं। मंत्री खुशी-खुशी समय देते हैं। बड़ा से बड़ा काम, मुश्किल से मुश्किल काम यहां से हो जाता है. . .मेरी सेक्रेटरी करा देती है. . .बस कहने की देर है। हर त्यौहार पर कमरा उपहारों और मिठाई के डिब्बों से भर जाता है। नये साल, बड़े दिन और क्रिसमस के मौके पर दूतावासों से डालियां आती है जिनमें स्काच विस्की के अलावा और न जाने क्या-क्या पटा पड़ा रहता है। पब्लिक सेक्टर भी पत्रकारों को उत्कृष्ट करने में आगे आ गया है। हूं तो ठाठ ही ठाठ है . . .जब तक नौकरी है तब तक ठाठ है. . .तो ठाठ मेरे नहीं ठाठ तो पद के हैं. . .और उसका क्या मतलब. . . ज़िंदगी सब की कटती है . . .किसी की बहुत आराम से, किसी की तकलीफ से, लेकिन कट जाती है. . .और यह सोचना ही पड़ता है कि क्यों जिंदगी कटने का उद्देश्य क्या है, मकसद क्या है? मौज, मस्ती, मज़ा, पैसा, औरत, शराब, सैर सपाटा? अफसोस कि मैं इस बात से अपने को 'कन्विन्स` नहीं पाता. . .कुछ और करना चाहता हूं जो कुछ ज्यादा बड़ा आधार दे सके। ज्यादा आनंद दे सके, ज्यादा संतोष दे सके. . .

शिप्रा अंदर आई मेरा आज के 'एप्वाइंटमेंण्ट्स` और कार्यक्रम सामने रख दिया।

"सर आज आपको 'एडोटोरियल` देना है।"

"दो लोग आउट ऑफ स्टेशन हैं।"

"ठीक है. . .बैठ जाओ।"

चौबीस साल की अति सुंदर और अति स्मार्ट शिप्रा पाश्चात्य शैली के कपड़े पहने सामने बैठ गयी।

"जाओ, एडीटोरियल लिखो।" मैंने उससे कहा।

"जी?" वह कुरसी से उछल पड़ी।

"हां. . .इसमें हैरत की क्या बात।

"मैं? सर मैंने कभी 'एडीटोरियल` नहीं लिखा।"

"और मैं जब पैदा हुआ तो 'एडीटोरियल` लिख रहा था।

"नहीं. . .नहीं. . ."

"जाओ लिखो. . .लेकिन 'इफ़`, 'बट`, 'परहैप्स`, 'लाइकली` वगैरा वगैरा का अच्छा इस्तेमाल करना. . ."

"सर . . .ऑफिस में लोग. . ."

"हां मैं जानता हूं. . .मेरे खिलाफ हैं. . .बात का बतंगड़ बनायेंगे. . .कहेंगे शिप्रा से 'एडीटोरियल` लिखवाता है. . .बहस होगी . . .मीटिंग होगी. . .मैं यही तो चाहता हूं. . .यही . . .और जो 'ईडियट्स` 'एडीटोरियल` लिखते हैं उनमें

और तुममें क्या फर्क है? तुम ज्यादा 'इंटीलिजेंट` हो।

वह हंसने लगी।

मैं उठकर खिड़की के पास आ गया। दूर तक अंग्रेज़ों की बनाई हुई दिल्ली फैली है। सुखद है कि यह हरी है। इस दिल्ली में पेड़ हैं। घास के मैदान है। हमने जो दिल्ली बनाई वह बंजर दिल्ली है। यह अंग्रेजों ने नहीं बनाई। हमें इसका 'क्रेडिट` या 'डिस्क्रेडिट` जाता है। यमुना जैसी सुंदर नदी को नाले में बदलने का काम भी अंग्रेज़ों ने नहीं किया है। दिल्ली के मास्टर प्लान से खिलवाड़ भी हमीं ने किया है। शहर के चारों तरफ बड़ी मात्रा में 'सलम` भी हमने ही बनाये हैं। हमने ही अपने लोगों को बिजली और पानी के लिए तरसाया है।

"क्या कर रहे हो उस्ताद।"

पीछे मुड़कर देखा तो नवीन. . .नवीन जोशी।

"आओ बैठो।"

अब उसके चेहरे पर इतमीनान वाला भाव आ गया है। सहजता दिखाई देती है। पता नहीं क्या होता पर कोई न कोई 'कैमिस्ट्री` काम करती है, 'रिटायर` आदमी के हाव-भाव, भाव भंगिमाएं, चलने फिरने का तरीका, सुनने-सुनाने के अंदाज़ बदल जाते हैं। 'रिटायर` होने का एक अजीब किस्म का असहजबोध चेहरे पर आ जाता है जिसका मेरे ख्याल से कोई औचित्य नहीं है।

"कहो क्या हाल है?"

"अरे यार, क्या हाल होंगे. . .हमें कौन पूछता है?"

"मतलब. . .?"

"यार सरयू को फोन करता हूं, वो नहीं उठाता. . .वो तो अपना यार साहित्य की राजनीति में डूब चुका है. . .पिछले साल नेशनल एवार्ड लिया, इस साल उसकी जूरी में आ गया है, अगले साल. . .

"शायद तुम्हारा नंबर आ जाये।" मैंने कहा और वह हंसने लगा।

"यार साजिद तुम्हें तो याद होगा।" वह कुछ ठहरकर बोला।

"हां प्यारे याद है. . . उस ज़माने में पूरी मण्डली का काम तुम्हारे बिना न चलता था. . .यार हम सब तो दिल्ली में बाहर से आये थे. . .तुम तो दिल्ली में ही पैदा हुए थे. . .असली दिल्ली वाले तो तुम थे।"

"मैं हर मर्ज की दवा हुआ करता था।" वह बोला।

"हां. . .ये तो है ही यार।"

चाय पीते हुए मैंने पूछा "और बताओ रावत का क्या हाल है?"

"यार दरअसल मैं आया ही रावत के बारे में बात करने था।"

"क्या बात है।"

"यार. . .भाभी का फोन आया था कि ऑफिस से आठ-नौ बजे से पहले नहीं आते। उसके बाद पीने बैठ जाते हैं। इस बीच थोड़ी सी बात भी मर्जी के खिलाफ़ हो जाये तो चिल्लाने लगते हैं. . .रात को सो नहीं पाते. . .उठ-उठकर टहलते हैं. . .बड़े तनाव में. . .।"

"तो तुमने रावत से बात की?"

"लाओ यार. . .ऑफिस का फोन दो।"

मैंने उसे घूरकर देखा।

"साले किसी की ज़िंदगी का सवाल है और तुम अपना फोन का बिल बचा रहे हो।"

"नहीं यार. . .दरअसल मोबाइल चार्ज नहीं किया है।"

हम दोनों ने रावत से लंबी बातचीत की। ऑफिस में होने की वजह से वह खुलकर बोल नहीं रहा था। लेकिन इतना तो पता चल रहा था कि वह भयानक तनाव में है और किसी दूसरे से मदद लेना अपमान समझता है। जितना हो सकता था हम लोगों ने उसे समझाया और मिलने के प्रोग्राम पर बात ख़त्म हो गयी।

- तुम क्या कर रहे हो? क्या सोचा है?``

- यार देखे नौकरी तो बहुत कर ली . . . और फिर सेहत भी

अब. . . तुम जानते ही हो. . .

- हम सब जानते और मानते है कि तुमने ऐसी सेहत में जो कुछ किया है वह क़ाबिले तारीफ है``

वह धीरे से बोला है - ठीक है यार . . .

- आगे क्या सोचा है?``

- कुछ सोचना ही पड़ेगा. . . घर में सब अपने-अपने कामों पर निकल जाते हैं मैं पड़ा-पड़ा क्या करता हूँ? कहाँ तक टी.वी. देखू. . .``

- लायब्रेरी चले जाया करो . . .

- यार गाड़ी कहाँ रहती है . . . बच्चे गाड़ी नहीं छोड़ते``

- घर पर लिखा करो``

- हाँ यार . . . यहीं सोचा है . . . लेकिन यार लिखने के लिए माहौल जरूरी है. . . और पुराने दोस्त हमें पूछते नहीं, सब साले बडे -बडे लोग हो गये है।``

- तुम्हारे लिए नहीं`` मैंने कहा वह हँसने लगा।

दो-तीन घण्टे नवीन से बात होती रही। मैंने अंदाजा लगाया कि वह गुज़रे जमाने की बातें बता रहा है, अपने परिवार के पुराने किस्से सुना रहा है रिटायरमेंट के बाद दोस्तों के बदल जाने की चर्चा कर रहा है।

मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि मोहसिन टेढ़े इतना खुश होगा। अंधेरे, छोटे और चारों तरफ से बंद कमरे में वह उसी तरह बैठा है जैसे अक्सर बैठाता है। लेकिन चेहरे पर खुशी फूटी पड़ रही है। मैंने इधर-उधर देखा। कोई वजह ऐसी नज़र न आई जो मोहसिन टेढ़े की खुशी की वजह हो।

"कहो. . .कैसे हो?"

"बस यार साजिद. . .परेशान आ गया था. . .खाने नाश्ते वाले चक्कर से तो. . .एक लड़की को लगा लिया है।"

"मैं तो तुमसे पहले ही कह रहा था।"

एक नेपाली-सी लगने वाले लड़की किचन से निकली जिसने जीन्स और छोटा-सा टाप पहन रखा था। लड़की की उम्र करीब बाइस-तेइस साल लगी। खूबसूरत कही जा सकती है। बाल लंबे और सीधे हैं। नाक चपटी है। आंखें छोटी हैं। गाल के ऊपर की हड्डियां उभरी हुई हैं. . .लेकिन मुहावरा है कि जवानी में तो गधी सी सुंदर होती है।

उसने चाय मेज पर रख दी।

"इनको आदाब करो. . .ये मेरे भाई हैं।" मोहसिन ने उससे कहा।

लड़की ने बड़े अदब से झुककर मुझे आदाब किया।

"यार साजिद मैं इसे अपना कल्चर सिखा रहा हूं।" वह गर्व और खुशी से बोला।

"माशा अल्लाह" मैंने व्यंग्य में कहा। वह हंसने लगा।

"इसका नाम क्या है?"

"इधर आओ. . .बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है?"

"जी मेरा नाम रिकी है. . .दार्जिलिंग में घर है।" वह किचन में चली गयी।

"तो तुमने इसे मुस्तकिल मुलाज़िम रखा हुआ है।"

"नहीं यार, इतना पैसा कौन देगा. . .ये पार्ट टाइम आती है।"

"और तुम इसे अपना कल्चर सिखा रहे हो।" मैंने कहा। वह हंसने लगा।

"सुबह आती है. . .एक घण्टे के लिए. . .शाम को आती है एक घण्टे के लिए. . .यार बहुत दुखी लड़की है।"

"तो इसका दुख बांट तो नहीं रहे हो।"

मोहसिन टेढ़े हो-हो करके हंसने लगा।

"तुम तो इसे 'फुल टाइम` रख लो।

"नहीं यार" वह घबरा कर से बोला।

"क्या लेगी. . .चार-पांच हज़ार . . .और क्या? कपड़े वगैरा तो तुम दिला ही दिया करोगे।"

"नहीं. . .नहीं यार लफड़ा हो जायेगा।"

"अभी क्या सिलसिला है।"

वह आगे झुक आया। इसे कभी-कभी मैं रात में रोक लेता हूं। रुक जाती है। यार साजिद बिस्तर में लावे की तरह लगती है। यार मैं तो पागल हो जाता हूं।

"ज़रा संभलकर. . .तुम पचास के हो।"

"हां-हां यार. . ."

>>पीछे>>

शीर्ष पर जाएँ